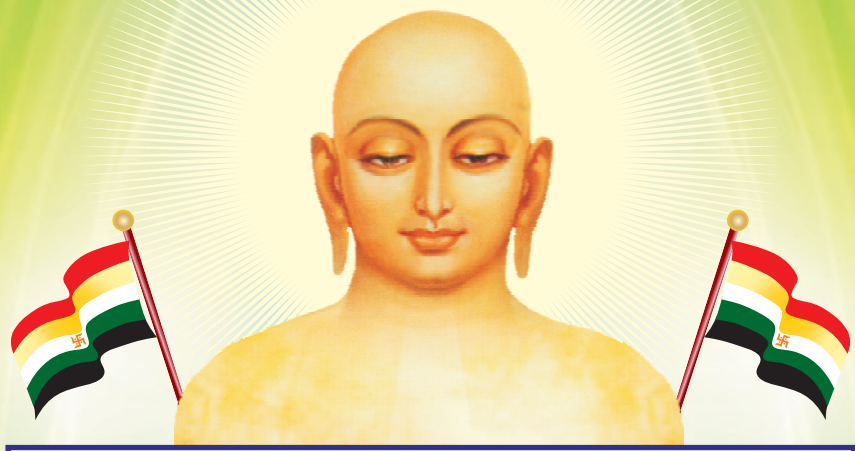

श्रमण संघ अमृत महोत्सव के पावन प्रसंग पर

संशोधित-परिवर्धित संस्करण

सद्भावनाओं का शिलान्यास

श्रमण संघ

• इतिहास • नव्य शोध • विवरण • संस्मरण

रचयिता : संघरत्न उपाध्याय श्री रवीन्द्र मुनि जी म.

श्रमण संघ जयवंत रहे!

- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन धर्म परम्परा का वर्तमान युगीन आध्यात्मिक धर्मसंघ, श्रमण संघ।
- एक संघ, एक आचार्य, एक समाचारी का अनुपालक श्रमण संघ।
- 1400 से अधिक साधु-साध्वी जी एवं अनगिनत श्रावक-श्राविकाओं का प्रतिनिधि चतुर्विद संघ श्रमण संघ।
- हर स्थिति परिस्थिति में संवाद और समन्वय का लक्ष्य लेकर चलता है श्रमण संघ।
- शास्त्र, स्वाध्याय, जप-तप, ध्यान पर अवलम्बित आराधना अनुपालक श्रमण संघ।
- भारत के प्रमुख क्षेत्रों में प्रभाव और प्रभावना युक्त धर्म प्रचार विचरण संचारी श्रमण संघ।

श्रुत सेवी प्रकाशन सहयोगी

परम गुरुभक्त श्री स्वरूपचन्द जी
श्रीमती चन्द्रकला जी कोठारी, हैदराबाद

श्रुत सेवी प्रकाशन सहयोगी

स्व. श्री ओमप्रकाश जैन - श्रीमती लक्ष्मी जैन
श्री पदम जैन - श्रीमती टीना जैन,
द्वारका, दिल्ली

श्रमण संघ जयवंत रहे!

- सकल जैन संघ को जन-मन का संघ बनाने वाला आध्यात्मिक संगठन श्रमण संघ।
- आत्मलीनता का आडम्बर मुक्त धर्मानुष्ठान श्रमण संघ।
- अमृत महोत्सव के शिखर पायदान पर खड़ा सतत संगठन एवं प्रबंधन का प्रत्यक्ष उदाहरण, श्रमण संघ
- अपवाद, विवाद, साम्प्रदायिक कट्टरता से मुक्त लोकहितैषी साधना का वरेण्य मंच श्रमण संघ।
- ज्ञान, दर्शन, तप, चारित्र पर श्रेष्ठता से आचरण कर्त्ता चतुर्विद धर्म संघ, श्रमण संघ।
- हठाग्रह, मताग्रह, पूर्वाग्रह, कदाग्रह मुक्त गुणग्राही साधना पद्धति यानि श्रमण संघ।
- 'असंभव' शब्द प्रतिरोधी, विज्ञ वैज्ञानिक समाज शास्त्र पर आधारित श्रमण संघ।
- अध्यात्म जगत में युगांतरकारी घटनाक्रम का ऐतिहासिक प्रमाण श्रमण संघ

श्रुत सेवी प्रकाशन सहयोगी

परम गुरुभक्त श्री भंवरलाल-शांति देवी
श्री राजेश-ललिता-विशेष भण्डारी परिवार
हैदराबाद

श्रमण संघ अमृत महोत्सव के पावन प्रसंग पर

संशोधित-परिवर्धित संस्करण

सद्भावनाओं का शिलान्यास

श्रमण संघ

• इतिहास • नव्य शोध • विवरण • संस्मरण

रचयिता : संघरत्न उपाध्याय

श्री रवीन्द्र मुनि जी म.सा.

सम्पादन-मुद्रण-आवरण

हुकमचंद जैन 'मेघ'

मो. 09810554810

प्रकाशक

सुत्रागम प्रकाशन समिति

अनेकान्त विहार, बस अड्डे वाली गली,

गोपाल नगर, गुरुग्राम (हरियाणा)

सम्पर्क सूत्र : श्री मनोज जी जैन, मो. 9810631607

पुस्तक का नाम : सद्भावनाओं का शिलान्यास
श्रमण–संघ

लेखक संशोधक : संघ रत्न श्रमण संघीय उपाध्याय
श्री रवीन्द्र मुनि जी म.सा.

सम्पादक : हुकमचंद जैन 'मेघ', दिल्ली

प्रकाशक/वितरक : श्री सूत्रागम प्रकाशक समिति
अनेकान्त विहार, बस अड्डे वाली गली,
गोपाल नगर, गुरुग्राम (हरियाणा)

प्रकाशन वर्ष : श्रमण संघ अमृत महोत्सव वर्ष
सन् 2026-2027

प्रतियाँ : 3000

परोपकारार्थ श्रद्धानिधि : 300 रु. मात्र

मुद्रण प्रबंधक : क्रिएटिव इंटरप्राइन,
8, गोविंद मार्किट, मेन रोड़
हैदरपुर, दिल्ली–110088
फोन : 9810554810

ग्राफिक्स : अजय सहरावत – हर्षित जैन

प्राप्ति स्थल

सुत्रागम प्रकाशन समिति
अनेकान्त विहार, बस अड्डे वाली गली,
गोपाल नगर, गुरुग्राम (हरियाणा)
सम्पर्क सूत्र : श्री मनोज जी जैन
मो. 9810631607

श्री ऑल इंडिया श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेंस
12, शहीद भगत सिंह मार्ग,
गोल मार्किट, नई दिल्ली-110001

॥श्री महावीराय नमः॥

नमन संस्कृति का आधार महामंत्र नवकार

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं

ऐसो पंच णमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगल ।।

मंगल सुक्त

मंगलम् भगवान वीरो, मंगलम् गौतम वाणी।
मंगलम् स्थूलिभद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मंगलम्।।

भावांजलि

मंगलम् श्रमणेश वीरम् मंगलम् गौतमो गणी।
मंगलम् स्थूलिभद्राद्या जैन धर्म शिरोमणि।।

चराचर में धर्म मंगल संघ है उत्तम शरण।
नित्य मंगल, नित्य उत्तम नमामि नित गुरु चरण।।

परम सुखकर संघ हितकर, 'श्रमण संघ' जयो जयी।
रत्नत्रय कल्याणकारी सदा मंगल निर्भयी।।

सद्गति, सद्भावनायुत, संघ निर्मल शुभ सुखद।
चरित् धारक तप तपस्वी, ज्ञानी ध्यानी पूज्य पद।।

चतुर्विध शासन स्वरूपी तीर्थ है मंगलमयी।
संघ अक्षय, शरण शाश्वत सदाकाल निरामयी।।

अनुक्रमणिका

विवरण	पृ. संख्या
● आवरण	1
● विवरण	2
● नवकार महामंत्र	3
● मंगल सुक्त	4
● प्रकाशकीय	7
● प्रथम युगप्रधान आचार्य श्री सुधर्मा स्वामी	9
● ॐ नमो आयरिया नमः	10
● युगप्रधान आचार्य पू. डॉ. श्री शिव मुनि जी म.सा. संदेश	11
● भावी भविष्य पूज्य युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. संदेश	12
● आराध्य और आराधक रचनाकार उपाध्याय श्री रवीन्द्र मुनि जी म.सा. एवं सम्प्रेरक संतरत्न	13
● श्रुत सेवी सौजन्यकर्त्ता महानुभाव	14-16
● सम्पादकीय – हुकमचंद जैन 'मेघ'	17
● मनोगत – रचनाकार उपाध्याय श्री रवीन्द्र मुनि जी म. के विचार	19
● प्रस्तावना – अमित-अभिमत (रा. महामंत्री जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली)	28
● जिनशासन : अर्थ एवं महत्व	30
इतिहास के आलोक में सतत शाश्वत श्रमण संघ	
● अध्यात्म जगत का आराध्य संगठन श्रमण संघ	32
● चतुर्विद संघ एवं आगम रक्षण हेतु सम्पन्न हुई कई वाचनाएं	48
● द्वादशांग दृष्टिवाद के लुप्त होने का क्या कारण रहा होगा?	58
● चतुर्विद संघ की नींव, जिनमत के अलोक में 'श्रमण एवं श्रमणोपासक'	63
स्मृतियां जो इतिहास बन गईं... ऐतिहासिक पूर्वाचार्यों के संस्मरण	
● प्रेरक प्रसंग – कुछ स्मृतियां	68-92
● जैन धर्म परम्परा और श्रमण संघ	93
● सामाजिक समरसता का उद्घोष प्रथम अजमेर साधु सम्मेलन	110

भुलाए नहीं भूलते ये उपकार - समकालीन महापुरुषों के संस्मरण

- प्रेरक संस्मरण 138-145
- संशय से समाधान तक-श्रमण संघ निर्माण : एक युगान्तरकारी कदम 146
- आधुनिक युग में अध्यात्म जगत की श्वेत क्रांति : श्रमण संघ स्थापना 157
- श्रमण संघ की गुण-गरिमा एक आचाय/एक संघ/एक समाचारी 172
- भगवान महावीर की परम्परा, लोंकाशाह का सपना 189

सद्प्रयत्नों ने संवारा श्रमण संघ का इतिहास

- प्रेरक संस्करण 192-207
- श्रमण संघीय मंत्री स्तरीय सम्मेलन सोजत 1955 208
- भीनासर साधु-सम्मेलन 1956 214
- अनेक सम्मेलनों के पश्चात श्रमण संघ को सुदृढ़ रखने का सजग प्रयास 224
- अजमेर साधु सम्मेलन (द्वितीय) 228
- आ. श्री आनंदऋषि जी म. का आचार्य पद चादर समारोह 237

महापुरुषों के अनुकरणीय आदर्श : संस्मरणों के आलोक में

- प्रेरक संस्मरण 242-251
- श्रमण संघ का प्रबल दिशादर्शक पूना श्रमण सम्मेलन 1987 252
- श्रमण संघीय बृहद् साधु सम्मेलन 2015 इन्दौर (मध्य प्रदेश) भावी नैतृत्व निर्माण, युवाचार्य पद प्रतिष्ठा 273
- आहार दान की महत्ता और सुफल 300

हम सद्भाव जगाने वाले

- प्रेरक संस्मरण 302-307

हमारे जिनागम एवं विद्वत श्रमण विद्वान 308

- उत्तमौत्तम पुरुष होते है : आचार्य 309
- अविस्मरणीय चित्रावली (प.पू. आचार्यश्री एवं युवाचार्य श्रीजी से सन्दर्भित) 313-320
- श्रमण संघ के चार महान स्तंभ : जैन धर्म दिवाकर आगम रत्नाकर पू. आचार्य सम्राट श्री आत्माराम जी म. 321
- मानवीय सरलता के साक्षीमान सत्य आचार्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा. 326
- श्रमण संस्कृति के सारस्वत पुरुष आ. सम्राट श्री देवेन्द्र मुनि जी म.सा. 330
- आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.सा. का ऐतिहासिक चादर समारोह 334
- ध्यान के अपूर्व संगम, युगप्रधान आचार्य डॉ. श्री शिव मुनि जी म.सा. 339
- आचार्य डॉ. श्री शिव मुनि जी म.सा. का आचार्य पद चादर समारोह 344

प्रकाशकीय

शुभ सृष्टि जो साक्ष बन गई!

बंधुओ! इतिहास ऐसा विधा तत्व है जो हर बार एक नया कलेवर औढ़कर अतीत तो अतीत, वर्तमान तो वर्तमान ही नहीं भविष्य की भी रूपरेखा हेतु प्रस्तुत कर देता है।

प्रस्तुत पुस्तक भी ऐसे ही पवित्र जिन श्रमण संघीय इतिहास और झलकियों से सजी विषयवस्तु लेकर प्रस्तुत है। इसे इतिवृत्त के साथ और आकर्षण बनाने की दृष्टि से कुछ प्रसंग, कुछ परिचयात्मक संस्मरणों के साथ प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक अपने एक सुस्पष्ट लक्ष्य के साथ पेश की गई है क्योंकि वर्तमान युग रील, ढील और कील का युग है, आज पढ़ा नहीं जाता क्योंकि पढ़ना छूट गया है। **'समय नहीं है'** इस जुमले की आड़ में मोबाइल पर घंटों खर्च हो रहे हैं। किताबें या तो सज्जा का विषय बन गई हैं या मजबूरन पढ़ी जा रही हैं।

ऐसे वातावरण में पुस्तकों को सर्जन साहस का विषय है और ये साहस पूज्य गुरुदेव संघसेतु उपाध्याय श्री रवीन्द्र मुनि जी म.सा. यदाकदा ही नहीं, हमेशा ही करते हैं। इतिहास, परम्परा, तत्व चिंतन जैसे विषयों पर प्रकाश डालकर करते हैं।

प्रस्तुत कृति को आप श्री सन् 2010 में एक संक्षिप्त संस्करण के रूप में प्रकाशित करा चुके हैं। पाठकों की जानकारी के लिए बता दें कि पुनः **"सद्भावनाओं का शिलान्यास"** को और अनेक गहरी ऐतिहासिक सूचनाओं के साथ प्रकाशित किया गया।

इस पुस्तक में प्राचीन से अर्वाचीन तक के जगमगाते श्रमण श्रमणियों के पावन प्रसंग संलग्न है। जो प्रेरक भी है तो स्मरणीय भी है। क्योंकि हमें स्वयं को जानना है! श्रमण संघ को जानना है! जन-श्रद्धा केन्द्र श्रमण संघ की गुणवत्ता का अध्ययन करना है तो पढ़ना होगा और स्वयं को गढ़ना होगा।

हमारी भावी पीढ़ी को अपना अतीत बताना होगा। उन उतार–चढ़ाव को समझाना होगा, जो अतीत में घटे हैं और हमारे

आदर्श समय की शिला पर छाप छोड़ गए है। सम्पूर्ण रचना सरस है, सूचनाओं से समृद्ध है, अतीत के जगमगाते प्रसंगों से सज्ज हैं।

हमारे लिए सौभाग्य का विषय है कि परम पूज्य उपाध्याय भगवन् द्वारा रचित यह कृति, श्रमण संघ अमृत वर्ष में प्रकाशित जा रही है।

इस प्रकाशन से जुड़े प्रत्येक सहयोगी श्रुत सेवी भाई–बहन का सादर आभार एवं अपनी कलात्मक प्रस्तुति के लिए प्रसिद्ध सम्पादक भाई श्री हुकमचंद जी जैन 'मेघ' एवं उनकी टीम का सहयोग हर बार की तरह ही हमें प्राप्त हो रहा है। हम सभी का आभार व्यक्त करते हैं। सुधि पाठकगण आप कोई सुझाव देना चाहे तो हार्दिक स्वागत है। सादर— **—प्रकाशक**

●●●

दृढ़ संयमी आत्मा की पहचान

साधना के मार्ग में कोई अटकता है.... कोई भटकता है। लेकिन भाग्यशाली आत्माएं चढ़ती ही चढ़ती है... उठती ही उठती है। इस मार्ग में कोई गिर–गिर कर भी चढ़ते रहते हैं मुनित्व के... श्रमणत्व के... चारित्र के उज्ज्वलतम शिखर की ओर बढ़ ही जाते हैं। **श्री ठाणांग सूत्र** में ऐसे चारित्रों की सुन्दर स्थितियों का उल्लेख में उपलब्ध है–

सीहत्ताते णामं एगे णिक्खंते, सीहत्ताते विहरइ।
सीहत्ताते णामं एगे णिक्खंते, सियालत्ताते विहरइ।
सियालत्ताते णामं एगे णिक्खंते, सीहत्ताते विहरइ।
सियालत्ताते णामं एगे, णिक्खंते, सियालत्ताते विहरइ।।

अर्थात् "कुछ साधक सिंह वृत्ति से साधना पथ पर आते हैं, और सिंह वृत्ति से ही रहते हैं। कुछ सिंह वृत्ति से तो आते हैं, किन्तु बाद में श्रृगाल वृत्ति अपना लेते हैं। कुछ श्रृगाल वृत्ति से आते हैं, किन्तु बाद में सिंह वृत्ति अपना लेते हैं। कुछ श्रृगाल वृत्ति लिये आते हैं, और श्रृगाल वृत्ति से ही चलते रहते हैं।" ●●●

चरम तीर्थंकर वर्धमान महावीर

हत्थीसु एरावण माहु गाते, सिंहे मियाणं सलिलाणं गंगा।
पक्खीस या गरुले वेणु देवे, णिव्वाण वादीणिह णायपुत्ते।।

—जिनशासन के प्रथमाचार्य गणधर सुधर्मा स्वामी (सूत्रकृतांग १/६/२१)

भावार्थ

रजत गात गज ज्यों ऐरावत, वन्य राशि में ज्यों मृगराज।
जल धारा में सुरसरि गंगा, पांखी पंख गरुड़ आवाज।।
ऐसे पथ निर्वाण नियंता, ज्ञातपुत्र महावीर महान।
सर्वोत्तम हैं, अत्युत्तम हैं, मेरे नाथ! मेरे भगवान!!

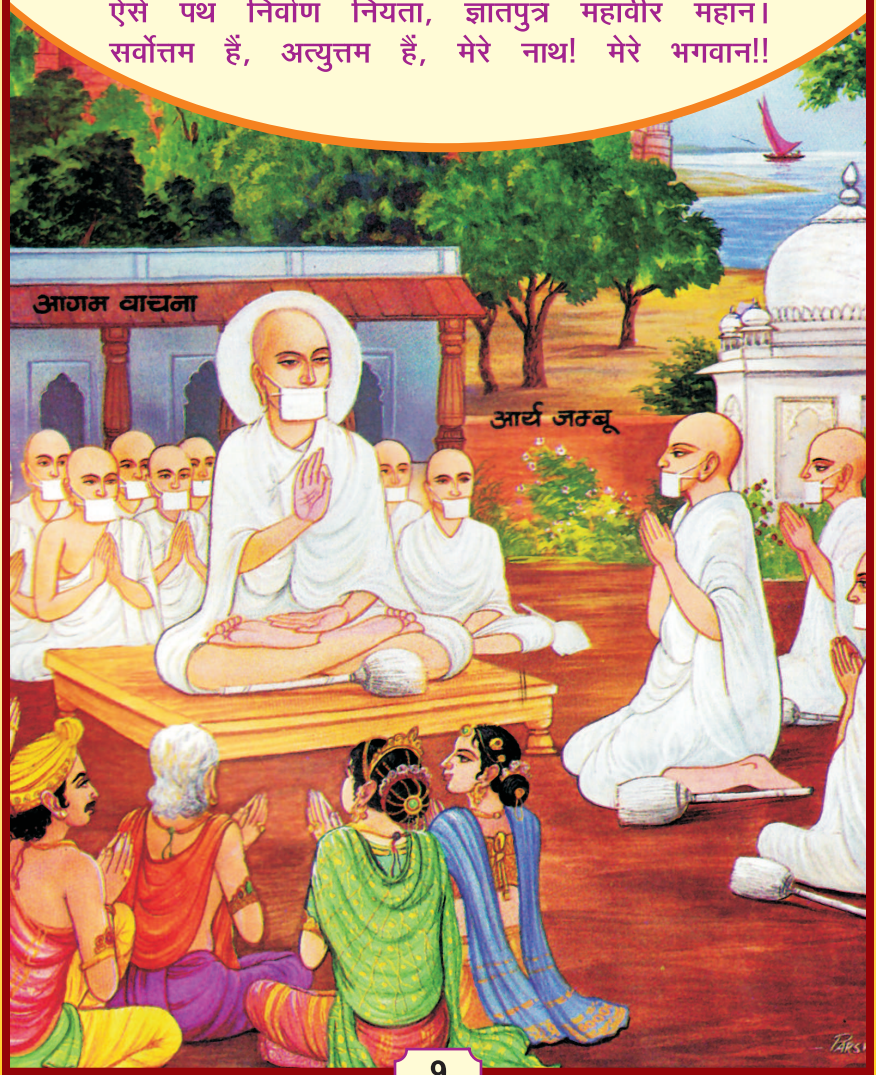

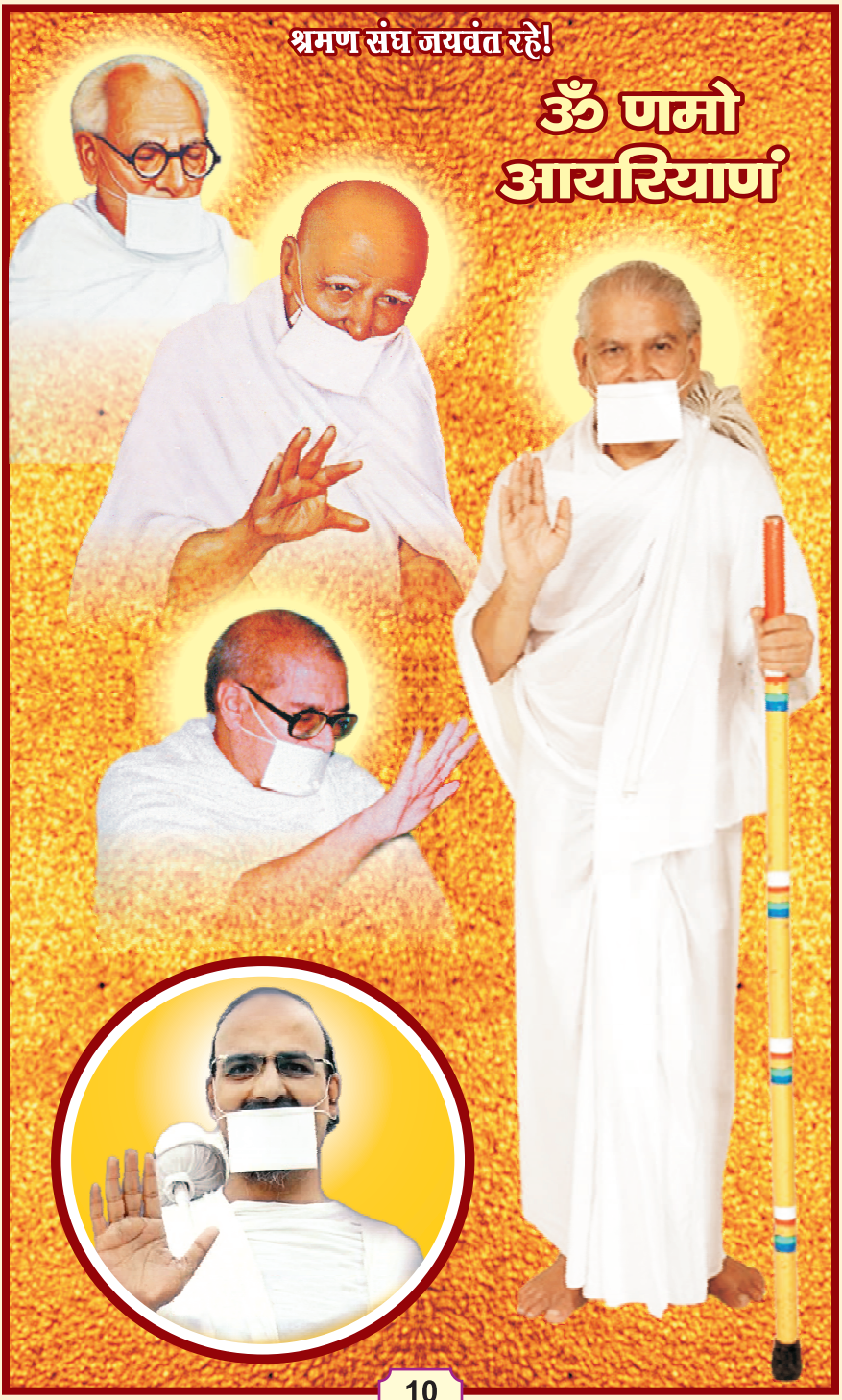
श्रमण संघ जयवंत रहे!
ॐ णमो
आयरियाणं

परम पूज्य श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट श्री शिवमुनि जी म. का मगल सन्देश

श्रमण संघ आध्यात्मिक जगत का महत्वपूर्ण संगठन

ध्यानयोगी, युगप्रधान आचार्य सम्राट श्री शिवमुनि जी म.

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ आध्यात्मिक जगत में एक महत्वपूर्ण संगठन है। जिसमें साधक, तपस्वी ज्ञानी ध्यानी विविध प्रतिभाओं से सम्पन्न साधु साध्वी हैं। ऐसे बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न संघ का वर्तमान तो गौरवशाली है ही अतीत भी संगठन, समर्पण और त्याग की रोमांचित करने वाली गाथाओं से सजा हुआ है। ये गाथाएं हमारे संघरत्न उपाध्याय श्री रवीन्द्र मुनि जी म. एक पुस्तक के रुप में प्रस्तुत कर रहे हैं, ये जानकर मुझे आत्मीय प्रसन्नता हुई।

मैं चाहूंगा कि इस पुस्तक से श्रमणसंघ से सम्बद्ध प्रत्येक साधु साध्वी लाभ उठाएं। समर्पण, स्नेह और अनुशासन की जो महान परम्परा विगत अटठावन वर्षो से चली आ रही है उसका निष्ठापूर्वक पालन हो। हम हृदय से स्वीकार करें कि साधना हमारी राह है, लक्ष्य हमारा सिद्धालय ध्यान हमारा माध्यम है, ज्ञान हमारी रोशनी है। अतः आत्मविद् होकर, साथ साथ आए और अनुशासन, आज्ञापालन सहित कल्याणभाव से श्रमणसंघ की प्रगति में प्रयास करें।

यह पुस्तक **'सद्भावनाओं का शिलान्यास - श्रमण संघ'** यथा नाम तथा गुण प्रेरित करने वाली हो, ऐसी मेरी मंगल कामना है। प्रकाशन में सहयोगी प्रत्येक व्यक्ति को मेरा हार्दिक आशीर्वाद।

सहमंगलमैत्री।

शिवमुनि

-आचार्य श्रमण संघ

वैचारिक अहिंसा - अनेकांत का वाहक
श्रमण संघ

श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. (युवाचार्य श्रमण संघ)

परस्पर विरोधी विचार को जानने वाला अनेकांत है। अनेकांतवाद जिनशासन का मूल स्वर है। कृति में अहिंसा, विचारों में अनेकांत से साकार होती है। वैचारिक अहिंसा अनेकांत है! भावनात्मक रूप के गुणदर्शन अनेकांत है। आचार्य सिद्धसेन दिवाकर जी ने सन्मति प्रकरण में कहा है– **जावइया नयवाया तावइया चेव ससमया।** अर्थात् जितने भी वचन पथ है वे सभी स्व–समय यथार्थ हैं। तात्पर्य यह कि विविध आचार–विचारों में रहे गुण को ग्रहण करके ही जिनमत जयवंत सिद्ध होता है।

समग्र देश में जिनशासन की स्थानकवासी परम्परा के हितैषी गणमान्य श्रेष्ठीवर्यों ने तथा मूर्धन्य वरिष्ठ सन्तों ने जिनशासन की प्रभावना तथा अनेकान्त की प्रायोगिक स्थापना हेतु प्रयास किये। ई.स. 1952 में सादड़ी (राज.) की वीरधरा पर बृहत्साधु सम्मेलन की संकल्पना ने मूर्तरूप लिया। यह अपने आप में एक ऐतिहासिक घटना थी।

सभी ने पारस्परिक समानताओं का सम्मान करते हुए तथा भिन्नता को विराम देते हुए एक संघ की स्थापना की, जिसे श्रमण संघ के नाम से संबोधित किया गया। इस प्रकार भारतवर्ष में स्थित श्रमण संघीय श्रद्धालुओं को अपने गुरुदेव एवं परम्परा के प्रति पूर्ण निष्ठा समर्पण भाव रखते हुए विविध परंपराओं के संत–साध्वीवृंद की सेवा तथा भक्ति का लाभ मिला।

श्रमण संघ के साधु–साध्वी, श्रावक–श्राविका सभी परम्पराओं का सम्मान करते है। उनके वाणी व्यवहार में कभी किसी के प्रति अनादर–आशातना का अंश भी दृष्टिगोचर नहीं होता। घृणा–नफरत कटुता का कोई भी स्थान श्रमण संघ में न था, न है। हम सभी का यह परम दायित्व है कि श्रमण संघ की इस मूल संकल्पना को अपनी आस्था से अविचल रखें। जिसे जिनशासन के अनेकांत सिद्धांत में विश्वास है वह निश्चित ही अपने आपको श्रमण संघ में पाकर गौरवान्वित अनुभव करेगा। वह सही अर्थों में जिनशासन की समग्र सेवा का लाभ प्राप्त करेगा। **'श्रमण संघ सद्भावनाओं का शिलान्यास – श्रमण संघ'** इस ग्रंथ के माध्यम से श्रमण संघ के उज्ज्वल अतीत एवं वैविध्यपूर्ण वर्तमान का विस्तृत आलेख प्रस्तुत है। **इस प्रयास हेतु संघरत्न उपाध्याय श्री रवीन्द्र मुनि जी म.सा. का हार्दिक अभिनन्दन। कलम कला के धनी श्री हुकमचंद जी जैन 'मेघ' को धन्यवाद-साधुवाद।**

'महेन्द्रऋषि'
युवाचार्य श्रमणसंघ

दिनांक : 15 मार्च 2026

॥ श्री महावीराय नमः ॥

आराध्य एवं आराधक

अध्यात्म योगी पूज्य गुरुदेव
श्री भागमल जी म.सा.

मानवता के मसीहा पूज्य गुरुदेव
श्री प्रेमसुख जी म.सा.

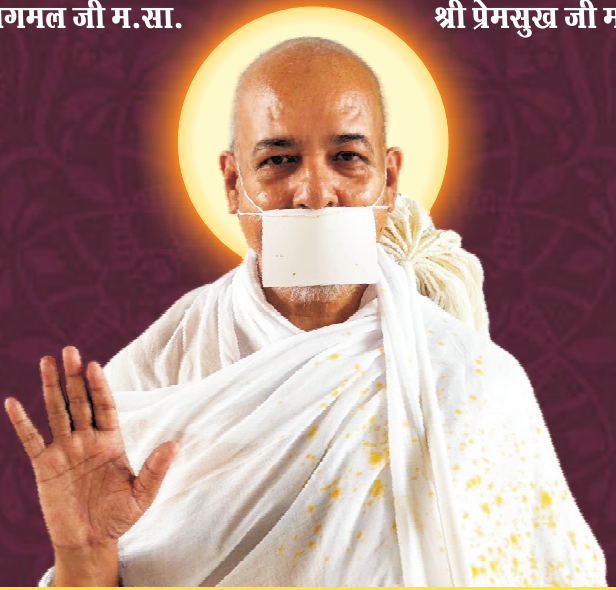

रचयिता - प्रस्तुतिकर्ता - नव्य शोधक : संघरत्न, संघसेतु, पूज्य उपाध्याय प्रवर

श्री रवीन्द्र मुनि जी म.सा.

सम्प्रेरक
अनुमोदक
संतरत्न

भंते श्री पारस मुनि जी म.

धर्म प्रभावक श्री रमणीक मुनि जी म.

उ.प्र. श्री उपेन्द्र मुनि जी म.

अन्याय और असमानता के विरुद्ध पोल खोलने वाले समाजसेवी माननीय श्री कांतिकुमार जी जैन एवं यशस्वी परिवार

केन्द्रीय मंत्री श्री रामदास जी आठवले की रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया में वंचित, शोषित घटक के लिए मजबूत आवाज बनकर पिछले 19 वर्षों से एकनिष्ठ एवं समर्पित भाव से कार्य कर रहे, पत्रकारिता को समाजहित में उपयोग करने वाले, कलम के सिपाही समाजसेवी, वहीं दीन-हीन, अभावग्रस्त लोगों के बीच अपने जुझारू काम से प्रसिद्धि पा चुके इस परिवार ने सम्पन्न होने के साथ ही समाजसेवा के उन पायदानों को स्पर्श किया है जिसके लिए हृदय में अपार करुणा चाहिए, साहस और योग्यता चाहिए।

ऐसे ही इस परिवार का जैन कॉन्फ्रेंस और पूज्य साधु-संतों के बीच जो सेवा कार्य है, वो निश्चित रूप से प्रशंसनीय है, अनुमोदनीय है। हम समस्त परिवार के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए हृदय से बधाई देते हैं।

-प्रकाशक

संक्षिप्त परिचय एवं सेवाएं

माननीय श्री कांतिकुमार जी जैन

राष्ट्रीय सचिव : रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (आठवले)
राष्ट्रीय अध्यक्ष : अल्पसंख्यांक योजना
श्री ऑल इंडिया श्वे स्था जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली
संपादक : पोलखोल मीडिया समूह
नि. सदस्य फार्मास्युटिक बोर्ड ऑफ इंडिया
केन्द्रीय रसायनिक मंत्रालय, भारत सरकार
महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रतिष्ठित समाजभूषण अलंकरण से सम्मानित

सौ. अनिता जी कांतिकुमार जैन

राष्ट्रीय उपाध्यक्षा : महिला शाखा, जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
नि. कार्याध्यक्ष : श्री वर्ध. श्वे. स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, औरंगाबाद

युवारत्न श्री अमित जी कांतिकुमार जैन

राष्ट्रीय महामंत्री : युवा शाखा, जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
कार्यकारी संपादक : पोलखोल मीडिया समूह

सौ. दर्शना जी अमित कुमार जी जैन

डायरेक्टर : नमन कलेक्शंस, औरंगाबाद

श्री अतुल जी कांतिकुमार जी जैन

डायरेक्टर : रिद्धि सिद्धि कंस्ट्रक्शंस औरंगाबाद
प्रोपराइटर : जे.के. कंस्ट्रक्शंस मुंबई

सौ. राधिका जी अतुल कुमार जी जैन

डायरेक्टर : नमन कलेक्शंस औरंगाबाद

समाज सेवा के क्षेत्र में यशस्वी कीर्तिमान

दानवीर सेठ श्री नरेश कुमार जी आनन्दप्रकाश जी जैन परिवार, दिल्ली

जैन धर्मशास्त्र कहते हैं कि जो श्रावक अपने पुरुषार्थ से अर्जित सुकृत धन से संघ समाज एवं साधर्मी सेवा में उल्लास भरे मन से योगदान करता है, वो शास्त्रानुसार तीर्थंकर पद को प्राप्त कर सकता है। लेकिन यह तो निश्चित ही है कि ऐसा संघ भक्त मुक्ति का अधिकारी तो निश्चित ही हो जाता है। ऐसे श्रावक श्रेष्ठ श्रेष्ठिवर्य श्रीमान आनंदप्रकाश जी जैन एवं धर्मनिष्ठ श्रद्धाशील श्रीमती कमलेश जैन की संघ सेवा अपने आपमें एक कीर्तिकथा बनकर जैन समाज को प्रेरणा दे रही है।

श्रीमान आनंदप्रकाश जी जैन का सामाजिक योगदान तो प्रशंसनीय है ही। दिल्ली जैन महासंघ, श्री ऑल इंडिया श्वे.स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली आदि अनेक संस्थाओं के शीर्ष पदों पर रहकर आपने जो सेवा की है उसे ओर छोर लिखा जाए तो कई पृष्ठ भरे जा सकते हैं।

वैसे तो आपका सम्पूर्ण परिवार संघ समाज की सेवा में तन-मन-धन से तत्पर रहता ही है, मगर वर्तमान में श्रावक श्रेष्ठ श्री आनंदप्रकाश जी के पद चिन्हों पर चलते हुए युवारत्न दानवीर श्रीमान नरेश कुमार जी एवं श्रीमती रचना जैन सुपुत्र एवं सुपुत्री श्री अक्षय जैन-निकिता जैन आदि भी बढ़-चढ़कर कर संघ सेवा में योगदान कर रहे हैं जो इस परिवार की परम्परा के अनुरूप ही हैं।

श्रीमान नरेश कुमार जी जैन स्वयं एक व्यस्ततम उद्योगपति हैं, फिर भी अपने अमूल्य समय में से आप राष्ट्रीय अध्यक्ष ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली, अध्यक्ष जैन महासंघ-दिल्ली, अध्यक्ष श्रमण संघीय श्रावक समिति दिल्ली प्रदेश, अध्यक्ष जैन गोशाला सेवा क्षेत्र बरेली (उ.प्र.), अध्यक्ष जैन मुनि रोशनलाल जैन चैरिटेबल अस्पताल - त्रीनगर, दिल्ली, फाउण्डर चीफ पैटर्न-जीतो, ट्रस्ट मंडल सदस्य शिवाचार्य आत्मध्यान फाउंडेशन के अतिरिक्त कई धार्मिक, सामाजिक, औद्योगिक संस्थाओं में आप महत्वपूर्ण दायित्व संभाले हुए हैं।

जहां तक संघरत्न उपाध्याय पू. श्री रवीन्द्र मुनि जी म.सा. और इस परम्परा के आद्य पुरुष पू. गुरुदेव श्रीमद् भागमल जी म.सा., सेवा की साकार मूर्ति पू. गुरुदेव श्री प्रेमसुख जी म.सा. की गुरु धारणा इस परिवार में कई पीढ़ियों से है जो आज भी यथावत है। ऐसे धर्मनिष्ठ परिवार ने इस उपयोगी प्रकाशन को अपना सौजन्य प्रदान किया है। हम इनका हृदय से आभार प्रकट करते हैं। —प्रकाशक

करुणा मूर्ति श्रेष्ठिवर्य दानवीर गुरुभक्त सेठ श्री शौरीलाल जी अनिल कुमार जी जैन परिवार

स्व. श्री शौरीलाल जी जैन

स्व. श्रीमती गुणवन्ती जी जैन

श्री अनिल कुमार जी जैन

श्रीमती रश्मि जी जैन

मानवीय जीवन में परोपकार अहिंसा, दया भाव, मैत्री, करुणा आदि ऐसे पवित्र गुण हैं, जो एक सच्चे धर्मनिष्ठ व्यक्ति एवं परिवार की पहचान स्थापित करते हैं। परम गुरुभक्त जिनशासन सेवी, श्रावक श्रेष्ठ स्व. श्री शौरीलाल जी जैन एवं मातुश्री स्व. श्रीमती गुणवन्ती जी जैन के सुपुत्र श्री अनिल कुमार जी जैन निवासी सिविल लाईन, दिल्ली बड़े लम्बे समय से ही घोर तपस्वी पू. श्री निहालचन्द जी म.सा., प्रथम उत्तर भारतीय प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव श्री शान्तिस्वरूप जी म.सा एवं तपस्वी राजर्षि श्री सुमतिप्रकाश जी म. सा., उपाध्याय वाचनाचार्य पू. डॉ. श्री विशाल मुनि जी म.सा., प्रवर्तक श्री आशीष मुनि जी म.सा. आदि संतों के परम भक्त हैं।

वहीं जब संघरत्न, संघ सेतु उपाध्याय प्रवर पूज्य श्री रवीन्द्र मुनि जी म.सा. का कोल्हापुर रोड़ में सन् 1988 का चातुर्मास हुआ था, तब से आपके संघीय योगदान, आधुनिक एवं धार्मिक साधना से जुड़े हुए विचारों के प्रति आपका झुकाव हुआ। तभी से आप और आपका परिवार उपाध्याय श्री के निकट आया। वैसे यह परिवार प्रत्येक त्यागात्मा, ज्ञानी-ध्यानी के प्रति समान रूप से श्रद्धानत रहता है।

आपका प्रतिष्ठान रेडीमेड गारमेंट के निर्यातक के रूप में लब्ध प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान है। जीव-दया, मानव सेवा के क्षेत्र में आपका करुणा सम्पन्न परिवार निरंतर योगदान करता रहता है। श्रेष्ठिवर्य श्री अनिल कुमार जी जैन मृदुभाषी, मैत्रीभावी, संघ सेवा में तत्पर रहते है। वहीं आपकी सहधर्मिणी श्रीमती रश्मि जी जैन भी आपके ही विचारों का अनुसरण करते हुए संघ-सेवा में, संत-सेवा में लोकोपकारक कार्यों में निरंतर सहयोगी रहती हैं। आपके परिवार में जो भी अतिथि आता है, उसका स्नेहपूर्वक स्वागत-सत्कार होता है।

ऐसे उन्नत विचारों वाले श्री अनिल कुमार जी जैन का परिवार प्रस्तुत पुस्तक में श्रुत-सहयोगी के रूप में अपना सहयोग प्रदान कर रहा है। हम आपके उज्ज्वल भविष्य और मंगल स्वास्थ्य की कामना करते हुए आपके प्रति अपनी सद्भावनाएं व्यक्त करते हैं।

-प्रकाशक

सम्पादकीय

इतिहास पर दृष्टि प्रेरणा का प्रवाह

हुकमचन्द जैन 'मेघ'

इतिहास की दृष्टि लेकर अपने संघ–समाज की समकालीन परिस्थितियों को रेखांकित करती यह पुस्तक **जैन समाज के स्थानकवासी आम्नाय की उन कोशिशों का बयान है। जिसने समय की जटिलताओं से रचनात्मक मुठभेड़ करते हुए एक श्वेत अहिंसक क्रांति को जन्म दिया।**

प्रस्तुत पुस्तक इस माने में एक आईना है तो एक सामाजिक विमर्श भी है। **इसकी विषय-वस्तु में जिज्ञासाएं और दायित्व दोनों ही दर्ज हैं। प्रस्तुत पुस्तक के रचयिता, शोधक, संकलनकर्त्ता 'संघरत्न' उपाध्याय श्री रवीन्द्र मुनि जी म.सा. ने अनेकों बार मुझसे इस संबंध में चर्चाएं की। आपने मुझे कहा था कि – "श्रमण संघ निर्माण के घटनाक्रम को प्रस्तुत करने का मेरा मकसद मात्र यही है कि "अपने वर्तमान को परखने के लिए हम एक आदर्श, एक चेतना और अपने ही इतिहास में घटित कार्यों पर दृष्टि डालें! तद्नुसार अतीत में झांककर उन अनुभवों का जायजा लें! उनसे सबक सीखें और भविष्य के प्रश्नों पर वर्तमान में ही अपने आपको तैयार करें। यह एक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि का पुख्ता औजार हैं किताबें, जो मौन रहकर भी बहुत कुछ बोलती हैं। किताब ही आज के युग में वो सुलभ साधन है जो यांत्रिक यंत्रणाओं से मुक्त है।** पुस्तक के अक्षत अक्षरों को ध्यान से पढ़ा जाये तो अनेकों अक्स और अन्देशे इतिहास के दरीचों से निकलकर अपने अनुभव का अंग बन जाते हैं। परिणामस्वरूप एक समीक्षा, एक विश्वसनीयता, एक आधार और सन्दर्भ स्वतः प्राप्त हो जाता है।

मेरा स्पष्ट मत है कि – "मनुष्य को चमत्कारिक शक्तियां केवल कठिन कार्य करने मात्र से ही प्राप्त नहीं होती बल्कि इस वजह से मिलती हैं क्योंकि **जब भी जहां भी शुद्ध हृदय से कार्य होता है तो चमत्कार स्वयमेव हो जाते हैं। साथ ही यह भी स्मरण रहे कि "केवल विचार नहीं, संगठित शक्ति ही संसार पर शासन करती हैं, और अंततः उत्तम विचार ही उस शक्ति का उपयोग करता है।"** वैसे अध्यात्म जगत में चमत्कारों की चर्चा खूब होती है, मगर जहां भी शुद्ध हृदय है, संकल्प की शक्ति है, वहां सद्भावनाओं का न केवल शिलान्यास होता है, बल्कि अपार संभावनाओं का विस्तृत संसार भी समक्ष होता है।

प्रस्तुत कृति को पढ़कर पाठक रचनाधर्मी सोच के प्रतिनिधि उपाध्याय श्री जी की मान्यता से सहमत होंगे एवं अपने संघीय चिन्तन को भी पुष्ट करने में समर्थ बनेंगें।

कुल मिलाकर यह पुस्तक सद्भावनाओं और सम्भावनाओं को ऐसा दस्तावेज है जो संगठनात्मक गौरव गाथा से, हर्ष भरी सूचनाओं से लबरेज है। मेरा मानना है कि रचनात्मक प्रयासों का यह विवरण हमारे संघीय इतिहास बोध से हमें जोड़ने में कामयाब होगा।

इस उपक्रम में मेरा भी नगण्य सा योगदान है। जिसे पाठक यदि संज्ञान में लेंगे तो पायेंगे कि पुस्तकीय कलेवर सूचना सम्पन्न हो, मात्र किस्सागोई नहीं यह मेरा प्रयास रहा है। मेरा प्रयास यह भी रहा है कि गल्प को अल्प करके सहज स्वीकार्य बनाऊँ। **अतः उपाध्याय भगवन ने जो-जो प्रमाण और जानकारियां मुझे सौंपी उन्हें तरतीब देने में मुझे आसानी रही, बल्कि इन बातों को सहज भाव से ही प्रस्तुत कर दिया है। जिससे जोड़-तोड़ की सम्भावना या उलटफेर की घालघुसेड़ सम्भव ही नहीं है।**

इस संशोधित प्रकाशन में ऐसी अनेकों उपयोगी सूचनाएं भी सम्मिलित की गई हैं जिन पर हम गौरव कर सकते हैं। मेरे विचार में ये पुस्तक श्रमण संघीय इतिहास की जानकारी के हिसाब से उपयोगी होगी, एक प्रमाण रूप साक्ष होगी।

●●●

मनोगत

सद्भावनाओं और समभावनाओं का शिलान्यास

-रवीन्द्र मुनि (श्रमण संघीय उपाध्याय)

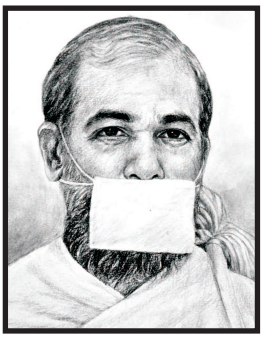

प्रस्तुत पुस्तक को **अमृत महोत्सव** प्रसंग पर पुनः प्रकाशन के पीछे मेरी जो भावना है वो यही कि **श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के गठन के बाद अब तक 74 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं लेकिन वर्तमान में ना तो वे महान आत्माएं हमारे मध्य हैं और ना वे ऐतिहासिक साक्ष्य जिनके परम पुरुषार्थ, तप-त्याग से हमारा आराध्य श्रमण संघ स्थापित हुआ। ऐसे में हमारे पास एक मात्र साहित्य ही वो संबल है, जो हमारी भावी पीढ़ी को मार्गदर्शन करा सकता है, जानकारी दे सकता है।** हमारे नवोदित साधु–साध्वी भी इसी माध्यम से श्रमण संघ का गौरव जान पाने में समर्थ होंगे, ऐसी मेरी मान्यता है। अतः बिखरे दस्तावेजों, पुस्तकों और उपलब्ध साक्षों के आधार पर ही अतीत के स्वर्णिम पृष्ठों को संजोने का ये कार्य किया जा रहा है।

बंधुओ! यह सर्वविदित है कि **भावनाओं के आरोह अवरोह से मंथन चिंतन का वेग गतिमान होता है आगे बढ़ता है। इसी गतिक्रम में हमारी धर्म धारणा का असली प्रयोजन क्या है? इस पर भी गहन चिन्तन होना चाहिये!** मैं इसी भाव से इस प्रकाशन पर चर्चा करूंगा– **"मेरा मानना है कि श्रमण**

संघ का निर्माण तब युगीन आवश्यकता को अनुभव करके किया गया था, जो अध्यात्म के क्षेत्र में एक श्वेत क्रांति सिद्ध हुआ।

वैसी ही आवश्यकता आज पुनः है। बल्कि और भी ज्यादा है।

क्योंकि जहां चेतना जीवंत रहती है, वहां कालक्रम भले ही व्यवधान उपस्थित कर लें सद्भावनाएं और सम्भावनाएं मरती नहीं। समय उन्हें जितना दबाता है वे उतनी ही ताकत से उठ खड़ी होती हैं। वैसे भी ये एक समाजशास्त्रीय प्रक्रिया है जिसमें कई कारक काम करते हैं लेकिन इसके शुभ परिणाम तभी सामने आते हैं जब उत्तम योजकों की टीम प्रयास करती है। ऐसे योजक संख्या में पहले अत्यअल्प होते हैं! मगर उनकी प्रखर दृष्टि और श्रद्धा भरा जन सहयोग जब एकाकार हो जाता हैं तब प्रयास रंग लाते हैं और युगान्तरकारी स्थापनाएं बाधाओं की छाती चीर कर खड़ी हो जाती हैं। यही इतिवृत प्रस्तुत पुस्तक की विषय वस्तु है।

ये सब कैसे कैसे हुआ? किस किसका इसमें सहयोग मिला, कहां कहां आयोजन हुए, उनमें कैसे प्रगति हुई? ये सारा विवरण प्राप्त तथ्यों के आधार पर इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। **इस पर भी हमारा कोई दावा नहीं है कि यही सत्य है, क्योंकि जितना देखा, जाना और पढ़ा है, उससे ज्यादा शायद शेष रह गया हो। मगर यह भी सही है कि आज जो साक्ष्य उपलब्ध हैं उसके आधार पर ये विवरण पूर्ण है लगभग सत्य है। अतः निष्कर्षात्मक दृष्टि डालने के पूर्व जो परिस्थितियां और पृष्ठभूमि है, उसे पहले देख पढ़ लें और सकारात्मक पक्ष को श्रद्धा सहित स्वीकार करें!**

बंधुओं! यहां मैं पुनः दोहराऊंगा कि **मानवीय चेतना कभी भी एक जैसी नहीं रहती, वहीं कोई भी संघ व समाज ऐसा नहीं है, जिसका उत्थान या पतन न हुआ हो। लेकिन कोई भी संघ, कोई भी समाज संगठित और सुव्यवस्थित हुए बिना चिरकाल तक जीवित भी नहीं रह सकता। बिखरा हुआ संघ या बिखरे हुए व्यक्ति कभी शक्तिशाली नहीं बन पाते। समाज में कर्तृत्वशक्ति, कार्यक्षमता, साधना में तेजस्विता, मन में मजबूती, स्वाभाविक सामर्थ्य सिद्धि तभी आ सकती है, जब ईकाईयां अलग-अलग न रहकर संघ में साथ-साथ आबद्ध होकर एक स्वर, एक आवाज में समर्पित होकर काम करें।**

❖ श्रमणों का व्यवहार और युग प्रवाह

स्थानकवासी जैन श्रमणों के संगठन में भी इसी संगठन भाव ने कार्य किया है ऐसा विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है। क्योंकि यह तो स्वीकार करना ही होगा कि एक समय था जब श्रमणों का संगठन बिखरा-बिखरा, अनेक टुकड़ों में बंटा हुआ एवं अपने-अपने व्यक्तिगत घेरों में बंद, अपनी-अपनी प्रतिष्ठा और पदाकांक्षा से घिरा हुआ था। ये अलग-अलग सम्प्रदायों के अलग अलग स्वरूप में बंटा रहना हमारी धर्म परम्परा और स्थानकवासी साधना पद्धति के लिए हितकारी होने के बजाय अहितकारी, राग–द्वेषवर्द्धक, कषायपोषक एवं संयम–विघातक ही सिद्ध हो रहा था। ये अनुभव सबका था, जिसे ध्यान में रखकर ही सामाजिक संगठनों ने प्रयास किए जो अंततः सफल हुए और श्रमण संघ बन गया जो आज भी हमारी धर्म प्रेरणा का पुंज है।

जैन इतिहास पढ़ने से ज्ञात होता है कि – एक वो कालखण्ड भी था, जब जैन श्रमणों की **जिनकल्पी** और **स्थविरकल्पी** दोनों शाखाओं–साधनाओं के प्रतिनिधि पुरुषार्थी पृथक–पृथक रहकर भी एक दूसरे के प्रति

आदरभाव रखते थे। एक–दूसरे की साधना पर छींटाकशी या स्वयं द्वारा अंगीकृत साधना के प्रति ममत्व और दूसरे द्वारा अंगीकृत साधना के प्रति द्वेष, घृणा और नफरत की भावना नहीं रखते थे।

फिर समय ने पलटा खाया। इतिहास का चक्र घूमा। श्रद्धा, मान्यता और प्ररूपणा में अन्तर आने लगा। आचार–विचार में अन्तर से खाइयाँ चौड़ी होने लगी। भगवान महावीर के शासन में पहले पहले **श्वेताम्बर और दिगम्बर** नामक दो बड़े भेद हो गए और इन दोनों भेदों में भी फिर कई सम्प्रदाय–उपसम्प्रदाय, संघाटक और उपसंघाटक होते चले गये। प्रत्येक गुट या वर्ग (संघाटक) को अपने– अपने का अहंकार और अपना, अपनों का ही ममत्व हो गया।

इसी क्रम में एक समय श्वेताम्बर सम्प्रदाय में ही स्थानकवासी जैन परम्परा का उदय हुआ। जो सरल भी है तो आडम्बरहीन है, आत्मवादी है, हर प्रकार की जड़ता को स्वीकार नहीं करती। अतः सर्वप्रिय भी कही जा सकती है।

❖ स्थानकवासी आम्नाय के उद्भव का कारण

स्थानकवासी सम्प्रदाय के उद्भव में, जहां तक हमारा जैन इतिहास संबंधी अध्ययन है, दो उद्देश्य ही मुख्य रहे। पहला सत्य की खोज और धर्म के निराडम्बर आचरण का प्रचार। इस सम्प्रदाय की जड़ों में तप, त्याग, संयम एवं शुद्ध धर्माचरण का सिंचन ही प्रधान रहा। महान त्यागी एवं प्रतिभाशाली संत-साध्वी मंडल ने इस परम्परा को अपने प्रयासों पुरुषार्थो से खूब सजाया संवारा।

इस संदर्भ में मैं स्थानकवासियों के लिए प्रयुक्त शब्द 'ढूंढ़िया' को, 'सत्य को ढूंढने वालों' की संज्ञा में ही स्वीकार करता हूँ, जो शताधिक बार सिद्ध भी हुआ और समय के साथ सर्वत्र स्वीकृति भी प्राप्त करता गया है।

❖ श्रमण-समाज की दशा दिशा में आया अंतर

कालक्रम से श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन परम्परा में भी अनेक विकृतियां आयी। **क्रियाकाण्डों की शुष्कता, आग्रहवृत्ति या एकान्तदृष्टि से इसमें दरारें पैदा होनी शुरु हो गई।** इसी प्रवृत्ति से एक–एक एक–एक करते–करते बाइस और यहां तक कि बत्तीस उपसम्प्रदायों में यह परम्परा बंट गयी। गुजरात, काठियावाड़, कच्छ, मारवाड़, मेवाड़, मालवा, ढूंढाड़, गौडवाड़, पंजाब, बांगर, खादर, थली आदि प्रदेशों में अपने–अपने प्रतिनिधियों का एक ही प्रदेश में अपना–अपना टोला बनाकर (साधु–साध्वियों) का विचरण होने लगा। एक आचार, एक विचार भी कई घड़ों में बटा रहा।

इस तरह परम्पराओं, मान्यताओं और प्ररूपणाओं में कुछ न कुछ भिन्नता भी आने लगी। **विसंवाद इतना बढ़ा कि श्रावकीय श्रद्धा संकट में पड़ गई। जगह-जगह से ये आवाज उठने लगी कि एक धर्मशास्त्र और एक प्रणेता होने के बाद भी एक साथ एक मंच पर व्याख्यानादि क्यों नहीं? एक स्थान में निवास या सहभोजन क्यों नहीं? इन सब विघटनों और विभेदों का मूल कारण क्या है? क्या ये सब विभेद संयम की वृद्धि एवं दशविध श्रमण धर्म के आचरण में सहायक है? या ये कार्य केवल राग-द्वेष एवं कषायों की आग भड़काने वाले हैं? क्या इन बिखरी हुई कड़ियों को जोड़ने का कोई उपाय नहीं है? क्या बिखरे और मनोभेद के शिकार इन उपसम्प्रदायों के एकीकरण, विलीनीकरण या समन्वयीकरण का कोई तरीका नहीं है?** ये प्रश्न उठे तो इस पर निरंतर चर्चा होने लगी, बर्फ पिघलने लगी, क्षेत्रों में सम्मेलन आयोजित होने लगे मगर इस चेतना को चमकाने के लिए और कई फेक्टर में काम होना बाकी था। प्रकृति भी परिवर्तन चाहने लगी थी। अतः दो काम एक कालखण्ड में और हुए, मुम्बई आदि क्षेत्रों में

संघ एकता के लिए मुनि श्री मिश्रीमल जी म. 'मेवाड़ी' ने आमरण अनशन प्रारंभ किया तो उत्तर भारत में पत्री विवाद की हिंसा चिन्ता का विषय बन गई।

इस परिस्थिति में जैन कॉन्फ्रेंस के तत्कालीन नैतृत्व ने पहल प्रारंभ की, मिश्रीमल जी म. को मना लिया गया तो प्रधानाचार्य पूज्य श्री सोहनलाल जी म.सा. की दो शर्तानुसार प्रथम वृहद साधु सम्मेलन की तैयारी होना शुरु हुई, इस तरह संशय से समाधान का रास्ता खुल गया।

❖ प्रश्न चुभने लगे तो एकता का महत्व समझ आया

जैसा मैंने पहले कहा – अनेक चुभते प्रश्नों ने एकता के प्रयासों को बल दिया। संघ समाज में अनेकों ऐसे पीड़ाजन्य प्रश्न तब उभर रहे थे। संघ परिस्थितियों के भंवर में फंसा हुआ था, तो प्रयास होने लगे। **एक स्वर से यह आग्रह महामानवों से किया जाने लगा कि क्या अनेकता के विविध रंगों से चित्रित स्थानकवासी जैन परम्परा के इतिहास को पारस्परिक द्वेष, अहिष्णुता मनोमालिन्य, कटुता और क्षोभ के क्षणों से उबार कर स्वर्णिम युग की तरफ लौटाया जा सकता है कि नहीं?** और जब ऐसे प्रयासों ने गति पकड़ी तो ये माना जाने लगा कि विभिन्न उप–सम्प्रदायों के मुनिपुंगव अपने हठाग्रहों, मताग्रहों, एकान्त मान्यताओं, पारस्परिक संघर्षों एवं साम्प्रदायिक झगड़ों को बढ़ावा न देकर एक मंच पर आ सकते हैं? और अपने अपने पूर्वाग्रह की पकड़ को छोड़ सकते हैं? अपने मूल सम्प्रदाय और उसकी समस्याओं को ये साधु–साध्वी हल कर सकते हैं? **जन सामान्य का भी यही आग्रह था कि अब ये विवाद विग्रह समाज में नहीं होने चाहिये। संघ में सद्भावना का शिलान्यास होना चाहिये। इस विघटनकारी प्रवृत्ति के कारण ही स्थानकवासी सम्प्रदाय की तेजस्विता, शक्ति,**

कार्यक्षमता एवं एकरूपता समाप्त हो रही है। छिन्न–भिन्न आम्नाय अपनी शक्ति खो रहा है। जरा जरा से मतभेद भी असह्य हो उठे है। **जैन कॉन्फ्रेंस रूपी मातृ संगठन ने इसे अनुभव किया और समाधान की दिशा में प्रयास किए। जो तब भी सराहनीय थे और आज भी अनुमोदनीय है।**

❖ श्रमण समाज में भी चला आत्मचिन्तन

परिस्थिति के दबाव में सहिष्णु आत्मार्थी साधु-साध्वी एवं कतिपय समाजसेवी जो जैन समाज का अभ्युदय देखने के अभिलाषी थे साथ ही उदारवादी श्रावकों ने स्थानकवासी जैन समाज की इस विषम परिस्थिति को देखकर विचार किया।

इससे संतों का भी अभिमत बना कि अगर मतभेद, मनोभेद एवं असहिष्णुता की यह आग शीघ्र नहीं बुझाई गई तो निकट भविष्य में ही स्थानकवासी सम्प्रदाय का अस्तित्व खतरे में पड़ने का अंदेशा है। इस सम्प्रदाय का रहा-सहा गौरव भी लुप्त होते देर नहीं लगेगी।

इस विचार ने एक आन्दोलन का रूप ले लिया। सर्वत्र प्रयास चल पड़े। जनमानस तो अनुकूल था ही अतः प्रयास सफल होते दीखने लगे इसी घटनाक्रम को संजोने का प्रयास इस पुस्तक में किया गया है।

❖ इस प्रकाशन की उपयोगिता क्या है?

बंधुओ! जो अपने अतीत से जुड़ा नहीं रहता, वो वर्तमान में तो भटकता ही है अपना भविष्य भी बिगाड़ बैठता है। अतः हमें अपनी धर्म परम्परा एवं सामाजिक आध्यात्मिक उत्कर्ष के प्रति सजग रहना चाहिये। इससे हमारी सामाजिक पहचान पुख्ता होती है। प्रेरणा एवं पुरुषार्थ के लिए भी अपने इतिहास को अवश्य पढ़ना चाहिये। ऐसा मेरा विशेष आग्रह है! इस आग्रह को बल प्रदान करने के लिए ही यह प्रकाशन किया जा रहा है।

मेरा श्रमण संघ में सहभागी एवं समर्पित समस्त यथायोग्य सम्मान श्रद्धा के पात्र महात्माओं और महासतियांजी से अनुरोध है कि वे श्रमण संघ के अंग ही नहीं कर्णधार भी है! कोई संघ को जयवंत बनाने में पतवार है तो कोई खेवनहार है। ये संघ हमारी सबकी सामूहिक जिम्मेदारी का संघ है। हम इसके निर्माण विकास और इतिहास की जानकारी जन जन को दें।

हम स्वयं भी अपनी मर्यादाओं और अनुशासन का पालन करें एवं **इस संघ के एक विधान (समाचारी) एक प्रधान (एक आचार्य) और एक समाधान (संगठन) की महत्ता को स्वीकार कर संघ के प्रति समर्पित रहें। तभी हम 'श्रमण संघ की संगठनात्मक पहचान' पर गर्व कर सकेंगे। हम यह न भूलें कि अन्य आध्यात्मिक संघ या संगठन भले ही अपनी कोई खास विशेषताएं लिए हुए हों लेकिन श्रमण संघ में जैसी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है वैसी लोकतांत्रिक समानाधिकार वाली व्यवस्था और उदारता कहीं ओर नहीं है।**

हमारा संघ जिस तरह विशाल है। वैसे ही हमारी विचारधारा में भी उदारता है। लेकिन मुझे यह कहते हुए कोई. संकोच नहीं है कि हम संघ का गुणगान करने में संकोची ही नहीं महाकंजूस है।

मेरा हार्दिक निवेदन है कि यदि हम हमारे संघ में गुणों को ढूंढ़ेंगे और उन्हें अनुभव करके संघ भक्ति में जुटेंगे तो हमें कदम-कदम पर अच्छाई ही अच्छाई नजर आने लगेगी। आवश्यकता है तो सिर्फ इतनी की हम गुणग्राही बनें और अपने आचार-विचार में सतत सतर्क रहें। हम ध्यान दें कि हमारा समाज ही हमारी प्रवृत्तियों के दर्पण में देखकर हमारा अनुशरण करता है। हम यदि चूके तो यह लघु चूक भी परिणामों में भारी अन्तर ले आयेगी।

हम युवाजनों के बीच श्रमण संघ की विशेषताओं पर चर्चा करें। फिर उनकी जिज्ञासाओं के समाधान हेतु वात्सल्य भाव से उन्हें सुनें। युवाओं को अपने विचार स्पष्ट रूप से रखने दें और उनको समाधान दें! तब ही युवाओं को हम अपना अपनत्व भरा, अनुशासित और विनयी बना पाएंगे।

हमें गर्व होना चाहिए कि विगत आठवें दशक के बाद भी श्रमण संघ अपनी मर्यादा, अनुशासन और संगठन को लेकर चार चार यशोधनी पट्टधरों के नैतृत्व में आगे बढ़ा है, और आज भी बढ़ रहा है।

हमारी सोच एक है। हमारा एक समन्वयी कार्यक्रम है। हमारा एक उदारवादी संगठन है। तप त्याग सेवा और समन्वय से हमने अपना संघ बनाया है। चलाया है और यशस्वी किया है।

इस संघ की सद्भावनाएं ही हमारी वो पूंजी है जिसकी आधारशिला पर हमने युगीन सम्भावनाओं का शिलान्यास किया है। इसी के आधार पर हम हर युगीन चुनौती को सदाशय, भरा जवाब दे सकते हैं।

बंधुओ! इस संशोधित परिवर्धित संस्करण में जो सन् 2010 के आसपास पहले प्रकाशित किया गया था। कुछ गहन संदर्भ और संस्मरण भी जोड़े है जो उन युगपुरुषों के प्रति श्रद्धा से भरे हैं तो कुछ ऐसे है जो अनुकरणीय प्रेरणा देने वाले हैं।

अतः इतिवृत्त विवरण के साथ ही इनको पढ़े और अपना ज्ञानवर्धन करें! ये स्वाध्याय प्रेम भाव शाश्वत रहे तो मैं अपना श्रम सार्थक समझेगा। ये सदाशय, ये सद्भावना यों ही धनीभूत होकर आध्यात्मिक आकाश का ध्रुवतारा बनी रहे। इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ।

●●●

प्रस्तावना स्वरूप अमित-अभिमत

सतत शाश्वत प्रगतिमान श्रमण संघ

डॉ. अमितराय जैन (राष्ट्रीय महामंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली)

श्रमण संघ का नाम सुनते ही प्रत्येक श्रमणोपासक स्थानकवासी जैन श्रावक श्राविका का मस्तक श्रद्धा से झुक जाता है। वहीं श्रमणसंघ की निर्माण प्रक्रिया में जैन कॉन्फ्रेंस के प्रयासों से हमारे आदर्श त्यागी वर्ग द्वारा जो त्याग श्रम और बलिदान किया गया है वो गौरव का विषय है। जिसे सुनकर, पढ़कर, जानकर हमारा मस्तक गौरव से ऊंचा हो जाता है। **आज श्रमणसंघ आधी सदी से ऊपर का हो गया है और जिस तरह आन-बान और शान से चार-चार आचार्यों के द्वारा इसे संचालित किया गया है वो अपने आपमें गौरव का विषय है। वास्तव में श्रमणसंघ का अखिल भारतीय स्तर पर ऐतिहासिक संगठन होना ही अपने आपमें अद्भुत है।** सामूहिक शक्ति लगाकर **एक संघ, एक आचार्य और एक समाचारी** का बनना ही अपने आप में दुर्लभ है, प्रशंसनीय है।

लेकिन इस गौरव गाथा को वर्तमान युवा पीढ़ी और नवोदित साधु–साध्वी तक कैसे पहुंचाया जाए? यह प्रश्न मन में कौंधता रहता था। **संघरत्न उपाध्याय श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज भी इस दिशा में सक्रीय रहे हैं। उसी का परिणाम है यह पुस्तक।** जिसका नाम है **"सद्भावनाओं का शिलान्यास श्रमणसंघ।"** यह पुस्तक संक्षिप्त है, परिचयात्मक है लेकिन विस्तृत जैन इतिहास को छूने वाली भी है। जैसे जिनशासन में जो–जो भी वाचनाएं विश्रुत हैं उनका उल्लेख पर्याप्त ढ़ंग से इस

पुष्तक में हुआ है। वहीं संघ–विच्छेदन, संघीय भावनाओं में आया भूचाल और वैचारिक संघर्ष की बौद्धिक त्रासदियों का भी उल्लेख इसमें किया गया है। सबसे मजेदार बात यही है कि चाहे परिस्थितियां विपरीत रहीं, सामान्य व्यवहार में भी अन्तर रहा मगर एकता और समन्वय की यह संक्रांति कभी होगी ही नहीं ऐसा नहीं हुआ। प्रयास तो पत्थर से भी पानी निकाल ही लेते हैं।

मेरे परिवार के ही पुज्य दादाजी श्रीमान न्यादरमल जी जैन सन् 1933 में उत्तर भारतीय संयुक्त प्रांतीय कमेटी की ओर से अजमेर के प्रथम सम्मेलन के अग्रणी प्रतिनिधि थे। उन्होंने भी अपने संस्मरण में जो कुछ भी लिखा है, वो अपने आपमें एक साक्षात्कार है, एक इतिहास है। जिसका उल्लेख कभी समय आने पर मैं विस्तार से करूँगा।

प्रस्तुत पुस्तक अनेक वर्षों बाद अपनी भारी मांग एवं सुझावों के कारण से संशोधित परिवर्धित कलेवर में पुनः प्रकाशित हो रही है। इस बीच पूना के बाद इन्दौर में भी साधु–सम्मेलन हो चुका है एवं भावी आचार्य के रूप में युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी की भी पद स्थापना हो चुकी है अतः अतीत से आज तक की खंगाल–पड़ताल आवश्यक थी। इसमें कई पुण्यात्माओं के संस्मरण प्रस्तुत करके एक और प्रयोग सफलता से किया गया है। मेरी राय में यह प्रयोग रोचक भी है तो अपने आपमें पुण्य स्मरण भी। **मैं आशान्वित हूँ कि हमारी नवोदयी पीढ़ी को जानकारी देने में यह पुस्तक उपयोगी होगी।**

अतः ज्यादा न कहते हुए प्रस्तुत पुस्तक के बारे में मैं यही कहूंगा कि **"समकालीन परिस्थितियां और प्रयासों से जो कुछ भी सकारात्मक निकला उसे उपाध्याय श्रीजी ने अत्यंत निष्पक्ष दृष्टि से प्रस्तुत कर दिया है।"** इन्हीं भावनाओं के साथ प्रकाशन में जुटे सभी महानुभावों का मैं हृदय से स्वागत करता हूँ, अभिनन्दन करता हूँ।

●●●

जिनशासन : अर्थ एवं महत्व

- प्रातःस्मरणीय वीतराग देव तीर्थंकर परमात्मा की वाणी के अनुसार प्रणीत धर्मसंघ।
- परम पूज्य प्रातः स्मरणीय गणधर भगवंतों द्वारा जिनवाणी का संग्रह एवं पुर्नप्रसारण।
- जिनशासन के प्रबंधक-मार्गदर्शक आचार्य भगवंत द्वारा संचालित-निर्देशित धर्म संघ।
- जिनवाणी के व्याख्याकार-उपदेशक-संकलक, शोधक उपाध्याय भगवन द्वारा संयोजित शास्त्र एवं सूत्रों पर आधारित धर्म संघ।
- त्यागात्मा महापुरुषों के त्याग-तप-बलिदान एवं ज्ञान-ध्यान से शोभायमान धर्म संघ।
- श्रद्धा सम्पन्न, शासन समर्पित जिनवाणी के प्रति आस्थावान श्रावक-श्राविकाओं के योगदान से निर्मित धर्म संघ।
- असंख्य धर्मप्रेरित अहिंसा प्रेमी जनों द्वारा अनुमोदित धर्म संघ।
- जिनशासन एवं श्रमण संघ के अन्योनाश्रित संबंधों पर आधारित नैतिक, धार्मिक एवं सामाजिक संगठना।
- दान-शील-तप-ज्ञान-दर्शन और चारित्र पर आधारित भावभूमि लिये नित्य संचालित चतुर्विद संघ संगठना।
- अपने अमूल्य जीवन को तप-त्याग और धर्म-प्रचार के लिये समर्पित करने वाली महान आत्माओं का ऐसा अद्‌भुत समूह जो भौतिकता को चुनौती देते हुए सदैव आदर्शों के हेतु रक्षा-पंक्ति बनाकर चलने वाला धर्म संघ।
- असंख्य उत्तम उदाहरण और प्रेरित करने वाले महान चरित्रों से जगमगाता ऐसा संगठन, जो सांसारिक विघ्न-बाधाओं पर अपनी ओर से मार्गदर्शन एवं समाधान देने वाला धर्म संघ।

इतिहास के आलोक में

सतत शाश्वत श्रमण संघ

जिनशासन का प्रत्यक्ष प्रबंधन

वीर प्रभु के जिनशासन की चर्या-चर्चा सुखदाई,
श्रमण संघ शाश्वत है, सतत है, ये सुकर्म की अंगडाई॥
यही एक कल्याण मार्ग है, ये ही मुक्ति पथ लो जाने,
कोटि-कोटि भव्यातम की, मेहनत जहां रंग लाई॥

अध्यात्म जगत का आराध्य संगठन
'श्रमण संघ'
(अतीत से आज तक)

जिनशासन में 'श्रमण' शब्द अतिशयी महानता लिए हुए है क्योंकि प्रातःस्मरणीय तीर्थंकर पद का भी प्रारंभिक चरण 'श्रमण' होना ही है। प्रत्येक अवसर्पिणी के पूज्यपाद तीर्थंकर चाहे चक्रवर्ती रहें हो या नर-नरेश, वासुदेव रहे हों या अन्य शलाका पुरुष, केवलज्ञानी होने से पूर्व 'श्रमण' रूप में दीक्षा अंगीकार करते हैं। यही महान साधक जब संत से अरिहंत होने का मार्ग चुनते हैं, तो श्रद्धेय श्रमण जीवन के कंटकाकीर्ण मार्ग पर बाईस परीषह का अग्निस्नान करते हुए ही केवल्यज्ञान सम्पन्न होते हैं। इसी पुरुषार्थ की फलश्रुति है 'चतुर्विद संघ' का निर्माण। जो तीर्थंकर प्रणीत मार्गानुसारी से संचालित संवर्धित होता है।

प्रामाणिक साक्ष है कि भगवान महावीर स्वयं **"णमो संघस्स"** कहते हुए दीक्षित हुए थे। ज्ञातव्य है कि इसी चतुर्विद संघ में **युगप्रधान आचार्य** भी होते रहे हैं और अनंत असीम काल तक होते रहेंगे। **अतः जब-जब भी वाचनाएं हुई हैं, तीर्थंकर प्रणीत आप्त वचन रूप आगमों का संरक्षण संवर्धन हुआ है। इसी पावन परम्परा का निर्वाह करते हुए "आत्मार्थी साधु सम्मेलन" भी होते रहे हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे। इन सभी सम्मेलनों का एकमात्र लक्ष्य है, परम्परा संरक्षण, संवाद और संगठन की अभिवृद्धि करते हुए भावी पीढ़ी को संबोध संदेश से सूत्रबद्ध करना।**

❖ भगवान महावीर की पट्टधर परम्परा और युगप्रधान आचार्य

अनादि निधन आत्मा, तीर्थंकर पद धारक परमात्माओं के अभाव में उनके द्वारा प्रणीत प्रेरक जिनशासन की बागड़ोर

पूज्यपाद **गणधर भगवंत** सम्भालते हैं। वे ही संघ व्यवस्था के अभिभावक होते हैं। **इन्हीं महान आत्माओं में से अपने छत्तीस गुण एवं प्रभावी व्यक्तित्व से 'युगप्रधान' पद का भी सृजन हुआ है। गणधरों के पश्चात् उन्हीं के शिष्य-प्रशिष्य ये दायित्व भरा-उत्तराधिकार प्राप्त करते हैं। ऐसे श्रमण संघ नेतृत्व-कर्त्ताओं को ही "युगप्रधान आचार्य" कहा जाता है।**

जिस दिन भगवान् महावीर का निर्वाण हुआ, उस दिन इन्द्रभूति गौतम को प्रभु ने **'देवशर्मा'** ब्राह्मण को प्रतिबोध देने के लिए भेज दिया था। उस रात्रि में गौतम गणधर प्रभु के पास नहीं लौट सके। जब उन्होंने प्रभु के निर्वाण की बात सुनी, तब वे उदासीन हो गये। स्नेह विव्हलता के कारण उनके मन में आर्त्तभावना उत्पन्न हो गई। भक्ति के आवेग में वे प्रभु को उपालम्भ देने लगे! फिर उन्होंने भावधारा का वेग मोड़ा और उसी रात्रि के अंत में सूर्योदय के लगभग अक्षय ज्ञान ज्योति प्राप्त कर ली। **पूज्यपाद श्री गणधर गौतम केवल्यज्ञानी तो हो गए मगर आचार्य पद वाहक नहीं होने से युगप्रधान नहीं कहलाएं।**

❖ गणधर गौतम स्वामी का संक्षिप्त जीवनवृत्त

प्रातःस्मरणीय गौतम गणधर मगध देश के 'गोबर' गांव के निवासी थे। पिता 'वसुभूति' और माता 'पृथ्वी' थी। पिता का गौत्र गौतम था। आप एक समय वेदों के पारगामी विद्वान थे। **लेकिन "जीव के अस्तित्व" के विषय में शंका का समाधान पाकर, भगवान् महावीर के पास दीक्षित हुए। भगवान् के निर्वाण के पश्चात् गौतम गणधर के तत्काल सर्वज्ञ हो जाने के कारण, उन्हें आचार्य पद पर प्रतिष्ठित नहीं किया गया,** क्योंकि सर्वज्ञ तो भगवान् **अरिहंत** हैं — आचार्य नहीं। अतः गौतम केवली–अवस्था में बारह वर्ष तक विद्यमान रहे। आर्य इन्द्रभूति गौतम 50 वर्ष की वय में दीक्षित हुए, 30 वर्ष तक छद्मस्थ श्रमण चारित्र पर्याय में रहे और 12 वर्ष केवली–पर्याय में रहे। **वीर निर्वाण सं. 12 में, 92 वर्ष की आयु में पावानगरी में ही परिनिर्वाण को प्राप्त**

हुए। धन्य है गौतम गणधर जिन्होंने गणिपीटक स्वरूप में आप्तवाणी को स्थिर स्थापित रखा। जो आज हमारी धरोहर है। ये आपका महान उपकार है।

❖ प्रथम युगप्रधान प्रथमाचार्य पू. श्री सुधर्मा स्वामी

श्रमण भगवान महावीर के निर्वाण के समय प्रथम आचार्य और पंचम गणधर पूज्य श्री सुधर्मा स्वामी ही विद्यमान थे। नव गणधर भगवान की विद्यमानता में ही अनशन करके अपने-अपने गणों को आर्य सुधर्मा (गणधर) को सौंपकर संलेखना पूर्वक निर्वाण को प्राप्त हो गये थे। जबकि प्रथम गणधर सर्वज्ञ हो गये थे। अतः आर्य सुधर्मा स्वामी महावीर शासन के प्रथम युगप्रधान स्थापित हुए। भगवान ने दीक्षा के तत्काल बाद श्रुत की अनुज्ञा गौतम गणधर को और गण की अनुज्ञा सुधर्मा गणधर को प्रदान की थी। ये था संघ व्यवस्थापन।

पूज्य आचार्य सुधर्मा **'कोल्लाग'** सन्निवेश के निवासी थे। अग्निवेश्यायन गौत्रीय **'धम्मिल'** ब्राह्मण आपके पिता थे और **'भद्दिला'** माता थी। आप पचास वर्ष की आयु में दीक्षित हुए थे। 42 वर्ष तक छद्मस्थ अवस्था में और 8 वर्ष केवली अवस्था में रहे। **वर्तमान श्रमण परम्परा सुधर्मा स्वामी की ही परम्परा है। आप ही श्रमण संघ के आद्य पट्टधर हैं। वीर निर्वाण सं. 20 में आर्य जम्बू को युगप्रधान आचार्य पद पर स्थापित करके, एक सौ वर्ष की पूर्णायु भोगकर, राजगृह नगर में परिनिर्वाण को प्राप्त हुए।**

आपश्री ने श्रुत संवर्धन की प्राच्य परम्परा को वर्धमान वृद्धिमान करते हुए **आचारांग** को भी शास्त्रानुसार सम्पादित किया। **ये आगम आपके ही आचार्यत्व की महान उपलब्धि है। आचारांग सूत्र के एक अध्ययन में आपने ही आर्य जम्बू स्वामी को परमात्मा महावीर के चरित्र पर जो यथातथ्य परिचय दिया उसे रचा भी, लिख भी दिया।**

❖ द्वितीय युगप्रधान आचार्य श्री जम्बू स्वामी

आचार्य श्री जम्बू का जन्म भगवान महावीर के केवल्य

पर्याय के चौदहवें वर्ष में, राजगृह के निवासी धनाढ्य श्रेष्ठि ऋषभदत्त की पत्नी धारिणी के गर्भ से हुआ था। **भगवान महावीर के निर्वाण के तत्काल बाद वे 16 वर्ष की वय में सद्य परिणीता 8 पत्नियों, उनके माता-पिताओं, अपने माता-पिता और बोधित 500 चोरों को जो चौर्य कर्म त्याग चुके थे, धर्म प्रतिबोध दिया व संघ आर्य सुधर्मा गणधर के समीप दीक्षित हुए। आर्य सुधर्मा स्वामी ने आर्य जम्बू स्वामी को राजगृह और चंपा में वीर निर्वाण प्रथम वर्ष में द्वादशांग गणिपिटक की वाचना दी। उसी द्वादशांगी का वर्तमान में प्रचलन विद्यमान है। अन्य आठ द्वादशांगियाँ तद्-तद् गणधर और उनके द्वारा पठित शिष्यों के देह-त्याग के साथ विच्छिन्न हो गई। ये श्रमण संघ के श्रुत क्षरण का दुखद अध्याय है।**

आर्य जम्बू स्वामी ने बीस वर्ष तक आर्य सुधर्मा गणधर की चरणोपासना की। भगवान् गौतम के कुछ समय बाद ही सुधर्मा स्वामी को केवल ज्ञान प्राप्त हो गया। तब तक आर्य जम्बू की वय 28 वर्ष की हो गई थी और चारित्र पर्याय के 12 वर्ष बीत चुके थे। **वे अपने गुरुदेव की विद्यमानता में ही 8 वर्ष तक संघ का कार्य सम्भालते रहे। ये सौभाग्य केवल इन्हें ही प्राप्त रहा है।**

आर्य सुधर्मा गणधर ने अपने निर्वाण से पूर्व उन्हें **युगप्रधान पद प्रदान किया** और अपने गुरुदेव भगवान महावीर के निर्वाण के कुछ काल बाद आपको भी केवलज्ञान प्रकट हो गया। केवल्य प्राप्ति के बाद आप 44 वर्षों तक अपने चरणों से भूमण्डल को अलंकृत करते हुए विचरण करते रहे। **आप वीर निर्वाण सं. 64 में आर्य प्रभव स्वामी को संघ का दायित्व देकर, सिद्धपद को प्राप्त हुए।** आपके निर्वाण के साथ ही अध्यात्म जगत की सिद्धि की बारह बातें विच्छिन्न हो गई — **1. मनःपर्यवज्ञान, 2. परमावधिज्ञान, 3. पुलाकलब्धि, 4. आहारक शरीर, 5. क्षपक श्रेणि, 6. उपशम श्रेणि, 7. जिनकल्प, 8. परिहार विशुद्ध**

चारित्र, 9. सूक्ष्म सम्पराय चारित्र, 10. यथाख्यात चारित्र, 11. केवल ज्ञान और 12. निर्वाण-गमनाभास।

इस प्रकार श्रुत आरोह–अवरोह के काल खण्ड में भी युगप्रधान आचार्य श्री जम्बू स्वामी का शासन प्रवहमान रहा।

❖ तृतीय युगप्रधान आचार्य प्रभव स्वामी

आप 30 वर्ष की वय में दीक्षित हुए। आप श्री राजकुमार थे। आप विन्ध्य–प्रदेश के जसपुर के नरेश विन्ध्य के पुत्र थे। परन्तु किसी कुयोग के कारण से चोरों के प्रमुख (पल्लीपति) हो गये थे। **आर्य जम्बू के सान्निध्य निमित्त से आपको वैराग्य प्राप्त हुआ** और उन्हीं के पास दीक्षित हो गए। आपकी चारित्र पर्यायकाल में मतभेद है। कहीं चारित्र पर्याय–काल 44 वर्ष तो कहीं 64 वर्ष दिया गया है। प्रमाण का अभाव है। लेकिन 64 वर्ष चारित्र पर्यायकाल उचित प्रतीत होता है। **ऐसी स्थिति में आपको जम्बू स्वामी के संघ शासन में दीक्षित आर्य प्रभव स्वामी स्वीकारा जाना चाहिये।** और 64 वर्ष का चारित्र पर्याय मान लेने से अन्य भ्रांति के उपस्थित होने का प्रश्न ही नहीं रहेगा। प्रमाण रूप इतिहास के अनुसार — **जिस समय आपने संघ व्यवस्था सम्भाली, उस समय आपकी काफी उम्र हो चुकी थी। लगभग 94 वर्ष की आयु थी फिर भी आपने संघ का कुशलता से संचालन किया। ग्यारह वर्ष तक संघ का नेतृत्व किया। वीर निर्वाण सं. 75 में आप स्वर्गस्थ हुए। धन्य है आपका धर्म पुरुषार्थ, भाव परिवर्तन का महान आदर्श।**

❖ चतुर्थ युगप्रधान आचार्य सिज्जंभव स्वामी या शय्यंभव स्वामी

जब आर्य प्रभव स्वामी ने अपनी आयु की समाप्ति का काल समीप जाना तब उन्होंने किसी योग्य साधु को उत्तराधिकारी नियुक्त करने का विचार किया। आर्यप्रभव का यह चिन्तन उनके युगप्रधान पद के वर्षों में हुआ, परन्तु अपने संघ में इस योग्य कोई साधु उन्हें न लगा जो संघ के भार को कुशलता से वहन कर

सके। तब उन्होंने गृहस्थों की ओर दृष्टि डाली। उन्हें ब्राह्मण **सिज्जंभव** योग्य पात्र लगे! तब आर्य प्रभव स्वामी ने साधुओं को भेजकर उन्हें बुलाया, प्रतिबोध दिया और दीक्षित किया। **आर्य सिज्जंभव ने अट्ठाईस वर्ष की वय में दीक्षा ली। ग्यारह वर्ष तक सामान्य दीक्षा-पर्याय में रहे और तेईस वर्ष तक युगप्रधान पद पर स्थित रहे। आपने अपने पुत्र मनक को लघुवय में दीक्षा दी। उनकी अल्पायु जानकर उनके लिए 'दसवेयालिय-सुत' की रचना की। दसवेयालिय सुत्त की संकलना-संकल्पना उनके साधु-पर्याय के आठवें वर्ष में वी.नि.सं. 72 में हुई। जो आज तक नवदीक्षितों के लिए श्रमणाचार शास्त्र रूप पाठ्यग्रन्थ के रूप में मान्य है।** आप श्री यशोभद्र स्वामी को अपना उत्तराधिकारी बनाकर, वीर निर्वाण सं. 98 में स्वर्गस्थ हुए। **प्राकृत नाम दसवेयालिय ही आज "श्री दशवैकालिक सूत्र" के रूप में ऐसा आप्तागम है जिसे "श्रमणों का संविधान" कहा जा सकता है। आचार्य श्री सिज्जंभव स्वामी के इस पुरुषार्थ के लिए श्रमण संघ उनका सर्वकालिक आभारी है और रहेगा।**

❖ पंचम युगप्रधान आचार्य श्री यशोभद्र स्वामी

पूज्य यशोभद्र स्वामी बाईस वर्ष की आयु में दीक्षित हुए। आपने चौदह वर्ष सामान्य मुनि पर्याय में साधना की और पचास वर्ष तक संघ का कुशल नेतृत्व किया। आपकी वृद्धावस्था में **आर्य संभूति संघ** का कार्य सम्भालते थे। आपके देहान्त के समय आर्य संभूति की भी आयु 82 वर्ष की थी। अतः आपने दो उत्तराधिकारी नियुक्त किये — **1. आर्य संभूति और 2. आर्य भद्रबाहु। प्रारंभ से अब तक आचार्य श्री सुधर्मा स्वामी के गण में एक ही अधिपति हुआ करते थे लेकिन यकायक दो युगप्रधान मान्य हो गए। जब तक एक ही स्थविर युगप्रधान विद्यमान रहे तब तक उनकी ही आज्ञा मान्य थी और यह मान्य निर्णय था कि उनके देवलोकगमन के पश्चात् ही दूसरे युगप्रधान का शासन प्रारम्भ हो।**

❖ हमारा दुर्भाग्य श्रुत क्षरण

यही कारण है कि लोकागच्छ या स्थानकवासी परम्परा की विभिन्न पट्टावलियों में प्रायः इनसे भिन्न-भिन्न नाम पाए जाते हैं। इसमें विलुप्त इतिहास का होना, स्मृतिगत क्षीणता आदि प्रमुख कारण है। जबकि अन्य पट्टावलियों में युगप्रधान युगल को एक ही माना जाता है। चाहे जो हो युगप्रधान आचार्य के रूप में स्वामी यशोभद्र का योगदान भी महत्वपूर्ण रहा है। आपश्री का वीर निर्वाण सं. 148 में देवलोकगमन हुआ। ये सर्वमान्य है।

❖ षष्ठम युगप्रधान आचार्य श्री संभूति स्वामी

ये प्रधानाचार्य अपने समय के मान्य युगपुरुष थे। **संभूति स्वामी राजवंश की छाया में रहकर भी राजर्षि थे।** योगध्यान साधना सम्पन्न होकर आपने बयालीस वर्ष की अवस्था में संयम स्वीकार किया। चालीस वर्ष तक सामान्य व्रत पर्याय में रहे और **आठ वर्ष तक युगप्रधान रहे।** आपके समय में मगधराज नन्द पाटलीपुत्र में शासन करता था। उसका मंत्री सकडाल था। वह जैन धर्मानुयायी था। उसका राजनीतिक कारणों से अपने लघुपुत्र श्रीयक के हाथों से वध होने पर, उसके बड़े पुत्र स्थूलिभद्र को वैराग्य हो गया और वीर निर्वाण सं. 146 में वे संभूति स्वामी के पास दीक्षित हो गये। जो वीर निर्वाण सं. 156 में स्वर्गस्थ हो गये। **आपके ही महायशस्वी शिष्य स्थूलिभद्र स्वामी का नाम कामजयी होने के कारण अजर अमर नाम है।**

❖ महाप्राण ध्यान साधना सिद्ध श्रुतकेवली आचार्य श्री भद्रबाहु स्वामी (प्रथम)

जिनशासन में ध्यान साधना विधि का प्रमुख स्थान है। जिसके विख्यात साधक के रूप में आचार्य श्री भद्रबाहू स्वामी (प्रथम) का नाम अग्रणी है। आपने संभूति स्वामी को संघ संचालन में बड़ा सहयोग किया। वीर संवत् 156 में आपका आचार्य पद युगप्रधान के रूप में प्रारंभ हुआ। चौदह वर्ष तक आपने शासन संचालन किया।

आर्य भद्रबाहु स्वामी के समय में ही भयंकर दुष्काल पड़ा था। उस समय दुष्काल के कारण साधुओं को बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। स्वाध्याय नहीं कर पाने के कारण श्रुत क्षरण हुआ और शनैः शनै लुप्त होने लगा। **मुनि संघ ने यह स्थिति देखकर, योग्य समय में पाटलीपुत्र में एकत्रित होकर, श्रुत को व्यवस्थित करने का प्रयत्न किया गया। इस प्रथम वाचना में मुनियों ने ग्यारह अंगों को यथातथ्य व्यवस्थित कर लिया।** किन्तु बारहवां अंग **'दृष्टिवाद'** विस्मृत हो गया। श्रुत केवली भद्रबाहु स्वामी **'महाप्राण' नामक ध्यान की साधना नेपाल में स्थित रहकर कर रहे थे।** मुनिसंघ द्वारा आग्रह होने पर, उन्होंने वहीं रहकर, मर्यादित काल में **दृष्टिवाद** पढ़ाना स्वीकार किया। **पांच सौ मुनि उनसे बारहवां अंग पढ़ने के लिए गए। उनमें से एक स्थूलिभद्र जी ही स्थिर होकर 10 पूर्व तक पढ़ सके।** स्थूलिभद्र जी की चमत्कार दिखाने की यत्किंचित भूल के कारण भद्रबाहु स्वामी ने उन्हें आगे पढ़ाने से इंकार कर दिया। तब चतुर्विद संघ के अत्याग्रह और स्थूलिभद्र जी के बारम्बार विनय से उन्होंने आगे के चार पूर्व मूल मात्र, अन्य को नहीं पढ़ाने की शर्त के साथ पढ़ाना स्वीकार किया। यहां से ही 'दृष्टिवाद' नामक 12वां अंग लुप्त हो गया।

आर्य भद्रबाहु प्रथम स्वामी वीर नि.सं. 170 में स्वर्गस्थ हो गये। आप अन्तिम श्रुतकेवली (चौदह पूर्वधर) थे। आपके देहान्त के साथ ही 11वें, 12वें, 13वें और 14वें पूर्व का रहस्य विच्छिन्न हो गया। आपके बाद आर्य स्थूलिभद्र जी युगप्रधान हुए।

❖ भद्रबाहु स्वामी के बाद के युगप्रधान

वीर निर्वाण सं. **170** से **1000** के बीच में निम्नलिखित युगप्रधान आचार्य हुए हैं ऐसा माना जाता है—

● **आर्य स्थूलिभद्र स्वामी, युगप्रधान वी.सं. 170 से 215,** ● **आर्य महागिरि स्वामी, युगप्रधान काल वी.सं. 215 से 245,** ● **आर्य सुहस्ती स्वामी, युगप्रधान काल वी.सं. 246 से 291,** ●

आर्य सुस्थित स्वामी, युगप्रधान काल वी.सं. 291 से, ● आर्य सुप्रतिबद्ध स्वामी, युगप्रधान काल वी.सं. 291 से, ● आर्य इन्द्रदिन्न, ● आर्य दिन्नसूरि, ● आर्य सिंहगिरि, ● श्री वज्र स्वामी वी.सं. 548 से 584, ● श्री वज्रसेनसूरि वी.सं. 584 से 620, ● श्री चन्द्रसूरि, ● श्री समन्तभद्र, ● श्री वृद्धदेवसूरि, ● श्री प्रद्योतनसूरि, ● श्री मानदेवसूरि, ● श्री मानतुंगसूरि, ● श्री वीर सूरि, ● श्री जयदेव सूरि, ● श्री देवानंद सूरि, ● श्री विक्रम सूरि, ● श्री नरसिंह सूरि, ● श्री समुद्र सूरि, ● श्री मानदेव सूरि। इन सभी महान आत्माओं के निश्राय में हजारों श्रमण–श्रमणियों ने अपनी भवतारक संयम यात्रा को सम्पन्न किया है।

ये युगप्रधान पद (आर्य संभूति और आर्यभद्र बाहु, आर्य महागिरि और आर्य सुहस्ती तथा आर्य सुस्थित और आर्य सुप्रतिबद्ध इन तीन युगल पट्टधरों का युगप्रधान पद एक–एक ही माना है) और 30 पट्टधर हुए। श्रुत साहित्य के विलुप्त होने से प्रमाण के अभाव में युगप्रधान नामावली में विभिन्न मतभेद दृष्टिगोचर होते हैं। **तपागच्छ पट्टावली और पट्टावली सारोद्धार** में उपुर्यक्त क्रम दिया गया है। **लोकागच्छीय पट्टावली** (पट्टावली–प्रबंध–संग्रह) में भगवान महावीर से 27 पट्ट गिने हैं। अतः उसमें सुस्थित सूरि के बाद सुप्रतिबद्ध का नाम छोड़ दिया गया है। **सतरहवें वज्रसेनाचार्य के बाद के पट्टधरों की नामावली में भी भिन्नता पाई जाती है। फिर भी जो ज्ञात है, वो इस प्रकार है–**

● आर्य रोह स्वामी, ● पुष्यगिरि, ● फल्गुमित्र, ● धरणगिरि (धरणीधर), ● शिवभूति, ● आर्यभद्र, ● आर्य नक्षत्र, ● आर्य रक्षित, ● नागेन्द्र, ● श्री देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण।

'प्रभुवीर पट्टावली' में २७ पट्टधरों की आर्य सुहस्ती के बाद भी नामावली इस प्रकार दी गई है –

● सुप्रतिबद्ध स्वामी, ● इन्द्रभिन्न, ● आर्य दिन्न, ● वयरस्वामी, ● वज्रसेन, ● भद्रगुप्त अन्यमते आर्यरोह, ● वयर

स्वामी अन्यमते फाल्गुणमित्र (फल्गुमित्र), ● आर्य रक्षित अन्यमते धरणीधर, ● नंदिलाचार्य अन्यमते शिवभूति, ● आर्य नागहस्ति अन्यमते आर्यभद्र, ● रेवतीमित्र अन्यमते आर्य नक्षत्र, ● सिंहाचार्य, ● स्कंदिलाचार्य अन्यमते नागाचार्य, ● नागजिताचार्य अन्यमत से श्री हिलविष्णु आचार्य, ● गोविंदाचार्य, ● भूतदिन्नाचार्य अन्यमते स्कंदिलाचार्य, अन्यमते दुषगणी, ● देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण।

श्रमण संघ के तृतीय पट्टधर आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म. ने **'पट्टावली-प्रबंध-संग्रह'** की प्रस्तावना में **माथुरी-वाचना** और **वल्लभी-वाचना** के स्थविरक्रम और देवर्द्धिगणी की गुरु–परम्परा में भिन्नता की तालिका दी है। दुःषकाल–श्रमण संघ स्तोत्र के प्रथमोदय, द्वितीयोदय युगप्रधान यंत्र में दिये गये युगप्रधानों के नामों में भी उपर्युक्त नामों से भिन्नता है। अन्यत्र भी ऐसी भिन्नता खोजी जा सकती है। इस भिन्नता का कारण शाखा–भेद, क्षेत्र–दूरी, आसन्न उपकारी का बहुमान, परंपरा की प्रीति आदि है। इसके अतिरिक्त क्रियोद्धारकों ने, सम्भव है – अपने इतिहास की अपेक्षा से गणना की हो। लेकिन वह भी प्रमाण रूप प्राप्त नहीं है।

❖ अद्भुत साधक आचार्य श्री भद्रबाहु स्वामी (द्वितीय)

आचार्य श्री भद्रबाहु स्वामी द्वितीय का जन्म मालवा प्रांत के उज्जैन में हुआ। आप यथानाम तथागुण स्वयंभू भद्रपुरुष थे। महान साधक भगवान पार्श्वनाथ के परम भक्त। आपके भाई थे वाराह मिहिर जो खगोल विज्ञान के महापंडित थे। लेकिन आपसे ईर्ष्यावश वे जैन संघ पर उपसर्ग किया करते थे। **आर्य भद्रबाहु स्वामी पैंतालीस वर्ष की वय में दीक्षित हुए। आपकी बुद्धि बहुत ही तीक्ष्ण थी। अल्प समय में ही आपने अपूर्व ज्ञान प्राप्त कर लिया। मात्र नव वर्ष की दीक्षा पर्याय में ही आपको आचार्य पद प्राप्त हो गया। यह ही वाराह मिहिर की ईर्ष्या का मुख्य कारण था। तब आचार्य श्री भद्रबाहू स्वामी ने**

'उवसग्गहर स्तोत्र' आदि अनेक भक्ति-भावित रचनाएं कर संघ संरक्षण किया। ये स्तोत्र प्रकट प्रभावी है।

❖ जैन संघ में अलगाव के पूर्व प्रसंग

आचार्य भद्रबाहु स्वामी तक किसी भी प्रकार के मतभेद या गणभेद के उदय की स्थिति का उल्लेख प्राप्त नहीं होता है। तब तक **निर्ग्रन्थ संघ** के नाम से एक ही युगप्रधान के नेतृत्व में **आत्मसाधना** का कार्य चलता रहा। किन्तु **भद्रबाहु स्वामी के महाप्रयाण के बाद निर्ग्रन्थ संघ से भिन्न नाम के गण का उदय हुआ। गोदास स्थविर से 'गोदासगण' का प्रारम्भ हुआ, जिसकी चार शाखाएं हुईं।** यद्यपि इस गण के प्रारंभ होने में किसी मतभेद का या किसी कारण का उल्लेख नहीं है और न अलग से युगप्रधान की स्थापना का ही वर्णन प्राप्त होता है। फिर भी हम अनुमान से इस विचार तक पहुंच सकते हैं कि स्पष्ट रूप से भले ही यह गणभेद न हुआ हो या प्रमुख संघ (निर्ग्रन्थ गण) के युगप्रधान की अवहेलना न हुई हो, परन्तु अपने–अपने स्थविरों को प्रधानता देने की दृष्टि रहना असंभव नहीं है। **अतः अस्पष्ट रूप से ही सही, यहीं से प्रायः गण या गच्छभेद का प्रारम्भ होता है। जैसा कि आचार्य श्री अभयदेवसूरि ने कहा है कि – "देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण तक की परम्परा को मैं समभाव-परम्परा मानता हूँ।" इसके बाद की स्थिति को बहुत-सी परम्पराओं को द्रव्य (अस्तित्व) से परम्परा मानता हूँ।'**

मेरा भी ऐसा ही मानना है कि "जब भाव क्षीण होकर द्रव्य की परम्परा प्राधान्य पा जाती है, तब संघ में बिखराव बटाव प्रारंभ हो जाता है। हालांकि लोकागच्छ और स्थानकवासी परम्पराओं ने 27 पट्टधरों तक विशुद्धि का विशेष आग्रह रखा है। परन्तु निष्पक्ष दृष्टि से देखा जाय, तो आर्य सुहस्ती के समय से ही निर्ग्रन्थ-परम्परा में कुछ मिश्रण-प्रारम्भ हो गया हो – ऐसा लगता है।

इसके पूर्व कई गणों का उदय हो ही चुका था। पूर्वश्रुत के विच्छेद के प्रारम्भ होते ही, परम्पराओं में भिन्नता आने लग

गई थी। **गोदासगण अपने को आर्य भद्रबाहु स्वामी का उत्तराधिकारी मानता होगा और आर्य महागिरि-सुहस्ती आदि अपने को स्थूलिभद्र के। आर्य सुहस्ती के बाद आर्य महागिरि और सुहस्ती के उत्तराधिकारियों में भेद बढ़ा होगा।**

आर्य सुहस्ति और आर्य सुप्रतिबद्ध का **'कोटिया'** गच्छ नामान्तर हो गया था। यह उल्लेख पट्टावलियों में मिलता है। **इससे यह अनुमान होता है कि आर्य सुहस्ती के उत्तराधिकारियों ने यह नामान्तर स्वीकार किया होगा, परन्तु आर्य महागिरि के शिष्यों ने नहीं। आर्य महागिरि के शिष्यों को गुरु-परम्परा से प्राप्त विशिष्ट क्रिया का आग्रह ही मतभेद का कारण रहा होगा।**

❖ विपरीत काल में संघ हितैषी कार्यों का प्रयास

अक्सर देखा जाता है कि अति–विस्तार के बाद संघ–संगठन में शैथिल्य होने के साथ–साथ संघ का बिखराव होने लगता है। इधर काल की मार पड़ रही थी। उधर अन्य दर्शनिकों के आघात–प्रत्याघात हो रहे थे। **श्रावक-संघ भी व्यवस्थित नहीं रहे थे। एक पीढ़ी जैन रहती थी तो दूसरी पीढ़ी अजैन हो जाती थी। राज्य-अधिकारियों पर जैन श्रमणों का प्रभाव क्षीण होता जा रहा था। शासन-परिवर्तन, दुष्काल आदि कारणों से जैन-श्रमणों को पूर्व और उत्तर भारत से पश्चिम और दक्षिण भारत में खिसकना पड़ा।** ऐसे समय में आचार्यों ने जैन जातियों **ओसवाल, श्रीमाल पोरवाल** आदि का निर्माण किया होगा। गोत्र रूप परिवार की पहचान गढ़ी होगी ताकि पीढ़ी–दर–पीढ़ी जैन धर्म सुरक्षित रहे। इसके लिए विविध प्रयास किये गए होंगे। आचार्य श्री रत्नप्रभसूरि ने इसी प्रकार का आन्दोलन चलाया था। **संघ-बिखराव की विचित्र परिस्थितियों में जैनों में जातिवाद का प्रादुर्भाव हुआ। कुछ समय तक गच्छवाद और जातिवाद साथ-साथ चला। अमुक जाति का अमुक गच्छ या अमुग गच्छ के धर्म शासन में अमुक जाति रहे, इस प्रकार की स्थिति चलती रही। संघ के**

बिखराव के समय में आचार्यों ने मंत्र, तंत्र, ज्योतिष आदि का अवलम्बन लेकर, धर्म-प्रभावना के कार्य करना प्रारम्भ किए, जिसका आगे चलकर साध्वाचार पर भी अनुचित प्रभाव पड़ा। जो आज भी शिथिलाचार माना जाकर आलोच्य है।

ऐसे कठिन काल में भी कई प्रभावशाली आचार्य होते रहे। जिन्होंने श्रुत-रक्षा, युग के योग्य श्रुत-निर्माण, संघ- व्यवस्था, धर्म रक्षा आदि के लिए बहुत श्रम किया। उनके श्रम का ही यह फल है कि आज हमें वीतराग-मार्ग का यत्किंचित् प्रकाश प्राप्त हो रहा है। सिद्धसेन 'दिवाकर', उमास्वाति, जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण, हरिभद्रसूरि, सिद्धर्षि, पादलिप्ताचार्य, जिनदासमहत्तर, आचार्य शीलांक, अभयदेवसूरि, हेमचन्द्राचार्य आदि श्वेताम्बराचार्यों और आचार्य कुंदकुंद, समन्तभद्र अकलंक, जिनसेन आदि दिगम्बराचार्यों ने विविध कोटि के साहित्य का निर्माण करके जैन धर्मानुयायियों की ज्ञान-ज्योति को प्रज्ज्वलित रखने का भरसक प्रयत्न किया। इस पुरुषार्थ को नमन।

❖ मतभेद का उभरना मानव स्वभाव

हम गहराई से विचार करे तो यह ध्यान में आता है कि मानव स्वभाव कभी भी एक–सा नहीं रहता, कभी वो विवाद में पड़ जाता है तो कभी मैत्री का हिमायती। भगवान ऋषभदेव के पौत्र और भरत के पुत्र मरीचि ने निर्ग्रन्थ–चर्या के पालन नहीं होने से मनःकल्पित लिंग और आचार– धारण किया। बाद में शरीर–पीड़ा से आर्त होकर, कपिल राजकुमार को अपना शिष्य बनाया, जिससे परिव्राजक तापस मत का प्रादुर्भाव हुआ।

भगवान् सुविधिनाथ से भगवान् शान्तिनाथ तक, सात अन्तरालों में जिनशासन का विच्छेद हुआ और मिथ्यामतों की वृद्धि हुई। हिंसक यज्ञों के विधि-विधान बने।

भगवान महावीर की साधना के द्वितीय वर्ष तक गौशालक प्रभु के साथ रहा। भगवान् के साथ रहते हुए कुछ एकान्तिक सिद्धांतों का निर्णय किया, तेजोलेश्या प्राप्त करने की विधि जानी

और फिर भगवान् महावीर से अलग होकर, कुछ समय के बाद **'आजीवक मत'** का पुरस्कर्ता और **'नियतिवाद'** दर्शन का संस्थापक बना। **भगवान महावीर को केवलज्ञान होने के पूर्व ही गोशालक अपने को तीर्थंकर तक घोषित कर चुका था। लेकिन शैथिल्यरत आचार विचार से पराभव को प्राप्त हुआ।**

अपुष्ट प्रमाण से ऐसा भी माना जाता है कि भगवान पार्श्वनाथ की परम्परा से 'पिहिताश्रव' मुनि के शिष्य बुद्धकीर्ति ने बौद्धमत प्रारम्भ किया। उस समय भारत में अनेक मत–दर्शनों की बौद्धिक क्रीड़ाएं हो रही थीं। व्यक्ति सत्य–दर्शन के लिए चलते थे। चिन्तन करते हुए किसी भी नये विचार के स्फुरित होते ही उसे वे व्यवस्थित दर्शन का रूप देने का प्रयास करते थे। **कुछ चमत्कारों के बल से वे अपने अनुयायियों को जुड़ाकर, उन्हें एक सम्प्रदाय के रूप में संगठित कर डालते थे। इस प्रकार नाना वादों तथा सम्प्रदायों का निर्माण हो चुका था।**

कटु सत्य यह भी है कि विचारधारा की भिन्नता से मतभेदों की सृष्टि होती है। **भोगभूमि के काल में विचार-वैभिन्नय से विभिन्न मतों की सृष्टि होने का अवकाश ही नहीं था। कर्मयुग के प्रारम्भकाल में भी विचार के विकास की प्रक्रिया मंद थी। अतः उस काल में भी विशेष मत-भेद उत्पन्न नहीं हुए। जब भगवान् ऋषभदेव दीक्षित हुए, तब उनके साथ चार हजार पुरुष भी दीक्षित हुए। दानविधि की जानकारी के अभाव में आहारादि नहीं मिलने के कारण वे सभी प्रभु का संग छोड़कर, वल्कलधारी तापस बन गये और कन्दमूल का उपयोग करने लगे। जब प्रभु ने केवलज्ञान की प्राप्ति के बाद तीर्थ स्थापना की, तब कच्छ-महाकच्छ को छोड़कर, सभी भगवान् के पास आकर शुद्ध बने और सम्यग् चारित्र के आराधक हुए।**

इसी प्रकार भगवान महावीर देव के केवलज्ञान के चौदहवें वर्ष के अन्त में उनके शिष्य **जमालि** ने प्रभु वीर के

'कृतमान कृत' सिद्धान्त से मतभेद व्यक्त किया और अपने आपको सर्वज्ञ घोषित करके **'बहुरत'** नामक वाद को स्थापित किया। अन्तिम समय तक यह वाद उन्होंने नहीं छोड़ा।

भगवान् महावीर के कैवल्य पर्याय के सौलह वर्ष बाद 'तिष्यगुप्त' नाम के साधु ने **'आत्मा के अन्तिम प्रदेश में ही जीवत्व है'** यह वाद प्रतिपादित किया। जब समझाने पर भी नहीं माना, तब गुरु ने उसे गच्छ–बाहर कर दिया। **'आमलकप्पा'** निवासी मित्रश्री नामक श्रावक के द्वारा युक्ति–पूर्वक समझाने पर वह प्रायश्चित लेकर शुद्ध हुआ।

वीर निर्वाण संवत् 214 में आषाढ़ाचार्य के निमित्त से उनके शिष्यों में 'अव्यक्तवादी' निह्नव हुआ। यह तृतीय निह्नव था। वीर नि.सं. 220 में अश्वमित्र से 'सामुच्छेदिक' नामक चौथा निह्नव वी.नि.सं. 228 में 'द्रिक्रियावाद' नामक पांचवां निह्नव, वी.नि.सं. 544 में रोहगुप्त से त्रैराशिक नामक छठा निह्नव और वी.नि.सं. 484 में गोष्ठामाहिल सातवां निह्नव हुआ।

वीर निर्वाण की छठी शताब्दी तक युगप्रधान की आज्ञा का पालन यथातथ्य होता था। अतः उन्होंने भगवान् महावीर के शासन को अंशमात्र भी विचार-विकृति से बचाने का भरपूर प्रयत्न किया। उन्होंने शिष्यमोह को तिलांजली देकर, शासन की अक्षुण्णता को बनाये रखने के लिए, विकृत मान्यता वाले शिष्य को संघ से बाहर करने में हिचक न दिखाई। दस पूर्वों का ज्ञान रहा वहां तक विचार भेद से संघ–भेद होने की स्थिति नहीं आई। **लेकिन इसके बाद दसपूर्वी वज्र स्वामी के देहान्त के बाद यह स्थिति नहीं रही।**

यहां मेरा मानना है कि जब कुत्तर्क चल रहा हो तो तर्क न देकर मौन रहना योग्य है, लेकिन जब अपवाद भरा झूठ फैलाया जाए तो डटकर सत्य को प्रस्तुत करना चाहिये। मैं समझता हूँ यह ही न्याय-संगत बात है। समय पर दिखाई गई दृढ़ता हजार झूठ का पर्दाफाश कर देती है।

❖ युक्तियुक्त चयन जरूरी है

निष्कर्षतः धर्म में भेद दो प्रकार का होता है — **1. शासन–भेद और 2. संघ-भेद। शासन भेद के दो रूप हैं — 1. सम्यक् और 2. असम्यक्। सम्यक् शासन-भेद तीर्थंकरों के द्वारा कालक्रम के अनुसार धर्म में विशेष दृढ़ता के लिए, कठोर या सरल अनुशासन की प्रवृत्ति से किया जाता है। जैसे भगवान महावीर देव ने, भगवान पार्श्व के चातुर्याम संवर के स्थान पर पांच महाव्रतों का और भगवान अजितनाथ ने भगवान ऋषभदेव के पांच महाव्रतों के स्थान पर, चातुर्याम संवर का प्रवर्तन किया। सम्यक् शासन भेद को निह्नववाद कहा जाता है, जो किसी भी साधक के द्वारा उसके मिथ्यात्व मोहनीय के उदय से होता है।**

संघ भेद भी दो तरह का होता है। प्रथम संघभेद, सम्यक् विचार-पूर्वक होता है, जिसमें संघ में आई हुई विकृति में सुधार, संस्कार, विशुद्धि या प्रतिकार की भावना होती है। दूसरे संघ-भेद के मूल में सम्यक् विचारणा नहीं होती है। वह संघ-भेद काल के प्रवाह से, जनसंघर्ष से, मनभेद या मतभेद से या गुरु-परम्परा के मोह से होता है। इस दूसरे प्रकार के संघभेद में कभी-कभी भेद की भावना ही नहीं होती, परन्तु अनायास भेद उत्पन्न हो जाता है।

श्रमण संघ में भी ऐसी भ्रांति दो–एक बार हुई है जब कतिपय क्रियागत दृढ़ता की ओट में व्यक्तिगत मत को पोषित किया गया और पुनः जब सुखद संवाद हुआ, तो संघ की एकता मजबूत हुई क्योंकि **संत स्वभाव सरलता का परिचायक है। जैसा शांत समन्वय श्रमण संघ में है। वैसा अन्यत्र कहाँ?**

●●●

चतुर्विद संघ एवं आगम रक्षण हेतु सम्पन्न हुयी कई वाचनाएं

आराध्य तीर्थंकर प्रणीत चतुर्विद संघ का प्रतिनिधि संगठन है श्रमण संघ! इसकी प्रमुख विशेषता है संवाद, चाहे प्रवचन प्रभावना हो या संघीय संगठन पर उदार हृदय से चर्चा। **संघीय पर्षदा पद्धति जिनत्व के मनन मंथन का प्रमुख कार्य है। यहां एकतरफा कुछ भी कहा नहीं जाता, बल्कि व्यापक सुना भी जाता है। अपनी मान्यता मर्यादा परम्परा पर नजर जमाकर विमर्श किया जाता है।** यह कार्य आज ही हो रहा हो? ये किसी से प्रभावित होकर किया जा रहा हो? ऐसा भी बिल्कुल नहीं है। **यह तब से है, जब जिन धर्म प्रणेता श्रमण भगवान ऋषभदेव से लेकर श्रमण भगवान महावीर तक प्रभु श्रीसंघ के मध्य थे।**

इसमें समय–समय पर विचार, परामर्श एवं समाधान बिन्दुओं को चिन्हित करने का कार्य होता रहा है। **जब-जब भी वैचारिक ज्योति मंद पड़ने लगी है, तब-तब पुनर्चिन्तन करने के लिए चतुर्विध-पर्षदा बुलाकर तात्कालिक बिन्दुओं का, समसामयिक प्रश्नों का समाधान निकाला जाता है। इसी प्रक्रिया का नाम है हमारी ऐतिहासिक वाचनाएं या साधु-सम्मेलन!**

आचारगत शैथिल्य का समाधान हो या संघीय विचार द्वंद का, या व्यवस्थापन का प्रश्न, या धूमिल हो रही दिशा का सवाल, इनका समाधान कभी भी एकपक्षीय नहीं हो सकता। इसका एकमात्र व सर्वमान्य समाधान मंच है संघीय वाचनाएं या साधु सम्मेलन।

श्रमण संघ के अतीत में भी संघीय व्यवस्था के समग्र विचार हेतु ऐसे सम्मेलन होते रहे हैं। परम्परा के अंग रूप ये विचार सम्मेलन आगम वाचना के रूप में विश्रुत हैं। ये

वाचनाएं भगवान महावीर के परिनिर्वाण के पश्चात् प्रारम्भ हुई एवं सामयिक परिवर्तन की वाहक रही हैं।

❖ हर युग की मांग है युगानुरूप परिवर्तन!

परिवर्तनशीलता जगत का शाश्वत नियम है। युगीन सभ्यताएं सदैव परिवर्तनशील रही हैं। कितनी ही सभ्यताओं का जन्म हुआ और कितनी ही काल के गर्त में समा गईं। ये सतत प्रक्रिया होने पर भी सामाजिक हित में परिवर्तन की राह कभी आसान नहीं होती। प्रगतिशीलता के इस दौर में इतनी अपेक्षा अवश्य की जाती है कि सुशिक्षित और बुद्धिमान नेतृत्व की अगुआई में परिवर्तन अधोगामी न होकर ऊर्ध्वगामी हो! जिससे विकास यात्रा विनाश में परिवर्तित न हो सके।

यह तभी संभव है जब परिवर्तन का उद्देश्य मंगलकारी हो। यद्यपि प्रकृति भी परिवर्तन करती है, किंतु अधिकांश परिवर्तन मानव के अधीन हैं। सभी सामाजिक परिवर्तन मानव की रचनात्मक क्रियाशीलता और पवित्र मनोदशा पर निर्भर करते हैं।

यदि मानव चाहे तो अपने ज्ञान से धरती पर स्वर्ग का अवतरण करा सकता है, किंतु शिक्षा यदि विवेक और विनय की जन्मदात्री नहीं होगी तो परिणाम भी अच्छे नहीं हो सकते। किंतु यह भी आध्यात्मिक ज्ञान के बिना संभव नहीं। यही आत्म विकास का आधार है। इसीलिए हमारे तत्ववेत्ता महर्षि बौद्धिक ज्ञान की अपेक्षा आत्मिक विकास को शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानते हैं। **इसके बिना सर्वजनहिताय की संकल्पना पूरी नहीं हो सकती। हमारी ऐतिहासिक वाचनाएं इस बात का प्रबल प्रमाण है कि हर युग की मांग है युगानुरूप परिवर्तन। जो समय-समय पर हुए और आगे भी होते रहेंगे।**

❖ प्रथम वाचना पाटलीपुत्र (पटना) वीर निर्वाण वर्ष 160 के पश्चात

यह काल खण्ड जैन संघ पर भारी विपत्ति का था। द्वादशवर्षीय भीषण दुष्काल के कारण श्रमण संघ छिन्न–भिन्न

हो गया था। अनेक बहुश्रुत वीर श्रमण क्रूर–काल के गाल में समा गए थे। अनेकों विघ्न बाधाओं के कारण व्यवस्थित रूप से श्रुत साहित्य का परावर्तन भी नहीं हो सका था। इस कारण से आगम की अनेक कड़ियां विश्रृंखलित हो गई थी। ऐसे समय में आचार्य श्री हरिभद्र कृत उपदेशों के प्रकाश में जितने भी समकालीन आचार्य विद्यमान थे, वे सभी संकटापन्न स्थिति में पाटलिपुत्र में एकत्र हुए। इसे ही प्रथम वाचना माना जाता है।

यद्यपि पाटलिपुत्र की वाचना के सम्बन्ध में दिगम्बर प्राचीन साहित्य में कहीं उल्लेख नहीं है। तथापि दोनों ही परम्पराएं आचार्य भद्रबाहु को अपना आराध्य मानती हैं। आचार्य भद्रबाहु के शासनकाल में दो विभिन्न दिशाओं में बढ़ती हुई श्वेताम्बर और दिगम्बर परम्परा के आचार्यों की नाम श्रृंखला एक केन्द्र पर आ पहुँची थी। अब पुनः वह श्रृंखला विश्रृंखलित हो गयी है।

फिर भी इस सद्प्रयास से आप्तवाणी आगम रूप श्रुत साहित्य संकलन सर्वधन का आवश्यक कार्य तो हुआ ही है। आज भी समाचारी में संशोधन या पुर्नस्थापन का कार्य होता है। यह वाचना या साधु सम्मेलन की सार्थकता प्रासंगिकता सिद्ध करता है।

❖ द्वितीय वाचना वीर निर्वाण संवत् 300-320 के मध्य

आगम संकलन का द्वितीय प्रयास वीर–निर्वाण 300 से 330 के बीच हुआ। सम्राट खारवेल उड़ीसा प्रान्त के महाप्रतापी शासक थे। उन का अपर नाम **'महामेघवाहन'** था। इन्होंने अपने समय में एक बृहद् जैन सम्मेलन का आयोजन किया था, जिसमें अनेक जैन भिक्षु, आचार्य, विद्वान् तथा विशिष्ट उपासक सम्मिलित हुए थे। सम्राट खारवेल को उनके कार्यों की प्रशस्ति के रूप में **"धम्मराज" "भिक्खुराज" "भिक्खुराज" श्री "खेमराज"** जैसे विशिष्ट शब्दों से सम्बोधित किया गया है। हाथी गुफा (उड़ीसा) के शिलालेख में इस सम्बन्ध में विस्तार से

वर्णन है। हिमवन्त स्थविरावली के अनुसार महामेघवाहन, भिक्षुराज खारवेल सम्राट ने कुमारी पर्वत पर एक श्रमण सम्मेलन का आयोजन किया था। **प्रस्तुत सम्मेलन में महागिरि-परम्परा के बलिस्सह, बौद्धिलिङ्ग, देवाचार्य, धर्मसेनाचार्य, नक्षत्रचार्य, प्रभृति दो सौ जिनकल्पतुल्य उत्कृष्ट साधना करने वाले श्रमण तथा आर्य सुस्थित, आर्य सुप्रतिबुद्ध, उमास्वाति, श्यामाचार्य, प्रभृति तीन सौ स्थविरकल्पी श्रमण थे। आर्या पोइणी प्रभृति** 300 **साध्वियाँ, भिखुराय, चूर्णक, सेलक, प्रभृति** 700 **श्रमणोपासक और पूर्णमित्र प्रभृति** 700 **उपासिकाएँ विद्यमान थीं।**

इस सम्मेलन में आर्य सुस्थित और सुप्रतिबुद्ध दोनों सहोदर भी उपस्थित थे। कलिंगाधिपति भिक्षुराज ने इन दोनों का विशेष सम्मान किया था। हिमवन्त थेरावली के अतिरिक्त अन्य किसी जैन ग्रन्थ में इस सम्बन्ध में उल्लेख नहीं है खण्डगिरि और उदयगिरी में इस सम्बन्ध में जो विस्तृत लेख उत्कीर्ण है, उससे स्पष्ट परिज्ञात होता है कि उन्होंने आगम–वाचना के लिये सम्मेलन किया था।

❖ तृतीय वाचना वीर निर्वाण सं. 827 से 840 के मध्य

संगठन एवं आगमों को संकलित करने का तृतीय प्रयास वीर–निर्वाण 827 से 840 के मध्य हुआ। वीर– निर्वाण की नवमी शताब्दी में पुनः द्वादशवर्षीय दुष्काल से श्रुत–विनाश का भीषण आघात जैन शासन को लगा। श्रमण जीवन की मर्यादा के अनुकूल आहार की प्राप्ति अत्यन्त कठिन हो गयी थी। बहुत–से श्रुतसम्पन्न श्रमण काल के अंक में समा गये। सूत्रार्थग्रहण, परावर्त्तन के अभाव में श्रुत–सरिता सूखने लगी। तो अति विषम स्थिति थी। बहुत सारे मुनि सुदूर प्रदेशों में विहरण करने के लिये प्रस्थित हो चुके थे।

दुष्काल की परिसमाप्ति के पश्चात् मथुरा में श्रमण सम्मेलन हुआ। प्रस्तुत सम्मेलन का नेतृत्व आचार्य स्कन्दिल ने संभाला। 48 श्रुतसम्पन्न श्रमणों की उपस्थिति से सम्मेलन में

चार चाँद लग गये। प्रस्तुत सम्मेलन में मधुमित्र, गन्धहस्ति, प्रभृति 150 श्रमण उपस्थित थे। मधुमित्र और स्कन्दिल ये दोनों आचार्य आचार्यसिंह के शिष्य थे। आचार्य गन्धहस्ती मधुमित्र के शिष्य थे। इनका वैदुष्य उत्कृष्ट था। अनेक विद्वान् श्रमणों के स्मृतपाठों के आधार पर आगम–श्रुत का संकलन हुआ था। आचार्य स्कन्दिल की प्रेरणा से गन्धहस्ती ने ग्यारह अंगों का विवरण लिखा।

प्रस्तुत वाचना में भी पाटलिपुत्र की वाचना की तरह केवल अंगसूत्रों की ही वाचना हुई क्योंकि नन्दीसूत्र की चूर्णि में अंगसूत्रों के लिये 'कालिक' शब्द व्यवहृत हुआ है। अंगबाह्य आगमों की वाचना या संकलना का इस समय भी प्रयास हुआ हो, ऐसा पुष्ट प्रमाण नहीं है। पाटलिपुत्र में जो अंगों की वाचना हुई थी उसे ही पुनः व्यवस्थित करने का प्रयास किया गया था। नन्दीसूत्र के अनुसार वर्तमान में जो आगम विद्यमान हैं वे माथुरी वाचना के अनुसार हैं। पहले जो वाचना हुई थी, वह पाटलिपुत्र में हुई थी, जो विहार में था। उस समय विहार जैनों का केन्द्र रहा था किन्तु माथुरी वाचना के समय बिहार से हटकर उत्तर प्रदेश केन्द्र हो गया था। मथुरा से ही कुछ श्रमण दक्षिण की ओर आगे बढ़े थे। जिसका सूचन हमें दक्षिण में विश्रुत माथुरी संघ के अस्तित्व से प्राप्त होता है।

प्रभावकचरित के अनुसार प्राचार्य स्कन्दिल जैन शासन रूपी नन्दनवन में कल्पवृक्ष के समान हैं। समग्र श्रुतानुयोग को अंकुरित करने में महामेघ के समान थे। चिन्तामणि के समान वे इष्टवस्तु के प्रदाता थे। महान उपकारक थे।

यह आगमवाचना मथुरा में होने से माथुरी वाचना कहलायी। आचार्य स्कन्दिल की अध्यक्षता में होने से स्कन्दिली वाचना के नाम से इसे अभिहित किया गया। जिनदास गणि महत्तर ने ने यह भी लिखा है कि **दुष्काल के क्रूर आघात से अनुयोगधर मुनियों में केवल एक स्कन्दिल ही बच पाये थे।**

उन्होंने मथुरा में अनुयोगों का प्रवर्तन किया था। अतः यह वाचना स्कन्दिली नाम से विश्रुत हुई।

❖ चतुर्थ वाचना वीर निर्वाण सं. (अनुमानतः समकालीन)

जिस समय उत्तर–पूर्व और मध्य भारत में विचरण करने वाले श्रमणों का सम्मेलन मथुरा में हुआ था, उसी समय दक्षिण और पश्चिम में विचरण करने वाले श्रमणों की **एक वाचना वीरनिर्वाण संवत् 827 से 840 के आस-पास वल्लभी में आचार्य नागार्जुन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इसे "वल्लभीवाचना" या "नागार्जुनीय-वाचना" की संज्ञा मिली।** इस वाचना का उल्लेख भद्रेश्वर रचित कहावली ग्रन्थ में मिलता है, जो प्राचार्य हरिभद्र के बाद हुये हैं। स्मृति के आधार पर सूत्र–संकलना होने के कारण वाचनाभेद रह जाना स्वाभाविक था। पण्डित दलसुख मालवणिया ने प्रस्तुत वाचना के सम्बन्ध में लिखा है — "कुछ चूर्णियों में नागार्जुन के नाम से पाठान्तर मिलते हैं। पण्णवणा जैसे अंगबाह्य सूत्र में भी पाठान्तर का निर्देश है। अतएव अनुमान किया गया कि नागार्जुन ने भी वाचना की होगी किन्तु इतना तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि — मौजूदा अंग आगम माथुरी–वाचनानुसारी हैं, यह तथ्य है। अन्यथा पाठान्तरों में स्कन्दिल के पाठान्तरों का भी निर्देश मिलता। अंग और अन्य अंगबाह्य ग्रन्थों की व्यक्तिगत रूप से कई वाचनाएँ होनी चाहिये थीं। क्योंकि **आचारांग आदि आगम साहित्य की चूर्णियों में जो पाठ मिलते हैं उनसे भिन्न पाठ टीकाओं में अनेक स्थानों पर मिलते हैं। जिससे यह तो सिद्ध है कि पाटलिपुत्र की वाचना के पश्चात् समय-समय पर मूर्धन्य मनीषी आचार्यों के द्वारा वाचनाएँ होती रही हैं। उदाहरण के रूप में हम प्रश्नव्याकरण को ले सकते हैं। समवायांग में प्रश्नव्याकरण का जो परिचय दिया गया है, वर्तमान में उसका वह स्वरूप नहीं है। आचार्य श्री अभयदेवसूरि ने प्रश्नव्याकरण की टीका में लिखा है कि**

अतीत काल में वे सारी विद्याएँ इसमें थीं। इसी तरह अन्तकृतदशा में भी दश अध्ययन नहीं हैं। टीकाकार ने स्पष्टीकरण में यह सूचित किया है कि प्रथम वर्ग में दश अध्ययन हैं, पर यह निश्चित है कि क्षत–विक्षत आगम–निधि का ठीक समय पर संकलन कर आचार्य नागार्जुन ने जैन शासन पर महान् उपकार किया है। इसीलिये आचार्य देववाचक ने बहुत ही भावपूर्ण शब्दों में नागार्जुन की स्तुति करते हुये लिखा है – "मृदुता आदि गुणों से सम्पन्न, सामायिक श्रुतादि के ग्रहण से अथवा परम्परा से विकास की भूमिका पर क्रमशः आरोहणपूर्वक वाचकपद को प्राप्त शोध श्रुत–समाचारी में कुशल प्राचार्य नागार्जुन को मैं प्रणाम करता हूँ।"

❖ पंचम वाचना - वीर निर्वाण सं. 980 या 993 के मध्य

वीर–निर्वाण की दशवीं शताब्दी (980 या 993 ई., सन् 454–466) में देवर्द्धिगणि क्षमा–श्रमण की अध्यक्षता में पुनः श्रमण संघ एकत्रित हुआ। स्कन्दिल और नागार्जुन के पश्चात् दुष्काल ने हृदय को कम्पा देने वाले नाखूनी पंजे फैलाये! अनेक श्रुतधर श्रमण काल–कवलित हो गये। श्रुत की महान् क्षति हुयी। संगठन बिखरा पड़ा था तब ये पुरुषार्थ सम्पन्न हुआ।

❖ देवर्द्धिगणि महाश्रमण का योगदान

श्रुत शास्त्र के वृहद विचारक जिनशासन सेवी विनय मूर्ति साथ ही महान सौभाग्य के धनी देवर्द्धिगणि को क्षरित विस्मृत हो चुके आगम-लेखन का श्रेय प्राप्त है। यह कार्य आपने असंख्य शिष्यों के साथ किया था।

इस सन्दर्भ में एक प्रसिद्ध गाथा है कि वल्लभी नगरी में देवर्द्धिगणि प्रमुख श्रमण ने वीर निर्वाण 980 में आगमों को पुस्तकारूढ किया था।

देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण के समक्ष **स्कन्दिली और नागार्जुनीय** ये दोनों वाचनाएं भी हुई थीं, **नागार्जुनीय वाचना**

के प्रतिनिधि आचार्य कालक (चतुर्थ) थे। स्कन्दिली वाचना के प्रतिनिधि स्वयं देवर्द्धिगणि थे। ऐतिहासिक प्रमाणों के अभाव में भी यह माना जाता है कि **आर्य स्कन्दिल और आर्य नागार्जुन दोनों का मिलन न होने से दोनों वाचनाओं में शायद कुछ भेद संभव है। देवर्द्धिगणि ने श्रुतसंकलन का कार्य बहुत ही तटस्थ नीति से किया। आचार्य स्कन्दिल की वाचना को प्रमुखता देकर नागार्जुनीय वाचना को पाठान्तर के रूप में स्वीकार कर आपने अपने उदात्त मानस का परिचय दिया। जिससे जैन शासन-विभक्त होने से बच गया। उनके भव्य प्रयत्न के कारण ही श्रुतनिधि आज तक सुरक्षित रह सकी है।**

आचार्य देवर्द्धिगणि ने आगमों को पुस्तकारूढ़ किया। यह बात बहुत ही स्पष्ट है किन्तु उन्होंने किन–किन आगमों को पुस्तकारूढ़ किया? इसका स्पष्ट उल्लेख कहीं भी नहीं मिलता! नन्दीसूत्र में श्रुतसाहित्य की लम्बी सूची है किन्तु नन्दीसूत्र देवर्द्धिगणि की रचना नहीं है। उसके रचनाकार **आचार्य देव वाचक हैं।** यह बात नन्दीचूर्णि और टीका से स्पष्ट है। इस दृष्टि से नन्दी–सूची में जो नाम आये हैं, वे सभी देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण के द्वारा लिपिबद्ध किये गये हों, यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता।

पण्डित दलसुख मालवणिया का यह अभिमत रहा है कि अंगसूत्रों को तो पुस्तकारूढ़ किया ही गया था और जितने अंगबाह्य ग्रन्थ, जो नन्दी से पूर्व के हैं, वे पहले से ही पुस्तकारूढ़ हुए होंगे। नन्दी की आगमसूची में ऐसे कुछ प्रकीर्णक ग्रन्थ भी हैं, जिनके रचयिता देवर्द्धिगणि के बाद के आचार्य हैं। सम्भव है उन ग्रन्थों को बाद में आगम की कोटि में रख लिया गया हो।

कितने ही विज्ञों का यह अभिमत है कि वल्लभी में सारे आगमों को व्यवस्थित रूप दिया गया। **भगवान् महावीर के पश्चात् एक सहस्र वर्ष में जितनी भी मुख्य-मुख्य घटनाएं घटित हुईं, उन सभी प्रमुख घटनाओं का समावेश यत्र तत्र**

आगामों में किया गया। जहाँ जहाँ पर समान आलापकों का बार-बार पुनरावर्तन होता था, उन आलापकों को संक्षिप्त कर एक दूसरे की पूर्ति संकेत एक दूसरे आगम में किया गया। वर्तमान में जो आगम उपलब्ध हैं, वे देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण की वाचना के हैं। उसके पश्चात् उसमें परिवर्तन और परिवर्धन नहीं हुआ। जिन बिन्दुओं पर मतभेद की अधिकता रही, वहाँ माथुरी वाचना को मूल में स्थान देकर वल्लभी वाचना के पाठों को पाठान्तर में स्थान दिया गया। यही कारण है कि आगमों की व्याख्या ग्रन्थों में यत्र-तत्र 'नागार्जुनीय पठन्ति' इस प्रकार का उल्लेख मिलता है।

यह आगम वाचना की दृष्टि से अंतिम सम्मेलन था। इसके पश्चात् आगमों आगमों के संकलन की दृष्टि से कोई सर्वमान्य वाचना कहीं नहीं हुई। देवर्द्धिगणि के पूर्व जो आगम वाचनाएं हुई उनमें आगमों का लेखन हुआ हो ऐसा भी स्पष्ट प्रमाण प्राप्त नहीं है। उस समय तक आगम श्रुति रूप में ही चलते रहे। **योग्य शिष्यों के अभाव में गुरु ने वह ज्ञान शिष्य को प्रदान नहीं क्रिया, जिससे जिनवाणी रूप वह श्रुत साहित्य धीरे-धीरे विस्मृत होता चला गया। इससे ज्ञात होता है कि जिनशासन में श्रमण और संघ का कितना बड़ा योगदान है।**

यह एक ज्वलंत सत्य है कि दुष्काल के कारण जिस प्रकार श्रुत साहित्य छिन्न-विछिन्न हुआ, उसी तरह आचार में भी शिथिलताएं आई फलस्वरूप समय-समय पर क्रियोद्धार हुए, ये क्रियोद्धार शास्त्रीय आचार क्रान्ति के प्रतीक हैं। वही ये वाचनाएं (परस्पर-विमर्श) जिनवाणी की विलुप्तता से भिन्न-भिन्न विषयों पर परस्पर विचारों और क्रियाओं को आदर देते हुए सम्पन्न हुए हैं।

चूकि संगठन में असहमतियों का होना कोई अनहोनी बात नहीं है, वहीं समाज का विकास बिना संगठन के हो पाना कोरे कपाट के सदृश है, क्योंकि बिना संगठन के न संस्कार

शुद्ध होते हैं और न ही सहभागी ही बन पाते हैं। संगठन रहित जीवन नीरस व स्वार्थी जीवन है। असंगठित जीवन पर किसी का विश्वास नहीं होता। समवेत संघीय जीवन ही सुसंस्कृत-परिष्कृत तथा सधा हुआ जीवन है। इस सधे हुए जीवन को ही 'संघे शक्तिः कलौयुगे' कहा गया है। बिना संगठन के कोई भी धर्म, संप्रदाय और राष्ट्र विकास के पथ पर नहीं बढ़ सकता। यह भी एक स्पष्ट यथार्थ है।

हम यहां ऐसी पुरुषार्थी धर्म परम्परा का गहन अध्ययन करें और जाने कि श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन धर्म परम्परा किन लक्ष्यों को लेकर निरंतर आगे बढ़ी और अपना यश गौरव स्थापित कर पाने में सफल रही।

●●●

वैदिक साहित्य में कैसे संघ की अवधारणा?

वैदिक साहित्य में **'ऋग्वेद'** अत्यंत प्रचीन है। ये सभी साधक ऋषियों के आप्त वचन से समृद्ध है। ये शास्त्र क्या कहता है! क्या अपील करता है कि—

यजां स्वध्वरं जनं मनुंजातं घृतप्रुषंम्।

ऋग्वेद 1/45/1

अर्थात् **हे प्रभो! आप हमारे साथ उन मनुष्यों को जोड़िये, जो उत्तम अहिंसात्मक कर्म करने वाले हो! जो अपनी शक्तियों का विस्तार धर्म कार्य में करने वाले हों, जो ज्ञान प्राप्ति में सदा प्रवृत्त रहते हैं, स्वाध्याय करते हैं। जो मन की निर्मलता तथा ज्ञान की दीप्ति से सबको स्निग्ध, करुणासिक्त व आशा पूरित करते हैं।** क्या यही कार्याचरण जिन श्रमणों के नहीं है? निश्चित ही यह है, श्रमण संघ का लक्ष्य जो अपने कार्य कर्त्तव्य से नित्य इसकी ही घोषणा करता है।

जिज्ञासा / समाधान

द्वादशांग दृष्टिवाद (जैनागम) के लुप्त होने का क्या कारण रहा होगा?

'दृष्टिवाद' जैन श्रागमों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भाग था, जिस संकलन को जाने बिना अंगों की वाचना अपूर्ण थी। **'दृष्टिवाद'** के एकमात्र ज्ञाता आचार्य भद्रबाहु प्रथम थे। आवश्यक–चूर्णि के अनुसार वे उस समय नेपाल की पहाड़ियों में **महाप्राण ध्यान की साधना** कर रहे थे। संघ ने आगम–निधि की सुरक्षा के लिये श्रमण संघाटक को नेपाल प्रेषित किया। श्रमणों ने भद्रबाहु से प्रार्थना की– **"आप वहाँ पधार कर श्रमणों को दृष्टिवाद की ज्ञान-राशि से लाभान्वित करें।" भद्रबाहु ने साधना में विक्षेप समझते हुए प्रार्थना को अस्वीकार कर दिया।**

'तित्थोगालिय' के अनुसार भद्रबाहु ने आचार्य होते हुये भी संघ के दायित्व से उदासीन होकर कहा – **'श्रमणो! मेरा आयुष्यकाल कम रह गया है! इतने स्वल्प समय में मैं दृष्टिवाद की वाचना देने में असमर्थ हूँ। आत्महितार्थ मैं अपने आपको समर्पित कर चुका हूँ । अतः संघ को वाचना देकर क्या करना है?'** इस निराशाजनक उत्तर से श्रमण उत्तप्त हुए। उन्होंने पुनः निवेदन किया – **'संघ की प्रार्थना को अस्वीकार करने पर आपको क्या प्रायश्चित लेना होगा!' भगवन् यह तो आपको ज्ञात है ही अतः कृपा करें।"**

❖ चतुर्विद संघ की श्रेष्ठता दर्शाता तथ्य

जब आचार्य श्री भद्रबाह प्रथम ने साधना खंडित न करने की दृष्टि से दृष्टिवाद की प्ररूपणा हेतू आने से ईकार कर दिया तो आवश्यकचूर्णि के अनुसार आये हुये **श्रमण संघाटक ने कोई नया प्रश्न उपस्थित नहीं किया, वह पुनः लौट गया। उसने सारा संवाद चतुर्विद संघ को कहा। संघ अत्यधिक विक्षुब्ध**

हुआ क्योंकि भद्रबाहु के अतिरिक्त दृष्टिवाद की वाचना देने में कोई भी समर्थ नहीं था। पुनः संघ ने श्रमण संघाटक को नेपाल भेजा। उन्होंने निवेदन किया – "भगवन्! चतुर्विद संघ की आज्ञा की अवज्ञा करने वाले को क्या प्रायश्चित्त आता है?" प्रश्न सुनकर भद्रबाहु गम्भीर हो गये। उन्होंने कहा – "जो संघ का अपमान करता है, वह श्रुतनिह्नव है, संघ बहिष्कृत करने योग्य है।" श्रमण संघाटक ने पुनः निवेदन किया – आपने भी संघ की बात को अस्वीकृत किया है, आप भी इस दण्ड के योग्य ही हैं? "तित्थोगालिय" में प्रस्तुत प्रसंग पर श्रमण संघ के द्वारा बारह प्रकार के परस्पर विच्छेदों का भी वर्णन है!

❖ महान आचार्य की महानता

आचार्य भद्रबाहु (प्रथम) को अपनी भूल का परिज्ञान हो गया! उन्होंने मधुर शब्दों में कहा – **"मैं संघ की आज्ञा का सम्मान करता हूँ। इस समय मैं महाप्राण ध्यान-साधना में संलग्न हूँ। प्रस्तुत ध्यान साधना से चौदह पूर्व की ज्ञान राशि का मुहूर्त मात्र में परावर्तन कर लेने की क्षमता आ जाती है। अभी इसकी सम्पन्नता में कुछ समय अवशेष है। अतः मैं आने में असमर्थ हूँ। संघ प्रतिभा-सम्पन्न श्रमणों को यहाँ प्रेषित करे। मैं उन्हें साधना के साथ ही वाचना देने का प्रयास करूंगा।"**

'तित्थोगालिय' के अनुसार आचार्य भद्रबाहु ने साथ ही कहा – **"मैं एक अपवाद के साथ वाचना देने को तैय्यार हूँ। आत्महितार्थ, वाचना ग्रहणार्थ आने वाले श्रमणों की चर्या में बाधा उत्पन्न नहीं करूंगा, और वे भी मेरे कार्य में बाधक न बनें! कायोत्सर्ग सम्पन्न कर भिक्षार्थ आते-जाते समय और रात्रि में शयन-काल के पूर्व उन्हें वाचना प्रदान करता रहूँगा।"** **'तथास्तु'** कह वन्दन कर वहाँ से वे सभी श्रमण वापस चल पड़े। संघ को संवाद सुनाया। तो आचार्य श्री के अनुग्रह पर सभी हर्षित हुए।

संघ ने महान् मेधावी कामजयी वीर उद्यमी स्थूलभद्र आदि को 'दृष्टिवाद' के अध्ययन के लिये प्रेषित किया। पूर्वाचार्यों के अनुसार पांच सौ शिक्षार्थी नेपाल पहुंचे थे। 'तित्थोगालिय' के अनुसार श्रमणों की संख्या पन्द्रह सौ थी। **इनमें पांच सौ श्रमण शिक्षार्थी थे और हजार श्रमण परिचर्या करने वाले अल्पवयी थे। आचार्य भद्रबाहु प्रतिदिन उन्हें सात वाचना प्रदान करते थे। एक वाचना भिक्षाचर्या से आते समय, तीन वाचना विकाल वेला में और तीन वाचना प्रतिक्रमण के पश्चात् रात्रि में प्रदान करते थे।**

बारहवां अंग दृष्टिवाद अत्यन्त कठिन था। वाचना प्रदान करने की गति मन्द थी। मेधावी मुनियों का धैर्य ध्वस्त हो गया। चार सौ निन्यानवे शिक्षार्थी मुनि वाचना क्रम को छोड़कर चले गये। केवल श्री स्थूलभद्र मुनि निष्ठा से अध्ययन में लगे रहे। आठ वर्ष में उन्होंने आठ पूर्वों का अध्ययन किया। आठ वर्ष के लम्बे समय में भद्रबाहु और स्थूलमद्र के बीच किसी भी प्रकार की वार्ता का उल्लेख नहीं मिलता। **एक दिन स्थूलभद्र से आचार्य भद्रबाहु ने पूछा – 'तुम्हें भिक्षा एवं स्वाध्याय योग में किसी भी प्रकार का कोई कष्ट तो नहीं है?' स्थूलभद्र ने निवेदन किया – 'मुझे कोई कष्ट नहीं है पर जिज्ञासा है कि मैंने आठ वर्षों में कितना अध्ययन किया है? और कितना अभी शेष है? भद्रबाहु ने कहा – "वत्स! सरसों जितना ग्रहण किया है, और मेरु जितना बाकी है।"**

दृष्टिवाद के अगाध ज्ञानसागर से अभी तक तुम बिन्दुमात्र पाये हो।' स्थूलभद्र ने पुनः निवेदन किया 'भगवन्! मैं हतोत्साह नहीं हूं, किन्तु मुझे वाचना का लाभ स्वल्प मिल तो रहा है। आपके जीवन का सन्ध्याकाल है, इतने कम समय में वह विराट् ज्ञान-राशि कैसे प्राप्त कर सकूँगा?'

आचार्य भद्रबाहु ने आश्वासन देते हुये कहा – "वत्स! चिन्ता मत करो। मेरा साधना-काल सम्पन्न हो रहा है। अब मैं तुम्हें यथेष्ट वाचना दूंगा।" उन्होंने दो कम दशपूर्वों की वाचना

ग्रहण कर ली। विलुप्त प्रमाण होने पर भी यह मान्यता है कि उन्होंने दशपूर्व पूर्ण कर लिये थे। और ग्यारहवें पूर्व का अध्ययन चल रहा था। साधनाकाल सम्पन्न होने पर आर्यभद्रबाहु स्थूलभद्र के साथ पाटलिपुत्र आये। यक्षा आदि साध्वियाँ वन्दनार्थ गईं। तभी स्थूलभद्र ने चमत्कार प्रदर्शित किया। जब वाचना ग्रहण करने के लिये स्थूलभद्र भद्रबाहु के पास पहुंचे तो उन्होंने कहा – **'वत्स! ज्ञान का अहं विकास में बाधक है। तुम ने अति शक्ति का प्रदर्शन कर अपने आप को अपात्र सिद्ध कर दिया। अब तुम आगे की वाचना के लिये योग्य नहीं हो।'** स्थूलभद्र को अपनी प्रमादवृत्ति पर अत्यधिक दुख हुआ। चरणों में गिर कर क्षमायाचना की और कहा — पुनः अपराध की चेष्टा नहीं होगी। आप मुझे वाचना प्रदान करें। लेकिन प्रार्थना स्वीकृत नहीं हुई। स्थूलभद्र ने निवेदन किया – **मैं माया का निर्माण नहीं करूंगा, अवशिष्ट चार पूर्व ज्ञान देकर मेरी इच्छा पूर्ण करें। स्थूलभद्र के अत्यन्त आग्रह पर चार पूर्वों का ज्ञान इस अपवाद के साथ देना स्वीकार किया कि अवशिष्ट चार पूर्वों का ज्ञान आगे किसी को भी नहीं दे सकोगे। दशपूर्व तक उन्होंने अर्थ ग्रहण किया था और शेष चार पूर्वों का ज्ञान शब्दशः प्राप्त किया था।** (उपदेशमाला विशेष वृत्ति, आवश्यक–चूर्णि, तित्थोगालिय, परिशिष्टपर्व, प्रभृति ग्रन्थों में कहीं संक्षेप में और कहीं विस्तार से यह वर्णन है।)

❖ भ्रांति निवारणार्थ सूचन

यहाँ पर यह भी स्मरण रखना होगा कि नेपाल जाकर योग की साधना करने वाले भद्रबाहु और उज्जैन होकर दक्षिण की ओर बढ़ने वाले भद्रबाहु, एक व्यक्ति नहीं हो सकते। दोनों के लिये चतुर्दशपूर्वी लिखा गया है। यह उचित नहीं है। इतिहास के लम्बे अन्तराल में इस तथ्य को सभी परम्पराएं स्वीकार करती हैं।

प्रथम आ. भद्रबाहु का समय वीर निर्वाण की द्वितीय

शताब्दी है, तो द्वितीय आ. भद्रबाहु का समय वीर-निर्वाण की पाँचवीं शताब्दी के पश्चात् है। प्रथम भद्रबाहु चतुर्दश पूर्वी और छेद सूत्रों के रचनाकार थे। जबकि द्वितीय भद्रबाहु वराहमिहिर के भ्राता थे। राजा चन्द्रगुप्त का सम्बन्ध प्रथम भद्रबाहु के साथ न होकर द्वितीय भद्रबाहु के साथ रहा है क्योंकि प्रथम आ. भद्रबाहु का स्वर्गवासकाल वीर निर्वाण एक सौ सत्तर (170) के लगभग है। एक सौ पचास वर्षीय नन्द साम्राज्य का उच्छेद और मौर्य शासन का प्रारम्भ वीर-निर्वाण दो सौ दस वर्ष के आस-पास का कालखण्ड है। ये जानकारी रहना चाहिये। ●●●

श्रमण संस्कार है, श्रेयस्कर प्रवचन एवं श्रवण

धर्म प्रभावना प्रत्येक श्रमण–श्रमणी का प्रथम कर्त्तव्य है। लेकिन प्रवचन प्रभावना के चार भाग हैं **शुश्रुषा** यानि उपस्थित श्रोता की स्थिति–परिस्थिति अनुसार भावाभिव्यक्ति, दूसरा है **श्रवण** यदि श्रोता कोई समाधान चाहे तो उसे ध्यानपूर्वक सुनना फिर अपना मत श्रवण कराना, तीसरा है, **ग्रहण** पर्षदा से स्वयं भी सीखना कि आज कैसा अनुभव रहा। चौथा तत्व है **धारणा**। **प्रत्येक श्रमण चिन्तन-मनन कर अपनी स्वयं की भावी धारणा बनाएं और प्रवचन में स्पष्ट करें।** ये चार तत्व परिपूर्ण प्रवचन को श्रेयस्कर बनाने वाले हैं।

इन्हीं से प्रवचन–प्रभावना और श्रवण यात्रा परिपूर्ण होती है। **श्रवण, ग्रहण और धारणा** के बाद **श्रवण** की परिपूर्णता या परिपक्वता का अगला पड़ाव है **'ऊह'** – ऊह का अर्थ है – **तर्क।** जिस बात को सुनकर ग्रहण किया, धारण किया उसमें युक्तिपूर्वक तर्क को खोजना कि जो बात कही गई है या सुनी गई है, क्या वह ठीक है? अथवा किसी वस्तु या बात के विषय में सुनने की इच्छा हुई, सुनी हुई, ग्रहण की, श्रद्धापूर्वक उसे धारण भी किया, किन्तु उसके विषय में श्रद्धायुक्त तर्क उठा कि–**यह बात ऐसे क्यों कही गई है? किसलिए कही गई है? कैसे कही गई है? किस सिलसिले में कही गई है? इत्यादि रूप से तर्क करना 'ऊह' है।** अगर कोई व्यक्ति अन्ध श्रद्धापूर्वक ज्यों की त्यों मान लेता है, सुनकर धारणा भी कर लेता है। तो आगे चलकर बिना युक्तिसंगत तर्क के ग्रहण की हुई बात जब यथार्थ फलदायी नहीं निकलती या अन्यथा निकलती है या विपरीत अर्थ ग्रहण या धारणा वाली निकलती है तो उससे **अनर्थ** होने की आशंका रहती है।

चतुर्विद संघ की नींव, जिनमत के आलोक में ''श्रमण एवं श्रमणोपासक''

जैन धर्म दर्शन में आचार सम्बन्धी आत्म विश्लेषण वर्णन स्थानांग सूत्र में बहुत ही विस्तार के साथ दिया गया है। श्रमण-श्रावक समाचारी रूप आचार-संहिता के सभी मूलभूत तत्त्वों का निरूपण इसमें पाया जाता है।

वैसे भी आचार धर्म के दो भेद हैं — सागार-धर्म और अनगार- धर्म! सागार-धर्म-सीमित मार्ग है। वह जीवन की सरल और लघु पगडण्डी है। स्मरण रहे गृहस्थ धर्म अणु अवश्य है किन्तु हीन और निन्दनीय नहीं है। इसलिये सागार धर्म का आचरण करने वाला व्यक्ति श्रमणोपासक या उपासक कहलाता है। स्थानांग में सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, और सम्यक् चरित्र को मुक्ति का सम्यक् मार्ग कहा है। उपासक जीवन में सर्वप्रथम सत्य के प्रति आस्था होती है। सम्यग्दर्शन के आलोक में ही वह जड़ और चेतन, संसार और मोक्ष, धर्म और अधर्म का परिज्ञान होता है। हमारी यात्रा का लक्ष्य स्थिर हो जाता है। जानकार का सोचना समझना और बोलना, सभी कुछ विलक्षण होता है। उपासक के लिये **"अभिगय जीवाजीवे"** यह विशेषण आगम साहित्य में अनेक स्थलों पर प्रस्तुत हुआ है। स्थानांग के द्वितीय स्थान में इस सम्बन्ध में अच्छा चिन्तन प्रस्तुत किया है।

मोक्ष की उपलब्धि के साधनों के विषय, में सभी दार्शनिक एकमत नहीं हैं क्योंकि जैन दर्शन न एकान्त ज्ञानवादी है, न क्रियावादी है, न भक्तिवादी है। जिनमत के अनुसार ज्ञान- क्रिया और भक्ति का समन्वय ही मोक्षमार्ग है। स्थानांग में "विज्जाए चेव चरणेण चेव" कहकर इस सत्य को उद्घाटित किया है।

स्थानांग में उपासक के लिये पाँच अणुव्रतों का उल्लेख है। उपासक को अपना जीवन, व्रत से युक्त बनाना चाहिये।

श्रमणोपासक की श्रद्धा और वृत्ति की भिन्नता के आधार पर इसको चार भागों में विभक्त किया है। जिनके अन्तर्मानस में श्रमणों के प्रति प्रगाढ वात्सल्य होता है, उनकी तुलना माता-पिता से की गई है। जो तत्त्वचर्चा और जीवन-निर्वाह इन दोनों प्रसंगों में वात्सल्य का परिचय देते हैं। कितने ही श्रमणोपासकों के अन्तर्मन में वात्सल्य भी होता है और कुछ में उग्रता भी रही हुयी होती है। उनकी तुलना भाई से की गयी है। जैसे कई श्रावक तत्त्वचर्चा के प्रसंगों में निष्ठुरता का परिचय देते हैं किन्तु जीवन-निर्वाह के प्रसंग में उनके हृदय में वत्सलता छलकती है। कितने ही श्रमणोपासकों में सापेक्ष वृत्ति होती है। यदि किसी कारणवश प्रीति नष्ट हो गयी तो वे उपेक्षा भी करते हैं। वे अनुकूलता के समय वात्सल्य का परिचय देते हैं और प्रतिकूलता के समय उपेक्षा कर देते हैं। ज्ञातव्य यह भी है कि कितने ही श्रमणोपासक ईर्ष्या के वशीभूत होकर श्रमणों में दोष ही निहारा करते हैं। वे किसी भी रूप में श्रमणों का उपकार नहीं करते। उनके व्यवहार की तुलना ईर्ष्यायुक्त सौत से की गई है।

स्थानांग में श्रमणोपासक की आन्तरिक योग्यता के आधार पर चार वर्ग किये हैं।

(1) कितने ही श्रमणोपासक दर्पण के समान निर्मल होते हैं। वे तत्त्वनिरूपण के यथार्थ प्रतिबिम्ब को ग्रहण करते हैं। समभावी रहते हैं।

(2) कितने ही श्रमणोपासक ध्वजा की तरह अनवस्थित होते हैं। ध्वजा जिधर भी हवा होती है, उधर ही मुड़ जाती है। उसी प्रकार उन श्रमणोपासकों का तत्त्वबोध अनवस्थित होता है। निश्चित-बिन्दु पर उनके विचार स्थिर नहीं होते। ये प्रभावित लोग होते है, ढुलमुल होते हैं।

(3) कितने ही श्रमणोपासक स्थाणु की तरह प्राणहीन और

शुष्क होते हैं। उनमें लचीलापन नहीं होता। वे आग्रही होते हैं। 'कट्टर' कहलाना पसंद करते हैं मगर शोधक नहीं होते! विवेक का अभाव ही उनका मूल होता है।

(4) कितने ही श्रमणोपासक काँटे के सदृश होते हैं। काँटे की पकड़ बड़ी मजबूत होती है। वह हाथ को बींध देता है, वस्त्र भी फाड़ देता है। वैसे ही कितने ही श्रमणोपासक कदाग्रह से ग्रस्त होते हैं। श्रमण कदाग्रह छुड़वाने के लिये उसे तत्त्वबोध प्रदान करते हैं, किन्तु वे तत्त्वबोध को स्वीकार नहीं करते। अपितु तत्त्वबोध प्रदान करने वाले को दुर्वचनों के तीक्ष्ण काँटों से बींध देते हैं। इस तरह श्रमणोपासक के सम्बन्ध में पर्याप्त उदाहरण है।

श्रमणोपासक की तरह ही श्रमणजीवन के सम्बन्ध में भी स्थानांग में महत्त्वपूर्ण सामग्री का संकलन है। श्रमण का जीवन अत्यन्त उग्र साधना का है। जो धीर, वीर और साहसी होते हैं, वे इस महामार्ग को अपनाते हैं। श्रमणजीवन का यथार्थ साधक, जो मोक्षाभिलाषी ही आत्म नियंत्रण स्वीकार कर सकता है।

❖ दीक्षा प्रव्रज्या के 10 कारण

स्थानांग में प्रव्रज्याग्रहण करने के दश कारण बताये हैं। यों अनेक कारण हो सकते हैं किन्तु प्रमुख कारणों का निर्देश किया गया है। वृत्तिकार ने दश प्रकार की प्रव्रज्या के उदाहरण भी दिये हैं। (1) छन्दा : अपनी इच्छा से विरक्त होकर प्रव्रज्या धारण करना। (2) रोषा : क्रोध के कारण प्रव्रज्या ग्रहण करना। (3) दारिद्रयद्यूना : गरीबी के कारण प्रव्रज्या ग्रहण करना। (4) स्वप्ना : स्वप्न से वैराग्य उत्पन्न होकर दीक्षा लेना। (5) प्रतिश्रुता : पहले की गयी प्रतिज्ञा की पूर्ति के लिये प्रव्रज्या ग्रहण करना! (6) स्मरणिका : पूर्व भव की स्मृति के कारण प्रव्रज्या ग्रहण करना। (7) रोगिनिका : रुग्णता के कारण

प्रव्रज्या ग्रहण करना। (8) अनादृता : अपमान के कारण प्रव्रज्या ग्रहण करना। (9) देवसंज्ञप्तता : देवताओं के द्वारा संबोधित किये जाने पर प्रव्रज्या ग्रहण करना। (10) वत्सानुबंधिका : दीक्षित पुत्र के मोह के कारण प्रव्रज्या ग्रहण करना।

❖ श्रमणाचार संबोध

निष्कर्षतः श्रमण प्रव्रज्या के साथ ही स्थानांग में श्रमणधर्म की सम्पूर्ण आचारसंहिता दी गई है। उसमें पाँच महाव्रत अष्ट प्रवचनमाता, नव ब्रह्मचर्यगुप्ति, परीषहविजय, प्रत्याख्यान, पाँच-परिज्ञा, बाह्य और आभ्यन्तर तप, प्रायश्चित्त, आलोचना करने का अधिकारी, आलोचना के दोष, प्रतिक्रमण के प्रकार, विनय के प्रकार, वैयावृत्य के प्रकार, स्वाध्याय-ध्यान, अनुप्रेक्षाएँ मरण के प्रकार, आचार के प्रकार, संयम के प्रकार, आहार के कारण, गोचरी के प्रकार, वस्त्र, पात्र, रजोहरण, भिक्षु-प्रतिमाएँ, प्रतिलेखना के प्रकार, व्यवहार के प्रकार, संघ व्यवस्था, आचार्य उपाध्याय के अतिशय, गण छोड़ने के कारण, शिष्य और स्थविर, कल्प, समाचारी सम्भोग- विसम्भोग, निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियों के विशिष्ट नियम आदि श्रमणाचार-सम्बन्धी नियमोपनियमों का वर्णन है। जो नियम अन्य आगमों में बहुत विस्तार के साथ आये हैं, उनका संक्षेप में यहाँ सूचन किया है। जिससे श्रमण उन्हें स्मरण रखकर संम्यक् प्रकार से उनका पालन कर सके।

आगम के आलोक में तुलनात्मक अध्ययन

स्थानांग सूत्र में शताधिक विषयों का संकलन हुआ है। इसमें जो सत्य–तथ्य प्रकट हुए हैं उनकी प्रतिध्वनि अन्य आगमों में निहारी जा सकती है। कहीं–कहीं पर विषय–साम्य हैं तो कहीं–कहीं पर शब्द–साम्य है। स्थानांग के विषयों की अन्य आगमों के साथ तुलना करने से प्रस्तुत आगम का सहज की महत्त्व परिज्ञात होता है। हम यहाँ बहुत ही संक्षेप में स्थानांगगत विषयों की तुलना अन्य आगमों के आलोक में प्रस्तुत कर रहे हैं।

स्मृतियां जो इतिहास बन गईं...

ऐतिहासिक पूर्वाचार्यों के संस्मरण

ऐतिहासिक पाटलीपुत्र के प्राचीन अवशेष

श्रमण जीवन के प्रेरक प्रसंग : संस्मरण

ऐसा भी लोमहर्षक देहत्याग

वीर निर्वाण सं. 170 से 584 तक का काल दशपूर्वधर काल माना जाता है। इस काल के तृतीय आचार्य एवं भगवान् महावीर स्वामी के दसवें पट्टधर आचार्य आर्य सुहस्ती हुए हैं। आपका गोत्र वशिष्ठ था। आपने 30 वर्ष की अवस्था में दीक्षा अंगीकार की एवं 46 वर्ष तक आचार्य पद को सुशोभित करते हुए 100 वर्ष की अवस्था में वीर निर्वाण सं. 291 किया। आपका आचार्य काल वीर निर्वाण सं. 245 से 291 तक विद्यमान रहा।

अपने आचार्य काल में ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए आचार्य सुहस्ती का एक बार उज्जयिनी नगरी में पदार्पण हुआ। नगर के बाहर उद्यान में वे रुक गये। नगर में भद्रा नामक एक सुसमृद्ध श्राविका थी। श्राविका भद्रा आचार्य सुहस्ती की परम भक्त थी। आचार्य सुहस्ती ने रात्रि विश्राम हेतु किसी योग्य स्थान की आज्ञा प्राप्त करने के लिए अपने दो शिष्यों को नगर में श्राविका भद्रा के पास भेजा। श्राविका भद्रा ने बड़ी ही विनम्रता के साथ विधिवत् वन्दन नमस्कार करते हुए संतों का स्वागत किया। संतों ने अपने गुरु की आज्ञा को भद्रा से कह सुनाया। श्राविका भद्रा ने बड़ी ही श्रद्धापूर्वक अपनी बाहरी कुटी में संतों को विश्राम हेतु ठहरने की अनुमति प्रदान कर दी।

आचार्य सुहस्ती अपनी शिष्य मंडली के साथ भद्रा श्राविका के भवन की वाहन कुटी में रात्रि विश्राम हेतु आकर ठहर गये। दूसरे दिन प्रातः काल प्रदोष वेला में आचार्य सुहस्ती **नलिनीगुल्म अध्ययन** का पाठ सुमधुर कण्ठ से कर रहे थे। **भवन की सातवीं मंजिल पर भद्रा श्राविका का पुत्र अवंतिसुकुमाल**

अपनी 32 पत्नियों के साथ सो रहा था। आचार्य सुहस्ती के मधुर कंठ की आवाज उसके कानों में पड़ी। पाठ की आवाज अत्यन्त ही कर्णप्रिय थी। पाठ को ध्यान से सुनने की उसको तीव्र उत्कण्ठा उत्पन्न हुई। अवंतिसुकुमाल तुरन्त अपने भवन से नीचे उतर आया। पाठ को ध्यान से सुनने पर अवंतिसुकुमाल के हृदय उथल-पुथल सी मच गई। पाठ में वर्णित सुखों का अनुभव उसे चिर परिचित सा प्रतीत हुआ। अपनी स्मृति पर जोर डालते-डालते उसे जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया। पाठ की समाप्ति के पश्चात् अवन्तिसुकुमाल आचार्य सुहस्ती के समक्ष उपस्थित हुआ।

आचार्य सुहस्ती को विधिवत् वन्दन–नमस्कार करने के पश्चात् अवन्ति सुकुमाल बोला – "भगवन्! आपके कंठ सुमधुर से नलिनीगुल्म अध्ययन के पाठ को सुनकर मुझे जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया है। मैं अपने पूर्व जन्म में नलिनीगुल्म विमान में देवता था। वहाँ से च्यव करके मैं यहाँ माता भद्रा की कोख से उत्पन्न हुआ हूँ। अब मुझे पुनः अपने उसी नलिनीगुल्म विमान में जाने की उत्कण्ठा हुई है। मैं उसे प्राप्त करने हेतु आपके पास प्रव्रजित होना चाहता हूँ। आप मुझे दीक्षा प्रदान कीजिये।"

आचार्य सुहस्ती ने कहा – "वत्स! प्रव्रजित होना तुम जैसे सुकुमाल नवयुवक के लिए नाकों चने चबाने के समान है। जिनेन्द्र भगवान् द्वारा प्ररूपित शुद्ध श्रमणाचार का पालन करना अत्यन्त ही दुस्साध्य कार्य है। प्रव्रजित होने से पूर्व तुम स्वयं ही पुनः विचार कर लो एवं अपने पारिवारिक जनों से भी अनुमति प्राप्त कर लो। अपने भवन में आकर अवन्तिसुकुमाल ने अपनी माता, पत्नियों एवं अन्य पारिवारिकजनों से दीक्षार्थ अनुमति प्रदान करने हेतु आग्रह किया। परिवार के किसी भी सदस्य ने उसे आज्ञा प्रदान नहीं की। अवन्तिसुकुमाल पर तो नलिनीगुल्म विमान में पुनः जाने की धुन सवार हो गई थी। अतः एकान्त में

जाकर उसने स्वयं ही अपना केशलुंचन किया एवं श्रमणवेष धारणकर आचार्य सुहस्ती के समक्ष उपस्थित हुआ।

आचार्य सुहस्ती ने जब देखा कि अवन्तिसुकुमाल पूर्णरूपेण संसार से विरक्त हो चुका है, उसे अपनी देह का किंचित् मात्र भी मोह नहीं रह गया है तो उन्होंने विधिपूर्वक उसे श्रमण दीक्षा प्रदान कर दी। प्रव्रजित होने के पश्चात् मुनि अवन्ति सुकुमाल ने अपने गुरु आचार्य सुहस्ती को विधिवत् वन्दन-नमस्कार किया और बोले – "भगवन्! मैं लम्बे समय तक श्रमण जीवन के कष्टों को सहन नहीं कर पाऊँगा। अतः आपसे अनुरोध है कि आप मुझे आमरण अनशनपूर्वक साधना करने की आज्ञा प्रदान कर दीजिये।"

आचार्य सुहस्ती ने अपने शिष्य की प्रबल मनोकामना का आदर करते हुए नवदीक्षित मुनि अवन्ति सुकुमाल को आज्ञा प्रदान कर दी। आचार्य सुहस्ती से आज्ञा प्राप्त कर मुनि अवन्तिसुकुमाल ने नगर से बाहर श्मशान घाट की तरफ साधना हेतु प्रस्थान कर दिया। दोपहर की तपती रेत पर नंगे पैर चलते–चलते उनके पाँवों छाले पड़ गये। काँटों एवं कंकरों के चुभने से जगह–जगह पर उनके पाँवों से खून टपकने लगा। भूख–प्यास को सहज भाव से सहन करते हुए मुनि अवन्तिसुकुमाल श्मशान घाट पहुँच गये। अपनी देह का पूर्ण रूप से ममत्व त्याग कर श्मशान घाट पर मुनि ध्यान में मग्न हो गये। दिन व्यतीत हो गया और रात हो गई। रात के अंधेरे में शिकार की खोज में एक श्रृगालिनी अपने बच्चों के साथ श्मशान घाट से गुजरने लगी। वह मुनि के पास आयी और डरते हुए वह भुनि के पाँवों से टपकते हुए खून को चाटने लगी। मुनि की ओर से कोई प्रतिरोध न पाकर उसमें साहस का संचार हुआ।

खून चाटने में श्रृगालिनी के बच्चों ने भी उसका साथ दिया। आध्यात्मिक ध्यान में रमण करते हुए मुनि निश्चल खड़े

रहे। मुनि के कोमल पाँवों में दाँत गढ़ाकर श्रृगाल परिवार अब माँस भक्षण करने लगा। मुनि का ध्यान उच्च से उच्चतर सोपान पर चढ़ने लगा। पाँवों के कट जाने से मुनि की देह धड़ाम से धरती पर गिर पड़ी। मुनि का ध्यान फिर भी भंग नहीं हुआ।

श्रृगाल परिवार एक के बाद एक मुनि के अंगों को चट करने लगा। मुनि का आत्म चिंतन शुभ से शुभतर होता गया। **अन्ततोगत्वा समाधिपूर्वक प्राणोत्सर्ग कर मुनि अवन्ति सुकुमाल ने अपने लक्ष्य स्थान नलिनीगुल्म विमान को पुनः प्राप्त कर लिया। इस संकल्प प्रसंग का सारांश यही है कि मानव को यदि प्रबल एवं सच्ची लगन लग जाय तो वह अपने कठिन से कठिन लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।** ●●●

महामंत्र नवकार मुक्ति की युक्ति

जिज्ञासावश यह प्रश्न हमेशा उठता है कि "तीर्थंकरों का लक्ष्य भी सिद्धत्व की प्राप्ति है तो फिर भी नवकार मंत्र में अरिहंतों को वंदन पहले क्यों होता है?

इसका समाधान यह है कि **निश्चय नय की दृष्टि से सिद्ध परमात्मा बड़े है क्योंकि उन्होंने सभी कर्मों का क्षय कर लिया है, लेकिन व्यवहार नय की अपेक्षा तीर्थंकर (अरिहन्त) परमात्मा ज्येष्ठ हैं। वे अशरीरी होने के कारण ही हमें धर्मदेशना-धर्मबोध देकर सिद्ध बनना सिखाते हैं। सिद्ध हमें बोध देने को सिद्धशिला से तो नहीं आते।** अन्य रूप में भी विचारें तो अरिहंत भी भाषक सिद्ध ही हैं — (प्रज्ञापना सूत्र)।

फिर भी अरिहंत पद अधिक दुर्लभ है। अतः व्यवहार पक्ष को लेकर हम तीर्थंकरों को अरिहंत मानकर सिद्धों से पहले वन्दन-स्मरण करते हैं। अरिहंत-सिद्ध हमारे आराध्य हैं तो आचार्य, उपाध्याय और सर्व साधु आराधक। इस प्रकार 5 परमेष्ठि महामंत्र के पावन पद में मुक्ति के महासूत्र है। शाश्वत शांति के केन्द्र हैं।

पुण्य स्मरण

श्रुत संवर्धक महान भाष्यकार जिनभगणि क्षमाश्रमण

जैन आगमों के भाष्यकारों में संघदास गणि तथा जिनभद्र गणी क्षमाक्षमण – ये दो आचार्य प्रमुख हैं । इनमें जिनभद्रगणि का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। इनके जीवन-वृत्त आदि के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त नहीं होती। ऐसा प्रतीत होता है कि आचार्य जिनभद्र अपने जीवनकाल में इतनी ख्याति अर्जित नहीं कर पाये और यही कारण है कि उनके जीवन की विशिष्ट घटनाओं और विस्तृत पारिवारिक विवरणों का क्रमबद्ध उल्लेख नहीं प्राप्त होता। उनके कृतित्व व वैदुष्य का साक्षात्कार उनके द्वारा रचित ग्रंथों के अनुशीलन से होता है। उनके संबंध में उत्तरवर्ती कुछ विशिष्ट आचार्यों ने अल्प उल्लेख किया है, उन उल्लेखों में कुछ–एक विरोधपूर्ण व संदिग्ध भी हैं। उदाहरणार्थ – (15 – 16 वीं शती की) **पट्टावलियों में इन्हें आचार्य हरिभद्र का पट्टधर शिष्य बताया गया है जो नितान्त असत्य है, क्योंकि जिनभद्रगणी और आ. हरिभद्र में करीब एक शती का अन्तर प्रमाणसिद्ध है।**

अधिकतया इनके नाम के आगे **'क्षमाश्रमण'** विशेषण प्रयुक्त हुआ है। वाचानाचार्य विशेषण या उपाधि भी इनके नाम के साथ प्रयुक्त की गई है। **वाचनाचार्य व क्षमाश्रमण** – इन दोनों को पर्याय रूप में भी माना जाता है। शिष्यहिता नामक बृहद्वृत्ति के रचयिता **आचार्य मलधारी हेमचन्द्र** ने इन्हें **'क्षमाश्रमण'** कहकर इनका गुणगान करते हुए कहा है कि **ये आवश्यक-भाष्य रूपी अमृत के सागर एवं गुणरत्नाकर थे।**

आ. जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण जैन आगम–परम्परा के प्रबल पोषक आचार्य रहे हैं। ये भारतीय दर्शन व न्याय के तो विशिष्ट विद्वान् थे ही, इनका संस्कृत प्राकृत — इन दोनों भाषाओं पर भी पूर्ण अधिकार था। इनकी कृतियां प्राकृत व संस्कृत, दोनों में प्राप्त होती हैं। इनकी अर्थप्रतिपादन क्षमता, तार्किक शक्ति, अभिव्यक्ति कुशलता एवं विशिष्ट प्रतिपादन–शैली अप्रतिम है — इसमें संदेह नहीं।

इन्हें महानिशीथ सूत्र के उद्धारकर्ता के रूप में भी ख्याति प्राप्त है। आ. जिनभद्र रचित 'विविध तीर्थकल्प' में ऐसा वर्णन मिलता है कि महानिशीथ सूत्र दीमकों द्वारा नष्ट कर दिया गया था, किन्तु इन्होंने मथुरा में देवनिर्मित स्तूप में अधिष्ठित देव की आराधना की और उसके फलस्वरूप उस सूत्र का पुनरुद्धार किया। आचार्य सिद्धसेन गणी ने जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण के अनेकानेक वैदुष्यपूर्ण कार्यों का उल्लेख करते हुए उन्हें **युगप्रधान, अनुयोगधर, दर्शनज्ञानोपयोग मार्गदर्शक, क्षमा-श्रमणों में निधानभूत** आदि अनेक सम्मानसूचक विशेषणों के साथ श्रद्धाप्रणति निवेदित की है।

ज्ञातव्य है कि विशेषावश्यकभाष्य के अतिरिक्त इनकी अन्य कृतियां भी हैं। वे हैं — जीतकल्पभाष्य, बृहत्संग्रहणी, बृहत् क्षेत्रसमास, विशेषणवती, अनुयोगद्वार चूर्णि (अनुपलब्ध)। इनमें विशेषावश्यक भाष्य पर स्वोपज्ञ वृत्ति संस्कृत गद्य में हैं, शेष ग्रन्थ प्राकृत पद्यात्मक हैं। अनुयोगद्वार चूर्णि को जिनदास कृत अनुयोगचूर्णि एवं हरिभद्रीय अनुयोगद्वारवृत्ति में अक्षरशः उद्धृत किया गया है।

❖ विशेषावश्यक भाष्य का रचनाकाल और आचार्य श्री

जिनदास महत्तर कृत नन्दीचूर्णि में जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण–कृत विशेषावश्यक भाष्य का उल्लेख मिलता है और नन्दीचूर्णि का रचना – काल वि. सं. 733 है, अतः भाष्यकार का समय इससे पूर्व मानना पड़ेगा। इसी तरह, **विशेषावश्यक भाष्य**

आदि ग्रंथों में सिद्धसेन, पूज्यपाद आदि उन आचार्यों एवं उनके मतों का उल्लेख है जो विक्रम संवत् 5–6 शती में हुए हैं। अतः यह मानना पड़ेगा कि भाष्यकार विक्रम संवत् 5–7वीं शती के मध्य किसी समय हुए होंगे। इन्हीं अनेक प्रमाणों पर ऊहापोह करके विद्वानों ने जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण का समय विक्रम संवत् 6–7 वीं शती (545–650 वि. सं.) निर्धारित किया है।

संभवतः पाठक यह प्रश्न कर सकते हैं कि यह उल्लेख क्यों किया जा रहा है तो मेरा उत्तर होगा कि — **आज जो आवश्यक साधना सूत्र हमारे बीच है उनका आलम्बन लेकर ही हम अपनी निवृत्ति मार्गी आत्म-साधना सम्पन्न करते हैं। तो क्या हम ऐसे उपकारक महाश्रमण का स्मरण कृतज्ञता स्वरूप भी ना करें?**

●●●

हर श्रमण की शाश्वत क्यों है सामायिक

हम सब जानते हैं कि एक सामायिक 48 मिनट की होती है। 48 को उल्टा करते हैं तो 84 होता है! अतः 84 लाख जीव योनि की रक्षाकर्ता होती है एक सामायिक। 48 को आधा करते हैं तो होता है 24, 24 तीर्थंकरों की आज्ञा में ही होती है एक सामायिक। 24 को आधा करते हैं तो होता है 12, 12 व्रतों में एक व्रत है सामायिक। 12 को आधा करते हैं तो होता है छः, छः काय जीवों की रक्षा होती है एक सामायिक। छः को आधा करते हैं तो होता है तीन, जो तीन करण और तीन योग से होता है चारित्र, जो आत्माओं की सामायिक है। तीन के आगे होता है दो, दो करण और तीन योग से होती है श्रावकों की सामायिक। दो के आगे होता है एक, अतः मोक्ष में जाने का रास्ता है एक सामायिक।

इसीलिए हर श्रमण की सामायिक शाश्वत होती है और श्रावक-श्राविका की यथाशक्ति होती है सामायिक।

●●●

संस्मरण

ज्ञान मेरा स्वभाव! विवेक मेरा मित्र!!

प्रतिभा पुत्र मुनि रक्षित ने अल्प समय में ही आचारांग आदि एकादश अंग शास्त्रों का अध्ययन पूर्ण कर लिया और **'दृष्टिवाद'** का जो संभव था वो ज्ञान पा लिया तो आचार्य तोषलिपुत्र ने मुनि रक्षित को पूर्वों के आगे के अध्ययन के लिए दस पूर्वधर आचार्य वज्रस्वामी के पास भेजा। आचार्य वज्र की सेवा में जाते हुए मुनि रक्षित उज्जयिनी पहुंचे। वहां स्थविर भद्रगुप्त ने युवा मुनि रक्षित का स्वागत करते हुए कहा, "वत्स! तुम ठीक समय पर आ गए। अब मेरा अंतिम समय आ चुका हैं मेरी संलेखना में यहां कोई अन्य निर्यामक नहीं है अतः तुम मेरी संलेखना पूर्ण होने तक यहीं मेरे पास रहो! जिससे मेरी संलेखना पूर्ण समाधि के साथ समाप्त हो।"

तपोधन श्रमण श्रेष्ठ स्थविर की अंतिम सेवा के स्वर्णिम सुयोग्य को अपना अहोभाग्य समझ कर मुनि रक्षित,स्थविर भद्रगुप्त के पास रहे और बड़ी लगन से उनकी सेवा की। इनकी सेवा से प्रसन्न होकर स्थविर भद्रगुप्त ने मुनि रक्षित से कहा–वत्स! तुम पूर्वों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आ. वज्र के पास जा रहे हो, यह तो ठीक है पर तुम उनसे अलग उपाश्रय में ठहर कर विद्याभ्यास करना क्योंकि इस समय आर्य वज्र स्वामी की कुण्डली में इस प्रकार का योग है कि जो कोई भी उनके एक रात्रि के लिए ठहरेगा, उसका उन्हीं के साथ मरण होना सुनिश्चित है। मुनि रक्षित ने स्थविर भद्रगुप्त की आज्ञा को शिरोधार्य किया।

यहीं बात आर्य वज्र जब अपने शिष्यों कह ही रहे थे उसी समय आर्य रक्षित उनकी सेवा में पहुंच कर सविधि भक्ति सहित वन्दन किया।

आचार्य वज्र स्वामी ने पूछा – कहां से आए हो?

मुनि रक्षित – आर्य तोषलिपुत्र की सन्निधि से।

आर्य वज्र – क्या तुम आर्य रक्षित हो?

विनयावत हो आर्य रक्षित ने कहा – "हां भगवन्।"

आचार्य वज्र ने स्वागतम कहकर पूछा – "क्या तुम यह नहीं जानते कि पृथक स्थान में रहते हुए समीचीन रूप से अध्ययन नहीं होता?"

आर्य रक्षित ने आचार्य भद्रगुप्त से प्राप्त निर्देश के अनुसार पृथक ठहरने की बात कही तो आचार्य ने कहा – ठीक है, आचार्य ने किसी कारण से ही ऐसा कहा होगा। **तदन्तर आचार्य वज्र ने आर्य रक्षित को पूर्वों की शिक्षा देना प्रारंभ किया। महा मेधावी आर्य रक्षित ने बड़ी लगन और तत्परता से अध्ययन करते हुए अल्प समय में ही नौ पूर्वों की शिक्षा पूर्ण कर ली और दसवें पूर्व का अध्ययन प्रारंभ कर लिया।**

उधर आर्य रक्षित के माता–पिता पुत्र वियोग में चिन्तित होकर सोचने लगे – अहो! हमने सोचा था कि पुत्र उद्योत करेगा पर वह तो घर में अंधेरा करके चला गया। उन्होंने आर्य रक्षित को बुलाने के लिए अपने कनिष्ठ पुत्र फल्गुरक्षित को भेजा। फल्गुरक्षित ने आर्य रक्षित के पास पहुंच कर कहा–माता आपको अहर्निश स्मरण करती है। आप अगर एक बार दशपुर (मंदसौर) चलो तो माता–पिता सभी स्वजन प्रव्रज्या ग्रहण कर लेंगे।

आर्य रक्षित पूर्णतः अध्यात्मज्ञान में रम चुके थे। उन्होंने समझ लिया था कि संसार के सभी संबंध नश्वर हैं। तन, धन, परिजन कोई मेरा नहीं है। मैं शरीर से भिन्न शुद्ध चेतन हूं! ज्ञान मेरा स्वभाव और विवेक ही मेरा मित्र है।

उन्होंने फल्गुरक्षित से कहा – वत्स! यदि मेरे चलने पर माता–पिता आदि प्रव्रज्या ग्रहण करने के लिए तत्पर हैं तो पहले तुम तो प्रव्रज्या ग्रहण कर लो। फल्गुरक्षित ने तत्काल प्रव्रज्या

ग्रहण कर ली और श्रमण धर्म का यथाविधि पालन करते हुए सदा आर्य रक्षित को दशपुर चलने की स्मृति कराते रहे।

एक दिन आर्य रक्षित ने आचार्य वज्र से पूछा – भगवन्! अब दशवां पूर्व कितना और पढ़ना शेष है? आचार्य वज्र ने कहा – वत्स अभी तो सिन्धु में से बिन्दु जितना हुआ है और समुद्र जितना शेष है। इतना ज्ञान अर्जन करना अपने सामर्थ्य से बाहर समझकर आर्य रक्षित ने आचार्य वज्र से दशपुर जाने की अनुमति चाही पर आचार्य वज्र ने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा– "वत्स! धैर्य रखो। अभी और पढ़ो।"

यथाज्ञा देव! कहकर आर्य रक्षित पुनः आगे पढ़ने लगे पर क्योंकि अब उन्हें पहले जैसा आत्मविश्वास नहीं रहा था कि इस अथाह ज्ञान को हृदयंगम कर सकेंगे, अतः वे पुनः पुनः आचार्य वज्र से दशपुर जाने की अनुमति चाहने लगे।

इस पर आचार्य वज्र के मन में विचार आया कि क्या दशवां पूर्व उनके देहावसान के साथ ही विछिन्न हो जाएगा? उन्होंने ज्ञानोपयोग लगाकर देखा – वस्तुतः अब आर्य रक्षित दशपुर जाने के पश्चात लौट कर नहीं आएगा और न ही कोई अन्य सुयोग्य पात्र ही दृष्टिगोचर होता है जो यह समस्त पूर्वज्ञान को ग्रहण कर सके और न ही मेरा इतना आयुष्य अवशिष्ट है। ऐसी दशा में मेरी आयु समाप्ति के साथ भरत क्षेत्र से दशवां पूर्व नष्ट हो जाएगा। भवितव्य को देखकर आचार्य वज्र ने अन्तोगत्वा आर्य रक्षित को दशपुर जाने की अनुमति प्रदान कर दी।

इस प्रकार आर्य रक्षित नौ पूर्वों का सम्पूर्ण और दशवें पूर्व का अपूर्ण आधा ज्ञान ही प्राप्त कर सके और अपने अनुज मुनि फल्गुरक्षित के साथ दशपुर की ओर प्रस्थित हुए। दशपुर पहुंचने के पश्चात आरक्षित ने अपने माता–पिता आदि परिजनों को उपदेश देकर प्रतिबुद्ध किया। इसके फलस्वरूप वे सब श्रमण धर्म में दीक्षित होकर आर्य रक्षित सहित गुरु तोषलिपुत्र की शरण में पहुंचे।

●●●

संस्मरण

सम्मान स्वाभिमान हेतु धर्म युद्ध!

वीर निर्वाण के पश्चात् कालकाचार्य नाम के दो आचार्यों ने जिनशासन की शोभा बढ़ाई। वीर निर्वाण की चौथी शताब्दी में प्रथम कालकाचार्य हुए उनसे ठीक एक शताब्दी बाद अर्थात् वीर निर्वाण की पाँचवी शताब्दी में द्वितीय कालकाचार्य का प्रादुर्भाव हुआ।

धारावास के राजा वैरसिंह की रानी सुरसुन्दरी की कुक्षी से एक पुत्र एवं एक पुत्री का जन्म हुआ। पुत्र का नाम **'कालक'** एवं पुत्री का नाम **'सरस्वती'** रखा गया। राजकुमारी सरस्वती अत्यन्त रूपवान तथा देखने में साक्षात् सरस्वती के समान प्रतीत होती थी। दोनों भाई–बहन में प्रगाढ़ स्नेह था। दोनों साथ–साथ खाते–पीते, खेलते–कूदते एवं साथ–साथ घूमते–फिरते थे।

एक बार नगर के बाहर उद्यान में एक मुनिराज का आगमन हुआ। उनके दर्शनार्थ लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। राजा रानी भी अपने पुत्र कालक एवं पुत्री सरस्वती के साथ उनके दर्शन करने गये। मुनिराज की धर्मदेशना सुनकर राजकुमार कालक एवं राजकुमारी सरस्वती दोनों को वैराग्य उत्पन्न हो गया। माता–पिता के अनेक प्रकार से समझाने के पश्चात् भी वे अपने निश्चय पर अटल रहे और मुनिराज के पास दोनों ने दीक्षा अंगीकार कर ली। दीक्षा उपरान्त साध्वी सरस्वती को श्रमणियों के सुपुर्द कर दिया गया और वह उनके साथ अलग विचरने लगी।

तीव्र बुद्धिमान आर्य कालक ने जैन आगमों के अतिरिक्त ज्योतिष एवं निमित्त विद्या में विशिष्ठ ज्ञान प्राप्त कर लिया। अत्यन्त अल्प समय में ही वीर निर्वाण संवत् 453 में उन्हें

आचार्य पद की प्राप्ति हो गई। एक बार कालकाचार्य का अपनी शिष्य मंडली के साथ विचरण करते हुए उज्जयिनी नगर में आगमन हुआ। नगर के बाहर उद्यान में आचार्य विराज रहे थे। आचार्य के दर्शनार्थ एक श्रमणी मंडल आया जिसके साथ साध्वी सरस्वती भी थी। साध्वी सरस्वती के अनुपम सौंदर्य पर नगर के राजा गर्दभिल्ल की दृष्टि पड़ी और वह मुग्ध हो गया। एकान्त पाकर कामान्ध राजा गर्दभिल्ल ने अपने राजपुरूषों द्वारा साध्वी सरस्वती का अपहरण करवाकर अपने महल में पहुँचा दिया। असहाय साध्वी सरस्वती ने अपने सतीत्व की रक्षा के लिए दुष्ट गर्दभिल्ल से उसकी इच्छा पूर्ति के लिए कुछ काल की अवधि की याचना की। साध्वी की माँग को राजा ने मान लिया और बेसब्री से उस समय की प्रतीक्षा करने लगा। कालकाचार्य ने अपनी बहन साध्वी सरस्वती के अपहरण का समाचार सुना तो वे उज्जयिनी के श्रीसंघ को साथ लेकर राजा के महल में आये और राजा को समझाने के अनेक प्रयास किये। मगर दुष्ट गर्दभिल्ल ने साध्वी को नहीं लौटाया।

उन दिनों में भरौंच पर **बालमित्र** एवं **भानुमित्र** नामक दो भाईयों का शासन था। सांसारिक रिश्ते में आर्य कालकाचार्य के दोनों भाणजी थे। आर्य कालक भरौंच पहुँचे अपने दोनों भानजों को साध्वी सरस्वती के अपहरण के विषय से अवगत कराया। उज्जयिनी की विशाल सेना का सामना करने की भरौंच राजाओं में क्षमता नहीं थी।

उस समय फारस देश के शक लोगों के आक्रमण इस देश पर प्रारंभ हो गये थे। युद्ध नीति में वे लोग अत्यन्त चतुर एवं बहादुर थे। सिंध प्रान्त पर शकों का अधिकार हो चुका था। कालकाचार्य अपने दोनों भानजों के साथ सिंध प्रान्त में आये। अपने निमित्त ज्ञान से शकराज को अत्यन्त प्रभावित किया। शकराज ने आचार्य को उनकी बहन साध्वी सरस्वती को दुष्ट **गर्दभिल्ल** के फन्दे से मुक्त कराने का आश्वासन दिया।

शकराज की विशाल सेना ने भरौंच राजाओं की सेना के साथ उज्जयिनी की ओर प्रस्थान किया। दोनों संगठित सेनाओं

ने उज्जयिनी पर आक्रमण कर दिया। भीषण संग्राम प्रारंभ हो गया। लम्बे समय के पश्चात् उज्जयिनी की सेना परास्त हो गई। राजा गर्दभिल्ल को बन्दी बना लिया गया। साध्वी सरस्वती के सतीत्व की रक्षा हुई। शकराज को उज्जयिनी के राज सिंहासन पर आसीन लिया गया। इस प्रकार उज्जयिनी पर कुछ काल के लिए वीर निर्वाण संवत् 466 में विदेशी शासक शकराज का शासन प्रारंभ हुआ।

आर्य कालकाचार्य ने श्रमण चरित्र की शान को बचाने के लिए तथा अन्याय का प्रतिकार एवं दुष्ट राजा गर्दभिल्ल से अपनी बहन साध्वी सरस्वती को मुक्त कराने हेतु विवश होकर "धर्म युद्ध" का सहारा लिया। जिनशासन की व्यवस्था के विपरीत यह कदम उन्हें उठाना पड़ा। इस महाआरंभजन्य पाप की समुचित शुद्धि के लिए उन्होंने यथायोग्य प्रायश्चित लिया। अपनी बहन साध्वी सरस्वती को पुनः दीक्षित कर संयम मार्ग पर स्थापित किया। कैसी गजब की परीक्षा लेता है शील और साध्वाचार विचार करें। ●●●

शकारि विक्रम ही है हमारे आदर्श

अवंतिका या उज्जैन मालवा की वो ऐतिहासिक भूमि है, जहां के इतिहास में जैन संस्कृति का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। आपने विक्रम नाम तो सुना ही होगा, ये इतिहास गौरव ऐसे प्रतापी राजा थे जिन्होंने विदेशी शकों को सीमा पार खदेड़ कर विक्रम संवत चलाया। 'चण्ड प्रद्योत' भी इन्हीं वीरवर का नाम था। ये अपने समय के ऐसे शासक थे जो प्रजापालक न्यायप्रिय और सनातन धर्म प्रेमी थे।

यहां सनातन धर्म का अर्थ भी समझ लें। अर्थात् अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाकर अन्याय, अधर्म, अनैतिकता, असत्य और प्राणिमात्र के हितों के विरुद्ध होने वाले कार्यों का जो प्रतिकार करें वो सनातन धर्म है।। संस्कार और संस्कृति का पोषण करे, वो सनातन धर्म है, शाश्वत है, सर्व सुखकारी धर्म है।

●●●

संस्मरण

परम विनयी प्राज्ञ आचार्य वृद्धिवादी

विक्रमीय प्रथम शताब्दि के आचार्यों में आचार्य वृद्धिवादी का एक विशिष्ट स्थान है। गौड़देश के कौशल ग्राम में इनका जन्म हुआ। आपका जन्म नाम मुकुन्द था। **आचार्य स्कन्दिल सूरि के उपदेश से विरक्त होकर उनके पास उन्होंने श्रमण दीक्षा अंगीकार की। प्रौढ़ावस्था में दीक्षित होने पर भी मुकुन्द मुनि ज्ञानाभ्यास के बड़े रसिक थे और यह रसिकता वृद्धावस्था को प्राप्त होने पर भी ज्यों की त्यों बनी रही। जिस ज्ञान को प्राप्त करने की वे अभिलाषा रखते, उसे वे प्राप्त कर ही लिया करते थे।**

प्रातःकाल उठकर वे अपने गुरु से प्राप्त ज्ञान का बड़े उच्च स्वर से अभ्यास किया करते थे। उनके इस व्यवहार पर एक संत ने एक दिन व्यंग कसते हुए कहा — **"इतने उच्च स्वर में पढ़कर इस वृद्धावस्था में क्या तुम्हें मूसल पर फूल उगाना है?"**

वयोवृद्ध मुकुन्द मुनि को संत का यह व्यंग तीर के समान चुभ गया। **उन्होंने अपने गुरु से "सरस्वती-मंत्र-आराधना" की आज्ञा प्राप्त की और इक्कीस दिनों तक निरन्तर जाप करके उस मंत्र की सिद्धि को प्राप्त कर लिया। सरस्वती देवी ने प्रसन्न होकर उनको सर्व-विद्या-सिद्धि का वरदान प्रदान किया।**

देवी सरस्वती से वर प्राप्त करने के पश्चात् **एक दिन उन्होंने मैदान में खड़े होकर सब के सामने एक मूसल को धरती में स्थापित किया। मंत्रोच्चारण करते हुए वे उस मूसल पर प्रासुक जल का सिंचन करने लगे। देखते ही देखते उस मूसल पर पत्तियाँ निकल आयी और कुछ ही क्षणों में सूखा मूसल पुष्पित हो खिल गया।** व्यंग कसने वाले संत ने मुकुन्द

मुनि के चरणों में गिर कर अपने अभद्र व्यवहार के लिए उनसे क्षमायाचना की। वृद्ध मुकुन्द मुनि की इस अप्रतिम विद्वत्ता के कारण कोई भी प्रतिवादी उनके समक्ष टिक नहीं पाता था। इसी कारणवश वृद्ध मुकुन्द मुनि **"वृद्धिवादी मुनि"** के नाम से प्रसिद्ध हुए।

अपने शिष्य वृद्धिवादी मुनि को सर्व गुण सम्पन्न समझ कर आचार्य स्कन्दिल मुनि ने उन्हें आचार्य पद से सुशोभित कर अलग से विहार करने की आज्ञा प्रदान की। अपने शिष्य मंडल के साथ स्वतंत्र विहार करते हुए आचार्य वृद्धिवादी ने अपने गुरु की कीर्ति में चार चाँद लगा दिये। चारों ओर उनकी यश कीर्ति फैल गयी। **उसी काल में सिद्धसेन "दिवाकर" नामक एक विद्वान् थे। संस्कृत के वे प्रकाण्ड पण्डित थे। अपनी विद्वत्ता के समक्ष वे अन्य सब विद्वानों को तृणवत् समझते थे। शास्त्रार्थ में उन्होंने चोटी के विद्वानों को मात दे रखी थी। आचार्य वृद्धिवादी के ज्ञान और विद्वत्ता की प्रशंसा उन्हें फूटी आँखों नहीं भायी। शास्त्रार्थ में आचार्य वृद्धिवादी को मात देने के लिए बेताब होकर उनका पीछा करने लगे। पीछा करते करते एक जंगल में उन दोनों का सामना हो गया। जिद्द में आकर वे उसी जंगल में आचार्य वृद्धिवादी के साथ शास्त्रार्थ करने के लिए अड़ गये।**

बियाबान जंगल था और ऐसे स्थान पर मध्यस्थता के लिए कोई विद्वान् या सभ्य दृष्टिगोचर नहीं हो रहा था। अचानक सिद्धसेन दिवाकर को अपनी गायें चराते हुए कुछ चरवाहे नजर आ गये। उन पर शास्त्रार्थ की धुन पूरी तरह से सवार थी, अतः मध्यस्थता के लिए उन्होंने उन गोपालों को नियुक्त कर दिया। आचार्य वृद्धिवादी को कोई आपत्ति नहीं थी। सिद्धसेन ने उन गोपालों को इंगित करते हुए अलंकार युक्त संस्कृत में लम्बा चौड़ा वक्तव्य दे डाला। गोपालों के पल्ले एक अक्षर भी न पड़ा। अवसरशः आचार्य वृद्धिवादी तत्पश्चात् अपने

स्थान पर उठ खड़े हुए। उन्होंने बड़ी सुरीली आवाज में गोपालों को समझ में आने वाली भाषा में कहा – **"जो जीव किसी भी जीव को नहीं मारता, चोरी नहीं करता, पर-स्त्री-गमन नहीं करता और यथाशक्ति दान-पुण्य करता है, उसे अवश्य मोक्ष की प्राप्ति होती है।"**

गोपालों को आचार्य वृद्धिवादी का वक्तव्य बहुत पसंद आया। उन्होंने अपना निर्णय आचार्य वृद्धिवादी के पक्ष में दे दिया। गोपालों के निर्णय को सुनकर सिद्धसेन ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली। वे नम्रता पूर्वक आचार्य वृद्धिवादी से बोले – **"भगवन्! गोपालों के निर्णयानुसार आप विजयी हुए। अब आपसे मेरा करबद्ध अनुरोध है कि कृपा करके मुझे दीक्षित कर अपने चरण कमलों में स्थान दीजिये।"**

आचार्य वृद्धिवादी बोले, – **"सिद्धसेन! गोपाल मंडल का निर्णय कोई महत्त्व नहीं रखता है। आगे भृगुपुर आ रहा है। वहाँ पर राजसभा में हम दोनों शास्त्रार्थ करेंगे। वहाँ के सभ्यों द्वारा जो कुछ निर्णय होगा, उसे हम लोग स्वीकार कर लेंगे।"**

सिद्धसेन बोले, – "भगवन् आप कालज्ञ हैं और जो कालज्ञ होता है, वही सर्वज्ञ होता है। अतः आप कृपा कर मुझे अपनी शरण में ले लीजिये।"

सिद्धसेन को अपने निर्णय पर अटल देख कर आचार्य वृद्धिवादी ने उन्हें दीक्षा प्रदान की। दीक्षा के उपरान्त उनका नाम "कुमुदचन्द्र" रखा गया। कालान्तर में आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किये जाने पर वे **"आचार्य सिद्धसेन दिवाकर"** के नाम से प्रसिद्ध हुए। सब प्रकार से योग्य समझ कर आचार्य वृद्धिवादी ने अपने शिष्य सिद्धसेन को स्वतंत्र विहार करने का आदेश दिया। अपनी शिष्य मंडली के साथ स्वतंत्र विहार करते हुए आचार्य सिद्धसेन अवन्ती पहुँचे। महाराज विक्रमादित्य ने आचार्य सिद्धसेन की विद्वत्ता से प्रभावित होकर उन्हें अपने

राजमहल में आमंत्रित किया। राजमहल में कुछ काल व्यतीत होने पर वहाँ के वातावरण के कारण आचार्य सिद्धसेन अपनी संयम–साधना में कुछ शिथिल हो गये। यथा गुरु तथा शिष्य, उनकी शिष्य मंडली भी आमोद–प्रमोद में पड़ गयी।

आचार्य वृद्धिवादी को सिद्धसेन और उनकी शिष्य मंडली के शिथिलाचार का पता लगा तो उन्हें बड़ा खेद हुआ। उन्होंने अपने शिष्य सिद्धसेन को प्रतिबोधित करने का निश्चय कर लिया। अपने गच्छ की बागडोर योग्य साधुओं को सौंप कर वे अकेले ही कुर्मारपुर की ओर चल पड़े। वहाँ पर पहुँच कर सिद्धसेन की पालकी उठाने वालों में अपने आप को सम्मिलित कर लिया। आचार्य वृद्धवादी की डगमगाती चाल को देखकर सिद्धसेन ने पूछा – **"भूरि भार भरा क्रान्तः, बाधति स्कन्धः एषते?"**

आचार्य वृद्धिवादी ने उत्तर दिया – **"तथा न बाधते स्कन्धः, यथा बाधति बाधते।"**

परिचित आवाज को सुनकर सिद्धसेन चौंक पड़े। वे सोचने लगे, – "मेरी भूल बताने वाले ये कौन हैं? ये वृद्ध पुरूष कहीं मेरे गुरु आचार्य वृद्धिवादी तो नहीं हैं?"

सिद्धसेन तत्काल पालकी से नीचे कूद पड़े। उनको पहचानते ही वे उनके चरणों में गिर पड़े और अपनी भूल के लिए बार–बार उनसे क्षमायाचना करने लगे। तत्पश्चात् उन्होंने अपने गुरु के समक्ष आलोचना पूर्वक अपनी शुद्धि की। अपनी संयम–साधना में पूर्णरूपेण अपने आपको स्थिर किया। अपने गुरु के साथ कठोर साधना के साथ पुनः विचरण करते हुए वे अपनी आत्मा को भावित करने लगे।

इस प्रकार आचार्य वृद्धिवादी ने अपने अपूर्व ज्ञान का परिचय देते हुए अपने भूले भटके योग्य शिष्य सिद्धसेन का उद्धार किया। ज्ञानी को अहंकार ही शिथिल बनाता है। यह स्मरण रखा जाए। यही आ. सिद्धसेन कल्याण मंदिर स्तोत्र के रचयिता हैं।

●●●

संस्मरण

पूज्यपाद श्री लवजीऋषि की क्रिया क्रांति

हरेक असाधारण जीवन का अभ्युदय उसके द्वारा किए जाने वाले विशिष्ट कार्यों से ही पहचाना जाता है। जैसे पूज्य श्री लवजी ऋषि महाराज जब मात्र सात वर्ष के थे अपने जन्म–जन्मांतर के धवल संस्कारों की वजह से स्वयमेव **'जिन आवश्यकों'** का महत्व समझने लगे थे और अपनी मातुश्री फूलाबाई के पास बैठकर **सामायिक प्रतिक्रमण** के पाठ कंठस्थ करने लगे थे।

माताजी ने पूछा – 'लाले क्या बुदबुदा रहा है? तो उन्होंने अपनी अनगढ़ भाषा में कहा – **'आत्मा रो पाठ पढुं हूँ।'**

'अरे वाह तू जानता है? आत्मा क्या है?'

"हाँ - माँ आत्मा वो है, जो सबमें है !"

ओ हो! तू तो बड़ा ज्ञानी हो गया रे !

इस संवाद से पता चलता है कि – **जो जानता है? वही जान पाता है और शाश्वत पंथ का निर्माण कर सकता है।** पूज्यपाद श्री लवजीऋषि का ये शैशव प्रसंग इसकी साक्ष है।

❖ अपना गुरु स्वयं चुना

पूज्य श्री ने अपना गुरु स्वयं चुना, ज्ञानदाता श्री बजरंगऋषि जी उनके गुरु कहे जाते हैं, मगर उनसे भी इस प्रतिभापुत्र ने दो वर्ष का प्रतिज्ञा–पत्र लिखवा लिया था। इससे आपकी प्रखर–प्रज्ञा का परिचय मिलता है।

आपने अल्प वय में ही आर्हती दीक्षा ली थी, लेकिन **प्रतिज्ञा-पत्र** के अनुसार आचारगत शैथिल्य देखकर, स्वयं ही क्रियौद्धार करने की बात दृढ़ता से कहने लगे। इस प्रकार

आपने वैराग्य–विरक्त अपने आपक साधक जीवन को सज्ज कर लिया था। **सन् 1907 में खंभात जिले में अतिशय प्रबुद्धता के साथ दीक्षा लेकर क्रिया-क्रांति का शुभारंभ किया। ये क्रांति थी श्वेत क्रांति! या वो अहिंसक क्रांति जो आर्य सुधर्मा के माध्यम से महावीरत्व से जुड़ी थी। खंभात का नवाब इसे समझ नहीं पाया, उसने इन्हीं के नाना की शिकायत पर नजरबंद कर लिया लेकिन वो क्रांति के स्वभाव को जानता नहीं था, फिर जब उसकी बेगम बोली – "ये कुफ्र ना करो!" तो इन्हें मुक्त कर दिया।**

बिना खेद यहां से आप जब अहमदाबाद पधारे तो तब आपकी चर्चा पूज्य श्री धर्मसिंह जी से हुई जो लोकागच्छ से जुड़े हुए थे। उन्हें आपने कहा – **आप तो आत्मार्थी हो, शास्त्र और स्वयं को जानने वाले हो! फिर शैथिल्य की कीच आपको कैसे डुबाए हुए है?**

आप वीर हो तो वीरत्व का अनुशरण करो !

आपकी ये बात धर्मसिंह जी को जंच गई। वे भी परम सहयोगी बन गए। **आपके संबोध से उन्होंने भी सर्वज्ञता प्राप्त करने का आत्मार्थी पथ आत्मवादी स्थानकवास चुन लिया और साथ चल पड़े।**

दोनों महात्माओं और अन्य भव्यात्माओं ने गुजरात, काठियावाड़, मालवा, मेवाड़–मारवाड़, महाराष्ट्र आदि में विचरण कर धर्म क्रांति–क्रिया क्रांति का विस्तार किया। जो भविष्य में वृहद से विराट बनकर फलित हुआ।

अहिंसा का सगर्व स्पष्ट प्रतीक मुंहपत्ति इन्हीं की प्रेरणा से जनप्रिय हुआ। इन्हें भी ईर्ष्या का आघात सहकर जहरीले लड्डू से बुरहानपुर में प्राण चुकाने पड़े। धन्य है।

लब्धिराज लवजी ऋषि जी महाराज

●●●

संस्मरण

क्रियोद्धारक महापुरुषों की श्रमण संघ पर छाप

नव्य तत्व शोधक लेखक लोंकाशाह ने सैद्धान्तिक एवं चारित्रिक दोनों प्रकार के विकारों की शुद्धि का क्रांतिकारी कार्य किया। आचार शैथिल्य पर चर्चा तो कई लोग करते थे मगर बदलाव के लिए जो साहस और स्वयं की भूमिका चाहिये वो श्री लोंकाशाह ने प्रस्तुत की। उनके सुधारवादी विचारों ने समाज को झकझोर दिया था। इन्हीं से प्रेरित क्रियोद्धारक महापुरुषों में पांच नाम बहुत प्रसिद्ध हैं।

ये यों ही प्रसिद्ध नहीं है, इन्होंने जान पर खेलकर परम्परा में बदलाव के नए युग का प्रारंभ किया है। **श्री जीवराज जी म., श्री लवजीऋषि जी म., श्री धर्म सिंह जी म., श्री धर्मदास जी म., श्री हरिदास जी म. और श्री हरजी स्वामी। वि.सं.** 1608 **से** 1705 **के बीच का यह कार्यकाल बदलाव की पहल और चेतना का वो काल है। जिस पर सम्पूर्ण स्थानकवासी जैन धर्म परम्परा को गर्व भी है, तो इनके तप-त्याग उत्सर्ग पर गहरी आस्था भी।** श्री जीवराज जी म. लोकागच्छ के अष्टम पट्टधर श्री जीवाजी ऋषि के प्रशिष्य थे।

वि.सं. 1601 में आपने श्री जगाजी यति से दीक्षा ली थी। आप स्वाध्याय प्रिय थे जैसे जैन जिनवाणी के रहस्यों को जाना, वैसे–वैसे विशुद्ध चरित्र के प्रति आपका लगाव बढ़ा और आपके अन्तर् मन में अनेक प्रश्न उभरे, जिनका समाधान ना मिलने पर आपने परम्परागत व्यवस्था को त्यागते देर नहीं लगाई। **आपने स्थानकवासी श्रमण परम्परा का वेश और उपकरण को पद्धति तय कर उसे आगे बढ़ाया। आपके क्रियोद्धार में राजस्थान**

विशेषकर मेवाड़ प्रमुख रहा। आज भी आपकी परम्परा ज्येष्ठ-पुष्कर परम्परा के नाम से विश्रुत और यशस्वी है।

श्री धर्मसिंह जी म. लोकागच्छ के आचार्य श्री रतन सिंह जी के शिष्य देव जी से प्रतिबोधित थे। मात्र 15 वर्ष की अवस्था में ये साधु बन गए थे। जब इनको माता–पिता समझाने आए तो इन्होंने उनको भी अपने मार्ग में लगा लिया। अपूर्व प्रतिभा के धनी श्री धर्मसिंह जी ने आगम की वाणी को आत्मसात कर आत्मशोधन किया तो शैथिल्य को जानने में देर नहीं लगाई। आपने हृदय खोलकर गुरुजी को दिखा दिया और बीच में गहरी खाई देखकर अपना मार्ग चुन लिया। दीक्षा के बाद आप दरियापुर दरवाजे की कोठरी में द्वारपाल की आज्ञा से ठहर गए। आप अपने ओजस्वी प्रवचन वहीं से देते थे। बात कामदार दलपत राय के माध्यम से बादशाह तक पहुंच गई और निर्णयानुसार उनके छीपा पोल वाले मकान को आपके लिए धर्म आराधना हेतु उपलब्ध करा दिया गया। अतः **आपका सम्प्रदाय दरियापुरी सम्प्रदाय कहलाता है।** आपके हजारों भक्त और असंख्य साधु–साध्वी धर्म प्रभावना कर रहे हैं। आपने व्यापक साहित्य सृजन भी किया, आप ओजस्वी वक्ता, वादीमान मर्दक घोर क्रियापालक थे।

लोंकागच्छ से प्रभावित श्री लवजीऋषि का चरित्र तो बड़ा ही रोचक है। वे माता से सुनकर याद करने वाले अद्भुत बालक थे। संसार में रहकर भी वे आत्म के गीत गाने वाले महानायक थे। पिता की मृत्यु के बाद वे अपने नाना वीर जी भाई के परिवार में ही रहने आ गए। यहां का वातावरण लोकागच्छमय था। इन पर तो इसका इतना गहरा रंग चढ़ा कि ये स्वयं ही धर्म प्रवक्ता बन गए।

नाना वीर जी वोरा ने बड़ी ना–नुकर के बाद दीक्षा की अनुमति दे दी, लेकिन कालांतर में गुरु से ही आचरण संबंधी विवाद हो गया और आपने गुरु का त्याग कर स्वयं शुद्धाचार पालन और आत्माराधन का मार्ग चुन लिया तो अपने ही वैरी

बन गए। उन्हें शासन के दखल से कारागार में डलवा दिया गया। वहां भी वे ढिगे नहीं, धर्म–ध्यानरत रहे। बैगम ने इस पर दखल दे इनको मुक्त कराया। अब ये और दृढ़ निश्चयी होकर तीन साथियों के विचरण करने लगे।

कुछ समय बाद इन्हें बुरहानपुर में किसी ईष्यालु ने जहर लिप्त लड्डू–बहरा दिये। **अपना अंतिम जानकर सोमजी ऋषि को आचार्य बनाकर प्राण त्याग दिए। लवजीऋषि जी ने मुख-वस्त्रिका का मुंह पर लगाए रखने को अनिवार्य नियम बनाया।**

श्रीमद् धर्मदास जी म.सा. का सम्पूर्ण जीवन भी तप–त्याग उत्सर्ग से भरा जीवन है। आपने तो अपने वचन के खातिर स्वयं संथारा करके अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया। आपके आत्मार्थी क्रियापालन के लिए तो यह सम्प्रदाय और इनके शिष्य प्रशिष्य मालवा, गुजरात, राजस्थान में विश्रुत है। स्थानकवासी परम्परा की शान है। **आपके ही अनुयायी** 99 **संत** 27 **टोलों में बंटकर प्रचार करते रहे। कालांतर में ये ही समुदाय श्रमण संघ का ज्ञानी-ध्यानी आधार बने।**

इन महापुरुषों ने श्रमण संघ को सदैव गौरव प्रदान किया और श्रमण संघ पर अपनी उत्कृष्ठ छाप छोड़ी। धन्य है।

●●●

क्रिया बड़ी या कर्त्तव्य?

स्थानकवासी जैन धर्म परम्परा अपनी आडम्बरहीन गुणधर्मिता से ही लोकप्रिय है। इसमें क्रियापालन प्राथमिक है, मगर कर्त्तव्य पालन उससे भी बढ़कर। इसीलिए इस परम्परा को स्व प्रक्षालन करना प्रिय है।

स्वाध्याय, ज्ञान–ध्यान, सेवा इस परम्परा की कीर्ति बढ़ाती है। सारा समाज जानता है कि स्थानकवासी संवर से संवाद तक निरंतर प्रयासरत रहते हैं। यही इसकी मुख्य विशेषता है। आत्मप्रिय स्थानकवास आत्मलीन होने का पक्षधर है। ●●●

संस्मरण

आगम उपदेश को सेवा तप से साकार किया

महान आप्तवाणी आगम ग्रंथों को मनोयोग से पढ़ा जाए तो हमें यह सच लगेगा कि **'आगम चक्खु साहू'।** सूक्ति के आधार पर मुनि आगम ज्ञान रूप चक्षु रूप होते हैं अर्थात् साधु के चक्षु ही आगम ज्ञान हैं।

पंजाब परम्परा आद्य सर्जक आचार्य श्री अमर सिंह जी म. आगमवेत्ता हो जाने पर अपने शिष्यों–प्रशिष्यों एवं आज्ञानुवर्ती संतों को आगम–ज्ञान प्रदान करने लगे। अपने जीवन में आचार्य श्री ने सैंकड़ों साधु–साध्वियों को आगमज्ञान प्रदान किया। आपश्री ने एक सुयोग्य, समर्थ वाचक (वाचनाचार्य) का कर्तव्य निभाया। आचार्य श्री की अध्यापनशैली अतीव सरल व स्पष्ट थी।

आचार्य श्री अमर सिंह जी म.सा. आगम वाणी को केवल बुद्धिगम्य नहीं करते थे बल्कि हृदय के स्पंदन में समाहित कर अपने नित्य व्यवहार में उतार लाते थे। आपने एक निश्रायी संत की भरपूर सेवा की।

जैसे–जैसे दिन बीते देव–गुरु–धर्म की कृपा से आप सफल रहे और मुनि जी भी स्वस्थ हो गए। **'आगम चक्खू साहू'** यह सुक्त साकार हो गया। आपने वैय्यावच्च रूपी तप से सिद्धता को प्राप्त कर लिया। आपश्री अपने हाथों से रोगी मुनि के मुख में ग्रास खिलाते। वस्त्र प्रक्षालन, परिठावणियां आदि कार्य करते थे। **आचार्य श्री का कर-स्पर्श रोगी मुनि के लिए वरदान सिद्ध हुआ। धन्य है आप जैसे तपोधनी संत शिरोमणि को। जिनका ज्ञान आचार एकमेक था।**

●●●

संस्मरण

अनुभव की महिमा और सद्संगति से गढ़ा आचरण

महान विद्वान एवं रचनाकार पू. उपाध्याय श्री यशोविजय जी म. अपने समय के महान आगमज्ञ थे। उन्हें अध्यात्म ज्ञान से बड़ा प्रेम था। उनके द्वारा रचित ग्रंथों में अध्यात्म रस लबालब भरा होता है। वे लिखते हैं –

आगम-नो आगम तणो, भावते जाणो सांचो रे।
आतम भावे स्थिर हो जो, परभावे मत राचो रे।।

अर्थात् **आगम को जानना है तो मुक्ताकाश की तरह जानो! शुद्ध भाव से जानों।** आगम ज्ञान ऐसा सिन्धु है जो परभाव से मुक्त रहकर आत्मभाव से ही जानना चाहिये।

वे कहा करते थे कि – **"ग्रंथ, ग्रंथकार के हृदय का प्रतिबिंब है। उपाध्याय श्री आगे लिखते चरित्र कोई स्थिर शिला नहीं, जिसे एक बार गढ़ दिया जाए और वह युगों तक वैसा ही बना रहे। यह तो एक निरंतर प्रवाहमान चेतना है, जो संवेदनाओं, निर्णयों, स्व-अनुशासन और संगति से निर्मित होती है। इसीलिए यदि अपना चरित्र सुदृढ़ रखना है तो प्रश्न केवल आत्मानुशासन का नहीं, संगति का भी है। सुदृढ़ व्यक्तित्व कोई उपदेशक नहीं होता। वह अपनी उपस्थिति से ही ऐसा नैतिक ताप उत्पन्न करता है कि शब्द अनावश्यक हो जाते हैं और जीवन स्वयं अर्थवान लगने लगता है।** ऐसी संगति में व्यक्ति अपने भीतर की शिथिलताओं को पहचानता है। ऐसी शिथिलताएं जो अकेले

में चुभते प्रश्न बनकर हमें संवारती रहती हैं। याद रहे सुदृढ़ व्यक्तित्व के सान्निध्य में आत्म–प्रवंचना टिक नहीं पाती। जब स्व–अस्तित्व का प्रश्न खड़ा होता है तो **मैं कौन हूँ और जैसा हूँ क्या वही होना मेरा अंतिम विकल्प है? जैसे यक्ष प्रश्न उभरते है और समाधान खोज लेते हैं।**

❖ भावित ज्ञान की पहचान

उपाध्याय श्री यशोविजय जी फरमाते रहे हैं कि कौन– सा ज्ञान अध्यात्म का कारण बनता है? अध्यात्मरूप बनता है? **अक्षर से ये अध्ययन करना अलग बात है, और इसका अर्थ समझना अलग बात है वहीं उसे भावित करना आचरण में उतार लेना तो बिल्कुल ही अलग बात है।**

सिर्फ अक्षरों का अध्ययन तोता-पंडित बना सकता है, उसमें सूत्रों के रहस्य नहीं समझे जाते। ऐसे तोते पंडित सभा इकट्ठी कर सकते हैं, लोक–रंजन कर सकते हैं, लेकिन स्वयं ही इस रहस्य को नहीं समझ सकतें।

उपाध्याय प्रवर की यह शिक्षा ये संदेश देती है कि भावना पूर्ण अध्ययन ही सच्चा स्वाध्याय है। आत्मज्ञान ही सच्चा ज्ञान है।

उनका अपना जीवन स्व–अध्ययन का विश्व विद्यालय था। वे तपस्वी थे, साधक थे, सरलात्मा थे और नित्य जिज्ञासु थे। शास्त्र प्रमाण है कि उपाध्याय श्री ने जो लिखा उसे जीया भी। उन्होंने अपने भाष्य में स्वयं को तृणवत अकिंचन लिखकर विनय धर्म का चरम छुवा है। वे शताधिक बार लिख चुके हैं कि – **"पुस्तक पुरुष से बड़ी है। ये स्वयं वो सब करा लेती है जो उसे कराना होता है।"**

महान तीर्थंकर भी पहले श्रमण बने फिर केवली बनकर संबोध प्रदाता बने! ये शिक्षा ऐसी अनमोल है।

●●●

जैन धर्म परम्परा और श्रमण संघ

स्थानकवासी जैन धर्म परम्परा और श्रमण संघ दोनों ही अन्यौनाश्रित हैं। कही से भी भिन्न नहीं। इस परम्परा का वहीं आधारभूत सिद्धांत है जो जैन धर्म के मानवीय आदर्शों से प्रेरित है। जनरुचि और जिन रूचि में मात्र इतना ही फर्क है कि एक भोग प्रेरित और दूसरी त्याग प्रेरित तप त्याग ज्ञान ध्यान स्थानकवासी जैन धर्म परम्परा का सर्वकालिक मार्ग है। परम्परा के संयमित मार्ग का लक्ष्य है संतुलन।

जब एक श्रमण या श्रमणी द्वारा संयम पथ पर पग रखा जाता है तो संतुलन साधना परम आवश्यक हो जाता है, क्योंकि समस्या इच्छा में नहीं, उसके प्रभाव में है। संतुलित इच्छा विकास का आधार है, अनियंत्रित इच्छा बंधन बन जाती है। जीवन का सौंदर्य वर्तमान में है। जब मन शांत और हृदय हल्का होता है, तभी हम वस्तुओं और परिस्थितियों को उनके वास्तविक रूप में देख पाते हैं। स्पष्ट दृष्टि तभी संभव है, जब मन आकांक्षाओं के कोलाहल से मुक्त हो। अतः आवश्यक है कि हम अपनी इच्छाओं का निरीक्षण करें। स्वयं से पूछें—क्या यह इच्छा आवश्यक है या अहं की तुष्टि? **जब हम विवेकपूर्वक इच्छाओं को सीमित करते हैं, तब हमारी दृष्टि निर्मल होती है, सोच पारदर्शी और जीवन का अनुभव गहरा हो जाता है। संतुलन ही समाधान है। संयम ही स्पष्टता का मार्ग है।**

यह आग्रह ही स्थानकवासी जैन परम्परा की आधारभूत सोच है। जो व्यक्ति बुद्धि और विवेक के सहारे निर्णय लेता है, वह कभी संकट में नहीं पड़ता। विवेक नीर—क्षीर की भांति

उचित और अनुचित का अंतर स्पष्ट करता है। हमारा अंतर्मन सदैव हमें सही और गलत का संकेत देता रहता है। अतः जहां मन कहे कि कार्य अनुचित है, उससे तत्काल विरक्त हो जाना चाहिए। **जो आत्मलीन होगा वहीं आत्मबल सम्पन होगा। ऐसा सुस्पष्ट विचार स्थानकवासी परम्परा के प्रत्येक कार्य व्यवहार में झलकना है।**

एक बात और इस अध्यात्म यात्रा की खूबी है कि यह परम्परा **'राग निवृति' की अपेक्षा रखती है। संसार में राग ही विचलन और असंतुलन का जनक है। यह हमारी दृढ़ मान्यता है।**

❖ राग निवृत्ति ही जिनत्व है!

मेरी राय में राग वह सूक्ष्म धागा है, जो आत्मा को अज्ञान के धरातल पर बांधे रखता है। दुख संसार की कड़वाहट दिखाकर राग को तोड़ता है। सुख उदारता के विवेचन द्वारा **'अहंकार'** और **'ममत्व'** को विसर्जित कर राग से मुक्ति दिलाता है। सुख–दुख का सदुपयोग कर जीव संसार के नश्वर के बंधनों से विमुक्त हो सकता है। **दुख हमें 'विवेक' देता है कि हम संसार में न उलझें तथा सुख हमें अवसर देता है कि अपनी उदारता से अपने अस्तित्व का विस्तार करें। जो व्यक्ति इन दोनों स्थितियों में तटस्थ रहकर विरक्ति और उदारता का अवलंबन लेता है, वही जीवन-मुक्त कहलाता है। वह सुख में बहुत प्रसन्न नहीं होता और न ही दुख में विलाप करता है, अपितु राग से मुक्त होकर जिनत्व की ओर अग्रसर होता है।**

❖ शुभ संकल्प की शक्ति और हमारा जीवन दर्शन

शुभ संकल्प मनुष्य की वह आंतरिक ऊर्जा है, जो साधारण जीवन को असाधारण उपलब्धियों तक पहुंचा देती है। विचार जब दृढ़ निश्चय में बदल जाता है, तब वह संकल्प बनता है और संकल्प ही वह शक्ति है, जो असंभव को संभव बनाने का साहस देती है।

इतिहास गवाह है कि जिन व्यक्तियों ने अपने लक्ष्य को केवल इच्छा नहीं, बल्कि संकल्प बनाया, उन्होंने युग बदल दिए। यही श्रमण संघ के इतिहास का वो पृष्ठ है जो हमें अन्यों से अलग सिद्ध करता है।

वास्तव में संकल्प वह दीप है, जो लक्ष्य के मार्ग को प्रकाशित करता है। प्रतिभा मार्ग दिखा सकती है, परंतु उसे गंतव्य तक पहुंचाने की शक्ति संकल्प ही देता है। जिस व्यक्ति जिस समाज के भीतर दृढ़ निश्चय जाग उठता है, उसके लिए परिस्थितियां बाधा नहीं, बल्कि साधन बन जाती हैं। इसलिए संघीय जीवन में सफलता का प्रथम सूत्र यही है–**सपना देखो, उसे संकल्प में बदलो और फिर अपने पूरे अस्तित्व के साथ उसे जीयो!**

इसीलिये हमारी परम्परा ने जो भी संघर्ष किया, धर्म के विशुद्ध स्वरूप व निराडम्बर आचरण को लेकर किया है। इस परम्परा, इस सम्प्रदाय के मूल में तप-त्याग संयम और विशुद्ध आचरण ही प्रमुख रहा है।

धर्मप्राण वीर लोकाशाह की क्रान्तिकारी उद्घोषणा के पश्चात् पूज्य श्री जीवराज जी म., आचार्य श्री धर्मदास जी म. , आचार्य श्री लवजीऋषि जी म., आचार्य श्री हरिदासजी म. आदि पांच महापुरुषों ने अपने संघ का क्रियोद्धार कर विशुद्ध धर्म का रूप जन-मानस के सामने प्रस्तुत किया। उसके पश्चात् विकसित होकर इन्हीं पांच आचार्यों की परम्परा ही कालक्रम से 27 सम्प्रदायों के रूप में विश्रुत हुई। अनेक उतार-चढ़ाव, विघटन-सम्मिलन सब कुछ हमने देखा और उससे पार पाने का उपक्रम भी किया।

❖ प्रथम स्थानकवासी जैन सम्मेलन

संवत् 1810 वैशाख शुक्ला 5 मंगलवार को पंचेवर गांव में मेवाड़ परम्परा के आचार्य प्रवर श्री अमरसिंह जी के नेतृत्व में एक संत सम्मेलन हुआ। उस सम्मेलन में कानजी ऋषि संप्रदाय

के आचार्य श्री ताराचंद जी म., श्री जीवाजी म. श्री तिलोकचंद जी म एवं आचार्य श्री हरिदास जी म. के अनुयायी श्री मलूकचंद जी म., आचार्य फूलाजी म., आचार्य श्री परशुरामजी म. के आज्ञानुवर्ती खेतसिंह जी म., खींवसिंह जी म., तथा आचार्य श्री केशरजी म. आदि संत–सती वृन्द पंचेश्वर ग्राम में एकत्रित हुए और परस्पर उल्लास के क्षणों में मिले। **एक दूसरे से परस्पर वंदना व्यवहार संबंध प्रारम्भ किया तथा स्थानकवासी श्रमण संघ की उन्नति के लिए अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव भी पारित किए गए। स्थानकवासी परंपरा की दृष्टि से यह प्रथम स्वतंत्र संघीय सम्मेलन था। जो स्थानकवासी परम्परा का माना जाता है। इस सम्मेलन में अनेक महत्वपूर्ण सुधारवादी प्रस्ताव भी पारित हुए।**

यह इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि एक समय स्थानकवासी संप्रदाय जब धीरे–धीरे अनेकों उपसंप्रदायों में विभक्त हो गया था। तब परस्पर एक दूसरे की आलोचना प्रारंभ हुई। परस्पर संवाद का अभाव होने से संघर्ष की स्थिति समुत्पन्न होने लगी। यातायात के साधन बढ़ जाने से सड़कें और पुल हो जाने से साधु–साध्वियों का विचरण क्षेत्र विस्तृत होने लगा। आचार और विचार के तनिक भेद पर **'हम श्रेष्ठ हैं, और वे कनिष्ठ हैं'** – इस प्रकार की विचारधारा के कारण विभक्त श्रमण एक स्थान पर ठहरने से कतराने लगे, प्रवचन आदि भी पृथक करने लगे। जब समाज की यह स्थिति मूर्धन्य मनीषी संतों ने तथा कर्मठ कार्यकर्ता सुश्रावकों ने देखी तो उनका हृदय द्रवित हुआ। उन्होंने यह प्रार्थना की कि यह स्थिति स्थानकवासी संघ के लिए हितावह नहीं है। आप सभी मताग्रह और सांप्रदायिक भावना छोड़कर एक बनें। पारस्परिक द्वेष, मनोमालिन्य, कटुता, ये तत्व क्षोभ बढ़ाने वाले हैं। सांप्रदायिकता के नाम पर जो विषम स्थिति समुत्पन्न हुई है, इस स्थिति को हमें मिटाना होगा। स्थानकवासी समाज में बढ़ती हुई विघटनकारी प्रवृत्ति को समाप्त करने के लिए महान तत्व चिन्तक **स्व. वाडीलाल मोतीलाल शाह ने अपने ओजस्वी व तेजस्वी भाषणों से और पत्रिका में लिखे लेखों से जनमानस में एक लहर पैदा की, फिर भी कुछ**

संप्रदायवाद के रंग में रंगे हुए व्यक्तियों ने उधर ध्यान नहीं दिया। तब स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के प्रमुख व्यक्ति अहर्निश इस प्रयास में संलग्न हुए, उनके सामुहिक प्रयत्नों के फलस्वरूप समाज में एक अभिनव चेतना की लहर व्याप्त हुई।

❖ मौरवी में पारित संकल्पों का प्रभाव

मौरवी संकल्पों के सन्दर्भ में सन् 1930 में भारतवर्ष में धर्मवीर सुश्रावक दुलर्भजी भाई जौहरी ने मन में यह निश्चय किया कि हमें पुरजोर यह प्रयास करना है और वृहत् साधु–सम्मेलन कर सभी संतों को एक मंच पर एकत्रित कर स्थानकवासी समाज का कायाकल्प करना है। वे शिष्टमंडल लेकर स्थानकवासी समाज के प्रमुख संतों और आचार्यों की सेवा में पहुंचे और प्रभावशाली संतों की **एक समिति 'साधु-सम्मेलन समिति'** के नाम से गठित की गई। यह निश्चय किया गया कि वृहत साधु–सम्मेलन के पूर्व प्रान्तीय सम्मेलन किए जाएं। जिससे कि वृहत् साधु–सम्मेलन की भूमिका बनें और हम अपने लक्ष्य में पूर्ण सफल हो सकें।

❖ मरुधर प्रांतीय सम्मेलन

इस सन्दर्भ में प्रथम मरुधर प्रान्तीय सम्मेलन 10 मार्च 1932 वि.सं. 1988 फाल्गुन सुदी 3 को पाली में प्रारंभ हुआ! संघ ऐक्य की भावना से इस प्रान्तीय सम्मेलन में मरुधर प्रान्त में विचरने वाले 6 संप्रदायों के प्रमुख संत इस सम्मेलन में पधारे।

❖ पत्री प्रकरण से जन्मे विवाद को थामने का प्रयास

इन्हीं दिनों में, एक ओर तो पूज्य प्रधानाचार्य श्री सोहनलाल जी म.सा. की रोग परिचर्या की जा रही थी और दूसरी ओर उनका बनाया हुआ नया **जैन पंचांग मुनियों** की चर्चा का विषय बना हुआ था। **पूज्यश्री का आगमाभ्यास गंभीर तथा तलस्पर्शी था। जैन ज्योतिष के तो आप प्रकाण्ड पंडित थे। सूर्य प्रज्ञप्ति- चन्द्रप्रज्ञप्ति आदि सूत्रों के रहस्य भी आप के लिए हस्तामलकवत् थे।**

पूज्य श्री सोहनलाल जी महाराज ने अपनी युवाचार्य अवस्था में पूज्य आचार्य श्री मोतीराम जी महाराज तथा मुनि संघ की, विशेष रूप से संयम सुमेरु मुनि श्री मायाराम जी म. के विशेष आग्रह पर नवीन जैन तिथिपत्र के कार्य को अपने हाथ में लिया था। उन्होंने आगम ग्रन्थों, **सूर्य प्रज्ञप्ति** तथा **चन्द्र प्रज्ञप्ति** आदि ग्रन्थों का गंभीर अध्ययन करन के पश्चात एक नवीन जैन पंचांग की रचना भी कर दी थी। किन्तु **जैन पंचांग बन जाने पर भी आपने उसको कार्यरूप में परिणत करने के लिए कोई आज्ञा संवत् 1972 तक भी प्रचारित नहीं की थी लेकिन कुछ समय पश्चात तत्कालीन पूज्य उपाध्याय श्री आत्माराम जी महाराज इस सम्बन्ध में आपके साथ विचार-विनिमय करने के लिए अमृतसर पधारे।**

आपने पूज्यश्री को वन्दना करके उनसे निवेदन किया – 'गुरुदेव! आपने जैन आगमों के सूक्ष्म तत्त्वों का गहन पारायण करके जैन पंचांग का निर्माण किया है, किन्तु सारा संघ अभी तक प्राचीन सनातनधर्मी शैली से बने हुए पंचांगों के अनुसार ही अपने चातुर्मास आदि मना रहा है, जो कतिपय मान्यताओं से उचित नहीं है। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप अपने बनाये हुए जैन तिथि पत्र को प्रचारित करने की आज्ञा संघ को दें।'

इस पर पूज्य महाराज ने उत्तर दिया – **'आत्मारामजी! आपका कहना यथार्थ है। किन्तु मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि उसको प्रचारित करने की आज्ञा देने से पूर्व मुझे इस संबंध में सकल संघ की सम्मति भी जानने का यत्न करना चाहिए।'** पूज्य महाराज के यह शब्द सुनकर उपाध्याय जी बोले– **'मेरी तुच्छ सम्मति में तो इस विषय में आचार्य तथा उपाध्याय की सम्मति ही पर्याप्त है। प्राचीन काल में यही व्यवस्था थी। मैं इस पर पूर्णतया सहमत हूँ। अतएव आप इस संबंध में संघ को आज्ञा प्रचारित कर दें।'**

इस पर पूज्य महाराज ने संघ में इस बात की आज्ञा प्रचारित कर दी कि भविष्य में सभी चातुर्मास नवीन जैन तिथि पत्र के अनुसार ही मनाएं जावें। पूज्य श्री की इस आज्ञा का मुनि संघ ने बहुत स्वागत किया। अतएव पंजाब के प्रायः मुनियों ने पूज्य श्री द्वारा बनाए गए नवीन जैन पत्र के अनुसार ही चातुर्मास मनाये।

किन्तु मुनि लालचंद जी महाराज, महाआर्या श्री पार्वती जी महाराज तथा मुनि छोटेलाल जी महाराज के साधुओं ने इस नवीन जैन तिथि–पत्र को न माना और उन्होंने अपने अपने चातुर्मास पुरानी शैली से ही किये। गणी उदयचंद जी ने भी अपना चातुर्मास पूज्य श्री के नवीन जैन तिथिपत्र के अनुसार ही किया।

संवत् 1973 सन् 1916 के इस चातुर्मास के पश्चात् तत्कालीन पंजाब परम्परा के युवाचार्य श्री कांशीराम जी महाराज, गणावच्छेदक मुनि श्री छोटेलाल जी महाराज, मुनि जड़ावचन्द जी महाराज तथा मुनि हीरालाल जी महाराज आदि ससंघ **रोहतक** में एकत्रित हुए। वहां उन्होंने पारस्परिक परामर्श करके यह निर्णय किया कि – **'जब हम लोग घग्घर नदी से पंजाब की ओर जाएंगे तो अपने-अपने चातुर्मास जैन तिथि-पत्र के अनुसार किया करेंगे, किन्तु जब जब हम घग्घर नदी के दूसरी ओर जाया करेंगे तो अपने चातुर्मास पुरानी परिपाटी पर ही किया करेंगे। क्योंकि उधर पुराने विचार रखने वालों की संख्या अधिक है।'**

इस प्रकार समाज में पत्री-परम्परा का एक भारी संघर्ष खड़ा हो जाने पर जालंधर में मुनियों का एक सम्मेलन किया गया। इस सम्मेलन में आर्या पार्वती जी महाराज तथा गणी उदयचन्द जी महाराज का जैन तिथि पत्र के सम्बन्ध में शास्त्रार्थ हुआ। इस शास्त्रर्थ में अंतिम रूप से यह निश्चय किया गया कि **'सभी जैन मुनि अपना-अपना चातुर्मास केवल चार महीने का ही करें। क्योंकि एक तो जैन शास्त्रों के अनुसार**

चातुर्मास लौंद महीनों में नहीं हो सकता और दूसरे जैन मुनियों का चातुर्मास चार मास से अधिक का भी नहीं होता।'

किन्तु कुछ मुनियों तथा आचार्यों ने इस निर्णय को भी न माना और पत्री तथा परम्परा इन दोनों दलों में कोई भी सामंजस्य अन्तिम रूप से न हो सका। **मुनि श्री मिश्रीमलजी 'मेवाड़ी' ने तो इसी भावना के वशवर्ती होकर मुम्बई में भूख हडताल के साथ जैन तिथि-पत्र के विरुद्ध सत्याग्रह भी किया,** उसमें उनको तत्काल सफलता नहीं मिली, लेकिन विरोध के स्वर को हवा अवश्य ही मिली।

इस प्रकार पंजाब में जैन तिथिपत्र का प्रश्न कई वर्षों तक अत्यन्त गंभीर मतभेद का कारण बना रहा। इसमें विशेष बात यह भी थी कि दोनों पक्ष के आन्दोलनकर्ता इस विषय की गहराई में जाकर उसको समझने का प्रयत्न न करते हुए कषाय के वशवर्ती होकर आन्दोलन कर रहे थे, जो कि एक उन्नतशील तथा जागृत समाज के अनुरूप आचरण नहीं था। जब यह आन्दोलन मुनियों से होकर गृहस्थों में भी आ गया तो इस मतभेद को दूर करने के सम्बन्ध में पंजाब जैन सभा की ओर से कई बार प्रयत्न किया गया।

❖ अ.भा. प्रयास हेतु बनी कमेटी, जालंधर में हुआ सम्मेलन (सन् 19 जनवरी 1924)

संवत् 1981 वि, की तारीख 19 जनवरी 1924 को लाहौर में मुनि श्री लालचन्द जी महाराज की उपस्थिति में उनकी सम्मति तथा स्वीकृति से कुछ प्रतिष्ठित साधु मुनिराजों तथा 15 श्रावकों की एक कमेटी नियुक्त की गई। **इस कमेटी के आदेशानुसार मंत्रियों ने परिश्रम करके साधु मुनिराजों को जालन्धर नगर में एकत्रित करके उनका एक सम्मेलन किया। यह सम्मेलन लगभग एक सप्ताह तक चला।**

इस सम्मेलन में गणावच्छेदक मुनि श्री लालचन्द जी महाराज, गणी उदयचन्द जी महाराज तथा महासाध्वी पार्वती

जी महाराज के मध्य पड़े हुए मतभेदों को दूर किया गया। इसके पश्चात् **जंडियाला** में फिर मुनिराजों को एकत्रित किया गया। यहां भी कुछ मतभेदों को दूर कर फिर सबको प्रयत्न करके अमृतसर में एकत्रित किया गया। यह वार्तालाप अमृतसर में कई दिन तक चलता रहा। अन्त में मुनिराजों, आर्यिकाओं तथा श्रावकों की सर्वसम्मति से **21 अप्रैल 1924 को संवत् 1981 वि. में ही एक पूर्ण निर्णय कमेटी नियत की गई। इस कमेटी में आठ साधु श्री पूज्य महाराज की ओर से, आठ साधु विपक्ष की ओर से तथा 15 उन श्रावकों को रखा गया, जो 19 जनवरी 1924 को लाहौर की कमेटी में रखे गए थे। इस प्रकार इस निर्णय कमेटी में कुल 31 सदस्य रखे गए।**

इसी समय सर्वसम्मति से यह भी तय किया गया कि इस कमेटी की बैठक 25 दिसम्बर 1924 को होशियारपुर में की जाए। किन्तु होशियारपुर की इस बैठक में श्री पूज्य महाराज के आठों साधुओं के पहुंच जाने पर विपक्ष की ओर से कोई साधु महाराज नहीं आए।

पंजाब जैन महासभा अधिवेशन

इसके अगले ही दिन होशियारपुर में 25 दिसम्बर 1924 को पंजाब जैन सभा की अंतरंग कमेटी का अधिवेशन भी किया गया। इसके सभापति जम्मू तथा काश्मीर राज्य के भूतपूर्व सचिव दीवान बिशनदास जी (सी.एस.आई., सी. आई.ई.) थे। इसमें कई नगरों के चुने हुए श्रावकों के अतिरिक्त होशियारपुर के प्रधान श्रावक भी उपस्थित थे। **इस बैठक में प्रस्ताव संख्या दो निम्नलिखित रूप से पास किया गया – 'चूंकि अभी तक भी निर्णय कमेटी की सम्मति हो तो एक छोटी सी सहायक उपसमिति नियत की दी जावे, जिसमें निम्नलिखित चार सदस्य हों।'**

यह उपसमिति पत्री संबंधी प्रश्न पर सर्व सम्भव साधनों से जितना ज्ञान प्राप्त कर सके एकत्रित करके अपनी रिपोर्ट

निर्णय कमेटी के सन्मुख उपस्थित करें। निर्णय कंमेटी में उपस्थित होकर उस रिपोर्ट पर विचार किया जाए और निर्णय कमेटी पूर्ण आयोजना तारीख 21 अप्रैल 1924 के प्रस्ताव के अनुसार संग्रहित करे।

श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा 'रिपोर्ट पत्री निर्णय कमेटी' नाम से सन् 1925 के अन्त में छपवा कर 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित भी किया गया।

क्रमशः पत्री के सम्बन्ध में संघ में मतभेद इतना अधिक बढ़ा कि कुछ लोग दूसरा आचार्य तक बनाने का विचार करने लगे। गणी उदयचन्द जी से प्रस्ताव किया गया कि वह नए आचार्य का पद संभाल लें। किन्तु **गणी उदयचन्द जी म. ने संघ की एकता को बनाए रखने की दृष्टि से इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए कहा — "हम सब पूज्य प्रधानाचार्य श्री सोहनलाल जी म. के सेवक हैं। वे हमारे आचार्य हैं और हम उनके साधु।' यह ठीक है कि इस समय विरोध चल रहा है और उनके साथ सम्बन्ध टूटा हुआ सा है, किन्तु हमको आचार्य श्री का सम्मान करना ही चाहिये। आचार्य श्री जी के पास के संत हमको वंदना करें या न करें, हम अवश्य वन्दना नमस्कार के द्वारा आचार्य श्री जी का सम्मान करेंगे। आप लोगों के लिये न सही, किन्तु मेरे लिये आचार्य श्री जी के अतिरिक्त एक और वन्दना भी आवश्यक है। वह मेरे गुरुदेव को वन्दना है। गुरुदेव श्री गैंडेराय जी महाराज पूज्य श्री की सेवा में है। मैं उनको भी वन्दना करूंगा। गुरुदेव के प्रति विनय भाव मैं नहीं छोड़ सकूंगा।**

गणी उदयचन्द जी के इन उद्‌गारों का आदर करते हुए विरोधी मत रखने वाले सभी साधु गणी जी को आगे करके पूज्यश्री की सेवा में पहुंचे। उन्होंने गणी जी के आदेशानुसार उनकी वन्दना आदि की सभी विधि की। जब इन साधुओं के साथ पत्री और परम्परा के प्रश्न को लेकर चर्चा चली तो पूज्य श्री ने आगम पाठ निकालकर सब साधुओं के सम्मुख रख दिये

और उनके सम्बन्ध में चर्चा करने को कहा। इस गोष्ठि में प्रबंध की दृष्टि से तपस्वी श्री निहालचंद जी म. एवं निश्रायी संत भी सहयोगी रहे।

यहां पर गणी उदयचन्द जी ने सविनय निवेदन किया – "भगवन्! मैं तो श्री चरणों में प्रार्थना करने आया हूं, शास्त्रार्थ करने नहीं आया। आप जानते हैं कि यदि मैं वादी के रूप में आता तो उसका स्वरूप कुछ और ही होता। हम तो आपके सेवक हैं। हमारा काम प्रार्थना करना है तथा आपका काम उस पर ध्यान देना है। मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप वर्तमान पर ध्यान देने की कृपा करें तो संघ में शांति स्थापित हो जाएगी। समय की स्थिति को देखते हुए यदि पत्री का प्रचलन स्थगित कर आचार्य श्री जोभी उचित निर्णय लेंगे। हमारी इसमें सहमति होगी।" तत्पश्चात भी कुछ लोग संघ में एकता स्थापित करने का प्रयत्न करते रहे जो कालान्तर में सार्थक हुआ।

❖ संयुक्त जैन कॉन्फ्रेंस की पहल व प्रयास

तत्कालीन पत्री तथा परम्परा पक्ष के बढ़ते हुए मतभेद को दृष्टि में रखते हुए **अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस ने अपनी जनरल कमेटी की एक बैठक 26 जून 1929 को वि. संवत् 1986 में की। इसमें उसने प्रस्ताव नं. 11 के अनुसार निश्चय किया कि कुछ निश्चित व्यक्तियों का एक डेपूटेशन अमृतसर में श्री पूज्य महाराज की सेवा में उपस्थित होकर उनसे इस विषय पर वार्तालाप करें। कॉन्फ्रेंस ने उस डेपूटेशन में निम्नलिखित श्रावकों को सदस्य बनाया गया।**

1. सेठ गोकुलचन्द जी नाहर (दिल्ली), 2. सेठ वर्धमान जी पित्तलिया, रतलाम (म.प्र.), 3. सेठ अचलसिंह जी, आगरा (उ.प्र.), 4. सेठ केसरीमल चोरड़िया, जयपुर (राजस्थान), 5. श्री धूलचन्द जी भंडारी, रतलाम (म.प्र.), 6.

लाला टेकचन्द जी, जंडियाला गुरु (पंजाब), 7. सेठ हीरालाल जी नांदेचा, खाचरोद (म.प्र.)। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय कार्यकारिणी के सभ्यजनों ने सहमति पत्र प्रस्तुत किए और निर्णय का अधिकार प्रदान किया।

यह प्रतिनिधि मंडल देशभर के निर्णयात्मक निश्चय के साथ तारीख 7, 8 तथा 9 अप्रैल 1931 को अमृतसर में श्री पूज्य सोहन लाल जी महाराज की सेवा में उपस्थित हुआ। इस प्रतिनिधि मंडल के आने के अवसर पर अमृतसर में पंजाब महासभा एवं पंजाब भर के प्रमुख श्रावक भी एकत्र हो गए थे।

प्रतिनिधि मंडल ने स्थानीय सद्गृहस्थों तथा अन्य स्थानों के गृहस्थों की उपस्थिति में आचार्य श्री जी की सेवा में यथायोग्य नम्रतापूर्वक विनती की – **'गुरुदेव! हमारी आपसे प्रार्थना है कि आप जैन तिथि पत्रिका के प्रचलन को अभी स्थगित करके समाज की एकता को बढ़ाने में सहायता देने की कृपा करें और कॉन्फ्रेंस द्वारा प्रकाशित टीप को स्वीकार करने की कृपा करें।'**

प्रतिनिधि मंडल का यह निवेदन सुनकर श्री पूज्य महाराज ने उत्तर दिया – **'यद्यपि कॉन्फ्रेंस द्वारा प्रकाशित की गई रिपोर्ट में शास्त्रानुसार कई बातें विचारणीय तथा संशोधन की जाने योग्य हैं, किन्तु श्री संघ की एकता के विचार में हम अपनी संप्रदाय को इस टीप के अनुसार कार्य करने की आज्ञा देना स्वीकार करते हैं। कॉन्फ्रेंस का यह कर्तव्य होगा कि वह अपनी टीप को शास्त्रानुसार बनावे। इस कार्य के लिए श्रद्धा, प्ररूपणा, साधु समाचारी दीक्षा आदि के सम्बन्ध में विचार करने के लिये 'अखिल भारतीय मुनि सम्मेलन' का आयोजन करे।** यह सम्मेलन किसी ऐसे स्थान पर शीघ्र से शीघ्र किया जावे, जहां पंजाब के साधु भी सुगमता से पहुंच सकें। इस सम्मेलन में इन सभी विषयों के सम्बन्ध में शास्त्रानुसार निर्णय

किया जावे। यह आवश्यक है कि इस मुनि सम्मेलन में कॉन्फ्रेंस के वर्तमान टीप की अवधि समाप्ति होने के पूर्व ही भविष्य के लिये नई टीप बना ली जावे। **इस सम्मेलन में हमारे द्वारा तैयार की हुई जैन ज्योतिष तिथि पत्रिका, कॉन्फ्रेंस की टीप तथा उपस्थित की जाने वाली किसी भी अन्य टीप अथवा तिथि पत्रिका पर विचार करके उसमें आवश्यक संशोधन किये जावें। उक्त सम्मेलन जिस पंचांग को भी सर्व सम्मति से पास कर देगा कॉन्फ्रेंस का यह कर्तव्य होगा कि वह उसको समस्त भारत में प्रचलित कराकर उसको कार्य रूप में परिणित करें। चेतावनी भी साथ थी कि "यदि कॉन्फ्रेंस की ओर से एक वर्ष के अन्दर सम्मेलन के लिये प्रयत्न न किया गया तो एक वर्ष के पश्चात् हम उसकी टीप को मानने के लिये पाबन्द न होंगे।"**

❖ पूज्य प्रधानाचार्य जी की दो शर्तें

'जैन संघ की एकता के लिये "मैं पत्री के प्रश्न को स्थगित कर देने को तैयार हूं। परन्तु यह एकता लूली-लंगड़ी नहीं होनी चाहिये। आप मेरे कहे अनुसार समस्त भारत के स्थानकवासी जैन मुनिराजों का एक सम्मेलन कराने का अविलम्ब प्रयत्न आरम्भ कर दें। इसी प्रकार स्थानकवासी जैन समाज के संगठन की सुदृढ़ नींव डाली जा सकती है। जब तक स्थानकवासी जैन संघ के सभी सम्प्रदायों की एक प्ररूपणा तथा एक समाचारी न होगी तब तक समाज का अन्धकारपूर्ण भविष्य प्रकाशमान नहीं बन सकेगा।" इस पर प्रतिनिधि मंडल ने पूज्य श्री से इस विषय में पूर्ण सहमति प्रकट करते हुए उनको विश्वास दिलाया कि **ऐसे सम्मेलन के लिये अविलम्ब प्रयत्न आरम्भ किया जावेगा।**

डेपूटेशन ने 19 अप्रैल के 'जैन प्रकाश' में अमृतसर की इस भेंट के पूर्ण विवरण को देते हुए समाज से अपील की कि वह 'अखिल भारतीय मुनि सम्मेलन' को बुलाने के लिये पूर्ण शक्ति से प्रयत्न करें।

लोगों के मन में विचार तो था, किन्तु उसे कार्य रूप में परिणित करने का साहस किसी को भी नहीं था। समाज को इस सम्बन्ध में एक गहरी प्रेरणा की आवश्यकता थी, जो उसको ठीक समय पर श्री पूज्य सोहनलाल जी महाराज से मिल गई। इस प्रेरणा के बाद समाज मे वास्तव मे बल आ गया, और यह योजना बद्धमूल हो गई। अब सारे समाज में 'अखिल भारतीय मुनि सम्मेलन' बुलाने का आन्दोलन आरम्भ हो गया।

❖ प्रथम साधु सम्मेलन की भूमिका इस तरह बनी

अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का डेप्यूटेशन अमृतसर से आते ही अपने काम में लग गया। उसने अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की एक जनरल कमेटी बुलाई। कॉन्फ्रेंस की कमेटी का यह अधिवेशन 11 तथा 12 अक्टूबर 1931 को दिल्ली में हुआ। इसमें कमेटी ने यह स्वीकार किया कि 'अखिल भारतीय साधु सम्मेलन' को बुलाने की वास्तव में बड़ी भारी आवश्यकता है। अतएव उसने इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिये एक उपसमिति बना दी।

❖ प्रथम साधु सम्मेलन की घोषणा

इस बैठक में यह भी तय किया गया कि **अखिल भारतीय मुनि सम्मेलन यथा संभव फाल्गुण संवत् 1988 में किया जावे। इसके अतिरिक्त यह भी तय किया गया कि कॉन्फ्रेंस की अगली बैठक अप्रैल 1932 में हो, जिसमें उक्त उपसमिति द्वारा बनाई हुई योजना पर विचार किया जावे। उपसमिति का संयोजक आगरा के सेठ अचलसिंह को बनाया गया। सेठ अचलसिंह ने कॉन्फ्रेंस के इस निश्चय के सम्बन्ध में जैन पत्र-पत्रिकाओं में विज्ञप्ति भी प्रकाशित करा दी, जिससे सारे समाज में उत्साह की लहर दौड़ गई।**

सबसे पहले तो भारत के सभी प्रान्तों में प्रान्तीय सम्मेलन करके इस विषय में प्रयत्न किया जाने लगा।

सर्वप्रथम राजकोट प्रांतीय साधु सम्मेलन तथा पाली मारवाड़ मुनि सम्मेलन करने का निर्णय लिया गया। इसी बीच में माघ सुदी 13 संवत् 1988 तदनुसार 20 फरवरी 1932 को साधु सम्मेलन समिति सभा ने जयपुर की अपनी बैठक में निश्चय किया कि अखिल भारतीय मुनि सम्मेलन के लिये अजमेर के निमंत्रण को स्वीकार कर लिया जाए, अजमेर भारत के मध्य भाग में है, जहां भारत के सभी भागों के क्योंकि जैन मुनि विहार करके पहुंच सकते हैं।

❖ पंजाब प्रांत मुनि सम्मेलन का आयोजन, होशियारपुर

बहुत कुछ विचार विमर्श के उपरान्त यह निश्चय किया गया, कि पंजाब के मुनियों का एक सम्मेलन चैत्र कृष्ण 6, 7 तथा 8 संवत् 1988 को होशियारपुर में किया जावे। इस समाचार से पंजाब के मुनि संघ में उत्साह की लहर दौड़ गई। समय कम था अतएव प्रायः मुनिराज यह समाचार पाकर शीघ्रता पूर्वक होशियारपुर आने लगे। **सर्वश्री उपाध्याय आत्माराम जी महाराज, युवाचार्य श्री काशीराम जी महाराज, गणी उदयचन्द जी महाराज, पंडित श्री नेकचन्द जी महाराज, पंडित विनयचन्द जी महाराज, पं. नरपतराय जी जी महाराज, पंडित श्री रामस्वरूप जी महाराज आदि मुनिराज अपनी अपनी शिष्य मण्डली के साथ होशियारपुर पधारे।** इस प्रकार यह सम्मेलन पंजाब के इतिहास में पहला ही था। सम्मेलन का कार्य प्रारम्भ होने पर सर्वसम्मति से **गणी उदयचन्द जी महाराज को उसका सभापति चुना गया। उन्होंने अपने सफल नेतृत्त्व में सब कार्य शान्तिपूर्वक चलाया। पत्री और परम्परा के कटुतापूर्ण लम्बे संघर्ष के पश्चात् दोनों पक्ष के मुनि प्रथम बार होशियापुर सम्मेलन में एकत्रित हुए। संघ में सभी निर्णय सर्वसम्मति से किए गए। ये समाज के उत्साह को बढ़ाने वाला रहा।**

इस सम्मेलन में अनेक प्रस्ताव पास किये गये, जिनमें से कुछ मुख्य प्रस्ताव यह थे —

● **प्रस्ताव 1 : श्री सुधर्मागच्छाचार्य श्री मुनि पूज्य सोहनलाल जी महाराज संघ के परम हितैषी तथा दीर्घदर्शी हैं। आपकी अत्यन्त कृपा और विचार शक्ति द्वारा श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस ने उत्साहित होकर वृहत् मुनि सम्मेलन की नींव डाली और सब प्रान्तों में जागृति की, जिसका विवरण जैन प्रकाश पत्र में देख सकते हैं।** पंजाब संघ जो कुछ समय से बिखरा हुआ था, आपश्री की कृपा से ही प्रेम सूत्र में बँध गया। **जो संघ कल तक परस्पर तर्क-वितर्क में उलझा हुआ था आज सहानुभूति तथा जैन धर्म के प्रचार कार्य में लगा हुआ दिखलाई दे रहा है।**

● **प्रस्ताव 2 :** अखिल भारतीय कॉन्फ्रेंस की ओर से प्रकाशित पक्खी–पत्र की प्रतिरूप पक्खी पत्र प्रकाशित किया जाना चाहिए।

● **प्रस्ताव – उपाध्याय श्री आत्माराम जी महाराज।**

अनुमोदक – प्रवर्तिनी आर्याश्री पार्वती जी महाराज।

● **प्रस्ताव 3 :** सब आचार्यों के ऊपर एक प्रधानाचार्य होना चाहिये। इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पास कर उसे वृहत् सम्मेलन में उपस्थित करने का निश्चय किया गया।

● **प्रस्ताव 4 : प्रत्येक गच्छ में एक आचार्य होना चाहिये और सब आचार्यों के ऊपर एक प्रधानाचार्य होना चाहिये। उसके नीचे मुनियों की एक कौंसिल होनी चाहिये। युवाचार्य कांशीराम जी महाराज के इस प्रस्ताव को सर्व-सम्मति से पास करके वृहत् सम्मेलन में प्रस्तुत करने का निश्चय किया।**

इसके अतिरिक्त मुनियों, आर्याओं तथा श्रावकों के संगठन तथा व्रतपालन आदि के सम्बन्ध में भी अनेक प्रस्ताव पास किये गए। होशियारपुर सम्मेलन का लाभ उठाकर पंजाब के मुनि संघ को पूर्णतया सुसंगठित तथा नियमबद्ध बना लिया गया। तत्कालीन आचार्य के वार्षिक पाट महोत्सव को भी मनाने का निश्चय किया गया। **यह भी निश्चय किया गया कि**

संभावित अजमेर सम्मेलन में पत्री का प्रश्न उपस्थित हो तो पंजाब के मुनि उसका विरोध न करें। आपस के संघर्ष को वहां न छेड़ा जावे। इस बात को सब मुनियों ने मान लिया और कहा कि हम पत्री का विरोध नहीं करेंगे। उन्होंने यह भी निर्णय किया कि मुनि सम्मेलन में बहुमत से किये हुए प्रत्येक निर्णय उनको मान्य होंगे। इस सम्मेलन में अजमेर में होने वाले अखिल भारतीय मुनि सम्मेलन में जाने के लिए पांच प्रतिनिधियों का निर्वाचन भी किया गया।

होशियारपुर सम्मेलन के पश्चात् वहां से सभी प्रतिनिधियों ने अजमेर की ओर विहार कर लिया गया। मार्ग पर्याप्त लम्बा था। कहां पंजाब और कहां मारवाड़? बड़ी लम्बी और कठोर यात्र थी। किन्तु **जैन मुनि आत्मिक कर्तव्य की तुलना में शारीरिक कष्ट की चिन्ता नहीं किया करते।** प्रतिनिधियों में **गणी श्री उदयचन्द जी म.** ही सबसे वृद्ध थे। उनका शरीर रोगग्रस्त भी था किन्तु उनका मन रोगी नहीं था। अतएव **उपाध्याय श्री आत्माराम जी महाराज तथा युवाचार्य श्री काशीराम जी महाराज के समान तेज न चलते हुए भी वह अपने मार्ग पर आगे बढ़ते गए। प्रायः प्रतिनिधियों ने संवत् 1988 का चातुर्मास अजमेर के मार्ग में ही किया।** गणी उदयचन्द जी ने यह चातुर्मास रामपुरा (मध्य प्रदेश) में किया। चातुर्मास समाप्त होने पर उन्होंने फिर अजमेर की ओर विहार कर दिया। **बाकी लोग मालेरकोटला, नाभा, कैथल, दिल्ली, अलवर, जयपुर तथा किशनगढ़ में धर्म प्रचार करते हुए अजमेर पहुंचे।** ●●●

ऐतिहासिक अजमेर नगर (सन् 1933)

सामाजिक समरसता का उद्घोष प्रथम अजमेर साधु सम्मेलन (सन् 1933)

वृहतसाधु–सम्मेलन का प्रथम बार अजमेर में होना निश्चित होने से सभी स्थानकवासी जैन साधुओं को यह सूचना दी जा चुकी थी। अतः सं. 1959 का चातुर्मास उठते ही सभी साधुओं का विहार भी अजमेर की ओर होने लग गया था, आगन्तुक साधुओं का स्वागत करना राजस्थान के साधुओं का परम कर्तव्य था। इस दृष्टि से मरूधरा से सक्रीय संत पू. श्री मरुधर केसरी जी म. आदि ने ब्यावर में, **'मरुधर प्रान्तीय साधु-सम्मेलन'** के अगले चरण में **पूरक द्वितीय प्रांतीय अधिवेशन** के आयोजन की प्रेरणा दी, तदनुसार ब्यावर में **प्रान्तीय साधु-सम्मेलन के द्वितीय अधिवेशन में सभी वरिष्ठ संत साध्वी जी म. पुनः मिले और उन्होंने सर्वसम्मति से एक समिति का गठन किया।** जिसका नाम रखा गया – **"अ.भा. साधु सम्मेलन स्वागत समिति"।** इसके संचालन का भार श्री मरूधर केसरी जी म. को सौंपा गया। समिति के द्वारा सर्वसम्मति निर्णय हुआ कि आगामी वृहद् सम्मेलन में पंजाब, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों के सन्तों के सम्मिलित होने की स्वीकृति आ चुकी है और अजमेर राजस्थान का हृदय है। वहीं हम मारवाड़ी मेवाड़ी होकर भी राजस्थानी हैं। अतः हम राजस्थानी (मरुधरीय) सन्तों का यह कर्तव्य हो जाता है कि हम आगन्तुक सन्तों का हार्दिक स्वागत करें, उनको सहयोग दें। हमारे यहां पधारने वाले समस्त साधर्मी सन्तों की सेवा–भक्ति करना हमारा सर्वोच्च कर्तव्य है। **स्वागत के लिए किये गये निर्णयानुसार पंजाब से पधारने वाले सन्तों के स्वागत का भार स्वामी श्री पन्नालाल जी महाराज को सौंपा गया और उनका सेवा कार्य-क्षेत्र किशनगढ़ से ब्यावर तक सीमित किया गया।**

महाराष्ट्र से पधारने वाले सन्तों के स्वागत का भार श्री गणेशीलाल जी स्वामी और श्री बख्तावरमल जी महाराज को सौंपा गया। उनका सेवा क्षेत्र भीलवाड़ा से ब्यावर तक रखा गया। इसी प्रकार आबूरोड़ से ब्यावर तक सौराष्ट्र-गुजरात से पधारने वाले सन्तों के स्वागत का भार स्वामी श्री छगनलाल जी महाराज तथा श्री मरुधरकेसरी म. को सौंपा गया।

❖ प्रथम बार गुजरात प्रवास

पू. श्री मरुधर केसरी जी को जो विशिष्ट उत्तरदायित्व मिला शांतिरक्षक हेतु शतावधानी श्री रत्नचन्द्र जी म. को लाने और उनकी विद्वतता का लाभ लेना, उसके निर्वाह के लिये आपश्री जी ब्यावर से विहार करके सैंदडा, बर, रायपुर सांडिया, सोजत, पाली, सुमेरपुर आदि होकर अपने सन्तदल के साथ शिवगंज पधारे। वहाँ दरियापुरी सम्प्रदाय के सन्त श्री पुरुषोत्तम चन्द जी म., श्री हर्षचन्द जी महाराज तथा श्री भायचन्द जी महाराज आदि सन्त पधार गए थे। उनका स्वागत करके उनकी सुखसाता पूछकर उनके साथ स्वयंसेवक देकर आपश्री जी आगे बढ़े। लगभग 26 मील का विहार करके सज्जन रोड़, पिंडवाड़ा पहुँचे। वहाँ रात्रि निवास करके प्रातः ६ मील विहार किया कि मार्ग में ही खम्भात–सम्प्रदाय के पूज्य श्री छगनलाल महाराज ठा. 5 से आते हुए दिखाई दिये। उनसे सुखसाता पूछकर उनके साथ वापिस 6 मील, जहाँ से विहार किया और वहीं वापस आए। वहाँ उन्हें ठहरा कर तथा आहार पानी कराकर सन्तों के साथ तीन स्वयं सेवकों को देकर आपश्री ने आगे विहार किया।

वहाँ से 12 मील पर कइवल्ली स्टेशन पहुँचे और दूसरे, दिन वहाँ से 6 मील का विहार करके आबूरोड़ (खराड़ी) पहुँचे। वहाँ योगनिष्ठ पं. त्रिलोकचन्द जी स्वामी, श्री चतुर्भुज जी स्वामी (कच्छी) आदि ठाणे 3 से मिले। उन्हें स्थानीय जैन धर्मशाला में ठहराया, आहार पानी कराया।

इसी बीच आबूरोड़ में ही श्री दुर्लभ जी भाई का तार मिला कि शतावधानी मुनि श्री पं. रत्नचन्द्र **जी महाराज को काठियावाड़ के संघपति जी ने सम्मेलन में भेजने की स्वीकृति स्वास्थ्यगत कारणों से नहीं दी है, अतः मन्त्री मुनि श्री मरुधर केसरी जी स्वामी श्री छगनलाल जी को लेकर काठियावाड़ पधारे। समय बहुत ही अल्प था। इसलिए आपने संघसेवा हेतु सम्मेलन की तिथियों का समय अत्यन्त निकट समझ कर उग्र विहार किया। आपश्री कभी तो 30–30 मील और कभी 46–46 मील तक का विहार करके शीघ्र काठियावाड़ श्री संघपतिजी के पास पहुँचें। संघपति से काफी बातचीत करके स्वीकृति प्राप्त की और उक्त सन्तों को साथ में लेकर धीरे-धीरे पालनपुर होते हुए आबूरोड़ वापिस लौट ही रहे थे कि मार्ग में ही गौंडल सम्प्रदाय के स्वामी श्री पुरुषोत्तमजी महाराज को पक्षाघात (लकवा) हो गया। अतः चित्रासणी स्टेशन से टेलीफोन द्वारा पालनपुर संघ के श्रावकों को सूचना दी गई। वहां से श्रावक लोग डॉक्टर को लेकर आए, डॉ. के परामर्श के अनुसार स्वामीजी को उपचार के लिए ठा. 2 से पालनपुर वापस भेजना पड़ा। तत्पश्चात् बोटाद सम्प्रदाय के स्वामी श्री माणकचन्द जी .महाराज ठाणे 3, सायला सम्प्रदाय के स्वामी श्री मणिलाल जी महाराज ठाणे 3, शामजी स्वामी ठाणे ३ तथा लीम्बड़ी सम्प्रदाय के शतावधानी पं. मुनि श्री रत्नचन्द जी स्वामी ठा. 5 एवं अन्य सन्त आदि कुल ठा. 32 सन्तों को लेकर आपश्री आबूरोड़ पधारे। वहाँ तीन दिन विराजे।**

यहाँ माउन्ट आबू से योगीराज श्री शान्ति विजयसूरि जी म. का कुछ प्रमुख श्रावकों द्वारा सन्देश प्राप्त हुआ कि एक बार आपको माउन्ट आबू पधारना होगा, अन्यथा आपको गुरुदेव की शपथ होगी। अतः विवश होकर योगीजी के अनुरोध पर श्री मरुधर केसरी जी म. ने कुछ सन्तों को रेलपटरी के मार्ग से शनैः–शनैः अजमेर की दिशा में विहार करवा दिया और

आप स्वयं 11 ठाणे गुजराती सन्तों सहित 4 दिन माउन्ट आबू पर विराजे और विभिन्न दर्शनीय स्थान दिखाये।

वहाँ से अनादरा, सिरोड़ी, बेड़ा, सिरोही, अरटबाड़ा, शिवगंज आदि होकर आप सन्तदल सहित सांडेराव पधारे। **इन मार्गवर्ती सभी गाँवों में श्वेताम्बर मूर्ति पूजकों के संघ हैं। सर्वत्र व्याख्यान वाणी का अपूर्व ठाठ रहा। उन श्रावकों ने सम्प्रदाय भेद भूलकर अच्छी सेवा भक्ति की।** कई जगह मारवाड़ी स्थानकवासी श्रावक भी दर्शनार्थ आये।

गुजराती संतों को मारवाड़ के सज्जनों ने सत्कार करके अभिभूत कर लिया। जनता ने उन्मुक्त हृदय से संतों का स्वागत किया। मार्ग में प्रत्येक कदम पर पंक्तिबद्ध होकर जनता में जैन–जैनेतर लोग सन्तों के स्वागत एवं दर्शनों के लिए उपस्थित रहते थे। **उसी समय ब्यावर में 19 सम्प्रदायों के एक सौ उन्नीस संत उपस्थित थे। मालवा क्षेत्र से मालव केसरी पूज्यश्री सौभाग्यमल जी महाराज एवं स्वामी श्री ताराचन्द जी महाराज का पदार्पण हो चुका था।**

❖ प्रथम अजमेर सम्मेलन में प्रवेश व व्यवस्थापन

प्रातःकाल सभी सन्तों का अजमेर–नगर प्रवेश होने वाला था, इसलिए स्थानीय श्रावकों की ओर से सन्तों के स्वागत की जोर शोर तैयारियाँ हो रही थीं। स्वयंसेवक लोग केसरिया पोशाक में सजे हुए अत्यन्त उत्साह के साथ ध्वजोत्तोलन करते हुए सन्तों के स्वागतार्थ नगर के बाहर उपस्थित थे। **गगनभेदी जय-जयकार से सारे नगर को गुंजायमान करते हुए करीब 251 सन्तों को पूर्ण उत्साह और उमंग के साथ अजमेर संघ ने नगर प्रवेश कराया। सभी सन्तों को सुविधानुसार सुमेरभवन, केसरीसिंह जी की हवेली के नौहरे एवं सूरतराम जी की कचहरी से लाखन कोटड़ी आदि स्थानों में व्यवस्था की गई थी।** तदनुसार पूज्य श्री जवाहर

लाल जी म. सूरतराम जी की कचहरी में, पू. श्री ज्ञानचन्द जी म. के संघाड़े के सन्त कचहरी के पास ही एक मकान में, करीब 116 सन्त सुमेर भवन के कमरों में विराजमान हो गये। **व्याख्यान मण्डप श्री सुमेर भवन के विशाल प्रांगण में सुसज्जित किया गया था। मीटिंग के लिए भी हवेली के साथ ही चौक में पंडाल बनाया गया था।**

❖ मुख्य सम्मेलन की व्यवस्था और संघभक्ति!

अ.भा. बृहत् साधु-सम्मेलन का आयोजन मेयो कॉलेज के बाहर सड़क पर किये जाने की योजना थी। तदनुसार वहाँ एक विशाल **'लोकाशाह नगर'** बनाया गया, जहाँ अनेक सुविधाओं से पूर्ण अतिथिशाला में प्रतिनिधि सदस्यों के आवास की व्यवस्था थी। यहीं कॉन्फ्रेंस का कार्यालय भी एक कक्ष में पूर्ण व्यवस्थित हो चुका था। **प्रतिनिधि सदस्यों की सेवा के लिए करीब 1500 स्वयं सेवक अपने प्रधान कर्नल बाबू श्री सुगनचन्द जी नाहर के निर्देशन में पूर्ण तत्परता से कार्यरत थे। लगभग 1 लाख 45 हजार श्रावक-श्राविकाओं ने अजमेर सम्मेलन के अधिवेशन में प्रतिनिधि रूप में भाग लिया और 32 ही सम्प्रदायों के भारत विख्यात तेजस्वी, प्रतिभा सम्पन्न करीब 251 सन्त और 80 सतियों ने पधार कर इस बृहत् सम्मेलन की शोभा बढ़ाई। मन्त्रणा मण्डल में केवल 76 सन्त प्रतिनिधि सदस्यों के रूप में विराजते थे। अपूर्व उत्साह से गतिविधियां आगे बढ़ती रहीं।**

❖ प्रथम साधु-सम्मेलन अजमेर : संघ समन्वय का शुभारम्भ

आज से लगभग 93 वर्ष पहले, वि. संवत् 1990 के अपूर्व अमृत क्षण का अवतरण चैत्र सुदि 10 को दिन में 2.30 बजे, आकाश में चमकते प्रचंड सूर्य की तरह प्रारम्भ हुआ।

मंगलवार के मंगलमय दिन से प्रारम्भ होकर यह साधु सम्मेलन पूरे पन्द्रह दिन लगातार सामाजिक समरसता और

संगठन का, संघ का चिन्तन करते हुए संगठन की सुदृढ़ता, समाज की आशा, आध्यात्मिक त्यागी वर्ग में सम्प्रदाय मुक्त एकता, वैचारिक मतभेदों की समाप्ति, आदर्शों की स्थापना और जैन कॉन्फ्रेंस एवं समस्त संघ प्रेमियों के प्रयासों की सफल सम्पूर्ति के साथ इस शताब्दी में प्रथम बार सम्पन्न हुआ। यह ऐतिहासिक सत्य है कि इस असंभव कार्य को संभव बनाने में जैन कॉन्फ्रेंस के तत्कालीन प्रतिबद्ध समाज सेवियों ने अहर्निश प्रयास किये। **सम्मेलन का मंत्रणा स्थान रहा अजमेर नगर का मशहूर लाखन कोटड़ी मुहल्ला, इस मुहल्ले में उन दिनों ममैयो के नौहरे का प्रमुख स्थान था। इसी नौहरे में संतों साध्वियों की चौपाल जमी थी।**

भवन के बीचों बीच एक विशालकाय वटवृक्ष था। उसके नीचे ही मंडलाकार बैठकर पुरोधा संत प्रतिनिधियों ने खुली चर्चा में भाग लिया था। प्रमुख नौहरे के भीतर संतों के बीच किसी भी व्यक्ति या बाहरी सामाजिक शक्ति को पहुँचने का अधिकार नहीं था। यह इस सम्मेलन की खास विशेषता थी। **इस सम्मेलन की एक ओर विशेषता यह थी कि - जैन कॉन्फ्रेंस एवं समाज ने आयोजन की रूप रेखा एवं व्यवस्था तो की थी किन्तु किसी भी तरह की शर्त या कोई गुप्त ऐजेंडा नहीं रखा था। मुक्त विचार विमर्श ही साधु सम्मेलन का आधार था।**

❖ पूज्य साधु-साध्वी जी और उपस्थित सम्प्रदाय

इस प्रथम साधु सम्मेलन में 235 मुनिराज एवं 80 साध्वीजी म. के साथ ही 76 अन्य मुनिराज प्रतिनिधि के रूप में सादर सम्मिलित हुए। स्मरण रहे उस समय समस्त भारत में स्थानकवासी साधु 463 साध्वियाँ 1132 थीं। उनका बहुमत वहां उपस्थित था।

इनमें पू. श्री अमरसिंह जी म. की सम्प्रदाय, पूज्य श्री स्वामीदास जी म. की सम्प्रदाय, पूज्य श्री नानकराम जी म.

की सम्प्रदाय, पूज्य श्री रघुनाथ जी म. की सम्प्रदाय, पूज्य श्री जयमल जी म. की सम्प्रदाय, पूज्य श्री चौथमल जी म. की सम्प्रदाय, श्री खंभात सम्प्रदाय, पूज्य श्री धर्मसिंह जी म. की सम्प्रदाय, पूज्य उत्तमचंद जी म एवं श्री ज्ञानचंद्र जी म. की सम्प्रदाय, महाराष्ट्र और मालवा में प्रभावी ऋषि सम्प्रदाय, कच्छ की मोटी सम्प्रदाय लींबड़ी की छोटी सम्प्रदाय, बोटाद और लींबड़ी सम्प्रदाय, कोटा सम्प्रदाय, श्री एकलिंगदास जी म. की सम्प्रदाय एवं पूज्य श्री मोतीराम जी म. एवं पूज्य श्री अमरसिंह जी म. की पंजाबी और मेवाड़ी सम्प्रदाय ने भागीदारी की। प्रत्येक सम्प्रदाय से संख्यानुसार प्रतिनिधि लिए गए।

इस सम्मेलन में युवाचार्य श्री. काशीराम जी म. गणि श्री उदयचंद्र जी म., उपाध्याय श्री आत्माराम जी म. व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी म. योगीराज श्री रामजीलाल जी म. आगम विशारद पूज्य श्री अमोलकऋषि जी म एवं श्री आनंदऋषि जी म. श्री छगनलाल जी म., श्री हस्तीमल जी म., श्री पुरुषोत्तम जी म., श्री हर्षचन्द्र म., शतावधानी, श्री रत्नचन्द्र जी म., श्री नानकचन्द जी म., श्री नागचन्द्र जी म., देवचंद्र जी म., श्री पृथ्वीचंद्र जी म. श्री हजारी मल जी, श्री मिश्रीमल जी 'मधुकर' श्री शार्दुलसिंह जी, श्री दयालचंद्र जी, श्री पन्नालाल जी म., श्री फतेहचंद्र जी, श्री फूलचंद्र जी, धर्मदास सम्प्रदाय के श्री ताराचंद जी म., मालव केसरी श्री सौभाग्यमल जी, श्री समरथमल जी म., श्री गोकुलचंद जी म., श्री धनसुख जी, श्री पुरुषोत्तम जी, श्री शिवलाल जी म., श्री मोहनलाल जी के सम-सम्माननीय सम प्रभावी संत रत्न उपस्थित थे।

लेकिन जिन संतों के ऊपर आयोजन को सफल बनाने का भार विशेष रूप से था। उनमें जैन दिवाकर पूज्य श्री चौथमल जी, पू. श्री पन्नालाल जी म., युवाचार्य श्री कांशीराम जी म. पू. श्री आनंदऋषि जी म., श्री किशनलाल जी म., श्री

सौभाग्यमलजी म., श्री लक्ष्मीचंद जी म., श्री छगनलाल जी म., श्री मिश्रीमलजी म. 'मरुधर केसरी' आदि इन महामुनियों ने श्रावक-श्राविका को तो एकता के सूत्र में बांधा ही था मूर्धन्य मुनि मंडल को भी एक जगह लाने में बड़ा योगदान दिया था।

इस ठोस पहल की भूमिका बनाने में मरुभूमि के 6 संत संघाड़ों ने एकजुट होकर बड़ा भारी काम किया था। पूज्य श्री नानकचंद्र जी की समुदाय, पू. श्री रघुनाथ जी म. की समुदाय, पू. श्री जयमल जी म. की समुदाय, पू. श्री अमरसिंह जी म. की मेवाड़ी सम्प्रदाय एवं पूज्य श्री चौथमल जी म. की सम्प्रदाय में मतभेद हो चले थे। जनता में उत्साह इतना था कि वरिष्ठ संतों के आगमन की सूचना मात्र से उपस्थित विशाल समुदाय में हर्ष हिलौरें उठने लगती थीं। सब एक दूसरे को प्रेम से निहार कर, परिचय पाने को उतावले लग रहे थे। क्योंकि ये दृश्य कल्पनातीत था। अनेकों के जीवन में यह मुनि सम्मेलन पहला पहला था। सभी चाहते थे कि ये साधु–सम्मेलन सफल हो। मुनि मंडल की, महासती मंडल की जय विजय हो। श्रावक–श्राविका रूप गृहस्थों का हर्ष बार बार गूंज रहा था। इन हजारों आशाओं ने, सहस्त्रों प्रार्थनाओं ने, असंख्य स्तुतियों ने, अनेक सद्भावनाओं और सम्भावनाओं ने ऐतिहासिक नगरी अजयमेरु को अजरामर धर्म नगरी बना दिया था।

❖ प्रथम साधु सम्मेलन में पंजाब एवं उत्तर भारत का प्रभावी योगदान

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है। उस समय समस्त भारत में स्थानकवासी परम्परा से जुड़े लगभग 1595 संत साध्वी जी धर्म प्रवर्तन रत थे। इनमें से पंजाब परम्परा से जुड़े 73 मुनिराज एवं 60 महासतियाँ थी। इनमें से 25 मुनि पंजाब से 450 मील पैदल चलकर सम्मेलन में पधारे थे। इन मुनियों में निम्नलिखित पांच निर्वाचित प्रतिनिधि थे–

1. गणी श्री उदयचन्द जी महाराज (नेतृत्वकर्ता), 2. उपाध्याय श्री आत्माराम जी महाराज 3. युवाचार्य श्री

काशीराम जी महाराज, 4. व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी महाराज, 5. योगीराज श्री रामजीलाल जी महाराज

उपरोक्त 76 प्रतिनिधि समान आसनों पर गोलाकार में बैठे। उनके बीच में हिन्दी तथा गुजराती लिखने वाले मुनि बैठे थे। सम्मेलन में छब्बीसों सम्प्रदाय के प्रतिनिधि जैन धर्म के गौरव का कायाकल्प करने के लिए एकत्रित हुए थे।

मंगलाचरण के पश्चात् गणी श्री उदयचन्द जी महाराज को सर्वसम्मति से इन सम्मेलन का शान्तिरक्षक चुना गया। आपके अतिरिक्त शतावधानी मुनि श्री रत्नचन्द जी महाराज को भी उनके साथ चुना गया किन्तु गणी जी के रोगग्रस्त होने से समस्त कार्यवाही श्री शतावधानी जी म. ने ही चलाई। इस सभा की हिन्दी कार्यवाही को लिखने का कार्य **उपाध्याय श्री आत्माराम जी महाराज** तथा गुजराती कार्यवाही को लिखने का भार लघु शतावधानी **मुनि श्री सौभाग्यचन्द जी महाराज** को दिया गया उनकी सहायता के लिये **मुनि श्री मदनलाल जी महाराज** तथा **मुनि श्री विनयऋषि जी महाराज** को नियत किया गया था।

आरम्भ में कार्यवाहक शांतिरक्षक शतावधानी मुनि श्री रत्नचन्द जी महाराज ने मंगलाचरण किया। फिर सम्मेलन के कार्य को सुगम बनाने के लिये 21 मुनिवरों की एक विषय निर्वाचिनी समिति बनाई गई। इसका कोरम 11 का रखा गया। विषय समिति की बैठक रात्रि को की जाती थी। सम्मेलन में निम्नलिखित निश्चय किये गए–

1. भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों की समान समाचारी का प्रवर्तन एक सूत्र में ग्रंथित करने तथा सम्मेलन के प्रस्तावों को कार्यरूप में परिणित करने के लिए विभिन्न सम्प्रदायों के प्रतिनिधि 27 मुनियों की एक समिति बनाई गई। इसमें पूज्य आचार्य श्री सोहनलाल जी महाराज के चार पंजाबी प्रतिनिधि रखे गये थे।

1. युवाचार्य श्री काशीराम जी महाराज, 2. गणी उदयचंद जी महाराज, 3. उपाध्याय आत्माराम जी महाराज, 4. मुनि श्री मदनलाल जी महाराज। इस मुनि समिति के प्रांत वार निम्नलिखित पांच मंत्री चुने गए। **काठियावाड़ के मंत्री – मुनि श्री हस्तीमल जी महाराज, पंजाब के मंत्री – उपायाय आत्माराम जी महाराज, मारवाड़ के मंत्री – मुनि श्री छगनलाल जी महाराज, दक्षिण के मंत्री – पंडित मुनि श्री आनन्दऋषि जी महाराज, मेवाड़ के मंत्री – मुनि श्री हस्तीमल जी महाराज।**

इस समिति के कार्य के लिए विस्तृत नियम भी बनाए गए। इसके अतिरिक्त एक ज्ञान प्रचारक मण्डल की स्थापना भी पृथक–पृथक क्षेत्रों के लिये की गई। इसके नियम भी विस्तार पूर्वक बनाए गए थे।

पूज्य संतों ने सामाजिक भावनाओं को सफलीभूत बनाने का निश्चय कर लिया था। यही कारण है कि यह विलक्षण कार्य कविमना श्री नानकचंद्र जी म. के मंगलाचरण **"किंकर्पूरमय"** स्तोत्र की गूंज के पश्चात् शतावधानी मुनि श्री रत्नचन्द्र जी म. के इस श्लोक पाठ में साकार हो गया कि–

लक्ष्यं मेरुगिरिः समुन्नततरं, गंभीरमब्धेर्मनो।
वाणी प्रेम सुधाझरी हितकारी, दुष्टिर्दिगन्तं गता।।
येषां कष्ट सहं शरीरमनधं श्रेयोविधो तत्परा-स्ते
संतों हि विभूषयन्तु समितिं गत्वाजमेरंपुरम्।।

भावार्थ यह कि – "लक्ष्य सुमेरू पर्वत से भी उच्च एवं उन्नत है। मन समुद्र से भी अधिक गंभीर है। वाणी प्रेम निर्झर के समान माधुर्यवाली है। हितकारी दृष्टि जो दिग्दिगन्त को छू रही है। परीषह में तपकर काया कुंदन सी पवित्र हो गई है। अपना या पराये का भेद समाप्त हो गया है। **ऐसे कल्याणकारी वातावरण में सत्पुरुषों का ये आगमन अजमेर नगरी की शोभा बढ़ा रहा है।"**

स्वस्तिवाचन के पश्चात् ऋषि सम्प्रदाय के शीर्षमणि पूज्य श्री अमोलक ऋषि जी म. के अनमोल उद्‌गार प्रसारित हुए। जिनका अपूर्व प्रभाव प्रत्यक्ष देखा गया। आपकी संघभक्ति पर सबके मुख से प्रसन्नता ही देखी गई।

पू. रत्नचन्द्र जी म. ने सम्मेलन की विषय वस्तु और लक्ष्य पर उपस्थित महापुरुषों का ध्यान खींचा।

जैन कॉन्फ्रेंस के तत्काली प्रमुख समाजसेवी श्री दुर्लभजी भाई ने अपने सम्बोधन ने निवेदित किया कि – **"आज हमारे जीवन का महान अवसर हमारे सामने है, सौभाग्यवश हमें इतनी बड़ी संख्या में उच्च कोटि के महात्माओं महासतियों और आचार्यो का पावन दर्शन, मार्ग दर्शन प्राप्त हो रहा है। अतः हमें इन महापुरुषों के चर्चा क्रम में व्यवधान नहीं बनना है। त्यागी वर्ग स्वयं सबके हिताहित का विचार करके निर्णय ले लेंगे। हमारी ओर से कोई व्यवधान न हो ऐसा, अनुशासन बनाए रखकर हम सिर्फ सहयोगी बनें।"...**

तत्पश्चात आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. ने "प्रणमु वासुपूज्य जिननायक सदा सहायक तू मेरो" इस स्तुति के साथ मंगल पाठ प्रदान किया, तथा लाखन कोटडी में आपश्री जी ने सम्मेलन के निकट ही स्थान ग्रहण किया। मध्यान्ह में ही शेष प्रतिनिधियों का भी सादर आगमन हो गया। दोपहर 1.30 बजे से 5 बजे तक का समय कार्यवाही हेतु उचित मानकर दरवाजा बंद कर दिया गया।

इस समय विशेष में किसी भी श्रावक का प्रवेश प्रतिबंधित था। श्रमण अत्यावश्यक होने पर भी बाहर भीतर आ जा सकते थे। इस नियमानुसार अनुशासित श्रावक बाहर ही खड़े रह गए। मगर संत उतावले हो रहे थे। सभी जल्दी से जल्दी अपनी बात कहने हेतु आतुर होने लगे। कोई पूज्य श्री जवाहराचार्य श्री जी से अपनी बात कहना चाहते थे तो कोई ऊपर विराजित श्री दयालचंद्र जी म. के शिष्यों के पास अपनी अपनी दलील

देने लगे, इस पर कुछ देर तक व्यवधान होता रहा। बात सिर्फ इतनी सी थी कि कई कठोर क्रियापात्री मुनिराज पेड़ के नीचे बैठकर निर्णय करने पर आपत्ति कर रहे थे।

इस आपत्ति को निरस्त करते हुए वरिष्ठ संतों ने एक स्पष्ट निर्णय दिया कि - "ऐसे ही बोधिवृक्ष के आश्रय में वही कार्य किया जाए, जैसा 1500 वर्ष पूर्व देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने संघ और संसार के कल्याण के लिए किया गया था।"

इस उदारमना ऐतिहासिक समझ से काया पलट हो गई, त्यागी वर्ग में संसार के कल्याण की भावना व्याप्त होते ही साम्य भाव का जागरण हो गया। प्रेम के गीत गाए जाने लगे, सिंह और बकरी साथ–साथ हो गए और एकता के निर्मल जल से प्यास बुझाने लगे।

सब एक मंडलाकार में बैठ गए तब शांतिरक्षक शतावधानी मुनि श्री रत्नचंद्र जी म. एवं कविवर्य श्री नानकचंद्र जी म. ने संयुक्त रूप से मंगलाचरण पढ़ा।

मंगलाचरण के पश्चात् बम्बई में 25/12/32 के प्रस्तावों का लिखित विवरण वितरित किया गया। जो प्रस्ताव अत्यंत महत्व के थे वे निम्नानुसार थे, यथा–

प्रस्ताव : साधु सम्मेलन में केवल भविष्य की उन्नति के संबंध में विचार किया जावे, भूतकाल संबंधी विवादों की कोई चर्चा न हो।

प्रस्ताव नं 3 : सम्मेलन में समय–समय पर प्रत्येक मुनिराज परस्पर सम्मान करें। इसमें किसी पर कोई दबाव नहीं होगा।

प्रस्ताव नं 6 : सम्मेलन की मंडलाकार बैठक में अगली लाइन में हर एक सम्प्रदाय के एक एक मुख्य मुनिराज विराजें। बाकी मुनिराज मुख्य मुनिश्री के पीछे बैठने की कृपा करें।

प्रस्ताव नं 8 : सम्मेलन में होने वाले निर्णय जब तक ठोस रूप न ले लें तब तक प्रतिनिधियों में चर्चा का विषय न

बनाया जाएं। (प्रस्तावों का वितरण/मूलतः व्यवस्था की सूचना देने तक सीमित रहा, अतः पालन का अत्याग्रह नहीं था।)

इसके बाद कार्यवाही आगे बढ़ाने के पहले ही पूज्य श्री जवाहराचार्य श्री जी ने अपनी साफगोई से सम्मेलन को हैरत में डाल दिया। आपश्री जी ने फरमाया कि – **"मैं प्रतिनिधि नहीं हूं", लेकिन जो कुछ स्वीकार करने योग्य होगा, उसे स्वीकार करने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मैं उसे ही मानूंगा।"**

इस स्पष्टीकरण पर युवाचार्य श्री काशीराम जी म. ने कहा कि – **"दिन भर में जो भी प्रस्ताव रखे जाने हैं, उनका निश्चय करने के लिए एक विषय विचरणी कमेटी बना ली जाए और उसी की आज्ञा से कार्य प्रस्ताव प्रस्तुत किए जाएं।"**

इस पर सबकी सम्मति हो चुकने पर, पूज्य श्री जवाहर लाल जी म. ने कहा कि **"आज्ञां"** शब्द न मानकर मुझे सब कुछ मान्य हो सकता है।"

जैसे ही यह विलक्षण राय प्रकट हुई सभी लोग इसके निहितार्थ पर हंसने लगे। इसके पश्चात् युवाचार्य श्री कांशीरामजी म. ने सम्मेलन का ध्यान पत्री प्रकरण पर खींचते हुए कहा कि - प्रधानाचार्य पूज्य श्री सोहनलाल जी म. ने मुनि सम्मेलन को इसी विषय में समाधान करने का दायित्व सौंपा है, अतः इस प्रस्ताव को पहले लिया जाए, व निर्णय किया जाए।"

चर्चा में भाग लेते हुए पूज्य श्री अमोलकऋषि जी म. ने कहा - "यदि वर्ष में एक से दो मास हों तो एक मास गिना जावे क्योंकि सूत्र में 'समासं' पाठ आता है। दिन गणना का कोई पाठ नहीं है। अतः श्रावण दो हों तो श्रावण एक गिना जाए, इसी प्रकार भादों-भादों तक गिनकर पचासवें दिन संवत्सरी मान ली जाए।" परन्तु यह युक्ति भी बहस में उलझकर रह गई, क्योंकि सबका आग्रह जैन ज्योतिष के अनुसार निर्णय करने का था तो पुनः पू. श्री जवाहरलाल जी

म. बोले कि - "ज्योतिष विषय को जैन परिभाषा की दृष्टि से सिद्ध करना असंभव-सा है। अतः परम्परागत मान्यताओं के सहारे ही निर्णय लिया जा सकता है। जैन सूत्रों में यह विषय सांगोपांग, नहीं है।"

हमें तो ऐसा मार्ग खोजना चाहिये जिससे हमारी पक्खी संवत्सरी सभी को मान्य हो जाए। "जो इस विषय को निर्विवाद कर दें, मैं उसके पैर पड़ने को भी तैयार हूं।" इन विचारों को सुनकर सब मौन हो गए। एक सन्नाटा सा छा गया। किसी ने कोई तर्क देना उचित नहीं समझा।

इसके बाद शास्त्रों पर तथा पत्री को सही न मानने पर दबे स्वर में चर्चा चल पड़ी। ये व्यवहार युवाचार्य श्री कांशीराम जी म. को अखर गया। वे ऊँचे स्वर में हुंकार भर कर कहने लगे कि - "इस तरह काना फूंसी मत करो। कोई माई का लाल इसको झूठा बताने वाला सामने आवे तो मैं शास्त्रर्थ करने को तैयार हूं।"

इस चुनौती से वातावरण तनावपूर्ण हो गया, तो पुनः श्री जवाहरलाल जी म. ने कहा कि - "यदि कोई ११ अंग और १२ उपांग और अन्य को सत्य न माने, उसे न्यूनाधिक समझे या विपरीत प्ररूपणा करे तो मैं तो कभी उसकी छाया तक में नहीं रहना चाहता। यदि सूत्र छूटे तो हमारा जीवन छूटा। हम ऐसे मृतप्राय जीवन को जीना स्वीकार नहीं करते।"

इसके पश्चात् युवाचार्य श्री कांशीराम जी म. ने कहा कि निर्णय पूर्वक व्यवहार को स्थिर रखा जा सकता है। हमें उस पक्खी संवत्सरी को मानने में कोई हानि नहीं है। या जो कमेटी द्वारा निश्चित हो जाएगा उसे भी हम सर्वथा मानने को तैयार है।

इस वाद विवाद का निर्णय करने के लिए एक कमेटी बना दी गई। 7 मुनिराज इस कमेटी के सदस्य बनाए गए

जिनके नाम थे सर्वश्री शतावधानी रत्नचंद्रजी म., श्री मणिलाल जी म., श्री पन्नालाल जी म., उपाध्याय श्री आत्माराम जी म., गणि श्री उदयचंद जी म., युवाचार्य श्री कांशीराम जी म.।

पूज्य आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. को भी इसका सदस्य बनने का आग्रह किया गया। इस पर आपने अपना निश्चय दोहराया कि मैंने पहले ही स्पष्ट कह दिया था कि **"मैं प्रतिनिधि नहीं हूं" अतः मेरा मेम्बर बनना भी अच्छा नहीं।** फिर भी आप आग्रह कर रहे हैं तो **मैं सम्मतिदाता हो सकता हूं।** फिर भी कहूंगा कि संवत्सरी का निर्णय सर्वसम्मति से करा लीजिए तो सर्वप्रथम उसी निश्चय को मैं भी मानूंगा।" पूज्य श्री जी के इन शब्दों में गुत्थी के हल होने का बल था ।

कार्यवाहक शांतिरक्षक मुनि रत्नचन्द्र जी म. ने सारी बहस को समाप्त घोषित करते हुए सात मुनियों की कमेटी को सर्वोच्च अधिकार दे दिया। इसके बाद फिर आचार्य विषयक प्रस्ताव रखा गया। इस कमेटी में 22 मुनिराज बनाए गए जिनके नाम हैं–

1. गणि श्री उदयचंद्र जी म., 2. श्री अमोलकऋषि जी म., 3. श्री छगनलाल जी म., 4. उपाध्याय श्री आत्माराज जी म., 5. श्री पुरुषोत्तमलाल जी म., 6. श्री मणिलाल जी म. 7. श्री श्यामलाल जी म. 8. पं. श्री हर्षचंद्र जी म., 9. शतावधानी श्री रत्नचंद्र जी म. 10. जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म. 11. कवि श्री नानकचंद्र जी म., 12. युवाचार्य श्री कांशीराम जी म., 13. श्री ताराचंद्र जी म., 14. श्री पन्नालाल जी म., 15. श्री पृथ्वीचंद्र जी म., 16. श्री फूलचंद्र जी म., 17. श्री कुंदनलाल जी म. 18. श्री सौभाग्यमल जी म., १9. श्री समरथमल जी म., 20. श्री मोहनऋषि जी म. 21. श्री हस्तीमल जी म. एवं, 22. श्री चौथमल जी म. मारवाडी आदि।

इस समिति ने प्रस्ताव का प्रारूप तो बनाया मगर कारण विशेष एवं पूज्य श्री जवाहरलाल मं. का स्वास्थ्य ठीक न होने से इसे तत्काल पेश नहीं किया गया।

❖ दीक्षा योग्यता एवं आयुष्य पर बहस

इस विषय में युवाचार्य श्री कांशीराम जी ने माता पिता की आज्ञा को अनिवार्य बताया। उपाध्याय श्री आत्माराम जी म. ने 16 वर्ष की आयु की सम्मति दी, श्री अमोलक ऋषि जी म. ने 11 वर्ष की आयु ठीक बताई। इस पर कई दिन तक शास्त्रार्थ चला और विवाद पर कोई निर्णय नहीं हो सका।

प्रातः 10 बजे के समय और संख्या 3 बजे सेवा वैय्यावच वाले जल आदि का प्रबंध कर दिया करते थे। शेष समय पर चर्चा एवं निष्कर्ष होता था।

कोरम का निर्णय पू. श्री चौथमल जी म. ने कम से कम 70 संतों की उपस्थिति अनिवार्य करके हल कर दिया। शतावधानी रत्नचन्द्र जी मं. ने इसका अनुमोदन कर दिया। यही सम्मति श्री कजोड़ीमल जी म. की भी थी।

श्री हस्तीमल जी म. ने कहा कि उपस्थित संतों से सम्मति लेकर प्रस्ताव पास करा दो। श्री समरथमल जी ने कहा कि प्रस्ताव सबके सामने हो। इसके बाद दीक्षावय सम्बन्धी विवाद को समाप्त कर दिया गया। सदन में प्रस्ताव वापस ले लिया गया।

❖ श्री वर्धमान संघ की स्थापना का प्रथम प्रयास

अजमेर सम्मेलन में प्रथम बार सामाजिक व्यवधान की समाप्ति के लिए एक प्रस्ताव **'श्री वर्धमान संघ'** की स्थापना के लिए रखा गया। इस प्रस्ताव का संक्षिप्त प्रारूप था कि – **यदि श्री वर्धमान संघ स्थापित कर लिया जावे तो संघ सर्वतोभद्र हो जाएगा। इससे सम्प्रदाय भेंद नहीं रह पाएगा, सबकी समान समाचारी हो जाएगी। आपस में झगड़े निपट जाएंगे।**

इसकी स्थापना पर संवत्सरी, दीक्षा आयुष्य संबंधी प्रश्न और अन्य व्यवस्था पर संघाचार्य सुगमतया निर्णय कर सकेंगे। परन्तु संघ में प्रवेश एक प्रायश्चित के पश्चात् ही होगा। इसका निर्णय भी सर्वोच्च आचार्य द्वारा ही होगा। इस स्थिति में यदि कोई साधु–साध्वी वर्तमान संघाचार्य को अयोग्य समझकर अनुशासित न रहे तो उसे संघ में प्रवेशाधिकार भी न होगा।

इस मसौदे का आशय बड़ा ही स्पष्ट था कि एक आचार्य के नेतृत्व में समानाधिकारी सोसायटी की तरह संघ व्यवस्थापन हो मगर आचार्य को सर्वाधिकार सम्पन्न (प्रधान) माना जाए। जिसके निर्देश पर ही दीक्षा, शिक्षा, परीक्षा और संघ का दायित्व रहे।

इस पर अधिकांश संत साध्वीजी म. ने मौन रखकर अपनी राय व्यक्त नहीं की, किन्तु अपने अधिकारों को सीमित होता देखकर समर्थन भी व्यक्त नहीं किया। **फलस्वरूप जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा व्यक्त एकता का आग्रह कोई फलश्रुति न पा सका।**

कुल मिलाकर एक संघ की एक आचार्य के नेतृत्व की कल्पना आकार तो नहीं ले सकी, मगर इसने एकता की ललक को तो व्यक्त कर ही दिया। **जिस साधु समाज में सदियों से संगठन का अभाव रहा है। उसे एक ही सम्मेलन से जोड़ पाना असम्भव सी बात है। इस सत्य को स्वीकार करते हुए सम्मेलन की कार्यवाही आगे बढ़ती रही।**

❖ एक आचार्य का प्रस्ताव पर भी विचार विमर्श

एक संघ की स्थापना करने संबंधी प्रस्ताव पर चर्चा के मध्य श्री मणिलाल जी म.. (गुजराती) ने बड़े ही उच्च स्वर में कहा कि – **"जैन समाज की उन्नति उसी समय हो सकती है। जब 32 साम्प्रदायिक टुकड़ों को जोड़कर एकता के सूत्र में सबको पिरो लिया जाए। ये टुकड़े सिद्धांत पर नहीं अभिमान और कषाय भाव पर आधारित व्यक्तिगत**

मनोमालिन्य पर आधारित है। अतः समय की मांग है कि संत समुदाय एक हो जाएं।"

इस भाव धारा से सहमत होते हुए पूज्यवर श्री जवाहरलाल जी म. सा ने कहा कि – मुझे अपने समाज का तथा परमात्मा के शासन का अवनत होना बड़ा दुःखद प्रतीत होता है। इसी से मेरे मतानुसार एक योजना बन सकती है। यद्यपि ये मेरा कथन है कोई ईश्वरीय वाक्य नहीं है।

"मैं कहता हूँ कि यदि लोक परलोक का भय है। आत्मा में सुधार की स्थापना का आग्रह है, जिन शासन को उज्जवल करने के भाव हैं तो होश हवाश तन्दुरुस्त करके प्रसन्नतापूर्वक श्री वर्धमान संघ को स्थापित करके उसी शरण में आ जाना चाहिये।" हमें यह समझना चाहिये कि हम अपने आपके लिए एकता का, शांति का, सम्पन्नता व सुधार का द्वार खोल रहे हैं। यह संघ बलात थोपा नहीं जाएगा, यह तो प्रसन्नता का सौदा है। जिसका लक्ष्य आत्म सुधार हो वहीं श्री वर्धमान संघ में प्रविष्ठ हो। इसका प्रत्येक सदस्य प्रवेश के समय ही लिखित स्वीकृति प्रदान करे और शुद्ध मन से अतीत की आलोचना-समालोचना कर लें। सर्व सम्मति से एक कुल जाति गण सम्पन्न आचार्य बनाया जावें। (समय 10:30...से 11 बजे दिनांक 9 अप्रैल 1933)

इस विचार को पुष्टि देने वाला एक निबंध भी उन्हीं के एक शिष्य ने पढ़ा। जो शायद प्रतिनिधि नहीं था। शांति रक्षक शतावधानी श्री रत्नचंद्र जी म. ने इस कृत्य को नियम विरुद्ध ठहराकर आक्रोश व्यक्त किया।

इस पर पुनः श्री जवाहराचार्य ने समाधान किया, तो छगनलाल जी म. ने कहा कि **"पहले घुड़साल बनानी है या घोड़ा?तय तो करें।"** इस टिप्पणी पर सदन में उपस्थित संत गण हँसने लगे। लेकिन ये हँसी दिल्लगी श्री जवाहरलाल जी म. को खल गई। उन्होंने क्रुध मन से कहा कि – **"सम्प करो",**

"सम्प करो" कि रट लगाते हो मगर जब यह होने का अवसर सामने है तो कोई प्रवेश का इच्छुक नहीं, है। इस पर अनेक परस्पर विरोधी स्वर एवं विकल्प उभरने लगे। बात इतनी बिगड़ गई कि ये प्रस्ताव ही स्थगित हो गया। अन्त में श्री कजोड़ीमल जी म. को यह कहना पड़ा कि क्या सबको पहले की भांति ही रहना है? समवेत स्वर में सबने कहा "ठीक है", "ठीक है"।

लेकिन इसी शोर शराबे में वयोवृद्ध कवि श्री नानकचंद जी म. ने समाज की बहुसंख्यक जनता के हालात और मुनि गणों के इस प्रकार समस्या निरपेक्ष होने पर चिन्ता प्रकट की।

इस गंभीर विचाराभिव्यक्ति पर जवाहराचार्य की टिप्पणी थी कि – **"चाहे कोई स्वीकार करे न करें। हमें तो ये विचार पूरी तरह मंजूर है।" यह सुनकर पूज्य श्री हस्तीमल जी म. बोले कि - "पहले आप सबकी राय तो स्वीकृति स्वरूप ले लें।"**

यह सुनना था कि तुनक कर श्री जवाहरलाल जी म. बोले कि – **"यह न होगा, हमें किसी का दखल पसंद नहीं।"**

इस विषय पर शांतमना विद्वान उपाध्याय श्री आत्माराम जी म. भी अपने विचार रखना चाहते थे, किन्तु उन्हें भी यह कह कर चुप करा दिया कि – अब तक काफी प्रकाश डाला जा चुका है अब तो सिर्फ मनन करने के लिए तैयार होना चाहिये। यह एक तरफा आदेश आने पर व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी म. ने साहस के साथ कहा कि – **"आप सबको रोक टोक देते हैं, बोलने तक नहीं देते क्या यही आपकी न्याय पद्धति है? आप जब किसी की भी सुनते तक नहीं हैं तो संगठन और संघ कैसे बनेगा? मुझे तो दाल में कुछ काला नजर आता है।"**

इस उत्तर पर पूज्य जवाहरलाल जी म. उदास होकर बोले कि – "अच्छा जी अब हम न बोलेंगे, आप ही बोला कीजिए।"

इस पर पुनः मदनलाल जी म. ने कहा कि – "सुनिए। प्रस्ताव को कसौटी पर कसे बिना हम एकदम तैयार नहीं है। हम तो सर्वमान्य लोकप्रिय प्रस्ताव बनाकर फिर उसे स्वीकार करने के लिए उपस्थित हो सकते हैं। लेकिन सुनी सुनाई युक्ति को सहसा मानने के लिए तैयार नहीं है।"

यह तर्क सुनते ही सभी **'वाह' 'वाह'** करने लगे। इसके पश्चात् श्री सौभाग्यचंद्र जी म. (गुजराती) ने समाचारी विषय सुनाना आरम्भ किया। मुनि मंडल में मौन छा गया।

समाचारी विषय लम्बा होने से रोककर, प्रतिक्रमण पाठों को एक करने का प्रस्ताव सामने आया तो इसे एक कमेटी को सौंपना तय हो गया और जो भी निर्णय हो उसे स्वीकार करने पर सहमति हो गई।

❖ दीक्षित की आयु/जाति संबंधी निर्णय

पू. श्री जवाहरलाल जी म. ने कहा कि इस विषय में अपने अपने सम्प्रदाय वालों को अधिकार रहे कि वे समयानुसार कार्य करें। परन्तु कोई ऐसा मध्यम मार्ग निकाला जाए कि भविष्य में होने वाली हानि में रोकथाम हो जाए। **इस मन्तव्य पर लम्बी बहस चली और अन्त में 16 वर्ष की वय सबको मान्य हो गई। जाति का प्रश्न गौण ही रहा।**

❖ प्रमुख संत की योग्यता आज्ञा का प्रश्न

इस प्रश्न पर उपाध्याय श्री आत्माराम जी म. ने कहा कि – आचारांग, निशीथ सूत्र का ज्ञाता ही अग्रसर प्रमुख साधु हो सकता है और वह देश कालज्ञ भी हो तो उनकी आज्ञा से विहारादिक आज्ञा भी मान्य हो। शास्त्र या भाण्डोपकरण आदि सब आचार्य अथवा प्रमुख के अधिकार में रहने चाहिये। इसी प्रकार शिष्यादि भी प्रमुख द्वारा ही अधिकृत हो।

भारी बहस के बीच इस प्रस्ताव को भी स्थगित करने की मांग होने लगी तो श्री जवाहिराचार्य एवं युवाचार्य श्री कांशीराम

जी म. ने मिलकर कहा कि प्रस्ताव स्थगन से प्रस्ताव का अपमान होगा। अतः प्रस्ताव आया ही नहीं ऐसा माना जाए।

सत्र 12/4/1933, प्रातः 9.30 से 2.15 दोपहर तक

इस दिन वर्षा हो गई थी अतः मण्डलाकार बैठक में बाधा पड़ गई। शामियाना तक बूंदाबांदी से टपक रहा था। इस दिन शास्त्र वार्ता में समय व्यतीत हुआ।

❖ मध्यान्ह की सभा के निर्णय

गण–स्थापन के हेतु 31 साधु व 50 साध्वी का एक गण मान्य हुआ। स्थिरवास प्रमुख की आज्ञा से अनुकूल स्थान पर हो अन्यथा नहीं। प्रमुख के दर्शन तीन वर्ष की अवधि के मध्य अवश्य हो। दूर की बात हो तो पत्रादि से आज्ञा–विवरण चलता रहे।

प्रमुख की आज्ञा बिना सम्प्रदाय के नियम में परिवर्तन न किया जाए। गृहस्थों को दर्शन के नियम या प्रतिज्ञा न करावें कुटुम्ब की आज्ञा बिना दीक्षित को मुनिवेश न पहनाया जाए।

साधु साध्वी बिना कारण एक दूसरे के साथ स्थानक में न बैठें। साधु साध्वी अपने नाम पर संस्था कायम नहीं करावें।

देव गुरु धर्म के विषय में तो सब साधु साध्वी की श्रद्धा प्ररूपणा सहसा एक ही हो। यदि कोई साधु निरंकुश या कषायवश आज्ञा से बाहर एकल विहारी हो गया तो उसे कोई अभिवादन न करें।

❖ 13 अप्रैल 1933

इस रोज स्थानक का प्रसंग उपस्थित था। इसमें न ठहरने के लिए पूज्य जवाहराचार्य जी ने बड़ा जोर लगाया था। इससे छः सम्प्रदायों में अत्यंत प्रसन्नता प्रकट होने लगी। उन्होंने तो यह तक कहा था कि मेरा समर्थन यदि अनुचित हो तो मैं शांतिरक्षक श्री रत्नचन्द्र जी से इसकी आलोचना हेतु भी तत्पर हूँ। बात को तूल न देने की गरज से नैमेत्तिक मकान में

ठहरना उचित है यह मान ही लिया गया था, किन्तु जब श्री सौभागयचंद्र जी म. ने स्पष्टता से कह दिया कि – "स्थानक में निवास करने के कारण ही हमारे समाज का नाम स्थानकवासी विश्रुत है। अतः स्थानक के बिना धर्म श्रद्धा नहीं टिक पाएगी।"

इस मंतव्य पर शांतिरक्षक शतावधानी श्री रत्नचंद्र जी म. ने कहा कि "स्थानक का सम्यक निर्णय श्रावकों की कमेटी द्वारा ही हो तब ही ठीक है।" **इस चर्चा को सुनकर पं. रतन श्री आनंदऋषि जी म. ने कहा कि - "जब हमारी समाज का नाम ही श्वे. स्थानकवासी जैन समाज है, तब स्थानक के नाम से इतनी चिढ़ या उदासीनता क्यों?"**

इस सवाल ने सबको गंभीर बना दिया। युवाचार्य श्री कांशीराम जी म. ने भी कुछ युक्ति सुझाई किन्तु अंत में स्थानक निवास के मामले को कमेटी के सुपुर्द कर उसके निर्णय को मान्य करने की आम राय बन पायी।

❖ 14 अप्रैल 1933

साधु सम्मेलन की पूर्णता में अब मात्र चार पांच दिन शेष रहने से संघीय संबंधों पर निष्कर्ष का वातावरण बन गया था। जैन कॉन्फ्रेंस के प्रयासों और जन भावना को मद्देनजर मुनिराज विचार मग्न थे। अतः तय किया गया कि – एक क्षेत्र में व्याख्यान एक ही स्थान पर हो, चाहे साधु साध्वी किसी भी गण या सम्प्रदाय के क्यों न हों। यदि परस्पर व्यवहार एवं परिचय न भी हो तो **निवास आहार और व्याख्यान** एक स्थान पर ही हो यह आग्रह प्रबल बना।

चातुर्मास संघ की सर्वानुमति से हो। अपनी मर्जी एवं अलग दिखाने की कोशिश स्वच्छंदता ही समझी जाएं। दीक्षार्थी की योग्यता व ज्ञान बढ़ाने की आवश्यकता पर बल, संख्या को नियंत्रित करने का आग्रह। उक्त तीन मुद्दों पर खूब चर्चाएं हुईं लेकिन दोपहर जब **'जैन पथ प्रदर्शक'** अखबार में सम्मेलन की

गुप्त कार्यवाही के अंश छपे पाए गए तो स्पष्ट आरोप लगा कि 3 अप्रैल 1933 के प्रस्ताव नं. 4 का यह खुल्ला उल्लंघन हैं।

इस प्रकार का व्यवहार छिद्रान्वेषक है, प्रायश्चित का भागीदार है। उपाध्याय श्री आत्माराम जी म. ने भी शास्त्र प्रमाण से 10वें प्रायश्चित की बात कही, जिससे अधिकांश मुनिगण सराहते देखे गए। मध्यान्ह दो बजकर 30 मिनट पर मंगलाचरण सम्पन्न होने के पश्चात् पू. जवाहराचार्य ने शांतिरक्षक शतावधानी जी म. से बोलने की आज्ञा चाही तो लिंबडी सम्प्रदाय के प्रतिनिधि श्री सौभाग्यचंद्र जी म. ने कहा कि – आपश्री जी यदि प्रतिनिधि हैं तो अवश्य बोलिए। इस पर श्री पूज्य जवाहराचार्य जी बोले यदि आपके कानून कायदे क्षरित होते हों तो मैं बाहर चला जाता हूँ।

आक्रोश इन स्वरों में स्पष्ट था। अतः थोड़ा नम्र होते हुए श्री सौभाग्यचंद्र जी (शतावधानी) ने सम्भल कर कहा कि "आज पूरे 14 दिन हो गए हैं, आप अपने आपको प्रतिनिधि का रूपक नहीं देते, यह इस मंडल के नियमानुसार उचित नहीं है, आपको ऐसा नहीं करना चाहिये।"

जब ऐसी ही चर्चा में लगभग 20 मिनट बीत गए तो एक गुजराती प्रतिनिधि मुनिराज श्री माणिकचंद्र जी मं. ने अत्यंत सरलता एवं संक्षिप्तता से कहा कि – 'अमारा पूज्य मुनिवरो! मते साचुं बोल जो? तमे तो एम कहो छो के काम थाय छे सालं, पण अमे तो विचारिए छी एके कई काम थयुं, अमने तो थतुं लागतुं पण नथी, पण बखत तो तमारो खोटुंज गले छे... तमे जनता ने मुख केम देखावशो? (अर्थात मेरे पूज्य महामुनिवरों आप कह रहे हैं कि यहां अच्छा कार्य हो रहा है लेकिन मुझे नहीं लगता कि काम हो रहा है बल्कि हमारा समय ही नष्ट हो रहा है। आप जनता को क्या मुंह दिखायेंगे यह विचार करिये?)

इस सटीक टिप्पणी से उत्तेजनात्मक सक्रीयता व

विलक्षण सच का साक्षात्कार होते ही साधु स्वाभिमान व लोकहित का प्रकटीकरण हो गया।

❖ 15 अप्रैल, 1933

इस दिन का सत्र **गण की स्थापना, आवश्यकता, पारस्परिक व्यवहार और शास्त्रीय व्याख्या** के रोचक एवं विद्वत्तापूर्ण कथनों के आदान–प्रदान पर आधारित रहा।

सर्वप्रथम प्रश्न गण की सार्थकता पर चर्चा करते हुए पू. श्री जवाहराचार्य जी ने सम्बोधन किया। आपने फरमाया कि – गण में रहना चाहिये या गण से तटस्थ रहना चाहिये?जब कि सबने अपने–अपने गण कायम कर रखे हैं तब भी इस प्रश्न को हर स्थान पर प्रमुखता प्राप्त रहती है। यह टिप्पणी प्रश्न के सन्दर्भ में गणि श्री उदयचंद्रजी म. ने की थी, लेकिन इसे व्याख्यायित किया उपाध्याय श्री आत्मारामजी म. ने, आपने कहा कि **मोटी सी बात है कि एक प्रमुख के जितने भी शिष्य हैं उनका संगठित रहना एक प्रकार से गण ही हैं।** अतः गण की जब स्थापना कर ली गई है, तब उनका भिन्न रहना अनावश्यक है। इस उत्तर को पर्याप्त न मानते हुए जवाहराचार्य ने अन्य पूरक प्रश्न उठाए कि "क्या गण के परस्पर 12 व्यवहार अमल में आ गए हैं? नहीं! तो फिर कैसे विश्वास किया जाए कि – **"गण कायम हो गया हैं"?** सारा मामला साफ हो जाना चाहिये। क्योंकि कहा है ना कि – **"नहि साधोः क्षर्तिभवेत्।"** पूज्य श्री जवाहराचार्य जी की इस व्याख्या का उत्तर श्री आत्मारामजी म. ने दिया कि 12 परस्पर व्यवहारों की मर्यादा बांधने पर ही गण कायम हो सकता है, क्रम से नहीं – यह तो किसी भी सूत्र में नहीं लिखा है? तब तो गण के विषय में हमारी मनमानी चलेगी, हमारा मनोनीत होगा, तो मानेंगे, अन्यथा नहीं।"

(यह टिप्पणी अजमेर सम्मेलन में चल रही, वैचारिक श्रेष्ठता के टकराव को स्पष्ट करती है, जो किसी निर्णय पर पहुँच नहीं सका–सम्पादक)

इसका प्रत्युत्तर भी उपाध्याय श्री आत्माराम जी म. ने ही दिया, आपने कहा कि जहाँ, वांचना एक हो, चरणकरण, आचार एक हो। परस्पर कुल सापेक्ष हो, वहीं गण होता है। समाचारी, आचार व्यवहार तथा क्रिया की एकता में ही शब्दों की क्लिष्ठतावश बारह साम्भोगिक व्यवहार बताए गए हैं। यही मत टीकाकारों ने भी व्यक्त किया है कि–

"एक वाचना क्रियास्थापना गणाः" हे मुनि यही हमारा अभिष्ट है। अतः एक गण पर आप सब मौन साध कर बैठे क्यों हो? आपको शैथिल्य त्याग कर **गण स्थापना** करनी चाहिये। क्योंकि आप दूर दूर से आकर यहाँ बैठने भर के लिए नहीं आएं हैं। संसार में कुछ कार्य कर दिखलाइये। आप अपने और समाज के हितार्थ बहुत कुछ कर सकते हैं। आपको समाज के प्रति, समाज की अपेक्षा के प्रति उदार उत्तर देना चाहिये। **'गण स्थापना'** ऐसा ही रास्ता है। जिससे हमारे साधु समाज को ख्याति प्राप्त हो, समाज उन्नति का लक्ष्य प्राप्त कर सके।"

ये ऐतिहासिक एकता समर्थक शब्द प्रातः **10** बजे समाप्त हुए, किन्तु जवाहराचार्य जी ने सिर्फ यही कहा कि – "हमारी इस विषय में आज्ञा या सम्मति नहीं है।" इस ठेस पहुँचाने वाली सूचना के साथ प्रातःकालीन सत्र की समाप्ति हो गई। मध्यान्ह में कार्यवाही लगभग पौने तीन बजे शुरू हुई। गणि उदयचंद्र जी म. ने उच्च स्वर में कहा कि – "प्रस्ताव के पास होने के पूर्व कोई भी प्रतिवाद कर सकता है, परन्तु प्रस्ताव के सर्व सम्मत या बहुमत से पास होने के बाद कोई भी प्रतिवाद मंजूर नहीं होगा।" प्रस्ताव में मुनि श्री रत्नचंद्रजी म. ने पूज्यवर श्री सोहनलाल जी म. को मंडलाचार्य बनाने की पेशकश की थी। गणि उदयचंद्र जी ने सम्मतियाँ चाही। किन्तु श्री हस्तिमल जी म. सहित अनेक मुनिगणों ने विषय की योजना बनाने का सुझाव देकर प्रस्ताव को आया–गया कर दिया।

❖ 16 अप्रैल 1933

कार्यवाही प्रातःकाल 9.30 बजे प्रारम्भ हुई। गण स्थापना या संघेक्य पर पुनः चर्चा चली तो अनमने मन से जवाहराचार्य जी ने सिर्फ इतना कहा कि "आप अपना काम चलाइये, मेरी बातों पर काहे को ध्यान दिया जाए।" इसके पश्चात् मुनि श्री रत्नचंद्र जी बोले कि – "तीन स्तर पर गण स्थापना की जाए तो इस विषय में अपनी अपनी सम्मति कैसे करेंगे?"

यह सुनकर तनिक रोष में मुनि श्री छगनलाल जी म. (गुजराती) ने खड़े होकर फरमाया कि – "न गण बांधने में कोई अभिरूचि प्रकट कर रहा है, न कोई इसका इच्छापूर्वक मनन कर रहा है। फिर भी इस मुद्दे को उठाया जा रहा है तो आपकी इच्छा। **लेकिन यदि नौ व्यवहार, 3 वर्ष तक निभा दिया जाए तो बाद में बारह व्यवहार निभाते हुए संघ बना लिया जाए, व "अर्हन वर्धमान संघ" नाम से स्थापना कर ली जाए।** ऐसा ही कि श्री चौथमल जी म. का भी सुझाव था। इस चर्चा एवं विमर्श में ही प्रातःकालीन सत्र समाप्त हो गया।

मध्यान्ह सभा जब दो बजे प्रारम्भ हुई तो फाटक पर कुछ ज्यादा ही कोलाहल सुनाई दिया। युवाचार्य श्री कांशीराम जी म. ने कहा कि पास शुदा प्रस्ताव पर किसी को कोई ऐतराज तो नहीं है? यह सुनते ही जवाहराचार्य जी का एक नोट आया। जिसमें सर्वसम्मति मानने और बहुमत को न मानने का विचित्र तर्क रखा था। स्वाभाविक रूप से बहस हुई और गणिजी म. को पूछना पड़ा क्या अन्य किसी को भी नोट का अधिकार है?इस प्रश्न पर युवाचार्य कांशीराम जी ने कहा कि 'हाँ' हैं। ये अधिकार सभी को है। उपाध्याय श्री आत्माराम जी ने भी इससे सहमति व्यक्त की ।

❖ 17 अप्रैल 1933

साहित्य प्रकाशन का प्रस्ताव रखते हुए उपाध्याय श्री

आत्माराम जी म. ने कहा कि इस समय पुष्कल साहित्य का प्रकाशन अत्यावश्यक है। क्योंकि **"अव्वल तो ऐसा साहित्य है ही। नहीं और अगर है भी तो उसमें विवादास्पद गड़बड़ है। अतः सफल और सरल साहित्य का प्रकाशन किया जाए। जो सबको मान्य हो।"**

श्री जवाहराचार्य ने कहा कि – **मैनें 1957 में तेरापंथियों के वाग्जाल का खण्डन करने का विचार किया था। अब भी उन पुस्तकों का प्रचार जोरों पर है। मैं कहूँगा कि किसी प्रकार मुनियों को अपनी साहित्य विषयक योजना में योग्यतानुसार हाथ बटाना चाहिये।** परन्तु सौभाग्यचंद्रजी ने दर्शाया कि **साहित्य मंडल, व्याख्यान मंडल, अध्ययन मण्डल** आदि की बड़ी भारी आवश्यकता है। इनमें हमारे योग्य मुनि, साहित्य लेखक, व्याख्याता तथा सुज्ञ श्रावक श्राविका सहयोगी होंगे। अंत में सभी आमंत्रित मुनिराजों को धन्यवाद देने का प्रस्ताव रखने का विचार सामने आया जो समर्थन के अभाव में सुना ही नहीं गया।

❖ 18 अप्रैल 1933

प्रातः काल मंगलाचरण के पश्चात् शांतिरक्षक प्रमुख गणि श्री उदयचंद्र जी म. ने बड़ी विनम्रता से निवेदन किया कि – "ऐसा कार्य करो कि सब सम्प्रदायों का पारस्परिक भेदभाव मिटा दिया जाए। सबकी आत्माओं में प्रेम का संचार हो।"

इस सर्वोदयी भावना की अनेक मुनिराजों ने भूरि भूरि प्रशंसा की। अंत में शास्त्रीय चर्चाओं के साथ व्यक्तिगत कुशलक्षेम की वार्ताएं चली। इसी वातावरण में सम्मेलन का विसर्जन हुआ।

●●●

समकालीन महापुरुषों के संस्मरण

''भुलाए नहीं भूलते ये उपकार''

परोपकार करके जो आत्मा, कभी नहीं गिनवाती है।
उनकी कृति ही, उनकी छवि को, अजर-अमर कर जाती है।।
पावन चरित, तपस्वी त्यागी, इनके स्मरण प्रेरक हैं।
इनकी यादें कालचक्र में भी, न कभी धुंधलाती है।।

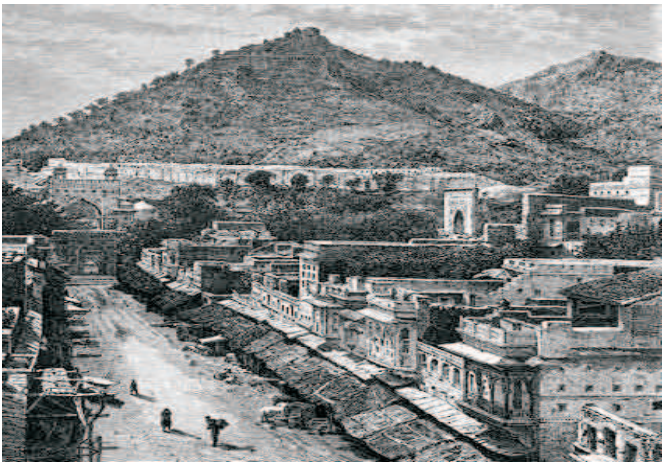

अजयमेरु (अजमेर) - 1933

शास्त्रोद्धारक पूज्य श्री अमोलकऋषि जी का संघ प्रेम

प्रथम अजमेर साधु सम्मेलन का आयोजन अपने आपमें ऐतिहासिक रहा है। उस काल में स्थानकवासी जैन धर्म परम्परा का इससे व्यापक कोई अन्य अनुष्ठान इतिहास के पन्नों में नज़र नहीं आता। **लाखन कोटड़ी अजमेर के आसपास जितने भी प्रासुक स्थान, नौहरे आदि उपलब्ध थे, वहां उस जमाने में भी संत-साध्वी मंडल की भाव भक्ति देखने लायक थी।**

इस सम्मेलन के साथ ही जैन कॉन्फ्रेंस की युवा एवं महिला शाखा का भी गठन किया गया था। लगभग पचास हजार भक्त, श्रद्धालु–प्रशंसक भी आए थे। वर्तमान आधुनिक युग में यह अपने ढ़ंग का पहला आयोजन था, जिस पर स्थानकवासी परम्परा गर्व कर सकती है।

वहीं सुदूर स्थानों से सभी सम्प्रदाय के पूज्य संत–साध्वी जी सादर पधारे थे। इन्हीं में शास्त्र शोधक विद्वतरत्न पं. अमोलकऋषि जी म.सा. भी एक थे। वे जितने गहन चिंतक थे, विद्वान थे, उतने ही बड़े विनयमूर्ति भी। उनके हृदय में प्रभु प्रेरित श्रमण संघ के प्रति अपार प्रेम था।

आज हम समाज में एक प्रेरक वाक्य सुनते हैं कि **"एक दिन का श्रमण भी इसीलिए पूज्य है क्योंकि वो वीतराग प्रभु का प्रतिनिधि है।"**

ये प्रेरक वाक्य पूज्य श्री अमोलकऋषि जी म.सा. के द्वारा बोला गया है। इससे हम समझ सकते हैं कि पूज्य श्री के हृदय में संघ और संत के प्रति कितना प्रेम होगा। जब अजमेर साधु सम्मेलन चल रहा था, आप श्री अपनी पहचान छुपाकर रखते हुए हर छोटे-बड़े संत को मौन रहते हुए वंदना करते थे।

हर प्रातःकाल आपका यह पावन क्रम जारी रहा जो चर्चा का विषय बन गया। सब प्रायः कहा करते थे कि **ये कौन महान आत्मा है कि वंदना करता है, मगर पहचान नहीं बताता।** इस चर्चा के बाद निगरानी बढ़ गई और एक बलिष्ठ संत से इनको पकड़ लिया, बलात आवरण हटाया तो हैरान रह गया कि **ये तो शास्त्रोद्धारक पूज्य श्री अमोलकऋषि जी म.सा. हैं, तो वो चरणों में गिर गया। पूज्य गुरुदेव ने उसे बाहों में भरकर गले लगा लिया। मगर प्रसिद्धि परांगमुख पूज्य गुरुदेव को वंदना में आयी बाधा का बड़ा अफसोस रहा।**

लेकिन **गुरुदेव ये जानते थे कि चतुर्विद संघ के वंदन का क्या सुफल है! क्या महत्व है!** आप तो स्वयं शास्त्रोद्धारक थे। आपको ज्ञात था कि दशवैकालिक में मुनि धर्म सन्दर्भ में क्या कहा है—

'रायणिएसु विनयं पऊंजे'

अर्थात् **रत्नाधिक बड़ों को ज्ञान वृद्धों को विनयपूर्वक सम्मानित करना चाहिये।** आप तो हर पल मानते थे कि –

विवत्ती अविणीयस्स,
संपत्ती विणीयस्स य।

अर्थात् **अविनीत दुःख पाता है, जबकि विनय सम्पन्न यश का भागी होता।**

जो विद्वान ऐसा विचारक हो! विनयवान हो, वो क्यों ना अति विनीत मृदुभाषी होगा!! आप श्री सर्वांग रूपेण आगमज्ञ थे। शास्त्रोद्धारक थे अतः आप श्री का सम्पूर्ण जीवन जिनवाणी को समर्पित था।

वाह मेरे श्रमण संघ तेरे परिसर में कितने–कितने हीरे–मोती है। धन्य है ऐसी आत्माओं को जो सद्धर्म के प्रणेता ही नहीं थे बल्कि प्रत्यक्ष उदाहरण थे।

●●●

पूज्य प्रवर संतों की विदेह साधना

आचार्य देव पू. श्री आत्माराम जी म.सा. के लाहौर आपरेशन का संस्मरण तो विश्रुत है ही, प्रज्ञामहर्षि आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. का भी एक ऐसा ही पुण्य स्मरण उपलब्ध है। जो उनकी दिव्य साधना का प्रमाण है।

ज्ञातव्य है कि ऑपरेशन करने से पूर्व डॉक्टर मरीज को **'एनेस्थीसिया'** सुंघाते हैं या फिर इंजेक्शन देते हैं। जिससे मरीज बेहोश हो जाता है व उसका शरीर शून्य हो जाता है। उस शून्य हुये शरीर पर डॉक्टर ऑपरेशन हेतु तीखे शस्त्रों से छेदन–भेदन करता है। सूखे से कपड़े को सिलने की तरह पुनः चमड़ी आदि की सिलाई करता है। इतना सब कुछ होने पर भी शरीर में कही भी दर्द नहीं होता है यानी उस व्यक्ति को कुछ भी पता नहीं चलता है। इसको सुन्न करना भी कहा जाता है।

वैसे ही जो महापुरुष देह में रहते हुए भी वैदेही साधना करते हैं, देह और आत्मा के भिन्नत्व का चिंतन करते हैं, देह की वेदना को आत्मा की वेदना नहीं समझते हैं। शरीर में 'मैं' नहीं का भाव रखते हैं! वे प्रायः अपनी आत्मा में रमण करते हैं, ऐसे महापुरुषों को तीव्र शारीरिक वेदनायें नहीं सताती।

एक बार आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. की हथेली में एक जहरीला फोड़ा हो गया था। जिसका ऑपरेशन करना जरूरी था। डॉक्टर उन्हें बेहोश करने लगे। **तब आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. ने फरमाया कि "ऑपरेशन हेतु मुझे बेहोश करने की जरूरत नहीं है। आप तो ऐसे ही ऑपरेशन कर दीजिये।"** डॉक्टरों ने कहा – "नहीं। इस हाथ को शून्य तो करना ही पड़ेगा क्योंकि ऑपरेशन की वेदना से हाथ हिल जायेगा।"

इस पर आचार्य श्री जवाहर ने दृढ़ता के साथ कहा कि **"आपको हाथ का जो करना है, वह करिये। मेरा यह हाथ बिल्कुल नहीं हिलेगा।"**

आचार्य श्री की वाणी में दम था। डॉक्टरों को उन पर विश्वास हो गया और बिना हाथ शून्य किये ऑपरेशन करना प्रारंभ कर दिया। जब तक ऑपरेशन हुआ, तब तक हाथ बिल्कुल भी नहीं हिला। **आचार्य प्रवर ने शरीर की तरफ से चिंतन हटाकर आत्मा में टिका दिया था। वे पूरी तरह से आत्म-ध्यान में तल्लीन हो गये थे। अतः ऑपरेशन हो जाने के बाद भी डॉक्टर को कहना पड़ा कि "आपरेशन हो गया है।"**

इस प्रकार की होती है – **विदेह साधना।** इसीलिए कहा जाता है – **"धर्मस्य दुर्लभो ज्ञाता"** अर्थात् **जो धर्म को जीता है, धर्ममय हो जाता है वो 'आह और वाह' से परे भेदज्ञान का विज्ञानी होता है।** ममत्व की परिधी देह के प्रति न रखकर आत्मा के प्रति रखता है। ऐसा धर्मज्ञाता दुर्लभ होता है।

दूसरा उदाहरण भी हमारे सामने है। श्रमण संघ के प्रथमाचार्य पू. गुरुदेव श्रीमद् आत्माराम जी म.सा. को हड्डी के ऑपरेशन का मामला था। ऑपरेशन अपनी जगह चलता रहा। उधर ध्यानावस्था में चले गए और उस अंग्रेज डॉक्टर के निवास तक ध्यान में ही पहुंच गए और वहां का सारा दृश्य जान गए। ऑपरेशन सम्पन्न हो गया।

डॉक्टर बधाई देने लगा तो आचार्य भगवन ने उनके परिवार का कुशन मंगल समझा दिया।

डॉक्टर सा. को जिज्ञासा बढ़ी तो उस जमाने में ट्रंक कॉल से वार्ता होती थी सो डॉक्टर ने परिवार की जानकारी ली जो दृश्य भगवन ने बताया था वो ज्यों का त्यों सही निकला तो डॉक्टर सारे संकोच छोड़कर चरणों में झुक गया। ये सत्यदर्शन साधना का फल है। ये सहनशीलता ही तो भेदज्ञान का उदाहरण है। धन्य है ऐसी महान आत्माएं। ●●●

संघीय संगठन एवं संतुलन

अजमेर के प्रथम सम्मेलन का प्रसंग है कि परम प्रभावी आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. सम्मेलन में बड़ी मान मनोवल से पधारे थे। कटु सत्य यह भी है कि – विद्वानों में यह दोष भी देखा जाता है कि **वे अपने आगे किसी अन्य को कमतर ही मानते हैं।**

यहां भी यही हुआ था, **उपाध्याय प्रवर पूज्य श्री आत्माराम जी म.सा. भी अपने समय के उच्च कोटि के विद्वान थे।** जवाहराचार्य जी यह सब सत्य जानते थे, मगर अपने स्वभावानुसार जब श्रद्धेय आत्माराम जी म. अपनी बात रख रहे थे तो दो तीन बार उन्होंने टोक दिया। **'बस हो गया'! 'समाप्त भी कीजिए'!!** जैसी टिप्पणी कर गए।

इस पर **'दो हंसों की जोड़ी'** श्रद्धेय व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी म. एवं योगिराज श्री रामजीलाल जी म. को रोष चढ़ गया। उन्होंने ऊंची आवाज में आचार्यश्री का विरोध करते हुए कहा – **"आप जब हमारे वरिष्ठतम मुनिराज को भी सुनना नहीं चाहते तो हम यहां हैं ही क्यों?"**

इस प्रश्न से वातावरण गरमा गया। इसे भांप कर शांतिरक्षक शतावधानी श्री रत्नचंद्र जी म. ने हस्तक्षेप किया और आचार्य श्री को कहा – **"कृपानाथ आप ऐसा ना कीजिये। मुझे पर्षदा चलाने में व्यवधान हो रहा है।"**

तब आचार्यश्री ने यह कहकर बात समाप्त की कि – **"ठीक है - आप ही बोलिए, मैं मौन हो जाता हूँ।"** यह सुनकर भारत केसरी युवाचार्य श्री काशीराम जी म. ने चुनौती भरे स्वर में कहा कि **"हम यहां समाधान की खोज में आए हैं। अपमानित होने नहीं। महामना! संघीय संगठन संवाद एवं संतुलन से चलेगा हठ या अहम् से नहीं।"**

बात बढ़ जाती, मगर शांतिरक्षक जी ने वातावरण सामान्य बनाकर दो हंसों की जोड़ी को आमंत्रित किया कि **"आओ**

महात्माओं! और अपने सरस स्वरों से पर्षदा को रसमय कर दो।"

दोनों महान आत्माओं ने मंच की आज्ञा मान वातावरण को बोझिल होने से बचा लिया। दोनों महान आत्माएं योग और ज्ञान का ऐसा दुर्लभ जोड़ थी कि जहां भी उपस्थित होती थी, वहां ना तो दुर्भाव होता था, ना विवाद। अतः अपने स्वरों से ऐसा समां बांधा कि – सबका मन प्रसन्नता से भर गया।

ये प्रसंग सीख देता है कि संवाद में बड़ी शक्ति है। संवाद से ही संघ संचालन सुलभ होता है। आचारांग सूत्र का एक अनमोल संदेश है –

मणं परिजाणइ से निग्गंथे।

जो अपने–पराए मन को अच्छी तरह जानता है, वही सच्चा श्रमण है, सच्चा निर्ग्रंथ है। ●●●

यहां विवाद नहीं, विमर्श रंग लाया

पूना साधु सम्मेलन 1987 की बात है, संघीय पुर्नगठन और नवीन समाचारी पर व्यापक मंथन चल रहा था। आचार्य देव श्रीमद् आनंदऋषि जी म. के साथ एक अंतरंग कक्ष में चार प्रमुख संत उपस्थित थे। उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी म., लोकमान्य संत श्री रूपचंद जी म. 'रजत', शांतिरक्षक श्री सुमन मुनि जी म. एवं समाचारी के प्रस्तावक श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद'। आचार्य भगवन् चल रहे विवादों की चर्चा से थोड़ा खिन्न थे। अन्तिम निर्णय लेने के काफी समय पहले श्री ज्ञान मुनि जी म. को भी मंत्रणा में आमंत्रित कर लिया गया। चर्चा के प्रत्येक पहलू को श्री सुमन मुनि जी म. ने स्पष्ट कहा कि "किसी में भी योग्यता की कमी नहीं है। सब अपने आप में श्रेष्ठ है! फिर भी हमें सर्वानुमति बनाकर आचार्य श्री के समक्ष वो नाम रखनें" जो श्रमण संघ का भविष्य तय कर दे।"

इसके बाद सहमति के स्वर उभरे। श्री देवेन्द्र मुनि जी म. को उपाचार्य और डॉ. शिव मुनि जी म. को युवाचार्य सुनिश्चित कर दिया गया। लोकमान्य संत श्री रूपचंद जी म. के सुझाव पर श्री 'कुमुद' जी म. को महामंत्री बनाना तय हो गया। शेष पदों पर भी सहमति बनाकर घोषणा कर दी गई। इस प्रकार विवाद में भी विमर्श की जीत सुनिश्चित हुई। ●●●

श्रमणी परम्परा की महान महासाध्वी प्रवर्तिनी श्री पार्वती जी म.

'मुनि जीवन' शब्द–रूप में बड़ा सरल एवं सुगम्य लगता हे किन्तु अर्थ रूप में वह बड़ा गम्भीर एवं गहन होता है। उसे स्वीकार करना कृपाण की धर पर चलने के समान कठिन एवं दुस्तर कार्य होता है — **'असि धारा गमण चेव दुक्करं।'** मुनि जीवन को अपनाना अर्थात् अपने जीवन एंव चिन्तन की प्रक्रिया में आमूलचूल परिवर्तन कर देना पड़ता है। बिना ऐसे क्रांतिकारी परिवर्तन किये जीवन में मुनित्व या मुनि धर्म की प्रतिष्ठा या श्रमणत्व की स्थापना सम्भव नहीं। साधक के जीवन में जब एक हलचल उत्पन्न हो जाती है, उथल–पुथल मच जाती है, आत्मा में मनोमंथल प्रारम्भ हो जाता है तब मुनित्व के चिन्तन की प्रक्रिया का शुभारम्भ हो जाता है। कवि की कोई नवकाव्य के सृजन के पूर्व, नारी को प्रसव के पूर्व, कलाकार को नव कलाकृति के निर्माण के पूर्व जो मनोमंथन उत्पन्न होता है उससे कई गुना उच्च कोटि का, तीव्र एवं झकझोर देने वाला चिन्तन मुनि बनने के के पूर्व साधक के मन–मानस में आलोड़ित–विलोड़ित होने लगता है। भोग–जीवन और योग जीवन के आकर्षण–विकर्षण एवं प्रत्याकर्षण से उत्पन्न अंतर्द्वन्द्वसे निष्पन्न मानस मोती ही मुनित्व का उत्स है। ऐसे ही मानसोदधि के मंथन से मुनित्व का रत्न प्राप्त होता है जिसे 'संयम रत्न' या 'चारित्र–रत्न' भी कहते हैं।

चारित्र तारिका, याकिनी महत्तरा ने जैसे 1444 ग्रंथ के रचेता आचार्य हरिभद्रसूरि को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी थी, उसी प्रकर जब उत्तर भारत के श्रमणाकाश में नक्षत्र लुप्त हो गए तब प्रधानाचार्य पू. श्री सोहनलाल जी म.सा. जैसे क्रांतदृष्टा को आगे बढ़ाने में योगदान दिया था।

पूज्या श्री पार्वती जी म. रोपड़ चातुर्मास पूर्ण करके स्यालकोट की ओर प्रस्थान कर रही थी तभी शुभ संयोग से

पसरूर पहुंची। यहीं पर श्री मथुरादास सराफ के कारोबार में हाथ बटाने वाले दो पुत्र श्री शिवदयाल और सोहनलाल भी थे। धन बल, बुद्धिबल और प्रभावक बलिष्ठता के योग ये परिवार अग्रणी था।

धर्म प्रभावक महासती पू. श्री पार्वती जी म.सा. के सद्उपदेश से सारस्वत प्रज्ञा के धनी युवा सोहनलाल वैराग्यवान हो गए। उन्होंने तो दीक्षा लेने की ठान ली, प्रेम, मोह और त्याग की रस्साकस्सी में युवा मुमुक्षु सोहनलाल को बड़े-बड़े हमले झेलने पड़े, पर अंततः कांधला (उ.प्र.) में दीक्षा सम्पन्न हो गई।

यह वह समय था जब तक उत्तर भारत में मुनि संख्या नगण्य थी। **आपके उपदेश से आचार्य श्री अमर सिंह जी म. की परम्परा फली-फूली। आचार्य श्री सोहनलाल जी म.सा. ने अपने ज्ञान-ध्यान, तप-चारित्र से इतिहास रच दिया।** श्रमण संघ पर ये महासाध्वी प्रवर्तिनी श्री पार्वती जी म. का महान उपकार है।

●●●

नारी की ममता - देवीय सृजन का सूत्रपात

करुणा आत्म स्वभाव है तो आत्मजा माता स्वयंभू करुणा है। ममत्व, वात्सल्य, शुद्ध स्नेह पालन पोषण आत्मीयता आदि गुण इसी माँ स्वरूपी देवी के दिव्य गुण है।

विचार कीजिये उस क्षत्राणि माँ पार्वती का क्या चिन्तन रहा होगा जब वे विचार करती थी कि "मेरा श्रमण संघ बिना साधु के आगे कैसे बढ़ेगा?" वैसे प्रत्येक माता भी माँ भी यही करती है कि उसका कुल वंश आगे बढ़े, यशस्वी बने।

श्रमणी श्रेष्ठा पू. प्रवर्तिनी श्री पार्वती जी म. रात–दिन यही विचार करती और अपने विचारों का नित्य प्रसार करती थी। अतः आपकी प्रेरणा रंग लाई और उत्तर भारत के श्रमण संघ में कई नररत्न, 'श्रमण रत्न' बनकर बन अपने जप–तप पुरुषार्थ में अजर–अमर हो गए, श्रमण संघ को जयवंत बना गए। भविष्य में भी ऐसा ही होता रहेगा।

●●●

संशय से समाधान तक
श्रमण संघ निर्माण : एक युगान्तरकारी कदम

कैसे बना श्रमण संघ? जब इस घटनाक्रम के परिदृश्य पर दृष्टि डालते है तो परिवर्तन के हार्द को जानना–समझना आवश्यक हो जाता है, क्योंकि विज्ञ जनों के अनुभव बताते है कि – **चिरप्रचलित रूढियों और चिरसंचित विश्वासों को आघात पहुंचाने वाली हलचलों को हम देखना सुनना कम ही पसंद करते हैं। हम सही दिशा में भेजने वाली ऐसी हलचलों को उपेक्षित करके, व्यर्थ समझ के उनके प्रति आँख मींच लेते हैं किन्तु ऐसा करने से काम नहीं चलता और वे ही हलचले, वे ही परिवर्तन की वाहक क्रांतियाँ हमारे सम्मुख आकर ऐसी चुनौती पेश करती है कि होश में लाएं बिना रहती।** सन् 1932–33 में जब अजमेर में प्रथम सम्मेलन हुआ था तो लगा था कि–समाज सही दिशा में आगे बढ़ने को तैय्यार हो गया है, लेकिन आगे के दो दशक में जो ठहराव आ गया, उसने सारा उत्साह भंग कर दिया, संघीय एकता, संवाद और संगठन का भाव लुप्त सा होने लगा था। **फिर एक बार हलचल चली लेकिन गुजराती मारवाडी के नेतृत्व वाला प्रश्न ऐसा गहरा हुआ कि जो अग्रेसर थे वे ही मौन हो गए।** फिर यकायक चेतना ने करवट ली **साधु जीवन की सुव्यवस्थित चर्या सम्बंधी एक संचालक समिति बनी। इसमें 16 सदस्य बराबर के जिम्मेदार बने।**

इस तरह सम्मेलन करने का भाव पुनः जगा इस समिति की प्रेरणा से समाज के 7–8 हजार लोग उपस्थित हुए। निर्णय लेने का मुहूर्त आ गया, प्रांतवार क्षेत्रवार श्रावकों ने इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए सम्मेलन भी आयोजित किए। **इस तरह वैशाख शुक्ला 3 से पूर्णिमा तक 15 दिन का सम्मेलन सादड़ी**

मारवाड़ में तय हो गया। गुरुकुल का शुभारंभ इसमें निमित्त बना तो होगा या ना होगा? जैसे विकट प्रश्न का हल निकल आया। सादड़ी के पुण्यात्मा श्रावक पू. गुरुदेव मरुधर केसरी जी के मार्गदर्शन में जुट गए। हाथों हाथ धन जमा करके संचालन प्रारंभ हुआ।

सत्य भी यही है कि **"निर्माण"** त्याग, पुरुषार्थ और समर्पण चाहता है। जब जब ये शुभ भाव साकार होते हैं तो असफलताएं सफलता में बदल जाती हैं। इसी प्रकार जब भी **"संघ और संत"** किसी कार्य में कर्मठता से, जबावदार बनकर जुट जाते हैं तो क्या कुछ नहीं हो जाता?ऐसा ही प्रभावी कार्य विगत शताब्दी में भी हुआ।

आइये जाने कि **"कैसे सम्भव हुआ ये युगान्तरकारी कदम"** प्रथम अजमेर साधु सम्मेलन में स्थानकवासी समाज के सभी उप–सम्प्रदायों के समन्वयीकरण की भूमिका तैयार हो चुकी थी किन्तु लगभग 21 वर्ष हो जाने पर भी समाचारी की कुछ बातें घिस – पिट गई थीं और कुछ में नई दृष्टि से सोचने, समझने, संशोधन–परिवर्धन करने की आवश्यकता महसूस हो रही थी। अतः इन सबको सक्रिय रूप देने तथा बहुत से अनुभवों के पश्चात् **स्थानकवासी जैन संघ की तमाम उपसम्प्रदायों का एक संघ में विलीनीकरण करके, एक आचार्य, एक साधु समाचारी (आचारसंहिता) बनाने की आवश्यकता प्रबल रूप से महसूस की जा रही थी। प्रायः राजस्थान और मध्यप्रदेश में विचरण करने वाले वरिष्ठ संतों ने भविष्य में साधु-सम्मेलन का वातावरण तैयार करने हेतु पूर्व भूमिका के रूप में ब्यावर में मिलना उचित समझा।**

ब्यावर श्री संघ ने लगभग 14 सम्प्रदाय के वरिष्ठ संतों को इस सम्मिलन के लिए आमन्त्रण दे दिया था। वे आए भी और मत-सम्मत की बहस के बावजूद पूज्य श्री आनन्दऋषिजी

महाराज, पूज्य श्री शेषमलजी महाराज, श्री प्यारचन्द जी महाराज, श्री छोगालाल जी महाराज, श्री फूलचन्द जी महाराज, श्री फतेहचन्द जी महाराज आदि 8 सम्प्रदाय के सन्त ब्यावर पधार गये और भी 14 सम्प्रदाय वालों को इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए आमन्त्रित किया गया। ये भी सभी समय पर पधार गए। एक शिष्टमंडल ने पू. श्री मरूधर केसरी जी से प्रार्थना की लेकिन इंकार करने पर कहा कि — "हम तो आपसे बहुत बड़ी आशा लेकर आए थे, किन्तु जब आप जैसे संगठन प्रेमी वरिष्ठ सन्त ही संघ–ऐक्य के इस महान् यज्ञ में पधारने के लिए परिस्थितियों की ओट में आनाकानी कर रहे हैं, तब अन्य सन्तों से हम आशा ही क्या कर सकते हैं? अतः आपश्री हमें निराश न करें। हमारी आग्रहभरी प्रार्थना को स्वीकार कर संघहित की दृष्टि से ब्यावर पधार कर हमारा उत्साह बढ़ाएँ।" यह जान–सुनकर पूज्य श्री मरुधर केसरी जी म. ने, संघ की प्रार्थना को अस्वीकार करने से निराशा न हो, इस दृष्टि, फाल्गुन सुदी 1 तक ब्यावर पहुँचने की स्वीकृति प्रदान कर दी। शिष्ट–मंडल सन्तुष्ट और प्रसन्न होकर ब्यावर लौटा।

पूज्य श्री जी अपने वचन के अनुसार उग्रविहार करते हुए फाल्गुन शुक्ला 1 को ब्यावर के बाहर बालनिकेतन में पधार गए। सूचना मिलते ही नगर से स्वामी श्री फूलचन्दजी महाराज आदि सन्त एवं श्रावक–श्राविकागण स्वागतार्थ आए और अत्यन्त उत्साह तथा श्रद्धाभक्ति के साथ नगर प्रवेश कराया। **यहाँ आप पीपलिया बाजार स्थानक में विराजे। वहाँ से आप कुन्दन भवन में विराजित पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म. आदि वरिष्ठ सन्तों से मिलने भी पधारे।**

❖ सम्मेलन के सम्बन्ध में पुनः वार्तालाप

दूसरे ही दिन विद्ववरेण्य शान्तिमूर्ति कविवर्य स्वामी श्री चौथमल महाराज आपसे मिलने पधारे। बातचीत के प्रसंग में

उनसे साधु सम्मेलन सम्बन्धी चर्चा छिड़ गई। **पूज्य श्री मरूधर केसरी जी म. ने फरमाया कि - 'बृहद् साधु-सम्मेलन की आवाज चारों ओर से उठ रही है और सम्भव है, हो भी जाय। अतः उससे पहले अपनी पूर्व सम्मिलित छह सम्प्रदायों का सम्मेलन हो जाय तो अच्छा हो।'**

श्री चौथमल जी म. – **"इसमें मनाही किसकी है?** खूब खुशी से करिये बहुत अच्छी बात है। श्रेष्ठ सुझाव है आपका, पर इसमें अग्रसर आपको ही बनना पड़ेगा। तभी यह कार्य पूर्णरूप से सफल हो सकेगा।" मरुधरकेसरी जी – "स्वामीजी! मैं पहले अवश्य अग्रेसर हुआ था, लेकिन इस बार दूसरों के नेतृत्व में ही कार्य करने की भावना है, स्वयं अग्रेसर होने की नहीं।"

श्री चौथमल जी म. – "तब हो गया सम्मेलन! व्यर्थ की बातें करने से क्या लाभ? काम तो जो करने वाले होते हैं, उनसे ही बन सकता है। किसी सुयोग्य संचालक के बिना ऐसा भगीरथ कार्य होने की आशा नहीं है।"

मरुधरकेसरी जी – "स्वामिन! मैं अगुआ किसके बल पर बनूँ? आप तो अस्वस्थ होकर यहाँ विराजमान हो गये, श्री पन्नालाल जी स्वामी पधार नहीं सकते। श्री छगनलालजी स्वामी पंजाब की ओर पधार गये हैं। तब आप ही फरमाइए, क्या मैं ही सबसे मेल–मिलाप करता फिरूँ? यह कार्य मेरे भी बस का नहीं है।"

स्वामीजी म. – "छोडिये फिर भवितव्यता पर। **'यद्भावी तद् भविष्यति'** इसमें आपका और मेरा क्या दोष है? जो ज्ञानी पुरुष के ज्ञान में है वह होकर रहेगा।" यों कहकर पूज्य स्वामीजी तो अपने स्थान पर पधार गए। मरुधर केसरी जी म. भी विहार करके जोधपुर जा विराजे। साथ में विश्वस्त संत श्री रूपचंद जी म. भी थे।

❖ सम्मेलन सादड़ी में होना तय

इसके पश्चात् पू. श्री मरुधर केसरी जी म. को यह सूचना मिली कि "सम्मेलन पाली में होने जा रहा है।" दूसरे ही दिन इससे भिन्न सूचना मिली कि "सोजत में श्री चोपड़ाजी आदि प्रमुखों ने उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी म. के परामर्शनुसार सम्मेलन करवाने का निर्णय लिया है, किन्तु सोजत श्री संघ ने साथ में यह शर्त रखी है कि पूज्य श्री मरूधर केसरी जी म. का पूर्ण सहयोग मिलने पर ही यह भगीरथ कार्य सम्पन्न हो सकेगा।" अतः **श्री धीरजभाई तुरखिया** पूज्य गुरुदेव श्री की सेवा में जोधपुर पधारे और सारी परिस्थिति से आपको अवगत कराया। गुरुदेव श्री ने स्पष्ट फरमाया – "जब तक चौपड़ाजी से मेरी प्रत्यक्ष बातचीत न हो जाय, तब तक मैं कुछ भी कहने में असमर्थ हूँ।" यह चर्चा हो ही रही थी कि स्वयं श्री चौपड़ाजी पूज्य गुरुदेव की सेवा में जोधपुर पहुँच गए। श्री चौपड़ाजी को आपश्री ने सारी स्थिति से परिचित करा दिया। श्री चौपड़ा जी ने सोजत पहुँच कर एक विज्ञप्ति इस आशय की प्रकाशित कर दी कि **"यदि 32 ही सम्प्रदाय के सन्त सम्मेलन में पधारने की कृपा करें तो यह सोजत संघ सहर्ष सोजत में सम्मेलन करवाने का आमन्त्रण प्रस्तुत करता है।"**

इस विज्ञप्ति को पढ़कर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। क्योंकि इस बार 32 सम्प्रदायों के सन्तों का सम्मेलन होने का अवसर ही नहीं था। इस स्थिति को देखकर श्री धीरजभाई और कॉन्फ्रेंस के अग्रगण्य अत्यन्त दुविधाग्रस्त हो गए। श्री धीरजभाई दौड़कर सादड़ी के अग्रगण्यों के पास सादड़ी पहुँचे। उन्हें धीरजभाई ने बातचीत करके समझाया कि **"आप लोग गुरुकुल के भव्य भवन का उद्घाटन करवाना चाहते हैं, जिसमें काफी व्यय होगा। इससे अच्छा तो यह है कि आप सम्मेलन का आमंत्रण दे दो। इसमें केवल 10–12 हजार का खर्च है और आप लोगों को सादड़ी के पवित्र प्रांगण में**

अखिल भारतवर्षीय स्था. जैन साधु-सम्मेलन आयोजित करने का बड़ा भारी यश प्राप्त हो जाएगा।" श्री धीरजभाई के साथ कॉन्फ्रेंस के 3–4 और भी नेता थे, उन्होंने भी धीरजभाई की बात का समर्थन किया। अतः सादडी वालों ने उनकी बातों में आकर झटपट सम्मेलन का आमन्त्रण दे डाला।

इसके साथ ही सादड़ी संघ ने पूज्य गुरुदेव श्री मरुधर केसरी जी की सेवा में सहयोग, सुझाव एवं सम्मति प्राप्त करने के लिए पत्र भेजा। पत्र मिलने से पूर्व ही आपका जोधपुर से विहार हो चुका था अतः पत्र आपको पीपाड़ में मिला। **पत्र पढ़ते ही आपको बड़ा विचार आया कि सादड़ी वालों ने किस विकट परिस्थिति में सम्मेलन का यह निमन्त्रण दे दिया है। सादड़ी संघ ने व्यर्थ ही घर बैठे यह आफत अपने सिर पर ले ली है। इसका बड़ा खेद है।**

पूज्य गुरुदेव ने तत्काल एक उपालम्भ पूर्ण पत्र सादड़ी संघ को भिजवाया। आपश्री ने फरमाया – 'इस समय सादड़ी पधारने का मेरे लिए अवसर नहीं है। मैं समय पर ही आ सकूंगा। आप लोगों ने सम्मेलन का यह संकट क्यों मोल ले लिया है? यह कार्य तो बहुत ही कठिन है।' इस पर सादड़ी संघ के सदस्यों ने पुनः प्रार्थना की – **"गुरुदेव! जो होना था, सो हो गया। अब तो आपको कृपा करके किसी प्रकार सम्मेलन की नैया पार लगानी ही होगी।"** इस पर पूज्य गुरुदेव ने उत्साहपूर्वक फरमाया – **'कोई चिन्ता की बात नहीं। जहाँ सत्य और सद्भाव है, वहाँ विजय और सफलता निश्चित है। शासनेश आप लोगों की भावना को सफल करेंगे।'** अब जब इस कार्य का जिम्मा उठा ही लिया है तो निर्भीकता से सभी कार्य सम्पन्न करते जाओ, नतीजा अच्छा ही होगा। किन्तु मेरा विचार सभी सन्तों के साथ ही सम्मेलन में पहुँचने का है। इससे पूर्व पहुँचना हितकर नहीं है।" इस पर शिष्टमण्डल वापस सादडी लौट गया।

❖ सादड़ी सम्मेलन में आया गत्यवरोध

इधर पूज्य श्री गणेशीलाल म., उपाध्याय कवि श्री अमरचन्दजी म., बाबा श्री पूर्णमलजी म., पंजाब केसरी मुनि प्रेमचन्दजी आदि 80 सन्त अजमेर पधार कर रूक गए। वहाँ उनकी कुछ मंत्रणा होने के बाद सादड़ी की ओर पधारने में गति शैथिल्य आ गया। कॉन्फ्रेंस और सादड़ी संघ दोनों निरन्तर जागरूक थे। वे बार–बार गतिविधि का अध्ययन करने के लिए सन्तों के इर्दगिर्द चक्कर काटने लगे थे, सन्तों से कॉन्फ्रेंस और सादड़ी संघ आग्रह पर आग्रह करने लगे – सादड़ी पधारने के लिए।

❖ चर्चा चली तो संदेश आने लगे

इस अवसर पर मरुधर केसरी जी ने अपना प्रधान केन्द्र सोजत रोड़ बना लिया था क्योंकि यहाँ चारों ओर से यातायात एवं संचार परिवहन की अच्छी सुविधा थी। जोधपुर से स्वामी श्री चौथमलजी म. ने सन्देश भिजवाया कि **'यदि आपका विचार सादड़ी-सम्मेलन में पधारने का निश्चित हो तो मैं अपने सन्तों को सम्मेलन में भेज दूँ। अन्यथा, मेरा भाव उन्हें सम्मेलन में भेजने का नहीं है।** इसके प्रत्युत्तर में मरुधर केसरी जी ने कहलवाया – **"आप अवश्यमेव प्रसन्नतापूर्वक अपने सन्तों को भेज दीजिए। जैसा भी वातावरण बनेगा, संभाल लिया जाएगा। घबराने की आवश्यकता नहीं है। आप मुझ पर विश्वास रखें।"**

दूसरे ही दिन वयोवृद्ध स्वामी श्री पन्नालालजी महाराज का पत्र आया। उसमें भी लिखा था – "मरुधर केसरीजी पहले अपने मरुधरा के मुनियों का सम्मेलन करके सादड़ी पधारें। अजमेर में अभी जो–जो सन्त मिले हैं, उनमें साम्प्रदायिकता तीव्र गति से हिलोरें ले रही है। सब अपना अपना पृथक दल बनाने में संलग्न हैं। अपनी छह सम्प्रदायों के सन्त तितर–बितर हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे आपके

विवेक की परीक्षा है?" आपश्री ने समग्र स्थिति पर गम्भीरतया विचार करके प्रत्युत्तर में, अपना संकल्प दृढ़ कर लिया। **एक योजना बना कर आपने सम्मेलन की रूप रेखा तैय्यार कर ली। वहाँ से विहार करके आपश्री सोजत सीटी पधारे वहाँ ओसवालों के न्याती नौहरे में महावीर जयन्ती समारोह अत्यन्त धूमधाम से मनाया।**

❖ सादड़ी सम्मेलन के पथ पर बढ़ते संत चरण

दूसरे ही दिन सम्मेलन में पधारने के लिए पं. मुनि श्री प्रेमचन्द जी म. के आगमन की सूचना मिली तो आपश्री बड़े समारोह के साथ उनके स्वागत के लिए सामने पधारे। करीब एक मील पर मोटी भाखरियाँ (पर्वतमाला) के पास बड़े ही प्रेम से मिले। वहाँ से ससम्मान नगर प्रवेश कराकर उन्हें न्याती के नौहरे में अपने साथ ही ठहराया। वहाँ तीन व्याख्यान करवाए। फिर वहाँ से आपश्री और पंजाबी सन्त ठा. 11 ने 4 मील पर स्थित प्याऊ पर रात्रि निवास किया। प्रातः बागावास गाँव में आहार–पानी करके जाड़ण डाक बंगले पर विराजे। सायं 4 बजे वहाँ से विहार कर नीमड की प्याऊ पर विराजे। प्रातः वहाँ से पाली की ओर प्रस्थान किया। भव्य स्वागत के साथ पाली में सबका नगर प्रवेश कराया। वहाँ रात्रि पाठशाला भवन में विराजे। व्याख्यान सिरहमल जैन मार्केट में हुआ। तीसरे दिन जोधपुर से पं. मुनिश्री चांदमलजी म., श्रीलालमुनिजी, जीत मुनि जी आदि ठा. पधारे। उक्त तीनों मुनियों को स्वागत के साथ नगर प्रवेश कराया और साथ ही ठहराया। जैन मार्केट सोजत नगर में उनका व्याख्यान भी साथ कराया। **पाली से पूज्यश्री मरुधर केसरी ने सादड़ी के लिए पहले विहार कर दिया क्योंकि वहीं से होकर मुनिराजों को सादड़ी पधारना था। अतः आपश्री का वहाँ पहले पहुँचना अत्यावश्यक था।** आपश्री पाली से बूसी, जाबाली होकर नाडोल पधारे। धर्मशाला में विराजे, वहाँ एक सामयिक व्याख्यान दिया – **"संघ-ऐक्य**

और उदार जैन धर्म" इससे स्थानीय जनता उत्साहित हो गई। सादड़ी संघ की ओर से स्वागतार्थ चौके भी खुले हुए थे। स्वयंसेवक भी जगह जगह तैनात थे। दूसरे दिन पू. आ. श्री गणेशीलालजी महाराज ठाणे 11 से पधारे। स्वागत–सत्कार के साथ उन्हें धर्मशाला में ठहराया। इतने में **युवाचार्य प. श्री शुक्लचन्दजी महाराज ठाणे 13** से पधारे। उनको भी स्वागत–सत्कार के साथ लाकर धर्मशाला में ठहराया। इसी बीच **पंजाब केसरी प्रेमचन्दजी महाराज और स्वामी श्री चांदमल जी महाराज आदि ठाणे 45** से पधाए गए। यथाविधि ठहराकर आपने सबके आहार–पानी की व्यवस्था करवा दी। सबकी आवास–भोजनादि की व्यवस्था से निवृत्त होकर आपश्री ने ठाणा 5 से वहाँ से विहार कर दिया और रात्रि को ढालोप की प्याऊ पर विराजे। प्रातः मुनि श्री लालचन्दजी का पारणा करवा कर मांगलिया का गूढ़ा पधारे। इतने में सायं 4 बजे तक पिछले संत भी वहाँ पधार गए। वहाँ सादड़ी संघ के स्वयं सेवक तैनात थे। अतः संतों की सेवा का भार उन्हें समझा कर आपश्री ने 5 ठाणे से फिर आगे विहार कर गए।

इधर समस्त संघ समागत सन्त–समुदाय को स्वागत–समारोहपूर्वक साथ लेकर चक्कर की चौपाटी (तिकोनिये) पर पहुँचा। वहाँ लगभग 6–7 हजार की संख्या में जनता उपस्थित थी। किन्तु सबको श्री मरूधर केसरी जी की वहाँ अनुपस्थिति खटक रही थी। **इसी अवसर पर बम्बई की ओर से प्रसिद्ध वक्ता मालव केसरी श्री सौभाग्यमल जी म. और फूलचन्द जी महाराज भी पधार गए। फूलचन्द जी म. को सीधे गुरुकुल भवन में ठहरा दिया।** अन्य सन्तों ने पूछा – "आपके क्षेत्र के अधिष्ठाता श्री मरुधर केसरी जी म. कहाँ अदृश्य हो रहे हैं? हम सब उनके साथ ही चलेंगे।" तब ये ज्ञात हुआ कि वे तो सीधे गुरुकुल पधार गये हैं। तब मालव केसरी पू. श्री सौभाग्यमल जी म. आदि कुछ सन्त गुरुकुल पधारे और

आपको वहाँ देखकर कहने लगे – **"वाह वाह! भाई! महाराज मेहमान तो वहाँ धूप में तप रहे हैं और आप यहाँ हरेभरे बगीचे के भव्यभवन में वायुसेवन कर रहे हैं।"**

अतः पूज्य श्री मरूधर केसरी जी को वे सन्त अपने साथ लेकर चौपाटी पर जहाँ अन्य सन्त प्रतीक्षा में खड़े हुए थे, पधारे। आपके पधारते ही पूर्ण स्वागत–सत्कार के साथ शोभायात्रापूर्वक सब सन्तों को नगर प्रवेश कराया। शोभायात्रा न्याती जी के नोहरे में पहुँच कर सभा में परिवर्तित हो गई। वहीं कुछ सन्तों के संक्षिप्त प्रवचन, गुरुकुल के विद्यार्थियों द्वारा स्वागतगान, और कुछ कवियों द्वारा कविता पाठ होने के बाद मंगलपाठ सुनाया और सभा विसर्जित हो गई। सभी सन्तों ने आहारपानी किया और संघ अगले कार्यक्रमों की तैयारी में जुट गया।

मध्याहोत्तर 2 बजे से 5 बजे तक सन्त समुदाय में वार्तालाप, प्रतिलेखन आदि दैनिक–कृत्य, तत्पश्चात् आहार–पानी से निवृत्त हुआ व सांध्य प्रतिक्रमण किया। तत्पश्चात् स्थानीय संघ प्रमुखों की एक मीटिंग श्री मरूधर केसरी जी के सान्निध्य में हुई। उसमें संघ को सम्बोधित करते हुए आपने फरमाया – **"आपके क्षेत्र का अहोभाग्य है कि यहाँ भारत के मुख्य-मुख्य सन्तों का पदार्पण आपके प्रांगण में अनायास हो गया है। सादड़ी क्षेत्र एक प्रकार से तीर्थभूमि बन गया है। आप लोगों को मुख्य कार्य तो अब करना है। कल से वर्षीतप के पारणे और सम्मेलन के कार्यक्रम का शुभारम्भ होगा। आप लोगों ने इस पुण्य कार्य के लिए क्या और कैसी व्यवस्था सोची है?"**

इस पर संघ प्रमुखों ने कहा - "हमने सम्मेलन के व्यय के लिए 17 हजार रूपये एकत्रित किये हैं। क्योंकि धीरजभाई हमें केवल 10 हजार के लिए कह गये थे।" मरूधर केसरी जी ने तत्काल गम्भीर मुद्रा में फरमाया - "यह क्या कह रहे हो? कुल सत्रह हजार से क्या होने वाला है? इतनी अर्थराशि से तो प्रारम्भिक व्यवस्था भी होनी कठिन है। कुछ बुद्धिमत्ता से काम

लो।" आपका संकेत पाते ही तत्काल 91 हजार रूपये संघ ने एकत्रित कर लिये। विभिन्न कार्यों के संचालन के लिए विविध समितियों का गठन करके विभिन्न कार्यकर्त्ताओं को अपना-अपना दायित्व सौंप दिया गया। वैशाख शुक्ला 2 को सब सन्तों को वहीं लाकर मीटिंग वहीं करने की योजना बनाई गई।

❖ सादड़ी सम्मेलन की पूर्व व्यवस्था

सम्मेलन के लिए गुरुकुल के दाहिनी ओर 1100 हाथ लम्बा और 400 हाथ चौड़ा विशाल भव्य अतीव सुन्दर पण्डाल बनाकर आकर्षक ढंग से सजाया गया था। पण्डाल के साथ ही पाकशाला की व्यवस्था थी जहाँ प्रतिक्षण सब तरह की सुव्यवस्था एवं सुविधा थी।

गुरुकुल के बाँई ओर **'श्री लोकाशाह नगर'** बनाया गया था। आसपास के तीन क्षेत्रों (जमीनों) में करीब 2300 आवास गृह बनाये गये थे। इनके ठीक सामने ही 21 द्वार सजाए गये थे। **साथ ही पोस्ट ऑफिस, बिजलीघर, पूछताछ कार्यालय, रेडियो स्थल, विभिन्न कार्य संचालन समितियों के अनेक कार्यालय आदि की सुव्यवस्था भी यहीं की गई थी।**

❖ सम्मेलन के पूर्व व्याख्यान और वर्षीतप पारणे

वैशाख शुक्ला 3 को प्रातःकाल गुरुकुल के विशाल प्रांगण में सन्तों का व्याख्यान हुआ। तत्पश्चात् 35 श्रावक-श्राविकाओं के वर्षीतप की पारणा विधि गुरुकुल के बड़े हाल में सम्पन्न हुई। यह दृश्य इतना भव्य और मनोहारी था कि देखते ही बनता था। 10–12 हजार की संख्या में जनता गुरुकुल के बाहर दर्शनार्थ खड़ी खड़ी जय-जयकार के नारों से आकाश को गुंजायमान कर रही थी। चारों ओर से झुण्ड के झुण्ड यात्रियों का आवागमन जारी था।

●●●

आधुनिक युग में अध्यात्म जगत की श्वेत क्रांति : श्रमण संघ स्थापना (सन् 1952)

सादड़ी में आयोजित बहुप्रतिक्षित स्थानकवासी जैन श्रमण सम्मेलन लाखों लोगों की अन्तर मनीषा को अभिव्यक्त करने वाली ऐसी श्वेत क्रांति थी। जिसका जन्म बिना पीड़ा भोगे नहीं हुआ। बल्कि अनेक अग्निधर्मा क्षणों को अपने आप में समेटे, समाधान का अमृत मंथन बन कर प्रकट हुआ। उसी गाथा को, उसी कर्मवीरता भरे प्रयास को लेखनी से शब्द देने की यह लघुत्तम कोशिश यहाँ प्रस्तुत है।

ज्ञानियों का कथन है कि — **"मानव जीवन आशा और कल्पना का ऐसा संगम है, जहाँ सर्जन और पुरुषार्थ की असीम सम्भावनाएं प्रतिक्षण उपलब्ध होती है। यही मानवीय जीवन की खास विशेषता है तो मानवता की महत्ता भी। देवों को भी दुर्लभ ये रमणीयता जब जब भी मानवीय जीवन में आती है, तब तब मानव जीवन की नियति और स्वप्न को गढ़ने का अवसर मनुष्य जीवन पा जाता है।"**

❖ कड़ी परीक्षा ली रजस्थली ने

प्रखर ताप, चिलचिलाता सूरज, दूर तक फैली मरुधरा की रेत ही रेत, पानी का अभाव और प्यास का धधकता अग्निकुंड, यथार्थ में आश्चर्य से भरा चमत्कारी घटनाक्रम था। जो पहले कभी इतिहास में पढ़ा सुना नहीं था। उसे लोगों ने जाग्रत अवस्था में प्रत्यक्ष व पहली बार देखा। **पाली जिले के सादड़ी मारवाड़ को ये श्रेय प्राप्त हुआ।**

आज से लगभग 74 वर्ष पूर्व सन् 1952 तक श्वेताम्बर

स्थानकवासी जैन समाज की आस्था लगभग 32 सम्प्रदायों में बंटी हुई थी। क्रिया और मूलाचार ही नहीं बल्कि व्यक्तित्व और व्यक्तित्व से जुड़ी प्रतिष्ठायें भी आपस में टकरा रही थीं। सभी की अलग अलग दिशा, संवाद, सहकार का न होना, मानसिंक ही नहीं आत्मिक संत्रास का विषय बन चुका था। ऐसे अकारण उपजे तनाव में भी 32 में से 27 सम्प्रदाय के संत साध्वीजी म. समन्वय के लिए स्वयं को प्रस्तुत करते हुए आगे आए। ये अपने आप में ऐतिहासिक था।

जिन महापुरुषों ने कभी आपस में परिचय तक नहीं किया था, वे उस रोज साथ बैठे आहारादि का सेवन कर रहे थे। इससे समाज में जोश का तूफान उमड़ आया था। साधु सम्मेलन को सफलता की ओर बढ़ता देखने, दूर-दूर से प्रत्यक्ष आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या लगभग 70–80 हजार को पार कर गई थी।

ये वो समय था जब आज की तरह आवागमन के संसाधन सुलभ नहीं थे। फिर भी लोग अपनी आस्था को अभिव्यक्ति देने चले आ रहे थे। यह तो तब था जब शहरों में बसने वाले शहरी लोगों में एक सवाल था कि – "जहाँ शहर जैसी सुविधा नहीं, रोशनी और राशन तक उपलब्ध नहीं, नहाना तो दूर, पीने का पानी तक नहीं, उस मरुभूमि सादड़ी को ही क्यों सम्मेलन के लिये चुना गया?" ये सादड़ी को किसने पसंद किया? सादड़ी जाएगा कौन? और जाएगा भी तो कैसे? क्या सम्मेलन सफल भी होगा? सादड़ी को पसंद करके कार्यकर्ताओं ने भारी भूल की है। ऐसे भयंकर गर्म मौसम में साधु–साध्वी जी म. को कष्ट में डालने का काम अपराध है, आदि आदि। लेकिन जैसी कि कहावत है **"जहाँ चाह, वहाँ राह"** अनन्य श्रद्धा का सम्बल, आत्म विश्वास और नैतिक साहस से भरा संगठन, चुनौतियाँ स्वीकार करते हुए इस महान कार्य में कार्यरत रहा। दल–बादल की तरह उमड़े लोगों का भी उत्साह वर्णनातीत था।

❖ सादड़ी सम्मेलन शुभारम्भ से पूर्णाहुति तक

वैशाख शुक्ला 3 अक्षय तृतीया को दोपहर बाद पौने तीन बजे सम्मेलन के कार्य का शुभारम्भ मंगलाचरण से हुआ है। सम्मेलन में भाग लेने के लिए **151 सन्त और 80 सतियाँ** पधारी थीं। इनमें से 51 प्रतिनिधि सदस्य निर्वाचित हुए। तदनन्तर **विषय समिति के लिए 21 मुनिराजों के नाम चुने गये।** इन गतिविधियों के बाद पहले दिन की सभा विसर्जित की गई।

आहार–पानी, प्रतिक्रमण आदि नित्य–कृत्यों से निवृत्त होकर रात्रि में विषय निर्वाचिनी समिति का अधिवेशन हुआ। जिसमें अगले दिन का एजेंडा बनाया गया। **सम्मेलन के प्रधानमंत्री श्री आनन्दऋषिजी महाराज एवं शांतिरक्षक व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलालजी महाराज को निर्वाचित किया गया।**

दूसरे दिन प्रातः 8.30 से 10 बजे तक, मध्याह 11 से 4 बजे तक और रात्रि में 8.30 से 10 बजे तक, तीन बैठकें हुई। प्रतिदिन इसी प्रकार तीन बैठकें करने का निर्णय हुआ, जिसमें प्रायः सर्वसम्मति से अनेक प्रस्ताव पारित हुए। **पिछले सभी सम्मेलनों से इस सम्मेलन की यह विशेषता रही कि सभी आचार्य, उपाध्याय आदि पदवीधरों ने अपने-अपने पदों का त्याग किया, अपने-अपने सम्प्रदायों (22 सम्प्रदायों) का विलीनीकरण एक संघ 'श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ' में किया गया। सारे संघों का एक आचार्य और एक उपाचार्य घोषित किया गया।**

सादड़ी के सफल साधु सम्मेलन का संक्षिप्त ब्यौरा

जब यह सम्मेलन करना तय हुआ था तब समय कम था, और मुनिराज सम्मेलन स्थान से काफी दूर थे, लेकिन संघ–एक्य की जो प्रबल भावना उनके हृदय में लहरें मार रही थीं, उसके समक्ष यह दूरी अत्यंत नगण्य थी।

सन् 1952 की वैशाख शुक्ला तृतीया अर्थात् अक्षय तृतीया को सादड़ी मारवाड़ में महान व विशाल साधु सम्मेलन आरम्भ हुआ। संगठन की भावना समाज में तीन रूप में व्याप्त हो चुकी थी। सर्वत्र सम्मेलन के प्रति जागृति पैदा हो रही थी। सम्मेलन के समय दर्शनार्थ जाने के लिए सभी लोग अपने-अपने कार्यक्रम नियत कर रहे थे और जो कार्यवश पहुँच न पा रहे थे वे मन-ही-मन खिन्न भी हो रहे थे।

हमारे कष्टसहिष्णु मुनिवर एवं महासाध्वियां अपने स्वास्थ्य की परवाह किये बिना और भीषण गर्मी में उग्रतम विहार द्वारा अपने लक्ष्य स्थान की ओर बढ़ते चले जा रहे थे। वे सभी यथासमय पैदल यात्र द्वारा अपने स्थान पर पधार गए थे। सम्मेलन में पधारने वाले जब भिन्न–भिन्न सम्प्रदायों के साथ मिलते थे तो परस्पर बड़ी उदारता और सहृदयता प्रकट करते थे। **जैन कॉन्फ्रेंस के प्रयासों से संगठन की यह हवा ऐसी व्याप्त हो चली थी कि उसमें पूर्व का द्वेष भाव उड़ गया था, सर्वत्र प्रेम का आनन्ददायक वातावरण फैल गया था। सम्मेलन में 22 सम्प्रदायों के प्रतिनिधि उपस्थित हुए थे और सभी ने प्रेमपूर्वक सम्मेलन की कार्यवाही में भाग लेकर इसे यशस्वी बनाया।** इस सम्मेलन की कार्यवाही व्यवस्थित रूप से और जिस शांति और व्यवस्था से चल रही थी। उसे देखकर **तत्कालीन बंबई धारा सभा के स्पीकर, प्रमुख समाजसेवी एवं जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया ने कहा था कि – 'सम्मेलन में, शांति विवेक और शिष्टतापूर्ण जो कार्य हो रहा है, वह तो हमारी धारा सभा से भी अच्छा हो रहा है।'** यह सम्मेलन 11 दिन तक चला था। लगभग 70,000 भाई–बहन दूर–दूर गाँवों से दर्शनार्थ आए। सम्मेलन के व्यवस्थापकों की सुव्यवस्था से सभी लोगों को बड़ा आराम रहा। **विशेष रूप से पूज्य श्री मरुधर केसरी जी म. इस सम्मेलन में, रात दिन जुटे हुए थे। क्षेत्र की दृष्टि से, व्यवस्था**

के लिए जो साधन जुटाए गए थे। निस्संदेह वे उल्लेखनीय थे, अपर्याप्त होकर संत स्वभाव की सुगंध के अनुरूप थे।

❖ लोंकाशाह गुरुकुल की तपोभूमि

सभी प्रतिनिधि मुनिराज **लोंकाशाह जैन गुरुकुल** के नवीन भव्य–भवन में ठहरे हुए थे और वहीं उसके विशाल हॉल में उनकी मीटिंग हुआ करती थी। गुरुकुल भवन के आस–पास **'वीर लोंकाशाह नगर'** बसाया गया था, अनेक विशाल तम्बू लगाये गए थे, जो दूर से बड़े आकर्षक लगते थे। सादड़ी का यह सम्मेलन निस्संदेह बड़ा सफल सम्मेलन था, जिसकी चर्चा कई दिनों तक चलती रही। आने–जाने वाले दर्शनार्थी जहां भी पहुँचते सामने वाला यह पूछ बैठता था कि – 'क्या सादड़ी से आ रहे हो?' विभिन्न जैन पत्र–पत्रिकाओं और समाचार पत्रों ने भी सम्मेलन की सफल कार्यवाही की प्रशंसा की थी।

● **प्यास पर भारी जनप्रयास :** उम्मीद से लगभग दुगने आ गए लोगों के लिए चिलचिलाती गर्मी में पानी का प्रबंध करना सबसे टेढ़ी खीर साबित हुआ। वो स्थान जहाँ आज श्री लोंकाशाह जैन गुरुकुल स्थापित है। वहीं पर दूर दूर तक खेतों के बीच तम्बु लगाकर **"वीर लोकाशाह नगर"** बसाया गया था जहाँ समस्या आहार भोजन की नहीं थी, मगर पानी अनमोल था। कार्यकर्ता जब भी चर्चा करते तो यही कहते कि – **"पानी कहीं पसीना न निकाल दे।"** मगर जहाँ एक ओर 70,000 कण्ठों की प्यास थी, वहीं दूसरी ओर प्रबंध और जनप्रयासों से समाधान निकाला गया था। **आस-पास के गाँवों की बावड़ी, कुंए, तालाब, झील और झरनों से पानी लाने का प्रबंध किया गया था। दूर दूर से पनिहारिनों ने सर पर घड़े रखकर पानी लाने का अभूतपूर्व प्रयास किया था। सादड़ी निवासी वयोवृद्ध पत्रकार श्री मोहनलाल जी पुनमिया ने अपने अनुभव सुनाते हुए लिखा था कि "हमने उन दिनों सम्मेलन की डेली रिर्पोटिंग की और रोजाना ही सांयकाल अखबार छापकर**

लाने और पाँच पैसे मात्र पर दूसरे दिन बेचने का कार्य किया। बाहर से आवागमन बिल्कुल नहीं था। मगर मैं और मेरे बड़े भाई समान स्वर्गीय श्री विजय मोहन जैन ने दैनिक बुलेटिन "धर्मवीर-लोकाशाह" को सम्मेलन की अवधि तक बराबर प्रकाशित किया। लगभग पाँच हजार की संख्या में छपे इस दैनिक पत्र की प्रतिदिन होने वाली विषय वस्तु में सिर्फ कार्यवाही का ही विवरण होता था। निर्णय पर टिप्पणी करने के लिए साफ मनाही थी। कितने मुनिराज एवं महासतियाँ जी ने इसमें भाग लिया? इसे सिर्फ इसी से जाना जा सकता है कि इस सम्मेलन में गुजरात के सिंघाडे और पूज्य श्री समर्थमल जी म की सम्प्रदाय उपस्थित नहीं थे। फिर भी संघऐक्य का बिगुल फूंका जा रहा था।

सन् 1952 की अक्षय तृतीया का पर्व ही इस कार्य के लिए अक्षय अनुपम था। इसी दिन अनेकता में एकता का यह दृश्य दर्शनीय बन पड़ा था। एक ही पाट पर बिराज रहे थे – पू. उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी म. (पू. श्री जवाहिराचार्य के उत्तराधिकारी) पू. श्री प्यारचन्द जी म (पू. श्री दिवाकर म. श्री चौथमल जी म. के उत्तराधिकारी) शेरे पंजाब पू. श्री प्रेमचन्द्र जी म. पू. श्री हस्तीमल जी म., पू. 'मरुधर केसरी' श्री मिश्रीमल जी म., पू. कवि जी श्री अमर मुनि जी म. आदि। पंजाब, मालवा, मेवाड़, मारवाड़ आदि आदि क्षेत्रों सम्प्रदायों के मूर्धन्य संतप्रवर प्रसन्नता भरे चेहरों आयु से-सफेद उज्वल संत भूषा में विराजमान व दीक्षा क्रम में क्रमशः अनुशासित थे। सर्वानुमति से हृदय की पवित्रता पूर्वक श्रमण संघ के प्रथमाचार्य परम पूज्य श्री आत्माराम जी म.सा. मनोनीत हुए, जो जन जन के प्रिय हो गए थे।

❖ गुणानुराग भरा संघ का प्रमाण

मनोनीत **प्रथमाचार्य पू. श्री आत्माराम जी म.सा.** उस समय लुधियाना में विराज रहे थे। श्वेत उज्जवल पवित्र,

श्रद्धास्पद चद्दर हृदयांजली के साथ नवगठित श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के प्रथमाचार्य के प्रति समर्पण की भावाभिव्यक्ति के प्रतीक स्वरूप वहाँ उपस्थित संत सतियाजी महापुरुषों से स्पर्शित होकर समर्पित की गयी। आध्यात्मिक इतिहास का यह अनोखा निर्णय ऐसा साहसी कार्य था जिसने नया इतिहास रच दिया था। वास्तव में यह **'गण'** में **गणतंत्र** का प्रतीक था। गुणानुराग भरा संघ का प्रमाण था।

❖ सादड़ी में उपस्थित संत समुदाय

इस सम्मेलन में सभी सम्प्रदायों का विलीनीकरण हुआ और 'श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण-संघ', की स्थापना हुई और एक आचार्य के नेतृत्व में एक ही समाचारी का निर्माण हुआ।

(1) पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज की सम्प्रदाय : मुनि 88 आर्या 81 प्रतिनिधि 4 – **उपाध्याय श्री प्रेमचंद जी महाराज, युवाचार्य श्री शुक्लचंद जी महाराज, व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी महाराज, पं. मुनि श्री विमलचंद जी महाराज।** (कुप्पकला वाले)

(2) पूज्य श्री गणेशीलालजी की सम्प्रदाय : मुनि 34 तथा आज्ञानुसारिणी श्री रंगूजी, मोताजी, खेताजी की आर्या 71 प्रतिनिधि 5 – **पूज्य श्री गणेशीलाल जी म., श्री गणेशीलाल जी म., पं. मुनि श्रीमल जी म., पं. मुनि श्री नानालाल जी म., पं. मुनि श्री सुमेरचंद जी म., पं. मुनि श्री आईदान जी म.।**

(3) पूज्य श्री आनंऋषि जी महाराज की सम्प्रदाय : मुनि 19 तथा आर्या 85। प्रतिनिधि 5 – **पूज्य श्री आनंदऋषि जी म., पं. मुनि श्री उत्तमऋषि जी म., कवि श्री हरिऋषि जी म., श्री मोतीऋषि जी म., पं. मुनि श्री भानुऋषि जी म.।**

(4) पूज्य श्री खूबचंदजी महाराज की सम्प्रदाय : मुनि 65 तथा आर्या 38 । प्रतिनिधि 5 – **पं. मुनि श्री कस्तूरचंद जी**

म., उपाध्याय श्री प्यारचंद जी म., श्री शेषमलजी म., पं. मुनि श्री मनोहरलाल जी म.।

(5) पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज की सम्प्रदाय : मुनि २१ तथा आर्या 89। प्रतिनिधि 5–पं. **मुनि श्री सौभाग्यमल जी महाराज (मालव केसरी), पं. मुनि श्री सूर्य मुनि जी महाराज, पं. मुनि श्री केवल मुनि जी महाराज, पं. मुनि श्री मथुरा मुनि जी महाराज, पं. मुनि श्री सागर मुनि जी महाराज।**

(6) पूज्य श्री ज्ञानचंद जी महाराज की सम्प्रदाय : मुनि 13 तथा आर्या 105 । प्रतिनिधि – पंडित मुनि श्री मोहनलाल जी महाराज।

(7) पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज की सम्प्रदाय : मुनि 9 तथा आर्या 33 प्रतिनिधि 2 – **पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज, पंडित मुनि श्री लक्ष्मीचंद जी महाराज।**

(8) पूज्य श्री शीतलदास जी महाराज की सम्प्रदाय : मुनि 5 तथा आर्या 7। प्रतिनिधि 1 – **मुनि श्री छोगालालजी म।**

(9) पूज्य श्री मोतीलाल जी महाराज की सम्प्रदाय : मुनि 14 तथा आर्या प्रतिनिधि 2 – **पंडित मुनि श्री अम्बालाल जी महाराज, पंडित मुनि कवि श्री शांति मुनि जी महाराज। नवदीक्षित श्री सौभाग्य मुनि जी महाराज 'कुमुद'।**

(10) पूज्य श्री पृथ्वीचन्द्र जी म. की सम्प्रदाय : मुनि 13 प्रतिनिधि 1 – **उपाध्याय कवि श्री अमरचन्द्र जी महाराज।**

(11) पूज्य श्री जयमल जी महाराज की सम्प्रदाय के स्था. **पं. मुनि श्री हजारीमलजी महाराज** के मुनि 6 आर्या 29

प्रतिनिधि 2 – **पंडित मुनि श्री बृजलाल जी महाराज, पंडित मुनि श्री मिश्रीमल जी महाराज 'मधुकर'।**

(12) पंडित मुनि श्री चौथमल महाराज (मारवाड़ी) के मुनि 6 तथा आर्या 51 प्रतिनिधि 3 – **पं. मुनि श्री चांदमल जी**

म., पंडित मुनि श्री लालचंद जी म., उपाध्याय श्री जीतमल जी म.।

(13) पूज्य श्री नानकरामजी महाराज की सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री पन्नालाल जी महाराज के मुनि 6 तथा आर्या 8 प्रतिनिधि 1 – **पंडित मुनि श्री सोहनलाल जी महाराज।**

(14) पूज्य श्री अमरचंद जी म. सम्प्रदाय : मुनि 7 तथा आर्या 65 प्रतिनिधि 3 – मंत्री मुनि श्री ताराचंद जी, स्था. मुनि श्री नारायणदास जी म., पंडित श्री पुष्कर मुनि जी म.।

(15) पूज्य श्री रघुनाथ जी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि 2 तथा आर्या 26, प्रतिनिधि 2 – **मंत्री, मुनि श्री मिश्रीमल जी महाराज मरुधर केसरी, पंडित मुनि श्री रूपचंद जी महाराज 'रजत'।**

(16) पूज्य श्री चौथमल जी महाराज (मारवाड़ी) की सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री शार्दूलसिंह जी महाराज मुनि 4 तथा आर्या 7, प्रतिनिधि 1 – **पंडित मुनि श्री रूपचंदजी महाराज।**

(17) पूज्य श्री स्वामीदासजी म. की सम्प्रदाय : मुनि 7 तथा आर्या 19, प्रतिनिधि 2 – **पंडित मुनि श्री छगनलाल जी म. (अनुपस्थित), पंडित मुनि श्री कन्हैयालाल जी म.।**

(18) ज्ञातपुत्र महावीर संघीय मुनि 3 तथा आर्या 2, प्रतिनिधि 1 – **पंडित मुनि श्री फूलचंदजी महाराज।**

(19) तपस्वी श्री रूपचन्दजी म. (जंगरावा) की सम्प्रदाय के मुनि 3 तथा आर्या 4, प्रतिनिधि 1 – **पं. मुनि श्री सुशीलकुमार जी म.।**

(20) पंडित मुनि श्री घासीलाल जी महाराज के मुनि 11 प्रतिनिधि 1 —**–पं. मुनि श्री समीरमलजी महाराज।** (पहले पं. मुनि श्री प्यारचंदजी महाराज को प्रतिनिधित्व दिया गया) ।

(21) पूज्य श्री जीवनराम जी म. की सम्प्रदाय : मुनि 3,

प्रतिनिधि 1 – **कवि श्री अमरचंद महाराज के शिष्य श्री विजयमुनिजी महाराज।**

(22) बरवाला सम्प्रदाय (सौराष्ट्र) के मुनि 3 तथा आर्या 18, प्रतिनिधि 1 – **पंडित मुनि श्री चम्पकलाल जी महाराज। कुल उपस्थित सम्प्रदाय 22, मुनि 341, आर्याजी 768, प्रतिनिधि संख्या 54 अनुपस्थित 2।**

प्रतिनिधित्व-कोटा सम्प्रदाय के पं. मुनि श्री रामकुमार जी महाराज ने अपने मुनि व आर्याजी का प्रतिनिधित्व पं. मुनि श्री प्यारचंदजी म. को दिया।

कोटा सम्प्रदाय के पं. मुनि श्री जीवराज जी तथा पं. मुनि श्री हीरा मुनि जी ने सम्मेलन में होने वाले सभी प्रस्तावों की स्वीकृति भेजी। मालवी संत पूज्य श्री समरथमल जी म. की सम्प्रदाय उपस्थिति नहीं हुई एवं कोई स्वीकृति भी नहीं भेजी गई।

❖ सादड़ी सम्मेलन में प्रस्ताव एवं रूपरेखा

सम्मेलन की कार्यवाही 27 अप्रैल 1952 को मध्यान्ह के 3 बजे प्रारम्भ हुई। प्रस्ताव इस प्रकार थे–

प्रस्ताव 1 – शान्तिरक्षक का चुनाव : विचार विमर्श के पश्चात् सर्व सम्मति से यह निर्णय किया गया कि सभा का संचालन करने के लिए शान्तिरक्षक का पद पूज्य गणेशीलाल जी महाराज (उपाचार्य) एवं व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी महाराज को दिया जाता है। (सर्वानुमति)

प्रस्ताव 2 – दर्शक मुनियों को आज्ञा तथा रिर्पोटरों की नियुक्ति : विचार–विमर्श के बाद सर्वानुमति से निर्णय हुआ कि अप्रतिनिधि मुनि दर्शक के रूप में रह सकते हैं, बोलने एवं परामर्श देने का अधिकार उन्हें नहीं रहेगा और अपवाद रूप में श्री कुन्दनमल जी फिरोदिया (कॉन्फ्रेंस के प्रतिनिधि) कक्ष में बैठ सकेंगे। सर्वानुमति से पास किया जाता है कि गुजराती की

रिपोर्ट लेने के लिए श्री चम्पक मुनि जी म. एवं हिन्दी रिपोर्ट लेने के लिए मुनि श्री आईदानजी म. को रिपोर्टर के तौर पर रखा जावे।

प्रस्ताव 3 – विषय निर्धारिणी समिति का लोकतांत्रिक निर्णय : सर्वप्रथम सम्मेलन में रखे जाने वाले प्रस्तावों पर निगाह और नियंत्रण रखने के बावजूद उदारतापूर्वक लोकतांत्रिक निर्णय लेने का प्रयास किया गया। जिसका लक्ष्य ही 'समन्वय' और संगठन भाव मुख्य था। इस समिति के सदस्यों का – पूर्ण विचार–विमर्श के पश्चात् विषय निर्धारिणी कमेटी के रूप में सर्वानुमति से चयन हो गया और इसके लिए 15 सदस्यों का चुनाव कर लिया गया, जिनके नाम निम्नानुसार हैं –

पूज्य श्री आनन्दऋषि जी महाराज, पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज, पं. मुनि श्री प्यारचंद जी महाराज, उपाध्याय श्री अमरचन्द जी महाराज, पं. मुनि श्री इन्द्रमल जी महाराज, पं. मुनि श्री श्रीमल जी महाराज, उपाध्याय श्री प्रेमचन्द जी महाराज, पं. मुनि श्री लालचन्द जी महाराज, 'मालव कैसरी' पं. मुनि श्री सौभाग्यमल जी महाराज, पं. मुनि श्री मिश्रीलाल जी महाराज 'मधुकर', पं. मुनि श्री सुशील कुमार जी महाराज, 'मरुधर केसरी' मंत्री पं. मुनि श्री मिश्रीमल जी महाराज, पं. मुनि श्री अम्बालाल जी महाराज, व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी महाराज और पं. श्री पुष्कर मुनि जी महाराज।

प्रस्ताव 4 – कार्य प्रणाली संबंधी : जो प्रस्ताव पास होंगे, वे यथाशक्य सर्वानुमति से अथवा बहुमत से अर्थात् जो प्रस्ताव ऐसे प्रसंग पर पहुँच जाएं कि उन्हें बहुमत से पास करना आवश्यक हो जाए तो प्रस्ताव बहुमत से पास किए जा सकेंगे। बहुमत से तात्पर्य तीन–चौथाई अर्थात् 75 फीसदी से लिया जाएगा।

प्रस्ताव 5 — मतगणना : बहुत विचार–विमर्श के बाद सर्वानुमति से यह निर्णय किया गया कि मतगणना प्रत्यक्ष में ली जा सकती है।

प्रस्ताव 6 — एक आचार्य के नेतृत्व में : 'बृहत्साधु–सम्मेलन सादड़ी के लिए निर्वाचित प्रतिनिधि मुनिराज यह निर्णय करते हैं कि अपनी–अपनी सम्प्रदाय और अपनी साम्प्रदायिक पदवियों का विलीनीकरण करके, **'एक आचार्य के नेतृत्व में एक संघ'** कायम करते हैं। सर्वानुमति से (28 मध्याह को) पास।

प्रस्ताव 7 — संघ का नाम : इस संघ का नाम **'श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ'** रहेगा। (सर्वसम्मति से पास... 29 अप्रैल 1952 प्रातः काल)

प्रस्ताव 8 — व्यवस्थापक मंत्री मंडल : शासन को सुविधा पूर्वक प्रगति देने के लिए और सुव्यवस्था के लिए एक आचार्य के नीचे एक व्यवस्थापक मंत्री–मंडल बनाया जाए। (सर्वसम्मति से पास)

प्रस्ताव 9 — मंत्री मंडल की संख्या : व्यवस्थापक मंत्री मंडल के 16 सदस्य होंगे। (सर्वसम्मति से पास)

प्रस्ताव 10 — मंत्री मंडल का कार्यकाल : व्यवस्थापक मंत्री मंडल का कार्यकाल तीन साल तक रहेगा। (सर्वसम्मति से पास)

प्रस्ताव 11 — संवत्सरी पर्व-निर्णय : संवत्सरी पर्वाराधन के विषय से सम्प्रदायों में मतभेद था, उन सभी सम्प्रदायों का एकीकरण करने के लिए दूसरे श्रावण तथा प्रथम भाद्रपद में संवत्सरी करने वाला जो बहुल पक्ष है, वह पक्ष संघ ऐक्य के लिए **'दो श्रावण हो तो भाद्रपद में और दो भाद्रपद हों तो दूसरे भाद्रपद में संवत्सरी करना'** प्रेमपूर्वक स्वीकार करता है।
(सर्वसम्मति से पास ३० अप्रैल प्रातः काल)

प्रस्ताव 12 – पाक्षिक तिथि निर्णय : पाक्षिक तिथियों का निर्णय करने के लिए 8 संतों की कमेटी बनाई गई – **पूज्य श्री गणेशीलाल जी महाराज, पूज्य श्री आनंदऋषि जी महाराज, पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज, युवाचार्य श्री शुक्लचन्द जी महाराज, पं. मुनि श्री कस्तूरचन्द जी महाराज, उपाध्याय श्री अमरचन्द जी महाराज, मंत्री मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी महाराज, पं. मुनि श्री सुशील कुमार जी महाराज।**

प्रस्ताव 13 – तिथि निर्णय कब से? पाक्षिक तिथियों के सम्बन्ध में कमेटी का जो निर्णय हो, वह आगामी वर्ष पाक्षिक पत्र कमेटी के विचार से प्रकट हो। (सर्वसम्मति से पास)

प्रस्ताव 14 – दीक्षा के सम्बन्ध में

(अ) 'श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ' के मनोनीत आचार्य और व्यवस्थापक मंत्री, शास्त्रदृष्टि एवं लोकदृष्टि पर गंभीर विचार करके दीक्षार्थी की वय, वैराग्य, शिक्षण आदि की योग्यता का यथोचित निर्णय करें। सर्व सम्मति से पास 2 मई सुबह।

(ब) श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ में जो दीक्षार्थी दीक्षा लेना चाहे वह आचार्यश्री या दीक्षा मंत्री जी की आज्ञा से अपने अभीष्ट गुरु पद के योग्य सुयोग्य मुनि को गुरु बना सकेगा। यह नियम आगामी सम्मेलन तक समझा जावे। आगामी सम्मेलन में इस पर विचार किया जाएगा। सर्व सम्मति से पास (4 मई 5:52 दोपहर बाद)।

प्रस्ताव 15 – प्रतिक्रमण के सम्बन्ध में : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के साधु–साध्वियों को देवसी, रायसी, पक्ष, चौमासी, संवत्सरी का एक ही प्रतिक्रमण करना चाहिए और कायोत्सर्ग में देवसी, रायसी को ४, पक्खी को ८, चौमासी को 12 और संवत्सरी को 20 लोगस्स का ध्यान करना चाहिए। (सर्व सम्मति से पास 2–5–52 मध्याह्न)

प्रस्ताव 16 – मुखवस्त्रिका का परिमाण : मुखवस्त्रिका का परिमाण आत्मअंगुल से चौड़ाई में 16 और लम्बाई में 21 अंगुल का होना चाहिए। (सर्व सम्मति से पास)

प्रस्ताव 17 – सचित्ताचित्त निर्णायक समिति : सचित्ताचित्त निर्णायक कमेटी का सर्वानुमति से चुनाव हुआ।

पूज्य श्री आनन्दऋषि जी महाराज, पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज, उपाध्याय श्री अमरचन्द जी महाराज, उपाध्याय श्री प्रेमचन्द जी महाराज, पं. मुनि श्री प्यारचंद जी महाराज, पं. मुनि श्रीलाल जी महाराज, मरुधरकेसरी मंत्री श्री मिश्रीमल जी महाराज और पं. मुनि श्री सौभाग्यमल जी महाराज। (2–5–52 रात्रि को पास) इलायची, पिश्ता, केले, अंगूर, आदि फलों को सचित-अचित्तता और ध्वनिवर्धक-यंत्र के संचालन में काम आने वाली बिजली और बेटरी की सचित्ताचित्तता का निर्णय यह समिति करेगी।

प्रस्ताव 18 – आचार्य का चुनाव : सं. 2009 वैशाख शुक्ला 9 को श्री वर्धमान स्था. जैन श्रमण संघ के आचार्य श्री जैनधर्म दिवाकर साहित्य रत्न पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज साहिब नियत किए जाते हैं और उपाचार्य पूज्य श्री गणेशीलाल जी महाराज साहिब नियत किए जाते हैं। यह प्रस्ताव सहर्ष प्रेमपूर्वक सर्वसम्मति से पास किया जाता है। (ता. 3–5–52 प्रातकाल)

प्रस्ताव 19 – व्यवस्थापक मंत्री मंडल का चुनाव : व्यवस्थापक मंत्री मंडल के 16 मंत्रियों का चुनाव निम्न प्रकार हुआ।

प्रधानमंत्री – पं. मुनि श्री आनंदऋषि जी महाराज। सहायक मंत्री – पं. श्री हस्तीमल जी महाराज एवं पं. मुनि श्री प्यारचंद जी महाराज, मुनि श्री पन्नालाल जी महाराज, मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी महाराज, पं. मुनि श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज, पं. मुनि श्री किशनलाल जी महाराज, धर्मोपदेष्टा श्री फूलचंद जी महाराज, पं. मुनि श्री

प्रेमचंद जी महाराज, पं. मुनि श्री पृथ्वीचंद्र जी महाराज, पं. मुनि श्री घासीलाल जी महाराज, पं. मुनि श्री पुष्कर मुनि जी महाराज, पं. श्री मोतीलाल जी महाराज (मेवाड़ी), पं. मुनि श्री समर्थमल जी महाराज, मुनि श्री छगलमल जी महाराज (मरुधर), पं. मुनि श्री सहस्रमल जी महाराज। (सर्व सम्मति से पास ता. 3 प्रातःकाल) इस महासम्मेलन में कुल 32 प्रस्ताव पारित किये गये। 6–5–1952 में मंगलपाठ के साथ सम्मेलन की कार्यवाही शांतिपूर्वक सम्पन्न हुई।

●●●

विज्ञ, श्रेष्ठ-बुद्धिमान कौन?

अभिधान चिन्तामणि में उक्त पहचान बातते हुए एक सुक्त है–

सुश्रुषा श्रवणं चैव, ग्रहणं धारणं तथा।
उहापोहार्थ विज्ञानं, तत्वज्ञानं च धी-गुणाः।।

सुनने की इच्छा रखना, सुनना, सुनकर तत्व को ग्रहण करना, सुने हुए को हृदय पटल पर थापित कर, आचरण में लाना, दृढ़ विश्वास करना। ये बुद्धिमानों के गुण हैं।

इन्हीं दिव्य गुणों के कारण बुद्धिमान कहे जाने वाले लोग धैर्यवान होते हैं, अवसर की प्रतीक्षा करते हैं। तत्व–चिन्तन से समृद्ध सम्पन्न होकर सार रूप में गहनतम विचार को भी अपने व्याख्या विश्लेषण से प्रत्यक्ष अनुभव जैसा बना लेते हैं। अल्प बोलते हैं मगर सार रूप में बोलते हैं। यही निष्कर्षात्मक श्रमण जीवन है।

●●●

श्रमण संघ की गुण-गरिमा
एक आचार्य / एक संघ / एक समाचारी

श्रमण संघ के निर्माण के पूर्व जो बात कल्पनातीत थी, वो चमत्कार जब हो गया तो सूत्रकृतांग सूत्र की ये प्रेरणा साकार हो गई कि — **"अप्पणो य परं नालं कुतो अन्नाणुसासिऊं।"** अर्थात् **जो अपने आप पर अनुशासन नहीं रख पाता, वह औरों को अनुशासन कैसे करा सकता है? मगर जहां अधिकार विसर्जन हो जाता है वहां बिना किसी प्रतिफल के सब कुछ समर्पित कर देना भी संभव हो जाता है।**

जब श्रमण संघ की स्थापना हो रही थी, तब सबसे पहला प्रयास सभी महान आत्माओं ने यह किया कि सभी ने स्वेच्छा से अपना पद और कद को समान कर लिया। सभी महान आत्माएं ये सिद्ध करने को तत्पर थी कि—

जो अप्पाणं जाणदि असुई सरीरा बुदु तच्चादो भिननं।
जाणग रूव सरूगं, सो सत्थं जाणदे सव्वं।।

अर्थात् **जो अपनी आत्मा को अपनी देह से भिन्न मानता है। वो आत्मा को ज्ञायक भाव स्वरूप जानता है, जान लेता है। ऐसा भव्यात्मा समस्त शास्त्रों को जानने में सफल हो जाता है।**

मैं आज ये विचार करता हूँ कि उस समय क्या सारे पवित्र कार्य आत्मशक्ति पाकर सम्पूर्ति प्रदान कर रहे होंगे! परिणाम स्वरूप श्रमण संघ रूपी श्वेत क्रांति साकार हो पाई और 7 मई 1952 को एक आचार्य / एक संघ / एक समाचारी, प्रत्यक्ष साक्षात्कार कराने में परम्परा सफल हुई।

ऐसे हुआ प्रथमाचार्य श्री आत्माराम जी म. का चयन

वि. संवत् 2009 के सादड़ी सम्मेलन में वैशाख शुक्ल 13 से वैशाख शुक्ल 3 के मध्य श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ का गठन सम्पन्न हुआ। यह सम्मेलन अपने आपमें एक उपलब्धि था। अतः समाज के जन जन में एक उल्लास भाव छलक रहा था। इस सम्मेलन की खास विशेषता थी कि एक छत्र नियंत्रण में शिक्षा, दीक्षा, भिक्षा के समवेत पहलुओं पर विचार के साथ ही दण्ड, प्रायश्चित, चार्तुमास विहार और समाचारी पर ठोस निर्णय हुए। अब एक प्रश्न पर सदन में मंथन चला कि – **"श्रमण संघ का गठन हो गया तो हम एक आचार्य के रूप में सर्व सम्मत प्रमुख किसे मानें?"** आचार्य में जिन उपादेय बिन्दुओं को विशेष रूप से चिन्हित किया गया वे हैं, **ज्ञान ध्यान और गहन गंभीर व्यक्तित्व, योग्य संचालन एवं नियंत्रण करने की योग्यता।** इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए पूज्य श्री. हस्तीमलजी म. ने पूज्य श्री गणेशीलाल जी म. का नाम प्रस्तावित किया। यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत भी हो गया लेकिन पूज्य श्री गणेशीलालजी म. ने इस गुरुत्तर भार को योग्यता होते हुए भी अस्वीकार कर दिया।

इस पर अन्य नामों पर चिन्तन चल पड़ा तो पू. मरुधर केसरी जी म. आदि से परामर्श कर प्रसिद्ध वक्ता एवं समन्वयी संत मालव केसरी श्री सौभाग्यमल जी म. ने एक सुझाव दिया कि - "स्थानकवासी जैन समाज में पूज्य श्री आत्मारामजी म. सा. पंजाब सम्प्रदाय के एक जाने माने आगमविद् साहित्यिक संत रत्न हैं। उनकी आधारभूत साहित्य सेवाओं से समाज पूर्णतः लाभान्वित हुआ है। इसलिए उन्हें आचार्य का पद प्रदान किया जाए।" इस प्रस्ताव पर पू. उपाध्याय श्री अमरमुनि जी म. मंत्री प्रवर श्री

पन्नालालजी म.सा. के पश्चात् सम्मेलन के प्रबंधक मंत्री प्रवर मरुधर केसरी श्री मिश्रीमलजी म.सा. ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि - "अत्यंत खुशी का समय है कि अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन समाज के लिए सर्व सम्मति से आचार्य का चुनाव हो गया है। सादड़ी के लिए जब हम लोग रवाना हुए और यहाँ तक पहुँचे तब तक लोग यहीं कहते थे कि "महाराज सा क्यों समय काट रहे हो?" किन्तु शासन देव की कृपा से कहिये या विकास और संगठन का समय पक चुका है इसलिए कहिए कि – "आज हम सर्व सम्मत होकर सहर्ष आचार्य की नियुक्ति कर सके हैं। इसकी हार्दिक प्रसन्नता है।" इस प्रकार बड़े आल्हादकारी वातावरण में जब चयन कार्य सम्पन्न हो गया तो निम्न प्रस्ताव पारित किया गया।

आचार्य पद प्रदान विधि प्रस्ताव न. 21

आचार्य पद चद्दर की रस्म वैशाख शुक्ला 13 वि. संवत् 2009 बुधवार को दिन के 11 बजे अदा की जाएगी। इसके पूर्व सर्वमुनि महानुभाव प्रतिज्ञा पत्र मय दस्तखत के तैयार रखेगें। जो आचार्य पद पर विराजते ही आचार्य श्री जी के चरणों में भेंट कर देंगे।

निर्णय : सर्वसम्मति से पास **दिनांक 5/5/52**

प्रथम आचार्य पद स्थापना एवं चादर समर्पण पर प्रमुख संतों के उदगार

मारवाड़ की मरुभूमि में श्रद्धानत श्रावक श्राविकाओं का प्राचीन नगर घाणेराव सादड़ी **7 मई 1952** को एक समाधान ही नहीं **सद्भावना का शिलान्यास** करके समस्त भारत भर में उभरा। यहाँ स्थित गुरुकुल और इसके आसपास दूर तक तम्बुओं में बसा एक अस्थायी नगर, **वीर लोकाशाह नगर** एक

ऐतिहासिक समर्पण प्रतिबद्धता और सहअस्तित्व के साथ ही समन्वयी आशा का सन्देश लेकर सामने आया। स्थानकवासी जैन समाज के लिए तो यह एक चिर प्रतिक्षित पुण्य पर्व के समान ही था। **एक आचार्य, एक संघ, एक समाचारी की, भव्य कल्पना ने वहाँ मूर्त रूप लिया था। वैसे भी यह सकल जैन समाज में एक अभूतपूर्व गौरव जगाने वाली घटना थी। जहाँ स्थानकवासी जैन परम्परा के अनुगामी 22 सिंघाडों का एक, संघ एक व्यवस्था, एक समाचारी, एक आचार्य के अनुशासन में विलय हुआ था। ये अपने आप में ऐतिहासिक था।** सादड़ी नगर उस दिन धन्य और पवित्र हो गया था। सादड़ी नगर के प्रत्येक जैन ने आज अपने आप को कृतार्थ और भाग्यशाली समझ कर धन्य माना था। जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा बनवाया गया विशाल मण्डप, हजारों श्रावक श्राविकाओं से भर गया था, मानों मानव सागर ही उलट पड़ा हो। स्टेज पर श्रमण संघ के प्रत्येक मुनि म. और साध्वी जी म. ने सादर स्थान ग्रहण किया हुआ था। **प्रारम्भ में साधु सम्मेलन के सूत्रधार श्री धीरज भाई तुरखिया ने कार्यवाही प्रारम्भ होने की और सभी को शांतिपूर्वक सुनने व दर्शन करने की प्रार्थना की।** तत्पश्चात् पू. उपाचार्य श्री गणेशीलालजी म. सा. ने मुनि पू. मण्डल सहित मंगलमय **नवकार मन्त्र** और नंदीसूत्र के मंगलपाठ का एकाग्रतापूर्वक उच्चारण किया तो सर्वत्र शान्ति व अनुशासन का वातावरण बन गया। सर्वप्रथम पू. श्री फूल चंद्रजी म. 'श्रमण' ने अपनी मधुर वाणी से

'भज महावीर, भज महावीर, सबकी हर लो प्रभुजी पीर।'

भजन को सुनाया तो पूरे पण्डाल में प्रति ध्वनि गूंज उठी। हर कंठ लय से **'भज महावीर-भज महावीर'** का गान कर रहा था। प्रार्थना समाप्त होने पर **उपाध्याय श्री प्यारचंद्रजी म.** ने अपना संक्षिप्त सारगर्भित–वक्तव्य प्रकट किया। आपश्री जी ने फरमाया कि – आज का दिन बड़ा ही

मंगलदायक है। शांतिरक्षक पं. रत्न श्री मदनलालजी म. ने फरमाया तदनुसार हमें इस कार्य में आशातीत सफलता प्राप्त हुई है। **अजमेर साधु सम्मेलन में भी एक आचार्य और संघैक्य योजना पेश की गई थी, लेकिन समय परिपक्व नहीं होने से वह योजना मूर्तरूप धारण न कर सकी।** तत्पश्चात् **घाटकोपर में शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. पंजाब केसरी श्री काशीराम जी म.सा. वे प्रवर्तक श्री ताराचन्द्रजी मा. ने 'संघऐक्य योजना' को मूर्तरूप देने का फिर सत्प्रयत्न किया था।** सन् 1948 में जोधपुर में असोज मास में **गुरुदेव श्री चौथमल जी म.सा. ने भी एक योजना बनाने का आदेश दिया था।** इस योजना के सम्बन्ध में आत्मारामजी म.सा. ने अन्य प्रमुख संतों की राय पूछी थी और सभी ने इस योजना को स्वीकार किया था। **तत्पश्चात् कॉन्फ्रेंस का डेप्युटेशन श्री कुन्दनमल जी फिरोदिया की अध्यक्षता में पाली आया था और गुरुदेव के साथ संघैक्य योजना सम्बन्धी परामर्श किया था,** तब गुरुदेव ने यही फरमाया था कि संघैक्य योजना के लिए मैं सदैव तत्पर हूँ और उन्होंने उसी समय 7 कलमों के पालन के लिए सहर्ष स्वीकृति दे कर पहले संघैक्य योजना का बीज बोया गया था। आज उसे विशाल वटवृक्षरूप में देखकर किसे हर्ष नहीं होगा? आज यह वृक्ष प्रफुल्लित और पुष्पित हुआ है। कुछ दिन पूर्व भी **ब्यावर में छः सम्प्रदायों का जो प्रान्तीय सम्मेलन हुआ था वह भी आज हमें मार्गदर्शन कर रहा है। संघैक्य योजना को मूर्त रूप देने के लिए सम्प्रदायों के आचार्य उपाध्याय और प्रवर्तकों ने अपनी अपनी पदवियों का परित्याग कर संघैक्य के प्रयास में सक्रिय कदम उठाया था। लेकिन कार्य सिद्धि आज हुई है।**

जैन दिवाकर जी म. की स्था. समाज में ही नहीं अपितु जैन समाज के तीनों मुख्य श्वेताम्बर सम्प्रदायों में

एकीकरण की भावना पैदा करने की योजना थी। कोटा में तीनों सम्प्रदायों के मुनिवरों का सम्मेलन इस बात की साक्षी दे रहा है कि जैन समाज में सुदृढ़ संगठन के लिए पू. श्री दिवाकर जी म.सा. कृत संकल्प थे।

यह जैन संघ का भाग्योदय समझना चाहिये कि आज हम सब संघैक्य-योजना को मूर्त रूप देने के लिये एकत्रित हो रहे हैं। आज 22 सम्प्रदाय विलीन होकर एक श्रमण संघ के रूप में आज हम देख रहे हैं। समाज में संगठन होना बहुत जरूरी था। आज संगठन का यह सुन्दर दृश्य देखकर बहुत कुछ कहने की भावना उमड़ आई है लेकिन समय कम है। मैं इतना ही कहकर अपना स्थान ग्रहण करता हूँ।

इस आत्मीय संबोधन के पश्चात् **पंजाब केसरी जी प्रेमचंद जी म.सा.** ने प्रारम्भ में भगवान महावीर की जय, श्री वर्धमान स्था. जैन संघ, श्रमण संघ की जय, चतुर्विध श्री संघ की जय, जैन धर्म की जय–जयनादों द्वारा सभा में धर्ममय वातावरण पैदा कर दिया। उन्होंने अपना वक्तव्य देते हुए फरमाया कि **आज जैन समाज के लिये अपूर्व आनन्द का समय है। एक स्थान पर सभी सम्प्रदाय अपना सम्प्रदाय मोह, आचार्य पद मोह छोड़कर एक आचार्य की छत्रछाया में आ गए, यह कोई साधारण बात नहीं है। जो सैकड़ों वर्षों से हुआ नहीं था वह आज हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं। यह देव दुर्लभ दृश्य देखकर आज जैन संघ के हर्ष का पारावार उमड़ पड़ा है।**

हमारे प्रथम आचार्य पूज्य श्री आत्माराम जी म.सा. वृद्धावस्था के कारण आज यहाँ पर उपस्थित नहीं हैं, क्षेत्र से दूर हैं। लेकिन आत्म श्रद्धा से तो वे प्रत्यक्ष हैं। उपाचार्य गणेशीलाल जी म. सा. जो हमारे नायक हैं, यहां उपस्थित हैं। हम सब आज उनके आदेशानुसार चलने को

कृत-संकल्प हैं। जैन शासन की जय हो—यही हमारी अन्तरच्छा है।

इसके पश्चात् पंजाब के प्रमुख संत एवं प्रतिनिधित्व—कर्ता **संत पं. शुक्लचन्द्र जी म.सा.** ने अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि — **श्रमण भगवान महावीर की शासन प्रणाली भद्रबाहु स्वामी तक यथावत् चलती आयी, लेकिन द्रव्य-क्षेत्र-कालादि के प्रभाव से वह शासन प्रणाली बिगड़ती गयी। आज 1500 वर्ष बाद एक आचार्य, एक श्रमण संघ और एक समाचारी की योजना मूर्त रूप धारण कर रहीं हैं।** इस योजना को सक्रिय बनाने के लिये अनेक आचार्यवर्यों ने समयज्ञता और विवेकशीलता का परिचय दिया है। मुनिवर्यों ने भी सम्प्रदाय का मोह का त्याग किया है। कॉन्फ्रेंस ने भी कमर कसी है और इस प्रकार चतुर्विध श्री संघ की अन्तर्भावना का सुखद सुपरिणाम, सुन्दर परिणाम हम देख रहे हैं। यदि चतुर्विध—श्री संघ इसी प्रकार अप्रमत्तभाव से संघैक्य योजना को मूर्त रूप देने में सक्रिय सहकार देता रहा तो जैन शासन की उन्नति अवश्यम्भावी है। 'मैं आचार्य भगवन की ओर से सभी उपस्थित संतों और समाज के अग्रगण्य समाज सेवियों का आभार व्यक्त करता हूँ। साधुवाद देता हूँ।' **पं. शुक्ल चंद्रजी म. के सम्बोधन के पश्चात् वातावरण में अपने मधुर स्वर से सरसता उत्पन्न करते हुए युवा मुनि श्री द्वय श्री सोहन मुनि जी मोहन मुनि जी ने प्रेरक गीत प्रस्तुत किया — जिसके बोल थे—**

"आज आशाफली आज सपने सजे,
हम सफल हो गए, हम सबल हो गए।"

गाकर सभी को प्रसन्न कर दिया। गीत से बन चुकी भूमिका **पू. श्री हीरालालजी म.सा.** ने अपना वक्तव्य प्रदान किया।

बन्धुओं! आज हम जिस देव–दुर्लभ दृश्य को, मंगलमय प्रसंग को देख रहे हैं – वह इतिहास के पन्नों में सुवर्णाक्षरों से सदा अंकित रहेगा। ऐसा अपूर्व दृश्य हजारों वर्षों से देखने में नहीं आया है। आज का दिन वास्तव में बोलने का या सुनने का नहीं, केवल देखने का ही है। आज भावनाएं गदगद हैं।

आज जो दृश्य हम देख रहे हैं यह अपूर्व दृश्य उपस्थित करने का श्रेय उन सभी महान विभूतियों को है। जिन्होंने संघ शासन के हित की दृष्टि को सामने रखकर साम्प्रदायिकता का मोह छोड़ दिया और पदवी का भी मोह त्याग दिया है।

संघहित के लिये विसर्जन की जो भावना पैदा हुई है उसी का सुन्दर परिणाम है। संघैक्य की योजना की विचारधारा वर्षों से चल रही थी। लेकिन सादड़ी क्षेत्र का यह प्रभाव है कि वह फलान्वित यहां हो रही है। एक आचार्य, एक श्रमण संघ और समाचारी की ऐक्य योजना को विशाल चिंतन, गम्भीर दृष्टि, समय सूचकता पूर्वक मूर्त रूप देने का जो निर्णय किया गया है वह आशातीत सफलता सूचक है। जिस प्रकार सरितायें महासागर में विलीन होकर तन्मय बन जाती हैं तदनुसार भिन्न भिन्न सम्प्रदाय अपना सम्प्रदाय, मोह, पदवियां, सर्वस्व श्रमण संघ सागर में विलीन हो गयी हैं। यह क्षीर सागर नहीं है अपितु क्षीर सागर से भी वृहद भावसागर है। **इस श्रमण संघ रूपी क्षीर सागर को पाकर आज श्री चतुर्विध संघ प्रसन्नचित है, प्रफुल्लमना है। जो हमने प्रतिज्ञा की है। उसका हमें जिम्मेदारी और गम्भीरता पूर्वक पालन करना है।**

पूज्य आचार्य श्री आत्माराम जी म. को इस विराट सभा में हमने अपना पद भार समर्पित करके उऋण होने का प्रयास किया, हम कृतार्थ हुए हैं। हमें विश्वास है कि पूज्यवर्य भी बिना

किसी प्रकार के पक्षपात, सत्य का रक्षण करेगें। हम एक हैं। **पूज्य श्री आत्माराम जी म.सा. और उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. को हम सबने वरमाला पहनायी है। हाथी जैसे मंगलमय हैं, वैसे हमारे मंगलमय गणेश भी सबको कल्याणकर मार्ग का निर्देश करेंगे ऐसा हमें विश्वास है।**

पू. 'श्रमण' श्री फूलचंद्रजी म. ने अपने विचारों की भूमिका बांधते हुए कहा कि – संचालक श्री धीरजभाई ने समय की मर्यादा बांध दी है अतः अति संक्षेप में अपनी बात रखूंगा कि – "स्थानकवासी समाज में संघैक्य योजना का अरुणोदय हो गया और जैन समाज में ही नहीं, अपितु **सारे भारतवर्ष में 'एक आचार्य एक श्रमण संघ और एक समाचारी' का होना एक अभूतपूर्व घटना है।** स्था. समाज के लिये जैसे यह गौरव की चीज है, वैसे उनके लिये उत्तरदायित्त्व की भी जिम्मेदारी है। हम सब इस उत्तरदायित्त्व को समझें और उसको निभाने में प्राणप्रण से प्रयत्न करें इसी में अपना कर्तव्यपालन और संघ शासन का अभ्युत्थान छिपा हुआ है। बोलो – भ. महावीर की जय हो। जैन धर्म की जय हो। श्री वर्धमान स्था. श्रमण संघ की जय हो। चतुर्विध श्री संघ की जय हो।"

'श्रमण श्री' फूलचंदजी म. के पश्चात् कवि वक्ता **श्री अमर मुनि जी म.** आगरा वाले बोलने वाले थे, किन्तु स्वास्थ्य ठीक न होने की वजह से बोल नहीं पाए तो **मालव केसरी पू. श्री सौभाग्यमल जी म.सा.** ने अपनी बात को कुछ इस तरह रखा कि – **"कवि जी म.सा. का आदेश हुआ है कि मैं कुछ कहूँ। आज्ञा पालन करना हमारा कर्तव्य है। मैं इस शुभ प्रसंग पर एक संक्षिप्त सूचना ही देना चाहता हूँ। आशा है आप सब बुद्धिमान स्वजन वृन्द इस सूचना पर अवश्य ही ध्यान देंगे।**

आज हम सब उपस्थित मुनिगण साम्प्रदायिक माया–मोह और भेद–भाव को भूलकर श्री वर्धमान स्था. जैन श्रमणसंघ के रूप में एकत्र हुए हैं और एक आचार्य, एक श्रमणसंघ और एक समाचारी में श्रृंखलाबद्ध हुए हैं। हम तो यह भी चाहते हैं कि हमें सक्रिय सहयोग देने के लिये श्रावकों का भी एक **श्री वर्धमान स्था. जैन श्रावक संघ** के नाम से सुव्यवस्थित संगठन हो। आज हम सब भ. महावीर का कल्याणकारी सन्देश विश्व को सुनाना यदि चाहते हैं तो हम संगठित रूप में कार्य करें। यदि श्रावक वर्ग भी कानाफूसी की वृत्ति को त्याग कर हमारे प्रेम भाव की वृद्धि करने के लिये और हमारे ज्ञानदर्शन चरित्र की शुद्धि और वृद्धि में सक्रिय सहयोग प्रदान करता है तो मैं दृढ़तापूर्वक कह सकता हूँ कि जैन धर्म का अभ्युदय होने में देर नहीं लगेगी।" मालव केसरी श्री सौभाग्यमल जी म. ने फरमाया कि **"जब बम्बई से सादड़ी सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये प्रस्थान किया, तंब कुछ करेंगे, ऐसा विश्वास जरूर था लेकिन इतनी आशातीत सफलता की कल्पना नहीं थी। आज हम सबने अपने भेदभाव को, साम्प्रदायिक मायामोह का परित्याग कर संगठन की दृष्टि को सामने रखकर एक आचार्य, एक संघ और एक समाचारी को हृदय से स्वीकार किया है।**

मुझे तो विश्वास है कि श्रावक श्राविका गण भी हमारे इस सत्प्रयत्न में सक्रिय सहयोग देंगे। शासनोन्नति का यही मूल मंत्र है। मेरी इस विनम्र सूचना को चतुर्विध संघ ख्याल में रखेगा-यही मेरी अन्तर्भावना है।

मालव केसरी श्री सौभाग्यमल जी म. के आत्मीय संबोधन के पश्चात् **व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी म.सा.** ने फरमाया कि – **सं. 1988 में आचार्यों में आचार्यवर श्री जवाहरलाल जी म.सा. पंजाब पधारे थे। श्रमण संघ का**

संगठन करने की भावना से ज्येष्ठ माह में मैं भी उनकी सेवा में उपस्थित हुआ था। विचार विनिमय के परिणाम स्वरूप सं. 1990 में प्रधानाचार्य सोहनलाल जी म.सा. की सूचना से अजमेर में वृहत्-साधु सम्मेलन किया गया था। उस समय समय की परिपक्कवता नहीं होने के कारण सफलता प्राप्त नहीं हुई किन्तु आज वह शुभ दिन आया है कि हम सब "श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ" के रूप में सूत्रबद्ध हुए हैं। हमने कुछ दिन की कार्यवाही में जो कुछ किया है। वह सैकड़ों क्या हजारों वर्षों से नहीं हुआ है।

हमने जो कुछ निश्चय किया है वह सर्व सम्मति से करने का प्रयत्न किया है और हृदयपूर्वक किया है आज हमनें सब भेदभाव, साम्प्रदायिक खींचातानी, सब को छोड़कर संघ शासन उन्नति की दृष्टि रखकर **"एक आचार्य, एक श्रमण संघ और एक समाचारी"** को सहर्ष स्वीकार किया है।

हम अपना सर्वस्व अर्पण करके भी अपनी प्रतिज्ञा का पालन करेंगे। हमारे इस सत् संकल्प की पूर्ति के लिये श्री चतुर्विध श्री संघ हृदय से पूरा सहयोग देगा, यही हमारी अन्तर्भावना है। हम आचार्य श्री आत्मा राम जी म.सा. और उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. जैसे सेना नायक को पाकर कृतकृत्य और धन्य हुए हैं हम उनके आदेश को एक सैनिक के रूप में शिरोधार्य करेंगे।"

ऋषि सम्प्रदाय का पूर्ण समर्पण भाव से सुसंचालन करने वाले तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. रत्न श्री आनंदऋषि जी म.सा. ने मंगलाचरण से अपने विचारों को प्रारम्भ किया।

आपने फरमाया कि – आज बड़ा पुण्य दिवस है। मेरा गला बैठा हुआ है फिर भी मैं अपना हृदयोद्गार प्रकट करना चाहता हूँ – मनुष्य बड़ा ही महत्त्वाकांक्षी है। जैसी भावना

होती है वैसी सिद्धि भी मिल जाती है। अजमेर में वृहद साधु सम्मेलन हुआ था। बड़े–बड़े आचार्यवर्य संघैक्य योजना को मूर्त रूप देने के लिये उपस्थित हुए थे, लेकिन उस समय काल स्थिति परिपक्व हुई नहीं थी। लेकिन उस समय जो एकता का बीज बोया गया था वह बीज आज अंकुरित हुआ है। ब्यावर में 9 सम्प्रदायों का जो संगठन हुआ था वह भी हमारे लिये मार्ग दर्शक सिद्ध हुआ है। समाज का यह सद्भाग्य है कि **श्री वर्धमान स्था. जैन श्रमणसंघ** का एकमत से हमने संगठन किया है।

यहां पर जो प्रतिनिधि उपस्थित हैं इन सभी मुनिवरों ने विवेकपूर्वक संघोन्नति करने का भरसक प्रयत्न किया है। विवादास्पद प्रश्नों का एक मत से निराकरण किया है। आज हम सब एक हैं और एक आचार्य की छत्रछाया में रहकर ज्ञान दर्शन और चरित्र की शुद्धि और बुद्धि करेंगे। हमारे इस सप्रयत्न को सफल बनाने के लिये श्री चतुर्दिक श्री संघ का भी सक्रिय सहकार अपेक्षित है। "जैन जयति शासनम्"।

इसके पश्चात् मंच की ओर से उन मूर्धन्य मुनिराज का नाम पुकारा गया। जिनके कुशल प्रबंध एवं सहकार से सादड़ी जैसी मरुभूमि में समन्वय का स्वर्ण कमल खिल गया। 'मरुधर केसरी' के नाम से विश्रुत मुनि श्री मिश्रीलाल जी म.सा. ने साधु सम्मेलन की सफलता और वीर प्रार्थना सम्बन्धी प्राण प्रेरक और उद्बोधक कविता पाठ मधुर स्वर में सामूहिक रूप में कराया। जिसका अच्छा प्रभाव पड़ा। आपने आगे कहा कि – हजारों वर्षों के बाद जो यह सफल साधु सम्मेलन हुआ और "एक आचार्य, एक श्रमण संघ और एक समाचारी" के रूप में संघैक्य योजना आज यहाँ जो कार्यान्वित हो रही है। उसमें सादडी क्षेत्र पवित्र श्री

लोकाशाह गुरुकुल भूमि तथा यहाँ के विशुद्ध वातावरण का प्रभाव है। यहाँ आकर जैसे हम सबने संघैक्य योजना को मूर्त रूप देने का दृढ़ संकल्प किया है। वैसे ही श्रावक समुदाय भी "श्री वर्धमान स्था. जैन श्रावक संघ" स्थापित करके हमें सहयोग देंगे तो मुझे तो विश्वास है कि हमारे धर्मप्राण लोकाशाह ने जो धर्म क्रान्ति की थी वह सार्थक सिद्ध हुए बिना न रहेगी। जैन शासन सदा जयशील रहे यही हमारी अन्तर्भावना है। हम तो सैनिक हैं। हम हमारे धर्मनायक का अनुसरण करेंगें और आदेश को शिरोधार्य करेंगे। हमारा लक्ष्य होगा कि अपनी शक्ति सामर्थ्यानुसार वीर पुत्र का जीवन सन्देश संसार में फैलायें।

मैं आप सभी को याद दिलाना चाहता हूँ कि हमने यह सफलता, एकता की भावना, त्याग के आचरण और परस्पर आदर सम्मान देकर सदभावना से कार्य करने से प्राप्त की है। **ये वीर शासन के सफल मुनियों वाला व्यवहार है। सदाकाल ऐसा ही चले हमें सफल होने से कोई ताकत नहीं रोक सकती। श्री शांतिनाथ भगवान की जय हो!**

तत्पश्चात् **साहित्यरत्न पं. मुनि श्री सुशीलकुमार जी म. सा.** ने प्रारम्भ में श्री वर्द्धमान स्था. जैन श्रमणसंघ की जय हो, विजय हो, ऐसी उच्च स्वर में उद्घोषणा कराई और पश्चात् अपना संक्षिप्त किन्तु सारभूत वक्तव्य निम्नानुसार दिया –

हमारा यह सद्भाग्य है कि सर्व कल्याणकारिणी यह संघैक्य योजना जब कार्यान्वित होने जा रही है उस युग में हमारा जन्म हुआ है। कभी कभी मुझे यह भी विचार आया करता था कि यदि कदाचित यह संघैक्य योजना सफल न हुई तो क्या करना चाहिये। मेरे मस्तिष्क में से तब एक ही उत्तर मिलता था कि – **बगावत! क्रान्ति!! और संघर्ष!**

इस दिशा में हम सबने मिलकर बहुत कुछ किया है फिर भी बहुत कुछ करना अभी शेष है। संघ शासन का बहुमान करना प्रत्येक संघ सदस्य का नैतिक और धार्मिक कर्तव्य है। पारस्परिक सहयोग पूर्वक संघ शासन को समुन्नत करना। समय व युग की यही मांग है।

आत्मा सच्चिदानन्दमय है। पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज सा. हमारे आचार्य हैं और पूज्य श्री गणेशीलाल जी महाराज सा. हमारे उपाचार्य हैं। हमारे इन सेनानायकों की आज्ञा को हम शिरोधार्य करेंगे और एक सैनिक के रूप में हम अपना जीवन सर्वस्व भी समर्पण कर देंगे।

मुनि श्री सुशील कुमार जी म. के बाद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक आम्नाय के प्रसिद्ध संत **पं. रत्न श्री पुण्यविजय जी म.सा. जोकि सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे थे,** ने कहा कि – **"आज स्थानकवासी मुनिगणों ने एक सिद्धी प्राप्त की है। सचमुच यह एक महासिद्धि है। इसे स्थिर रखने के लिए अप्रमत्तभाव अति आवश्यक है। अगर इस विषय में प्रमाद होगा तो ये महासिद्धि एक क्षण में नष्ट हो जाएगी।"** इस सम्भाषण के बाद मुनि श्रीलाल चंदजी, श्री हनुमान मुनि जी, श्री समीरमल जी आदि ने अपने संक्षिप्त विचार गीत आदि प्रस्तुत किए।

सादड़ी सम्मेलन में प्रथमाचार्य एवं उपाचार्य पद चादर समारोह एवं समापन

श्री वर्धमान स्था. जैन श्रमण संघ उपाचार्य पं. श्री गणेशीलाल जी म.सा. का समापन का वक्तव्य था। आज का उत्सव आपके लिये हर्ष का, आनन्द का विषय है, किन्तु मेरे लिये गहन चिन्तन, मनन एवं अध्ययन का। आज का दिवस महान् जिम्मेदारी का दिवस है, आज तक मेरे सिर पर एक सम्प्रदाय का ही बोझ था जिसे भी मैं शारीरिक अस्वस्थता के

कारण दूसरे के कंधों पर डालने वालां था, परन्तु सम्मेलन का निमन्त्रण मिलने पर सोचा था कि अपने कंधे इस बोझ से हल्के हो जायेंगे, और आत्म चिन्तन, मनन, और ध्यान मौन करने का समय अधिक उपलब्ध होगा, पर यहां तो कंधो और भी बोझिल बन गये। मैं तो पद, शिष्य एवं सम्प्रदाय के समर्पण करने की भावना से आया था, मेरी आन्तरिक इच्छा नहीं थी कि मैं इस अवस्था में पुनः आचार्य पद को स्वीकार न करूँ किन्तु आप लोगों के आग्रह भरे मानस को भी नहीं तोड़ सका, एतदर्थ मैंने विवशता से इस पद को स्वीकार किया है।

आज जो चादर ओढाई जा रही है, वह एक सम्प्रदाय की नहीं, समस्त 'वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ' की है, इस छोटी सी खादी की चद्दर से जो साधारण सी दिखाई दे रही है – संघ की महान सदभावनाएं भरी हुई हैं, इसके हर एक तार में साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं का जीवन बोल रहा है। यह अखंड धागों का समूह, संघ के अखण्ड जीवन का प्रतीक है, इसके पीछे संघ की महती ताकत छिपी हुई है ।

अभी अभी आप लोगों के सामने पंडित श्री हस्तीमलजी ने कहा था कि आज मैं बोझ से हल्का हो गया हूँ परन्तु, याद रखें वे सम्प्रदाय के बोझ से तो हल्के बन गये हैं। किन्तु उन पर भी नया बोझ आ गया है, उससे वे छुटकारा नहीं पा सकेंगे। आपने कहा था कि हाथी वरमाला पहनाने के लिये हर समय तैयार रहता है पर याद रखें उसका कार्यक्षेत्र वरमाला पहनाने तक ही सीमित नहीं रह जाता है, उसके आगे युद्ध की विजय पताका लेकर भाले एवं बरछियों के वार खाने तथा दुर्गों के प्राचीर के प्रवेश द्वार तोड़ने का कार्य होता है। इन कार्यों में हाथी ही आगे रहता है। युद्ध की विजय का भार लेकर ही वह आगे बढ़ता है और साथ में चक्रवर्ती राजा महाराजा की सवारी में भी काम आता है। अतः आप बोझ से

हल्के नहीं बने हैं किन्तु आप पर मेरे सहित समाज का बोझ आ गया है। आपके साथ ही श्री आनंदऋषि जी, श्री प्यारचन्द्रजी एवं श्री मिश्रीमलजी 'मरूधर केसरी जी' आदि आदि मन्त्रियों के सहयोग पर ही मैं समाज की जिम्मेदारी को निभा सकूंगा। अतः आज से आप सब पर कर्तव्य पालन का भार आ जाता है, मुझे आशा है कि आप सब पूर्ण सहयोग देंगे क्योंकि मेरे जैसे बूढ़े आदमी को सहयोग की आवश्यकता रहती है। मुझे अपने समाज पर तथा अपने साथियों पर गर्व है कि हम अपने मानस में जिन भावनाओं को लेकर यहां तक अनेक कष्ट उठाकर आये थे, उन भावनाओं ने आज मूर्तरूप धारण कर लिया है। हमारी आकांक्षायें आज पूर्ण हो गयीं। परन्तु इतने में ही संतोष करके बैठ नहीं जाना है हमारे से दूर रह रहे साथियों को भी साथ लेकर दृढ़ता के साथ आगे कदम बढ़ाना है। जनगण के जीवन में संगठन की आवाज गूंजाना है, एक्यता का प्रेम जगाना है। और सब संघों को एक्यता के तार में पिरोना है।

यह कार्य तभी सफलीभूत हो सकेगा जब हम जिस आदर्श त्याग से मिले हैं उसे अक्षुण्ण रखें और प्रतिपल बढ़ाते चलें। जिससे हमारे जीवन चमक उठें और विश्व हमारी ओर मुड चले। अतः आज से हम यह प्रतिज्ञा करके कदम बढ़ायें कि - हम एक्यता के पुजारी, अनैक्य को मिटाकर घर घर में एकता का, प्रेम का, संगठन का, सदभावना का हर्ष घोष गुंजा कर ही दम लेंगे।

आज जो चादर ओढ़ाई जा रही है, वह एक सम्प्रदाय की नहीं, समस्त 'वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ' की है, इसे छोटी सी खादी की चद्दर से जो साधारण-सी दिखाई दे रही है – संघ की महान सद्भावनाएं भरी हुई हैं, इसके हर एक तार में साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं का जीवन बोल रहा है। यह अखंड धागों का समूह, संघ के

अखण्ड जीवन का प्रतीक है, इसके पीछे संघ की महती ताकत छिपी हुई है।

इस उद्‌बोधन के बाद पंजाब प्रांत के नैतृत्वकर्त्ता **पं. श्री शुक्लचंद जी म. और अन्य संतों ने आचार्य पद चादर सहर्ष ग्रहण की। जय जयकार से वातावरण में हर्ष निनाद गूंजने लगा।**

इस प्रकार यह ऐतिहासिक एवं सफल सम्मेलन सम्पूर्ति को प्राप्त हुआ। ●●●

सादड़ी-मारवाड़ साधु-सम्मेलन की फलश्रुति और निहितार्थ

1. श्रमण संघ की स्थापना का चिर–इच्छित लक्ष्य पूर्ण हुआ।
2. स्थानकवासी जैन धर्म परम्परा का यश सर्वत्र स्थापित हुआ।
3. आलोचक, निंदक, समालोचक ही नहीं अनन्य समर्थक भी नए ढ़ंग से चतुर्विद संघ पर विचार करने लगे। हमारे संत, हमारा सम्प्रदाय की भावना पर आंशिक विराम लग गया।
4. विघटन और सृजन की प्रक्रिया कहां, कैसा मोड़ ले सकती है? इस पर विचार मंथन चला।
5. जिनके हृदय में शुभ विचार थे वे आशावादी बने! वहीं जो अपने संकीर्ण विचारों के लिए प्रसिद्ध थे, उन्हें गहरा धक्का लगा और वे अन्ततः साथ छोड़कर अपने सम्प्रदाय में पुनः लौट गए।
6. सभी सम्प्रदायों से जुड़े समाजसेवी और संतों को इस प्रयोग से 'जैन एकता' का व्यापक महत्व समझ आया।
7. जैन कॉन्फ्रेंस से जो समाजसेवी प्रत्यनशील थे, उनको अपार यश प्राप्त हुआ।
8. एक संघ, एक आचार्य, एक समाचारी यकायक सबका प्रिय विचार बन गई।
9. युवाजनों और मातृशक्ति की आस्था को नया उत्साह नया संबल प्राप्त हुआ।
10. जो लोग सम्प्रदाय से बाहर सोच भी नहीं सकते थे और सदा ही सामाजिक अपवादों को चर्चा का विषय बनाए रहते थे, उन्हें घोर निराशा हुई।

भगवान महावीर की परम्परा, लोंकाशाह का सपना

प्रथम प्रणति अधिकारी आचार्य भद्रबाहु स्वामी (प्रथम) ने कहा है कि — **"ऋण, व्रण, अग्नि और कषाय (दोष) इनका छोटा-सा अंश भी हो, तो उससे सावधान रहना चाहिए। समय पाकर ये विस्तार पा जाते हैं।"**

अतः सादड़ी में श्रमण संघ की पुर्नस्थापना करके सात्विक शक्ति संत और समाज ने सारी वैचारिक एवं परिस्थितिगत बाधाओं को पार करके यह सम्मेलन सम्पन्न किया। इसमें किसका योगदान रहा इसको आंकना और व्यक्त करना झांकने भर जैसा है। फिर भी जो लब्धि सिद्धि है उसे तो स्मरण में रखना आवश्यक है। जैसे–

1. समस्त समर्थ शक्तियों ने अपने पदों को त्याग कर एकता के लिये समर्पण को साकार किया।
2. विपरीत परिस्थिति में भी अपने तपोबल से एकता और एकत्व को जिनत्व की नई परिभाषा में ढ़ाला।
3. एक संघ, एक आचार्य, एक समान समाचारी को अपने शुद्ध मन से संकल्पित किया।
4. जो किया वो जनतंत्रीय परम्परानुसार किया, प्रस्ताव आएं, चर्चा हुई, सबको सुना गया, फिर निर्णय हुए।
5. पूज्य आगमज्ञान महोदधि आचार्य श्री आत्माराम जी म.सा. को उनकी अनुपस्थिति में भी अपना आचार्य बनाकर गुण पूजा का महत्व प्रकट किया।
6. सात दशक बाद भी चार–चार पट्टधरों के नैतृत्व में

श्रमण संघ को अ.भा. स्वरूप में विस्तार देकर सतत विचरण प्रभावना, प्रबंधन को बनाए रखा।

7. युवाचार्य पद पर तीन बार चयन करके भविष्य का निर्माण करने का साहस किया।

8. इतने विशाल संघ को संचालित करने में संवाद, संगठन, दीक्षा, समारोह, पर्वादि से प्रेरणा देने का काम निरंतर किया।

9. पलायन, विरोध, आलोचना, निंदा को समता से झेला और मैत्रीभाव को पुरस्कृत किया।

10. परस्परता को वृद्धिमान करते हुए अन्य समुदायों से भी मंत्रणा का क्रम जारी रखा।

11. आलोचकों ने क्या नहीं किया? मगर श्रमण संघ ने अपनी मर्यादा, सीमा और सरोकार भंग नहीं किए।

12. श्रमण भगवान महावीर की देशणा ही हमारी प्रेरणा है तो लौंकाशाह का शुद्धाचार हमारा जीवन लक्ष्य! यही श्रमण संघ का लक्ष्य प्रयास और प्रस्तुति। ●●●

शून्य - अद्भुत है अद्वितीय है

शून्य गणित में ही नहीं अध्यात्म में भी बड़ा महत्व रखता है। जहां अगणित ब्रह्माण्ड है। प्रत्येक ब्रह्माण्ड में असंख्य नक्षत्र हैं। ये सब विविध विभूतियों के रूप में संघ में अपने अस्तित्व की आभा लेकर समाहित होते है। ये स्वयं पहले भले ही शून्य हों मगर जहां भी जब भी जुड़ते हैं, गुणवृद्धि कर देते हैं। मूल्य बढ़ा देते हैं। **अतः योग दो, योग लो, उपेक्षा तिरस्कार अवमानना से बचो! यही धर्म संदेश है।**

लेकिन शून्य सम रहकर भी अपनी शक्ति को कम मत आंकों! ●●●

संस्मरण-

"सद्प्रयत्नों ने स्वप्न संवारा श्रमण संघ का इतिहास"

रजस्थलि में सूरज दमका, प्रचंड तेजस था भारी।
संकल्पों ने स्वप्न संवारा, भक्ति भाव की तैयारी॥
श्रमण जगत के शुभ श्रम ने, एक अनियारा इतिहास रचा।
हर्ष हर्ष जय जय की ध्वनि से, गूंजी दसों दिशा सारी॥

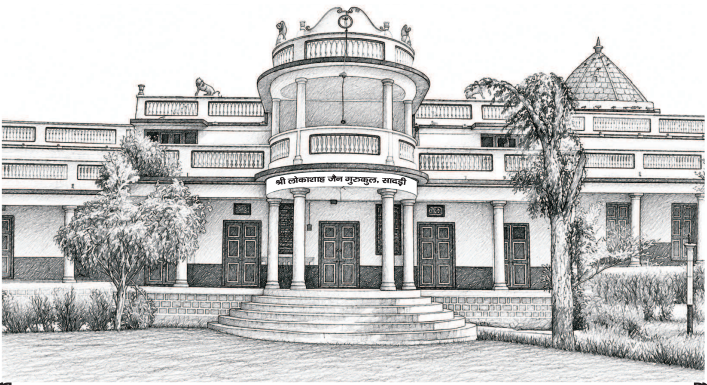

व्यक्तित्व के आलोक में

असीम औदार्य अनहद स्नेह : गुरुदेव आनंदऋषि

आनंद महोदधि आचार्य प्रवर श्री आनंदऋषि जी म. के संबंध समस्त समाज जानता है कि **पूज्य आचार्य श्री आनंदऋषिजी म.सा. असीम औदार्य और अनहद स्नेह के मूर्तिमंत प्रतीक थे। वे ऐसे महापुरुष थे, जो समन्वय, संवाद और संगठन के समन्वयी सेतू थे।** जो एकपल भी ऐसा नहीं छोडते थे, जहाँ इस उपलब्धि को प्राप्त करने का एक अवसर मिलता हो वे उसे **समन्वय पर्व** में बदल देते थे। **आचार्य भगवन की आनंददायी मुस्कान सर्व प्रकार के संकटों को समाधान में परिवर्तित कर देती थी।**

वहीं मौन एवं तप के पर्याय बन चुके श्रद्धेय तपस्वी श्री मिश्रीमल जी म. एक विशेष प्रार्थना लेकर अहमदनगर पहुँचे। वे उनके सानिध्य में अध्ययन कर रही विरक्ता को दीक्षा दिलवाना चाहते थे। पूज्य आचार्य श्री ने विरक्ता को दीक्षा योग्य पाकर मंगलमय वातावरण में दीक्षा मंत्र प्रदान किया। उन्हीं दिनों का ये प्रसंग है। औरगांबाद में विराजमान कर्नाटक केसरी श्रद्धेय श्री गणेशी लाल जी म. के शिष्य तपस्वी श्री मिश्रीमल जी म. के मन में एक संकल्प जगा कि **मुझे चतुर्विध संघ के साथ औरंगाबाद से अहमदनगर पूज्य आचार्य श्री के दर्शनार्थ जाना है। तपस्वी जी म. अपने सहवर्ती सन्तों के साथ अहमदनगर की ओर चल पड़े। सैकड़ों श्रावक-श्राविकाएँ इस यात्रा में उनके साथ पैदल चल रहे थे। लगभग बीस-पच्चीस साध्वियां भी थी।**

अहमदनगर में जब यह संवाद पहुँचा तो पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन का हृदय अत्यन्त मुदित हुआ। पूज्य गुरुदेव श्री साधु साध्वियों को अपने सामने जब भी देखते तो उनका मन गद्‌गद हो उठता था। प्रतिभा सम्पन्न साधु–साध्वियों की प्रतिभा का वे अभिनंदन करते थकते नहीं थे। **ज्ञान, दर्शन और चारित्र के क्षेत्र में साधक वर्ग उत्तरोत्तर विकास करे! इस दृष्टि से वे निरंतर प्रेरणाएँ, सार्थक मार्गदर्शन प्रदान करते थे।** आप श्री ऋषिकुल के प्रमुख रहे। सादड़ी में प्रधानमंत्री रहे। भीनासर में उपाध्याय बनाए गए। अजमेर में आचार्य, मगर आपश्री शांत, उत्तंग हिमालय की तरह सदा शांत रहे, उत्तेजना विहीन रहे। सर्व समावेशी चैतन्य भाव की साकार मूर्ति रहे।

श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन् संघ शिल्पी थे। कुशल निर्माता थे, उन्होंने अनेक साधु साध्वियों का निर्माण किया। अनेक श्रावक–श्राविकाओं के जीवन को समुत्कर्ष दिया। **पू. आचार्य श्री के मार्गदर्शन में जिन्होंने भी अपने जीवन का उत्कर्ष किया है, वे आज भी पूर्ण जागरूकता पूर्वक स्व-परहित संपादित कर रहे है। हमारे युवाचार्य भगवन श्रद्धेय श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. आपके ही पुरुषार्थ की श्रीसंघ को मंगल भेंट हैं।**

भगवन् की प्रतिकृति प्रवर्तक श्री कुंदनऋषि जी म., प्रबुद्ध विचारक, सेवा स्वयंभू श्रद्धेय श्री आदर्शऋषि जी म. प्रज्ञाप्रदीप, उपाध्याय श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषि जी म. हो या प्रबुद्ध प्रतिभा के धनी श्रद्धेय श्रमणी मंडल कौन किससे कम है?

मेरी जानकारी में ऋषिकुल का इतिहास प्रतिभा का पर्याय है तो प्रज्ञा सम्पन्नता का अनुपम उदाहरण श्रमण संघ के प्रति जैसी अमिट श्रद्धा इस सम्प्रदाय में है। वो अनुकरण–अनुशीलन योग्य है।

●●●

जीवदया अभियानी श्रद्धेय श्री मरुधर केसरी!!

ये बात तबकी है जब अधिकतम संघों की सर्वानुमति से **'मरूधर केसरी'** उपाधि दिए जाने का निर्णय लिया गया! इस आयोजन के आयोजक टांटोटी के श्रीसंघ के अलावा अजमेर, जोधपुर, पाली, ब्यावर भीलवाड़ा आदि श्रीसंघों के हजारों लोग थे। सभी ने मिलकर कर्मठ संत रत्न प्रवर्तक श्री मिश्रीमल जी म. को किसी उपाधि से सम्मानित करने का निश्चय किया तो **स्वामी श्री पन्नालाल जी महाराज ने इस विचार का अनुमादेन किया और प्रेरणा भी दी, तभी श्रीसंघ ने मुनि मिश्रीमलजी महाराज को 'मरुधर केसरी' की उपाधि से अलंकृत किया। वे सर्वथा इसके योग्य थे।** वे निर्भीक थे, किसी भी परिस्थिति से डरते नहीं थे।

क्योंकि शेर जब दहाड़ता है तो उसकी आवाज से जंगल थर्रा उठता है। श्रद्धेय मरुधर केसरी मुनि मिश्रीमलजी महाराज में ये तीनों गुण थे। उनका आत्म बल अद्वितीय था। वे निर्भीक वक्ता थे। वे जब बोलते हैं तो शेर की तरह दहाड़ते थे। इन्हीं गुणों के कारण वे मरुधरा के शार्दूल थे। फिर वे रूढ़ियों, कुरीतियों, अधर्म, मिथ्यात्व, असत्य और दोष–कषायों को मिटाते भी थे क्योंकि **कर्महंता** ही तो **अरिहंत** बनता है अतः अब उक्त कर्महंता उपाधि **'मरुधर केसरी'** को दी गई, वो सर्वथा उचित ही थी।"

श्रद्धेय "मरुधर केसरी मुनि मिश्रीमल जी महाराज की वाणी में केवल सिंह जैसी गर्जना ही नहीं थी, उनकी वाणी में अपना प्रभाव जगाने का जादू भी था। जादू ऐसा कि **कृपण को भी दानवीर कर्ण बनने की प्रेरणा देकर परहित में**

उसकी जेब हलकी करा दे। वे यह समझाने में हमेशा सफल होते थे कि ज्यों-ज्यों जेब भारी होगी, त्यों-त्यों चिंता सांपिन बनकर डसती रहेगी और ज्यों-ज्यों जब हलकी होगी, जीवन में आनन्द सागर लहरायेगा। दया करुणा सफलता देगी।"

प्रसंग है कि मरुधर केसरी जी एक बार अटबड़ा गांव में दान पर व्याख्यान दे रहे थे। मुफ्त में किसी को एक इंच भी जमीन न देने वाले **चतरामजी चौधरी,** जो अटबड़ा के सरपंच भी थे, ने अपनी नौ बीघा जमीन कबूतरों के लिये दान में दे दी। गांव के अन्य किसानों को प्रेरणा मिली तो उन्होंने प्रतिज्ञा कर ली कि **गांव की गायें अब बाड़े और फाटक में बन्द नहीं रहेंगी।** इस प्रतिज्ञा के साथ उन्होंने गायों के विचरण के लिये पर्याप्त भूमि दे दी।

जहां तक मेरी सूचना है वे महान जीवदया प्रेमी थे। उन्होंने अपने प्रभाव क्षेत्र में अनेक गौशाला, निर्भय बकराशाला, बंदर, कबूतर के लिए स्थान बनाने की प्रेरणा दी।

इनके साथ ही ये ग्राम सुधार सर्वजाति समन्वय के भी गहरे समर्थक थे। मरुधर केसरी जी के ही अंतेवासी संत लोकमान्य संत श्री रूपचंद जी म. से मेरा भी अच्छा सम्पर्क रहा है। वे उदारमना संगठन प्रेमी थे। इसको भूला नहीं जा सकता। अनेक बार वे श्रमण संघ के संकट मोचक सिद्ध हुए। पूना साधु सम्मेलन के पूर्व ही आपको प्रवर्तक बना दिया गया था। अतः जब आपको महामंत्री पद देने की बारी आयी तो वे उठे और श्रद्धेय श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' को स्वयं से भी योग्य बताते हुए महामंत्री बनाए जाने की अनुशंसा कर दी। ये है श्रमण संघ की आंतरिक शक्ति जिसे भूलना नहीं चाहिये।

●●●

दृष्टि ही नहीं सृष्टि बदल देते थे श्री मरुधर केसरी

ऋद्धि–सिद्धि चमत्कार के लिये चमत्कार दिखाना, चमत्कार दिखाने की के परिणाम से लोगों को चमत्कृत करना तो साधक का पतन है। मदारी, जादूगर और इन्द्रजाली लोगों की वाहवाही तो लूटते हैं पर उनके खुद के जीवन के दुःख में कई चमत्कार नहीं कर पाते।

क्योंकि यह लब्धि तप के आधार पर टिकी है। तप–त्याग और धर्म की परिणति आत्म कल्याण है। तप और धर्म के प्रभाव से अनचाही होनी अनहोनी में और अनहोनी होनी में स्वतः ही बदल जाये, स्वतः ही कोई चमत्कार घट जाय तो यह धर्म के प्रभाव की स्व–स्फूर्त झांकी ही है। संतों के जीवन में अपने आप चमत्कार घटते हैं। **इन चमत्कारों से संत अपनी झोली नहीं भरते अपितु दूसरों के जीवन में धर्म के प्रति अडिग निष्ठा का जागरण करते हैं।**

मरुधर केसरी मुनि श्री मिश्रीमलजी महाराज का जीवन तप–त्याग, जप–आराधना का आदर्श जीवन था। उनका हर पल, हर क्षण पर हित को समर्पित था। कहा भी जाता है कि संत, वृक्ष, पर्वत, सरिता और धरती–इन पांचों की करनी परहित के लिये ही होती है। इसी परहित भावना से अनचाहे ही संत मिश्रीमलजी महाराज के जीवन में घटे चमत्कारों को समेटें तो बहुत बड़ा ग्रंथ बन सकता है। इस औलिया फकीर ने अपने दादा गुरु मुनि मानमलजी महाराज और गुरुदेव मुनि श्री बुधमलजी महाराज के जीवन में अनेक चमत्कार देख कर यह जाना था कि जिनकी आत्मा द्वेष–राग

से रहित निष्कलंक होती है, उसके जीवन में अपने आप चमत्कार घटते हैं। ऐसे चमत्कारों को ही हम नमस्कार करते हैं। मुनि श्री मिश्रीमलजी महाराज ने अपने वैरागी जीवन में छह वर्ष तक जो तप–त्याग किया था उसका परिणाम आपने यह देखा था कि उनके पिता श्री शेषमलजी मेहता की पुत्र ममता समता में बदल गई थी।

एक प्रेरक प्रसंग है कि – सिरियारी ठिकाने के कामदार थे कस्तूरचंद जी। ये महाजनों के बावन गांवों के प्रमुख थे। इनके मन में गुरुदेव मिश्रीमल जी महाराज के प्रति उपेक्षा भाव रहता था। सिरियारी चातुर्मास में इन्होंने गुरुदेव की दैनिक–चर्या का अध्ययन बड़ी बारीकी से किया। परिणाम यह हुआ कि कामदार कस्तूरचंद की उपेक्षा श्रद्धा और बहुमान में बदल गई। खुले मन से उन्होंने अपना खोट गुरुदेव से कहा और उनसे बार बार क्षमा मांगी। गुरुदेव बोले – **"कामदारजी, तुमने मेरा कोई अपराध तो किया ही नहीं, अपितु मुझे तो लाभ ही पहुंचाया है तो फिर क्षमा कैसी? फिर भी मुझे खुशी इस बात की है कि मेरे निरीक्षण से तुम्हारा हृदय तो बदला पर दोष देखते-देखते तुम परगुण देखने लगे। तुम्हारा यह हृदय परिवर्तन निश्चित ही तुम्हारा कल्याण करेगा। इस एक उपलब्धि से मेरा सिरियारी चातुर्मास महक उठा है।"** ●●●

जीव और दया का संबंध

जीवन में जीव की अनंत सत्ता तब तक व्यर्थ है, जब तक दया का भाव ना हो। आत्मा में करुणा ही ऐसा मंगल भाव है जो अनादि निधन है।

विनोदी स्वभाव के गंभीर संतरत्न श्रद्धेय श्री मालव केसरी जी म.

श्रमण संघ के निर्माण में जिन महापुरुषों का महान योगदान रहा है, ऐसे संतरत्नों में **मालव केसरी, जननायक श्रद्धेय गुरुदेव श्री सौभाग्यमल जी म. अपने उपदेश के निरालेपन के लिए बड़े प्रसिद्ध थे।** आपने कहीं कहा था कि "मेरे परम भक्त श्री फकीरचंद जी मेहता एक बार दिल्ली गए, तो वहां घूमते–फिरते हुए उन्होंने एक तोता बेचने वाला देखा। आजादी की लड़ाई का समय था, अतः तोता बेचने वाले ने तोते को सिखा दिया – **"आजादी" - "फ्रीडम" - "स्वतंत्रता"।** तोता यही बोलता। सेठ फकीरचंद को तोता पसंद आया तो 100 रुपये देकर तोता खरीद लिया और वे वापस आ गये। संयोग से उनके घर हमारा आगमन हुआ।

हमने देखा कि तोते का स्वभाव ही पड़ गया कि ज्योंकि कोई व्यक्ति दिखा, रटे हुए शब्द बोल देता – **आजादी, फ्रीडम, स्वतंत्रता!** हमने सुना तो सेठ फकीरचंद से बोले – **'श्रावक जी, आप तो श्रावक हैं और आपकी यही भावना रहती है कि किसी भी आत्मा को बंधन में नहीं रखें। आत्मा तो क्या शरीर को भी बंधन से मुक्त करने की अपनी भावना रहती है और आपने तोते को पिंजरे में बंद कर रखा है! यह श्रावक का आचार नहीं है। अगर यह आजादी की अपेक्षा रखता है तो इसे आजाद कर दो!'**

सेठ फकीरचंद ने हमारी आज्ञा का पालन किया और तोते को पिंजरे से आजाद कर दिया। मगर तोता आदत से लाचार था कि पुनः पिंजरे में आ घुसा। सेठ ने देखा – शायद

पूर्व–जन्म के संस्कार हैं। उसे फिर खाना दिया और सायं को ले जाकर स्टेशन के पास छोड़ आये। तोता तो बंधन को प्रिय मानने लगा था, भला आजाद कैसे रहता? पुनः पिंजरे में आ बैठा। सेठ जी ने तीन दिन तक प्रयास किया पर तोता वहीं का वहीं रहा।

सेठ जी ने सोचा यह बाहर जाने को तैयार नहीं, मात्र इसके शब्दों में ही आजादी दिखती है, आचरण में शून्य। संयोग से कुछ दिनों बाद पुनः हमारा आगमन हुआ। तोते को पिंजरे में देखा तो सेठ से बोले – 'श्रावक जी आपने मेरे आदेश का पालन नहीं किया।' सेठजी बोले – 'भगवन् क्षमा करें। मैं लाचार हूँ। आपके आदेश का कई बार पालन किया पर यह आदत से मजबूर बंधन को ही प्रिय समझ बैठा है। इसके शब्दों में आजादी की भावना है! पर आचरण में शून्य है।' हम संत सेठ का आशय समझ गये।'

यह प्रसंग सुनाकर मालव केसरी ने अपना संदेश देना प्रारंभ किया। आपश्री ने फरमाया कि – "बंधुओं हमारी भी यही स्थिति है। आप रोज दिन में कई बार सुबह प्रतिक्रमण में, फिर प्रवचन में, फिर गुरु वंदन में, फिर शाम को प्रतिक्रमण में प्रार्थना करते हैं – 'महाराज मोक्ष चाहिए, बंधन से मुक्ति जीवन चाहिए। संसार के बंधन से निकलना है।' स्थानक या उपाश्रय में बैठे तो मन में यही भाव पैदा होते हैं, लेकिन जब पुनः संसारी कार्यों में लगते हैं तो इन भावनाओं का अंत हो जाता है। **तोते की तरह चिल्लाते तो हो कि संसार से विरक्त होना है, पर जब विरक्त होने का समय आता है तो पुनः तोते की तरह अपने पिंजरे में जा लौटते हो। कहां तक आपका यह नाटक चलते रहेगा?**

कैसी गजब की प्रेरणा एवं प्रवचन शैली है। धन्य है।

●●●

बाल सखा का प्रश्न! भोले मन की मांग

मैंने प्रथम युवाचार्य परम तत्वज्ञ श्रद्धेय श्री मिश्रीमल जी म.सा. 'मधुकर' की जीवनी में पढ़ा था कि **वे जब छोटे बच्चे थे, तब खेल-खेल में भी साधु होने का स्वप्न रचाएं थे।**

वे गांव के आंगन में बैठकर बखाण (व्याख्यान) देने का अभिनय करते थे और बाल सखा – **"घणी खम्मा" - "घणी खम्मा"** बोलकर उनका उत्साह बढ़ाते थे। एक दिन एक बाल सखा ने भोले मन से प्रश्न उठा लिया कि – **थें बखाण तो दो हो पण पोथी कठे है?**

अभिनयकर्त्ता संत को ये बात ऐसी जमी कि उन्होंने महान श्रमण जीवन अपनाने पर अपना एक ही लक्ष्य रखा कि सतत स्वाध्याय शोध और समाचारी के बिन्दु। इस पर भी सन्तुष्ट नहीं हुए तो 32 आगम पर प्रामाणिक लेखन और सारगर्भित भाष्य।

युवाचार्य श्री एक चलित विश्व विद्यालय या जंगम तीर्थ की भांति संघ समाज को वो देन, वो अवदान देकर गए, जो कालांतर में देवार्धि क्षमाश्रमण जी महाराज ने दिया था।

कल्पना कीजिये बालसखा के प्रश्न पर गुरुदेव श्री मिश्रीमल जी महाराज 'मधुकर' ने हमें आगम साहित्य की महान थाथी ना सौंपी होती और मुनि **हजारीमल स्मृति प्रकाशन संस्थान** ना सौंपा होता तो क्या श्रमण संघ को महासाध्वी उमरावंकंवर जी महाराज 'अर्चना' या डॉ. सुप्रभा जी महाराज जैसी प्रबुद्धा साध्वियों सहित अनंता अनंत स्वाध्यायी आत्माएं प्राप्त होती? कदपि नहीं। वहीं मैं यह जोर

देकर श्रद्धेय श्री मिश्रीमल जी महाराज एंव हमारे यशस्वी महामंत्री रहे श्री सौभाग्य मुनि जी महाराज 'कुमुद' इन दोनों विभूतियों ने श्रमण संघीय समाचारी को आगम प्रमाण से तब रचा श्रमण संघ का गठन तो हो चुका था, मगर एक समाचारी पर पूना सम्मेलन तक कतिपय संशय बने ही हुए थे। द्वितीय पट्टधर आचार्य श्री आनंदऋषि जी म.सा., ने श्रद्धेय श्री कुमुद जी को अहमदनगर बुलाया और लम्बे समय तक व्यापक चर्चा भी की, एक–एक आवश्यक बिन्दु पर चिन्तन चला और **श्रमण संघ की समाचारी कालातीत मार्गदर्शन बन गई।** ●●●

श्रुत! यानि क्या?

पूर्वाचार्यों ने कहा है — "जो सार्थक सुना जाए" वो श्रुत है। श्रुत की यह परिभाषा पंचेन्द्रिय जीव की अपेक्षा से प्रस्तुत की गई है। जो शब्दार्थ प्रधान है, निष्कर्षतः रुढार्थ यह है जो गाथा कह रही है–

सुयं जइवि सव्वसु, सइंदिएसु णो परं।
दाणं गहण वावरो, सव्वत्था पंच मासु य।।

अर्थात् श्रुत, ज्ञान या अज्ञान वैसे तो सभी जीवों में पाया जाता है। लेकिन पांच इंन्द्रियों वाले जीवों में यह लेने और देने का प्रयास सर्वत्र होता है।

स्पष्ट है देखकर, सुनकर, ग्रहण कर पुनः पुनः विमर्श में लाने की क्षमता हर पंचेन्द्रिय में ही है।

संकेत क्या है? सुनो! समझो! और आचार व्यवहार में लाओ। इस प्रकार श्रुत को सार्थक करो। ●●●

शब्दों की सीप! भावों की ज्योति

श्रमण संघ जिस नाम का विस्मरण नहीं कर सकता, **वे थे हमारे जैन दिवाकर श्रद्धेय श्री चौथमल जी म.।** आप वास्तव में जैन दिवाकर थे। जो साहित्य रूपी ज्योति से जैन जगत को जगमगाना चाहते थे। आपने जैन साहित्य में अभिवृद्धि करने वाले एक नहीं अनेक महापुरुषों को तैयार किया।

उदाहरण के लिये श्रद्धेय उपाध्याय श्री प्यारचंद जी महाराज, प्रवर्तक श्री प्रतापमल जी महाराज, श्री रमेश मुनि जी महाराज, उपाध्याय श्री मूल मुनि जी महाराज आदि ने साहित्य के भंडार को समृद्ध किया है।

लेकिन जो मैंने पढ़ा, जाना और शोध किया है, उससे ज्ञात हुआ कि श्रमण संघ के तीन–तीन दिग्गज प्रधानमंत्री श्री आनंदऋषि जी महाराज, मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी महाराज, मालव केसरी श्री सौभाग्यमल जी महाराज अपने समकक्ष मंत्री श्री प्यारचंद जी महाराज की साहित्यिक प्रतिभा की बड़ी सराहना करते थे। वे चाहते थे कि मंत्रीवर श्री प्यारचंद जी श्रमण संघ का साहित्य विभाग संभालें और एक प्रिंटिंग प्रेस हेतु स्थान एवं प्रबंधन की प्रेरणा दें।

श्रद्धेय श्री प्यारचंद जी महाराज ने अपनी साधना अवधि के शेषकाल में इसी को अपना मिशन बना लिया। खूब रचा, लिखा, सम्पादित किया।

मालवा क्षेत्र के घानासुता गांव में जन्में श्री प्यारचंद जी महाराज अत्यंत मृदुभाषी, कोमल स्वभावी विनत विद्वान थे। उनके प्रवचन में एक अपील सदा गूंजती रहती थी कि –

"भावां रे शब्दाँ री भीख!
जो ना दे कांई ले सीख!!"

धुन के धनी श्री प्यारचंद जी महाराज ने उन्हें सौंपे गए दायित्व पर पूर्ण समर्पण के साथ कार्य किया और दानवीर-जनों के सहयोग से 'श्री जिनेन्द्र प्रिंटिंग प्रेस' रतलाम में स्थापित भी हुआ और विपुल साहित्य का निर्माण भी किया।

जिसमें **'निर्ग्रंथ प्रवचन'** ऐसी अनमोल कृति है जिसे जैन दिवाकर जी म. का आशीर्वाद था, तो लेखन सम्पादन का पूरा कार्य उपाध्याय श्री प्यारचंद जी महाराज ने किया।

मुझे स्वयं यह कृति इतनी प्रिय लगी कि इसके पुर्न प्रकाशन का लोभ संवरण नहीं कर सका। मैंने भी ये प्रकाशन कराके आत्म संतोष प्राप्त किया।

धन्य है ऐसे शब्द पुरुषों को जिनके शब्दों की सीप में भावों के मोती बसते हैं।

●●●

साधना और साहित्य एक अंर्तसंबंध

'शील पाहुड' में एक मौक्तिक पंक्ति है— **"सीलं मोक्खस्स सोवाणं"।** अर्थात् शील संरक्षण, संयम मोक्ष का सोपान है। जिसे व्यवहार में सदाचार कहा जाता है। ये सदाचार आएगा कहां से? स्वाध्याय से, स्वाध्याय किसका होगा, सद्साहित्य का। ये एक व्यवहार वृत्त है। अर्थात् जो पढ़ेगा वो स्वयं को गढ़ेगा!

'निशीथ भाष्य' इसे और स्पष्ट कहता है। लिखा है—

"णाणे णाणु वदेसे, अवटर माणो उ अन्नाणो।" अर्थात् जो ज्ञान के अनुसार आचरण नहीं करता, वह ज्ञानी भी अज्ञानी है। **औध निर्युक्ति** तो धर्मकथा, शुभ चर्चा के संदर्भ में क्या कह रही है—

"चरण पडिवत्ति हेउं धम्मकथा"

अर्थात् आचरण की पवित्रता के हेतु भाव प्रक्षालन के हेतु ही धर्मकथा कही व सुनी जाती है। साहित्य शब्द तो स्वयं भी एक परिभाषित शब्द है जिससे चित्त की खिन्नता दूर होकर स्वयं का हित सधता है, वो आलम्बन, वो उपकरण, वो माध्यम साहित्य है।

●●●

जैसा महामंत्री जी महाराज ने देखा और मुझे बताया!

आपने फरमाया कि मैं तब मात्र दो वर्ष का दीक्षित, संत था, मुझे तब साधु सम्मेलन एक अजूबे जैसा था, अतः जब हमें पूज्य गुरुदेव श्री मोतीलाल जी म.सा एवं पूज्य गुरुदेव श्री अम्बालाल जी म.सा. के साथ भादसोड़ा चातुर्मास के बाद सादड़ी जाने का अवसर मिला तो मैं अत्यंत उत्साह में था। मैने तब वहाँ पहुँच कर देखा कि–

विख्यात संत सुशील कुमार जी सम्मेलन प्रारम्भ होने के एक दिन पूर्व ही पहुंचे। उनके स्वागत में भारी भीड देखी गयी। वे उस समय लाउड स्पीकर में बोलते थे। यहां स्वागत के उत्तर में उन्होंने कहा – **"लाउड स्पीकर आप अपनी सुविधा से लगाते हैं। जो अपनी सुविधा के लिये पांडाल बनाने की तरह है। फिर भी यहां हमारे बड़े बुजुर्ग मुनिराज हैं, वे जो भी आदेश देंगें। उनका पालन करूंगा। उनकी इस ऋजुता की चारों तरफ बड़ी प्रशंसा हुई।"**

गुरुकुल भवन में प्रवेश करने के बाद कुछ चमत्कार हुआ कि – **जो साधु संत मात्र अपने घेरे में रहते थे, वहां आकर उदारवादी बन गये! संतों का वहां पारस्परिक मेलमिलाप चालू हो गया। सम्प्रदाय भेद समाप्त-सा हो गया। प्रतिदिन प्रतिनिधि मुनियों की तीन बैठक होती थी- प्रातः, मध्याह्न और सायं प्रतिक्रमण के बाद। सम्प्रदाय प्रमुखों के बीच परस्पर जो ग्रंथियाँ थी, खुलने लगी, परस्पर क्षमायाचना और स्नेह भाव का आदान प्रदान शुरु हो गया।**

सभी सभाओं के गृहस्थ साक्षी के रूप में प्रमुख श्रावक श्री कुन्दनमल जी फिरोदिया सभा भवन में बैठते थे। वे केवल

साक्षी भवन में बैठे रहते किन्तु सन्तों की बहस में उन्होंने कभी भाग नहीं लिया। बहुत गंभीर, अल्पभाषी और बुद्धिमान सुश्रावक थे। सम्मेलन में आचार्य पदों और सम्प्रदायों का विलीनीकरण हो रहा था। **बड़ा कठिन कार्य था कवि अमरचन्द जी म., पूज्य श्री मरुधर केसरी जी म. पूज्य मालव केसरी सौभाग्यमल जी म., पंजाब केसरी प्रेमचन्द जी म., 'श्रमण' श्री फूलचन्द जी म. बहुत सक्रियता से समस्याओं का समाधान करने में लगे हुए थे। सम्मेलन में पदवियों के विसर्जन का कार्य सम्पन्न होने पर सभी ने राहत की सांस ली। अब जो विवादास्पद प्रश्न शेष थे उन पर समाधान होना जरूरी था।**

प्रतिक्रमण–कायोत्सर्ग–पर्युषण–संवत्सरी, लाउड स्पीकर, संघ व्यवस्था आदि विषयों पर क्रमशः चर्चाएं होती रही समाधान भी हुए। जिन विषयों पर सर्वाधिक समय लगा और वातावरण कुछ गरम हुआ और जो प्रश्न अति कठिनाई से समाधान पर पहुंचे उनमें **संवत्सरी-कायोत्सर्ग लाउड स्पीकर, मुख्य अड़चन वाले मुद्दे थे।**

कायोत्सर्ग–प्रतिक्रमण आदि प्रश्न कुछ लम्बी चर्चाओं के बाद सुलझ गये किन्तु **संवत्सरी पर गाड़ी अटक गई तीन दिन संवत्सरी पर संवाद चलते रहे समाधान नहीं बैठ रहा था। अन्ततः कतिपय उदारवादी विचारधारा वाले मुनियों ने इस प्रश्न को सुलझाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया और समाधान हो गया। चारों तरफ हर्ष फैल गया।**

लाउड स्पीकर के प्रश्न पर भी बहुत गर्मागरम चर्चाएं हुई, लम्बी वार्ताएँ चली अन्त में एक मध्यमार्गीय प्रस्ताव सामने आया और यह प्रश्न भी सुलट गया। व्यवस्था के विषय में ज्यादा अड़चने नहीं आई। आचार्य, उपाध्याय, उपाचार्य, प्रधानमंत्री और सोलह मंत्री, एक मंत्री मंडलीय व्यवस्था की स्थापना हुई। जिसे सर्वानुमति से सभी ने स्वीकार कर लिया।

सम्मेलन में सबसे छोटा मुनि मैं था! अतः सभी प्रमुख मुनियों का मुझ पर भरपूर प्यार बरसा। सभी एक छोटे बच्चे की तरह मुझसे आमोद-प्रमोद किया करते। मुझे पकड़कर कोई भी मुनि अपने स्थान पर ले जाते और कुछ न कुछ अच्छा सा खिलाने की कोशिश करते। उन सबके प्यार की निधि को लेकर संतों की याद आती है, तो आज भी मेरा दिल भर आता है। सोचता हूँ उन कृपानिधानों ने कितना कृपामय प्रसाद मुझे दिया।

❖ स्थानकवासी साधु सम्मेलन की सफलता मेरी दृष्टि में

जैसा कि मुझे बताया गया अनेक विषयों पर शास्त्रार्थ वाद-विवाद-खंडन-मंडन हुए, होते रहे, किसी तरह समाधान पर भी पहुंचते रहे। अन्त में व्यवस्था समिति का निर्माण था। वह भी आचार्य, उपाचार्य, प्रधानमंत्री आदि की नियुक्ति और विभिन्न प्रदेशों का कार्य क्षेत्र स्थापित करने सभी पदाधिकारियों के कार्यों दायित्वों का निर्माण करना, प्रतिज्ञा पत्र भरना आदि सारे कार्य कठिनाई से ही सही किन्तु सम्पन्न हो गये। "श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ की भी स्थापना हो गई। सारे विधि विधान पारित हो गये।"

उस समय के ख्यात नाम विद्वान मुनिराज आचार्य आदि में अपने सारे पदों का विसर्जन कर संघ संगठन खड़ा किया। चारों तरफ जय जयकारे हुए। सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में खास करके स्थानकवासी जैनों में हर्ष की लहर दौड़ गई। घर-घर बधाईयां बंटी। चारों तरफ आनन्द का वातावरण छा गया।

साधु सम्मेलन में जो कुछ तय किया गया उनमें मुख्य मुख्य जो बातें थी उन्हें सार्वजनिक रूप से बताया गया। चुने हुए विद्वान संतों ने अपने वक्तव्य दिये। सभी के प्रवचनों में एकता और संगठन का अमृत छलक रहा था। **जहां तक मुझे याद है "मूर्तिपूजक समुदाय के प्रसिद्ध विद्वान अग्रज सन्त श्री पुण्य विजय जी म." भी प्रवचन पट्ट पर आसीन थे। उन्होंने**

जो उद्‌गार प्रकट किये, वे स्थानकवासियों के लिये बहुत गौरवास्पद थे। उन्होंने बहुत कहा किन्तु मुझे इतना ही याद रहा कि "यह दिन मैं मूर्तिपूजक समाज में भी ये देखना चाहता हूँ। स्थानकवासी समाज ने एक महान क्रान्ति समन्वय का सूत्रपात किया है। यह क्रान्ति की मशाल सर्वदा जलती रहनी चाहिये।"

उस ऐतिहासिक रूप से सम्पन्न समारोह के सम्पन्न होने के बाद दूसरे ही दिन अनेक साधु–साध्वी जी के ग्रुप (सिंघाड़े) विहार रत हो गये। **हम श्री मरुधर केसरी जी म.सा. के आग्रह से एक दिन और ठहर कर मेवाड़ की तरफ विहाररत हुए।**

ये संस्मरण हमें श्रमण संघ के आंतरिक आत्मबल का परिचय कराता है। जहाँ त्याग कर संघनिर्माण की खुशी कैसी होती है। वो दिखाई दे रहा था। ये वास्तव में साधुता की शक्ति का परिचय था जहाँ चेष्टा पूर्वक मत भेद भूलाएं गए और एक आवश्यक क्रांति को साकार किया गया। ●●●

मेरी इन्दौर सम्मेलन में हुई चर्चा

सन् 2015 के इन्दौर साधु सम्मेलन में "श्रद्धेय श्री कुमुद जी म." से भेंट हुई, चर्चा हुई। उनका अनुभव बहुत गहरा था, मगर श्रमण संघ में पुनः फैलते सम्प्रदायवाद से वे चिन्तित भी थे, मैं उनके तर्कों से सहमत था।

अतः उपाय पूछा कि क्या हो? तो बोले – **'सतत स्वाध्याय चरित्र और प्रतिभा को निखारेगा।' साधु जब तक स्वयं का निरीक्षण नहीं करेगा, बाहरी फैसला परिवर्तन नहीं कर पाएगा।**

आज यशाकांक्षा वृहद रूप ले रही है। सभी स्वयं को बड़ा और पांव पर खड़ा मानकर अहंकार पोषण कर रहे हैं। ये परिदृश्य बदलना चाहिये। ये महामंत्री जी की पवित्र भावना थी।

●●●

श्रमण संघीय मंत्री स्तरीय सम्मेलन सोजत 1955-56

(नोट : उस समय प्रवर्तक पद मंत्री कहा जाता था)

❖ श्रमण संघ स्थापना

सादड़ी सम्मेलन सम्पन्न करने के बाद जो कार्यक्रम अपूर्ण या शेष रह गए थे, उनकी पूर्ति करने के लिए श्री मरूधर केसरी जी म. ने आचार्यश्री, उपाचार्य श्री, प्रधानमंत्री श्री आनन्दऋषि जी एवं अन्य मंत्रियों के साथ पत्राचार द्वारा विचारों का आदान-प्रदान किया था। अवशिष्ट कार्यों को सम्पादन करने व निर्णीत प्रस्तावों को बल देकर क्रियान्वित करने के लिए प्रधानमंत्री जी को प्रेरित करके मन्त्रीमंडल का अधिवेशन (सम्मेलन) बुलाने का अनुरोध किया। उन्होंने मंत्रीमंडल के अधिवेशन (सम्मेलन) कराने के लिए विविध क्षेत्रों को प्रेरणा दी, लेकिन किसी भी क्षेत्र से मंत्रीमंडल का अधिवेशन अपने क्षेत्र में कराने का आमंत्रण नहीं मिला। तब सुझाव आया कि — **"आपका मारवाड़ में विशेष प्रभाव है, अतः मंत्रीमंडल के अधिवेशन के लिए किसी क्षेत्र को प्रेरणा देकर तैयार करें।" प्रत्युत्तर में श्री मरूधर केसरी जी म. ने निवेदन किया कि यदि समस्त मुनिवरों की स्वीकृति हो तो सोजत में मंत्रीमंडल का अधिवेशन किया जा सकता है।**

इस सम्बन्ध में आचार्य श्री आत्माराम जी म. का प्रत्युत्तर आने पर सोजत संघ से चर्चा की जाएगी।" **यह पत्र पहुँचते ही प्रधानमंत्री श्री आनंदऋषि जी म. ने विश्वासपूर्वक श्री मरुधर केसरी जी को कोई प्रत्युत्तर तो नहीं भिजवाया, बल्कि भरोसे के आधार पर 'जैन प्रकाश' में सुसंवाद रूप में सीधी विज्ञप्ति प्रकाशित करवा दी।**

❖ जैन प्रकाश में छपी विज्ञप्ति

"चातुर्मास समाप्त होते ही अल्प अंतराल में मंत्रीमंडल का अधिवेशन सोजत में होना निश्चित हुआ है। अतः समस्त मंत्री मुनिवर और समितियों के सदस्य मुनिराज आदि चातुर्मास के पश्चात् सोजत नगर की ओर ही विहार करने की कृपा करें! शेष रहे कार्यों का समापन आपकी उपस्थिति में होना आवश्यक है।"

इस विज्ञप्ति को पढ़ते ही सोजत संघ बड़े विस्मय में पड़ गया कि **"सोजत संघ की ओर से यह आमंत्रण किसने दिया? संघ की प्रार्थना के बिना ही प्रधानमंत्री जी म. ने यह घोषणा कैसे प्रकाशित करवा दी?"**

❖ परस्पर विश्वास से बिना मंत्रणा हो गई घोषणा

सादड़ी सम्मेलन का ही यह भरोसा था कि पूज्य संत परस्पर निर्णय ले लिया करते थे। संघ एक्य का उल्लास इतना दृढ़ था कि सम्मेलन स्तर का कार्य भी गहन मंत्रणा के बिना हो जाया करता था।

कारण साफ कि सादड़ी के कुछ निर्णय शेष थे। फिर मरुधर केसरी जी का पत्र व्यवहार, सबके हृदय में उनकी निष्ठा और पुरुषार्थ पर गहरा विश्वास, अतः प्रधानमंत्री श्री आनंदऋषि म. और आचार्य श्री आत्माराम जी म.सा. उनके विश्वस्त संत भी इनके प्रबंधन पर पूरा भरोसा रखते थे।

यही कारण है कि – **विश्वास-विश्वास** में बिना लम्बी मंत्रणा को ये घोषणा हो गई! इसी के आधार पर शिष्टमंडल मरुधर केसरी जी की सेवा में सादड़ी पहुँचा। इस पर मरुधर केसरी जी को सारी स्थिति से अवगत कराया। इस पर गम्भीर विचार करके आपने फरमाया **"प्रिय भाइयों ! मैंने तो यहाँ से प्रधानमंत्री जी को इस आशय की सूचना भेजी थी, कि "आपका प्रत्युत्तर आ जाने पर सोजत संघ से अधिवेशन के**

बारे में विचार-विमर्श किया जाएगा! परन्तु प्रधानमंत्री जी. ने हम पर विश्वास के कारण कोई प्रत्युत्तर न देकर झटपट समाचार-पत्र में यह विज्ञप्ति प्रकाशित करवा दी। खैर, अब घबराने की कोई बात नहीं है। शासनदेव की कृपा से सब कुछ अच्छा ही होगा। चातुर्मास के पश्चात् मेरा विचार सोजत पहुँचने का है। तब वहाँ सोजत संघ से परामर्श करके यथायोग्य कर लिया जाएगा।" गुरुदेव के श्रीमुख से सारी बातें सुनने से सोजत संघ को सारी स्थिति का यथार्थ ज्ञान हुआ। संघ प्रमुखों ने सोजत लौटकर सबको सूचित किया।

● **सोजत में मंत्रीमण्डल–अधिवेशन (सम्मेलन) का चक्र गतिमान :** पूर्व प्रसारित विज्ञप्ति के अनुसार मंत्रीमंडल के अधिवेशन का समय अत्यन्त निकट आता जा रहा था। इसलिए स्वामी **श्री ताराचन्द जी महाराज** ठाणे 6 से सोजत पधारे। अन्य सन्त भी चारों ओर से सोजत सीटी पधारने लगे। श्री मरुधर केसरी जी तथा मंत्री **श्री पुष्कर मुनि जी** ठाणा 5 से धारासणी मालकोसणी भावी होकर पीपाड़ पधारे। वहाँ सहमंत्री **श्री हस्तीमल जी म.** से मिले। वयोवृद्ध स्वामी **श्री पन्नालालजी महाराज** का एक पत्र पीपाड़ से इस आशय का आया कि उचित समझें तो मेरा प्रतिनिधित्व **मुनि श्री लालचन्दजी** को प्रदान कर दें। मैं वृद्धावस्था एवं शारीरिक अस्वस्थता के कारण सोजत पहुँचने में असमर्थ हूँ।" अतः पूज्य गुरुदेव ने ४ दिन पीपाड़ में रह कर वहाँ से विहार कर दिया और सेठजी की रीयां में विराजित मुनि श्री लालचन्द जी को बावड़ी गाँव से सहमंत्री जी को स्वामी श्री पन्नालाल जी महाराज का प्रतिनिधित्व करने का सुसंवाद भिजवा दिया। **इसके बाद सहमंत्री श्री हस्तीमल जी महाराज, स्वामी श्री रावतमलजी महाराज, श्री पुष्कर मुनि जी और मरुधर केसरी जी आदि भूतपूर्व चार सम्प्रदायों के वरिष्ठ सन्त बिलाड़ा में एकत्रित हुए। दो दिन तक चारों के व्याख्यान भी सम्मिलित हुए। वहाँ से विहार करके सहमंत्री जी**

भी अटबडा में श्री प्रधानमंत्री श्री आनंदऋषिजी म. से मिलकर सोजत पधारे। मंत्री श्री पुष्कर मुनि जी आदि भी धरासणी होकर सोजत पधारे।

चंडावल में व्याख्यान की व्यवस्था जम ही रही थी कि सोजत के प्रमुख श्रावक श्री चौपड़ा जी श्री मरुधर केसरी जी की सेवा में उपस्थित हुए और आज ही सोजत पधारने की प्रार्थना की अतः 18 मील लम्बा विहार करके आपश्री उसी दिन सोजत पधार गए। **दूसरे दिन सुबह उपाध्याय कवि श्री अमरचन्द जी म. के सम्मुख स्वागतार्थ पधारे। वहीं आहार- पानी करवाकर विश्राम करवा दिया। दूसरे दिन श्री उपाचार्य श्री गणेशी लाल जी महाराज, प्रधानमंत्री श्री आनंदऋषि जी महाराज, श्री फूलचन्दजी महाराज 'श्रमण' तथा श्री सुशीलकुमार जी आदि सौ सन्तों का स्वागत किया गया।** सभी सन्तों के आहार–पानी तथा आवास की व्यवस्था कोट मोहल्ले के स्थानक में की गई। उसके पश्चात् सुविधापूर्वक सबको पृथक–पृथक स्थानों पर विराजित किया। तदनुसार **पं. मुनि श्री शुक्लचन्दजी महाराज, स्वामी श्री रावतमलजी महाराज, स्वामी श्री ताराचन्दजी महाराज, मुनि श्री लाभचन्दजी, श्री चौथमलजी और श्री मरुधर केसरी जी म. आदि सन्त बड़े स्थानक में मंत्री श्री प्यारचन्दजी महाराज, श्री शेषमलजी महाराज आदि को सिंघवीजी की हवेली में, पूरणमल जी महाराज, श्री समरथमलजी महाराज आदि को शाहजी की पोल में, श्री उपाचार्य श्री जी महाराज, कवि श्री अमरचन्द जी महाराज, व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलालजी महाराज, पंजाब केसरी श्री प्रेमचन्द जी महाराज, सुशीलकुमार जी, प्रधानमंत्री जी एवं सहमंत्री जी आदि 85 सन्तों के आवास की व्यवस्था चौपड़ाजी की धर्मशाला में की गई। मंत्रणास्थल भी चौपड़ा धर्मशाला के बड़े हाल में ही रखा गया। श्रावकों का पंडाल श्री चौपड़ाजी द्वारा बनवाई गई गौशाला के प्रांगण में बनाया गया था।**

इस तरह मंत्री-मण्डलीय मुनि सम्मेलन (अधिवेशन) में कुल 136 सन्त, 142 महासतियाँ और लगभग 25 हजार श्रावक श्राविकागण सम्मिलित हुए। अधिवेशन बड़े ही सुन्दर, सुखद तथा शांत वातावरण में सम्पन्न हुआ। खींचन वाले सन्तों ने भी इस अधिवेशन में मैत्री सम्बन्ध बनाए रखा।

1. <u>तिथि निर्णायक समिति,</u> 2. सचित्ताचित्त निर्णायक समिति एवं 3. ध्वनि विस्तारक यंत्र परामर्श समिति के कार्य की अवधि बढ़ाई गई। सचित्त-अचित्त के विषय में कुछ महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर निर्णय लिए गए। शेष समस्त निर्णय अगले अधिवेशन में प्रस्तुत करने को कहा गया। मंत्री महोदयों को विभिन्न विभागीय अधिकार के बदले अपने-अपने मनोनीत प्रान्त प्रदेश के अधिकार दिये जाने का निर्णय हुआ। उन्हीं के सुपुर्द उक्त प्रदेश या प्रान्त में विचरणकर्ता मुनियों साध्वियों के चातुर्मास, शेषकाल, विचरण, प्रायश्चित एवं अन्य प्रकीर्णक विभागों के अधिकार दिये गये।

प्रान्त मंत्रियों का सीधा सम्बन्ध प्रधानमंत्री व आचार्य से रखा गया। आगम संशोधन हेतु उपाचार्य श्री जी म., उपाध्याय कवि श्री अमरमुनि जी, सहमंत्री श्री हस्तीमल जी स्वामी, पं. समर्थमल जी महाराज और प्रधानमंत्री आन्नदऋषि जी आदि सन्तों को मनोनीत किया गया तथा इस कार्य हेतु पाँच वरिष्ठ सन्तों का आगामी संयुक्त चातुर्मास जोधपुर में करने की स्वीकृति दी गई। इस अधिवेशन के अवसर पर कुछ विरोधियों ने वितण्डावाद फैलाने का प्रयास किया, किन्तु उनकी दाल न गली। संगठन शक्ति के आगे सब बाधा टल गई। मंत्रीमंडल का अधिवेशन सभी दृष्टियों से पूर्ण सफल हुआ।

सभी सन्तों ने अधिवेशन की पूर्णाहुतिवेला में सोजत श्री संघ को उनकी कार्यक्षमताओं और प्रशंसनीय सेवाओं के बदले धन्यवाद दिया। विशेषतः पू. श्री मरूधर केसरी जी म. की कार्यक्षमता, प्रभाव और व्यक्तित्व के कारण अधिवेशन की

सफलता का श्रेय आपको दिया और आभार प्रकट किया। **माघ शुक्ला पूर्णिमा सन् 1955 को सभी संत-सतियों ने अपनी-अपनी मनोनीत दिशा में विहार किया।**

❖ सोजत मंत्री सम्मेलन के अनुभव!

मात्र तीन वर्ष के अंतराल में हुआ यह मंत्री स्तरीय सम्मेलन जिसे सूचना गत गड़बड़ी के आयोजित हुआ था लेकिन संघ शक्ति की मिसाल बन कर सम्पूर्ण हुआ।

इससे एक बात की पुनः पृष्टि हुई कि – श्रमण संघ के प्रति चतुर्विद संघ की जैसी श्रद्धा है वो संघ को अविचल मंगल बनाए रखने की आशा जगाती है।

दूसरी बात आनन–फानन में ही सही अविचल श्रद्धा के कारण श्रमण संघ सुदीर्घ काल कर अपना आध्यात्मिक प्रभाव बनाएं रखने में सफल होगा। आवश्यकता है तो मात्र इतनी कि संघ में संवाद बना रहे। व्यक्तिगत अहम ना बढ़े। क्रिया पर नज़र रखी जाए। स्वाध्याय और चिंतन–मनन सतत होता रहे।

❖ प्रान्तीय महासती सम्मेलन का प्रचार

विक्रम सं. **2012** (सन् **1955**) के चातुर्मास की पूर्णाहुति पर लोकाशाह जयन्ती पर यह विचार–विमर्श किया कि हमारे स्थानकवासी समाज में अब साध्वियों ने शिक्षा एवं शास्त्रीय ठोस अध्ययन के क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति की है। **कई क्षेत्र में साधुओं की अपेक्षा साध्वियों ने काफी धर्म-प्रचार किया है। अतः इस प्रान्त में विचरण करने वाली साध्वियों को सुसंगठित करने की आवश्यकता है।"** इस दृष्टि से **'प्रान्तीय महासती सम्मेलन'** के प्रचारार्थ पं. जीवनलाल जी को भेजा गया। यह तथ्य दर्शाता है कि महासती मंडल की राय भी श्रमण–संघ में महत्व रखती है।

●●●

भीनासर साधु-सम्मेलन
(सन् 1956)

आचार्य श्री गणेशीलाल जी म. उन दिनों थोड़ा अस्वस्थ थे और यह भी चाहते थे कि **एक सम्मेलन आचार्य श्री आत्माराम जी म.सा. के सान्निध्य में उनकी पसंद के क्षेत्र में हो। एक पत्र के द्वारा ये सुझाव भी दे दिया।**

यह संवाद समाज में फैल गया, **लुधियाना के वरिष्ठजन** अवसर पाने को उत्साहित थे। **वे यह भी जानते थे कि आचार्य भगवन् का स्वास्थ्य ठीक नहीं है, मगर सम्मेलन यहां हो जाए तो इतिहास रचा जाएगा।**

इसी बीच एक दिन व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी म., श्री भण्डारी जी म. एवं श्री ज्ञान मुनि जी म. की मंत्रणा हुई। पं. रत्न श्री विमल मुनि जी म. भी पधारे। उपाचार्य जी का स्वास्थ्य भी पूछा गया तो शुभ समाचार आए, तो कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष श्री चम्पालाल जी बांठिया से सम्पर्क हुआ और समस्त परिस्थिति का आंकलन करके यह साधु सम्मेलन 1956 में भीनासर में ही हुआ। इसमें ये कारण निम्न रहे–

❖ आचार्य श्री आत्माराम जी म. का सन्देश

सोजत में मंत्रीमंडल के अधिवेशन में जो निर्णय अपूर्ण थे, उन्हें पूर्ण करने हेतु किसी उपयुक्त क्षेत्र में साधु–सम्मेलन की आवश्यकता प्रतीत हो रही थी। **आचार्य सम्राट् श्री आत्मारामजी महाराज इसके लिए चिन्तित थे। आचार्य सम्राट् ने इसके लिए उपाचार्य श्री, प्रधानमंत्री जी, तथा अन्य मंत्रीमंडल को विचार-विमर्श कर संदेश भेजा। सबकी राय रही कि इस बार तो भीनासर में साधु सम्मेलन का आयोजन रखा जाए।** उन्हीं दिनों पंजाब केसरी प्रान्त मन्त्री श्री प्रेमचन्दजी महाराज भी वहाँ

पधार गये। उसी दौरान आचार्य सम्राट् के द्वारा आगामी भीनासर साधु–सम्मेलन के सम्बन्ध में पूज्य श्री मरुधर केसरी जी से विचार–विमर्श करने हेतु बाबू रामजीभाई तथा लाला लक्ष्मणदास जी के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल आया। शिष्टमंडल ने भीनासर सम्मेलन की संभावनाओं के तथ्य प्रस्तुत किये और पूज्य गुरुदेव से सम्मेलन की तिथि के सम्बन्ध में पूछा। आपश्री ने आचार्य सम्राट् की सेवा में यह निवेदन करवा दिया कि **भीनासर में साधु-सम्मेलन चैत्र कृष्ण 3 के बजाय फाल्गुण कृष्ण 3 को ही उचित एवं संभव हो सकेगा। आपश्री आज्ञा प्रदान करें। शिष्ट मंडल आपश्री का सन्देश लेकर लौट गया।**

उसके पश्चात् आचार्य सम्राट् द्वारा भीनासर साधु-सम्मेलन की तिथि के सम्बन्ध में चैत्र शुक्ला 1 संवत् 2013 की घोषणा की। सभी मंत्री मुनिवरों एवं सन्तों के चरण उसी ओर बढ़ने लगे।

❖ प्रधानमंत्री मुनिराज से बातचीत एवं सहविहार

पौष कृष्णा 11 को श्री मरूधर केसरी जी म. प्रधानमंत्री श्री आनंदऋषि जी म. के साथ विहार करके जालिया पधारे। वहाँ रात्रि व्याख्यान के पश्चात् लगभग तीन घण्टे तक **प्रधानमंत्री जी महाराज से आगामी भीनासर साधु-सम्मेलन के विविध पहलुओं पर गहराई से उन्मुक्त हृदय से विचार- विनिमय हुआ।** इसके पश्चात् जेवाजा कोटड़ा, बर, बरांटिया आदि क्षेत्रों को पावन करते हुए निम्बाज पधारे। यहाँ प्रधानमंत्री महाराज व आपका भव्य स्वागत हुआ। रावले के सामने खुले मैदान में दोनों महानुभावों का सार्वजनिक व्याख्यान हुआ। उसके पश्चात् आप दोनों जयतारण पधारे, वहाँ भी प्रधानमंत्री जी महाराज के साथ आपका व्याख्यान हुआ। इन सभी क्षेत्रों में आप दोनों महानुभावों में संघ ऐक्य के सम्बन्ध में विचारचर्चा होती रहती थी।

❖ भीनासर साधु सम्मेलन के पथ पर

विवरण पत्रों एवं पत्र–पत्रिकाओं के आधार से कहा जा सकता है कि संतों का विहार जयतारण से राणीवाल, निम्बोल, बलूंदा, आनन्दपुर कालू, फालका, डिगरना, कुरडांया, गगराना, मेड़तारोड (फलोधी–पार्श्वनाथ) लांबा, देशवाल एवं खजवाना आदि होते हुए हुआ। खजवाने में मुनिश्री लालचन्दजी का पत्र शीघ्रातिशीघ्र नागौर पधारने का आया, उसी दिन स्वामी श्री हजारीमल जी का सन्देश कुचेरा पधारने का मिला। किन्तु अब कुचेरा वापिस लौटकर जाने का समय नहीं था। अतः आपश्री मारवाड़ मूंडवा होकर सीधे नागौर पहुँचे। सूचना मिलते ही स्थानीय श्रावक–श्राविकाएं तथा स्वामी श्री चांदमल जी महाराज तीन सन्तों के साथ सुलपी दरवाजे के बाहर स्वागतार्थ आए। त्रिपोलिया होकर पूरे बाजार को पार करके स्वागत–सत्कार के साथ संतों ने नगर प्रवेश किया और **'श्री जयमल्ल जैन श्रमणोपासक भवन' में विराजे। इधर नागौर संघ के स्वयं सेवक भीनासर साधु-सम्मेलन में पधारने वाले सन्तों के स्वागतार्थ तैनात थे। पूज्य श्री मरुधर केसरी के साथ 4 स्वयं सेवक साथ जाने-आने के लिए नियुक्त कर दिये गए। वहीं प्रधानमंत्री श्री आनंदऋषि जी महाराज, सहमंत्री श्री प्यारचन्द जी महाराज, श्री छोगालाल जी महाराज आदि संत ठाणे 30 से और सतियाँ ठाणे 35 से मिलन हुआ। वहाँ नोखामंडी, बीकानेर एवं जोधपुर के श्रावक दर्शनार्थ आये। वे यह सन्देश लेकर आये कि कविश्री अमरचन्द जी महाराज, श्रीमदनलाल जी महाराज, श्री हजारीमलजी महाराज, श्री सुशीलकुमार जी एवं श्री सौभाग्यमलजी महाराज आदि संत शीघ्र ही नौखामण्डी पधारे, अन्यथा आप अपना प्रतिनिधित्व (प्रोक्सी) भिजवा दें, ताकि विचार-विमर्श करने में सुविधा रहे।**

वहाँ पहुँचते ही उपाचार्य श्री जी और प्रधानमंत्री जी आदि भी पधार गए। माघ शुक्ला 2 सोमवार 1956 को 25 ठाणे

से **'जैन जवाहर भवन'** में विराजमान हुए। दूसरे दिन और सन्त–सतियों का पदार्पण हुआ। अतः कुल मिलाकर 65 सन्त एकत्र हो गये थे, करीब 35 सतियाँ भी पधार गई थीं। व्याख्यान क्रमशः सभी सन्त फरमाते थे। पं. समर्थमल जी स्वामी भी पधार गये। यहाँ सन्तों की परस्पर विचारगोष्ठी हुई व **दण्डविधि** का भी निर्णय हुआ।

भव्य स्वागत के साथ संत मंडल का देशनोक में पदार्पण हुआ। यहाँ लगभग 67 सन्त और 80 सतियाँ एकत्रित हो गई थीं। यहाँ बीकानेर से श्रावक-श्राविका वर्ग भी दर्शनार्थ आता जाता रहा।

कुछ बातों के बारे में खुलकर चर्चा हुई। देशनोक से सभी संत उदयरामसर होकर गंगाशहर– भीनासर पधारे। यहाँ आपकी सेवा में मुनि आईदान जी नियुक्त थे। यहाँ करीब 91 सन्त और 90 सतियाँ पधार गई थीं। यहीं पर दो दिन विराज कर फाल्गुन शुक्ला 5 को बड़े भव्य समारोह के साथ 4–4 सन्त–सतियों की पंक्ति में मुनि मंडल ने गोगागेट से बीकानेर नगर में प्रवेश किया। दोनों ओर असंख्य जन–समुदाय सन्त–समाज के स्वागतार्थ उपस्थित था।

बीकानेर की पंचरंगी पोशाकों में सजी हुई बीकानेरी जनता अपने आदरणीय गुरुजनों का स्वागत कर अपार हर्ष का अनुभव कर रही थी। नगर में जहाँ देखो वहीं, आबालवृद्ध महिला–पुरुष, सबके मुँह पर एक मात्र यही चर्चा थी कि – **"सन्तों का ऐसा भव्य समुदाय और इतना स्वागत इससे पूर्व हमने कभी नहीं देखा।" मुख्य-मुख्य बाजारों से होती हुई शोभा यात्र सेठियाजी की कोटड़ी के पास आकर रुकी। सभी सन्तों ने जय-जयकार के साथ कोटड़ी में प्रवेश किया। शोभायात्रा व्याख्यान सभा में परिणित हो गई। समस्त सन्त समुदाय ने पट्टे पर विराजकर, मंगल पाठ सुनाया, तत्पश्चात् कुछ प्रासंगिक प्रवचन देकर धर्म सभा का विसर्जन किया।** फिर

सभी संतों को सुविधानुकूल ठहराया गया। श्री हस्तीमल जी महाराज, श्री मरुधर केसरी जी महाराज, श्री सौभाग्यमल जी म. श्रीचांद मुनि जी महाराज, श्री सुशीलकुमार जी म. और श्री छोगालाल जी महाराज आदि सन्त सेठियाजी की हवेली में विराजे, अन्य संत अनुकूल स्थानों पर विराजमान हो गये।

❖ सर्वप्रथम सम्मेलन सम्बन्धी विचार-विमर्श

बीकानेर में एकत्रित सन्तों ने सम्मेलन के संबंध में विचार विमर्श करना शुरू कर दिया। समाचारी सम्बन्धी अनेक मुद्दों पर पुनः चर्चाएं उठीं। वे चर्चाएं अनिर्णीत ही रहीं। परिस्थितियों की विषमता, साम्प्रदायिकता राग–द्वेष, ईर्ष्या आदि का उन्मुक्त प्रभाव परिलक्षित हो रहा था इसलिए बीकानेर में अधिक कार्य नहीं हो सका। कुछ ही दिनों बाद कवि श्री अमरचन्द जी महाराज, श्री मदनलालजी महाराज, श्री हजारीमल जी महाराज, स्वामी श्री रावतमल जी महाराज, श्री फूलचन्द जी महाराज आदि सन्त भी यहाँ पधार गये। इस प्रकार कुल सन्त 136 ठाणे और सतियाँ 142 ठाणे से एकत्रित हो गये थे। इनके आने पर यहाँ के वातावरण में अनुकूलता होने लगी।

श्री मरुधर केसरी जी म. सब सन्तों से पहले भीनासर में संतों की आवास व्यवस्था हेतु फाल्गुन सुदी 15 को चार ठाणे से बीकानेर से भीनासर पधार गए व यहाँ सन्तों के आवास के लिए आपने चार स्थान नियत किये गए थे। जैन कॉन्फ्रेंस के तत्कालीन अध्यक्ष चम्पालाल जी बांठिया का बाग, कन्याशाला, लूणियों की कोटड़ी और आंचलियों की कोटड़ी। आपने सभी सन्तों की यथायोग्य आवास व्यवस्था में सन्तों के नामपट्ट अंकित करवा कर लगवा दिये। चैत्र-कृष्णा 1 को सभी सन्तों ने चार-चार की लाइन में पंक्तिबद्ध होकर बीकानेर से भीनासर की ओर विहार किया। साथ में करीब 15 हजार श्रावक–श्राविकागण सेवा कर रहे थे। सभी सन्तों ने उत्साह, उल्लास और श्रावकवर्ग की श्रद्धाभक्ति के साथ भीनासर में प्रवेश किया।

वहाँ पूर्वनिश्चित आवास– स्थान के अनुसार औषधालय का कमरा नं. 1 में मंत्री श्री फूलचन्द जी म. 'श्रमण' ठा. 4, कमरा नं. 2 में स्वामी श्रीचांदमल जी और श्री मरुधर केसरीजी म. ठाणे 7 के पास ही के हाल में मंत्री पं. शुक्लचन्द जी म. ठा. 10, द्वार के पास वाले कमरे में उपाचार्य जी म., कन्याशाला के बांयें मोड़ के कमरे में श्री हस्तीमल जी म. के दाहिने कमरे में, प्रधानमंत्री श्री आनन्द ऋषि जी म. अन्दर के बंगले में, ऊपर के खण्ड में कवि श्री अमरचन्द जी महाराज एवं व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी महाराज, नीचे के भवन में श्री रामकुमार जी महाराज, श्री शान्ति मुनि जी महाराज साथ ही बने हुए मोटर गैरेज व लूणियाँ की कोटड़ी में दिवाकरीय सन्त समुदाय तथा श्री छोगालाल जी म. श्री सौभाग्यमल जी म., श्री जीवराज जी म. आदि सन्तों को आंचलियों की कोटड़ी में बांई तरफ स्वामी श्री हजारीमल जी महाराज, श्री फतहचन्द जी महाराज एवं स्वामी श्री रावतमल जी महाराज आदि ठा. 9 और दाहिनी तरफ श्री प्रेमचंद जी महाराज, श्री ज्ञानमुनि जी मुनि सुशील कुमार जी आदि सन्तों की आवास–व्यवस्था की गई थी।

इसके अतिरिक्त उपाश्रय, स्थानक, बोथरों की कोटड़ी तथा महादेवजी के मन्दिर में सभी समागत सत्तियों का आवास–स्थान रखा गया। सामने ही सम्मेलन का विशाल नवनिर्मित पंडाल था। सम्मेलन में दर्शनार्थी श्रावक–श्राविका भी लगभग 35 हजार की संख्या में एकत्रित हो गए थे। जिनमें अधिकांश मारवाड़ी लोग ही थे। कुछ पंजाबी श्रावक भी उत्साहपूर्वक संत दर्शन हेतु बीकानेर पधारे थे।

❖ सम्मेलन का सभा सम्बन्धी आयोजन

बांठिया भवन के बड़े हाल में मुनिवरों की परिषद् राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस (गोलमेज परिषद्) की तरह प्रतिदिन प्रातः और मध्यान्ह दो बार होती थी। **श्रमण संघीय समस्त मुनिराजों के 51 प्रतिनिधियों में से 42 सम्मेलन में उपस्थित थे।** प्रतिनिधि

मुनिवरों की परिषद् के साथ दर्शक सन्त–सती भी बैठते थे। **परिषद् में उपाचार्यश्री गणेशीलाल जी म एवं शान्तिरक्षक व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी म. चुने गए थे।** इन्हीं की आज्ञानुसार केसर बहन झवेरी, धीरजभाई तुरखिया और लालचन्द जी मुणोत भी दर्शक मुनिवरों की परिषद् में बैठते थे। परिषद् के प्रवक्ता मुनिश्री आईदान जी थे और समस्त प्रस्तावक थे मरुधर केसरी जी महाराज।

❖ संगठन को छिन्न-भिन्न करने का प्रयत्न विफल

सादड़ी और सोजत सम्मेलन के बाद कुछ लोगों ने श्रमणसंघ के संगठन को छिन्न–भिन्न करने का प्रयत्न शुरू कर दिया था। आश्चर्य तो इस बात का था कि कुछ लोग श्रमण संघ में रह कर भी अन्दर ही अन्दर उसे तोड़ने की कोशिश कर रहे थे। **भीनासर सम्मेलन में ध्वनिवर्द्धक यंत्र प्रयोग के सम्बन्ध में रस्साकस्सी चल रही थी।** यदि उपाचार्यश्री जी महाराज और श्री मरुधर केसरीजी म. की उदारता को बल न मिला होता तो श्रमण संघ सम्भवतः तभी दो भागों में बंट जाता। यद्यपि ध्वनिवर्द्धक यंत्र के प्रयोग के विषय में संशोधनात्मक निर्णय किया गया था, फिर भी कुछ क्षेत्र विशेष के संत व श्रावक उत्तेजना बनाए हुए थे।

श्रमणसंघ में भी कुछ लोग अस्थिरमति थे। जो संघहित की हर बात पर दोनों ओर लुढ़क जाते थे। बाहर में वे लोग संघहित का चोगा पहने रहते थे, किन्तु अन्दर में फूट की दरारें डालने में चूकते नहीं थे। अगर ध्वनिवर्द्धक यन्त्र के विषय में स्थिति पर नियंत्रण न किया जाता तो श्रमण संघ के दो टुकड़े होते देर न लगती। विरोधी लोग संघ को नष्ट-भ्रष्ट करने पर तुले हुये थे, लेकिन महान् परिश्रम और अनेक कुर्बानियों के बाद बने हुए संघ-संघटन को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए अनेकों महात्मा सदा प्रयत्नशील थे। यही कारण कि ध्वनिवर्द्धक यन्त्र-प्रयोग के संबंध में भी आपने अन्त

में दोनों पक्षों में समाधान करवा दिया। इस दक्षता एवं सभा-संचालन चातुर्य के कारण ही श्री मरुधर केसरी जी म. संघठन की रक्षा कर सके। सभी सन्त लोग आपको नेता एवं श्रमण संघ का सूत्रधार कहने लगे थे।

❖ जैन कॉन्फ्रेंस पर भी संकट आया

उधर स्था. जैन कॉन्फ्रेंस के अधिवेशन में भी ध्वनिवर्द्धक यन्त्र आदि कुछ बातों को लेकर पंजाबी मारवाड़ी आदि में बड़ा हंगामा मचा। परिस्थिति यहाँ तक बिगड़ गई कि एक बार तो मारपीट होने तक की नौबत आ गई थी। लोगों ने प्रतिनिधि मुनिमण्डल की सेवा में उपस्थित होकर सारा वृत्तान्त निवेदन किया। यह सुनते ही श्री मरुधर केसरी जी म. घटनास्थल पर पधारे और लगभग 20 हजार के जनसमुदाय को शांत किया। **ध्वनिवर्द्धक यन्त्र-प्रयोग के लिए जो सर्व समाधानकारक सही प्रस्ताव बना था, उस सम्बन्ध में समझाया। इस यथार्थ प्रस्ताव को सुनने से सारा विक्षुब्ध वातावरण एकदम शान्त हो गया।** कॉन्फ्रेंस के नेताओं को भी स्थिति पर पूर्ण नियंत्रण हुए देख कर बरबस कहना पड़ा – "महाराज श्री आज तो आपने हमारी प्रतिष्ठा बचा ली। अन्यथा, संघ में विघटन होने का पूरा खतरा था। कॉन्फ्रेंस को भी कुछ लोग छिन्न–भिन्न करने को उतारू हो रहे थे।" इस प्रकार आपने विघटन–विशारदों की चाल न चलने दी। **श्रमण संघ की ही नहीं जैन कॉन्फ्रेंस की नैया को भी भंवर में डूबने से बचा लिया।**

भीनासर साधु सम्मेलन : प्रस्ताव

❖ सचित्ताचित्त सम्बंधी निर्णय

भीनासर सम्मेलन, सोजत मन्त्रीमण्डल–अधिवेशन में शेष रह गए कार्यों की पूर्ति के लिए था। इसी उद्देश्य से इस सम्मेलन में सचित्ताचित्त–सम्बन्धी समस्त विवादास्पद प्रश्नों का निर्णय लिया गया। शास्त्रीय अवधारणा के साथ युगानुरूप आवश्यकता को ध्यान में रखकर समाधान निकाला गया।

❖ संवत्सरी निर्णय

तिथिनिर्णायक समिति के कुछ विवादग्रस्त मसले हल न हो सके। इसलिए पूर्वोक्त समिति के बदले पुनः संवत्सरी निर्णय समिति का गठन किया गया। इसके १७ मुनि सदस्य निर्वाचित हुए। इस समिति के संयोजक पूज्य मरुधर केसरीजी म. बनाए गए। ध्वनिवर्द्धक यन्त्र के प्रयोग के सम्बन्ध में संशोधनात्मक निर्णय हो गया।

❖ उपाध्याय पद प्रतिष्ठापना

चार वरिष्ठ मुनिवरों को 'उपाध्याय' पद से विभूषित किया गया। जैसे – कवि श्री अमरचन्द जी महाराज, सहमन्त्री श्री हस्तीमल जी महाराज, प्रधानमंत्री श्री आनंदऋषि जी महाराज। इन चारों को उपाध्याय बनाया गया। प्रधानमंत्री पद पर व्याख्यानवाचस्पति श्री मदनलाल जी महाराज नियुक्त किये गए। अन्य प्रान्तीय मन्त्रियों का पद यथावत रहा।

❖ जैन जगत पर प्रभाव

भीनासर सम्मेलन की प्रतिक्रिया सर्वप्रथम तेरापंथ संघ पर पड़ी, और श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समाज पर भी इसका सुदीर्घ प्रभाव हुआ। सादड़ी सम्मेलन में श्रमणसंघ बनने के बाद भूतपूर्व सम्प्रदाय, भूतपूर्व पद, भूतपूर्व कुछ परम्पराएं बदल गई। इनके बदलने के बाद सन्तों का मानस भी बदला है। पहले जहाँ विभिन्न उपसम्प्रदाय के सन्तों में छोटी–छोटी बातों पर परस्पर दुराव, अलगाव, ईर्ष्या और विद्वेष की भावना को बल दिया जाता था। वहाँ अब श्रमण संघ बनने के बाद एक दूसरे के प्रति सौहार्द, विनय, स्नेह, सेवाभाव एवं सहयोग भाव में बहुत अंशों में वृद्धि हुई। **यही सादड़ी सम्मेलन से लेकर भीनासर सम्मेलन तक की फलश्रुति है। भीनासर सम्मेलन के प्रारम्भ का वातावरण विषम होने पर भी उसका अन्त सुखद एवं सजीव वातावरण में हुआ।**

चैत्र शुक्ला 11 को भीनासर सम्मेलन का कार्य सानन्द सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के समापन के समय गंगाशहर – भीनासर एवं बीकानेर के श्री संघों को धन्यवाद दिया गया है कि उनके संयुक्त प्रयत्नों से सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हो चुका है। सम्मेलन में जिन-जिन मुनिवरों ने जी तोड़ प्रयत्न किया है, उन सबको धन्यवाद दिया गया एवं उनके प्रति आभार व्यक्त किया गया। चैत्र शुक्ला 11 द्वितीय को सभी सन्त अपने-अपने दल सहित एक-एक करके विदा हुए।

●●●

संघ का है सौभाग्य...

श्रमण संघ के हर निश्चय में
साहस सदा काम आया,
जिसने किया कोई अनहोना
वो ही आखिर पछताया।
संघ का है सौभाग्य कि
बाजी हरेक बार खुद ही पलटी,
धुंध दिखाई दी तो दो घड़ी
उसी से उजियाला छाया।।

अनेक सम्मेलनों के पश्चात श्रमण संघीय स्थिति को सुदृढ़ रखने का सजग प्रयास

भीनासर सम्मेलन के बावजूद भी श्रमण संघ में कुछ साधुओं के शिथिलाचार के मामले पूरी तरह से निपटे नहीं थे। अतः संघ की स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए श्री मरुधर केसरी जी ने आचार्यश्री, अन्य मंत्रीगण, उपाध्यायगण एवं कॉन्फ्रेंस आदि के साथ सन्तोषजनक रूप से पत्राचार किया।

सर्वानुमति बनाने के सर्वत्र प्रयास प्रारंभ हुए जैसा कि **उत्तराध्यय सूत्र** में श्रमण भगवा महावीर का उपदेश है कि –

मणी साहसिओ भीमो दृट्ठसो परिधावई
तं सम्मं तु निगिण्हामि, धम्मसिकरवाई कन्थगं।।

अर्थात, **"मन ही वह दुःसाहसी रौद्ध और दुष्ट अश्व है, जो चारों और दौडता है। मैं उसका संस्कार सम्पन्न, उच्चकुलीन रुचि अनुसार सुधारे हुए अश्व की भाँति धर्म शिक्षा द्वारा नियंत्रित संयमित करता हूँ।"** भगवान की इसी आज्ञानुसार सभी को चेताया गया, कुछ कड़े संदेश भी दिए गए। यह भी बताया गया कि आप सभी के तप त्याग से श्रमण संघ बना है, अतः अपने कार्य कर्तव्य का स्मरण रख कर व्यवहार करें।"

इसके साथ ही श्रमण संघ की तत्कालीन परिस्थिति पर भी ध्यान दिया गया। क्योंकि श्रमण संघ के प्रथम आचार्य श्री आत्मारामजी महाराज को सादड़ी में सम्पन्न बृहत्साधु-सम्मेलन में सर्व सम्मति से विक्रम सम्वत् 2009 में आचार्य पद प्रदान किया गया था। तब से लेकर अंत तक आचार्य श्री उस पद को पूर्णतया निभा रहे थे।

वयोवृद्ध आचार्य भगवन ने दूरस्थ होते हुए भी अनेक संकटों और झंझावातों के समय भी श्रमण संघ की डगमगाती नैया को आपश्री के अमूल्य मार्गदर्शन का सहारा मिला था। जिससे श्रमण संघ की नैया सुरक्षित रही और संकटों के महासागर को पार कर सकी। यद्यपि इस भगीरथ कार्य में अनेक मुनिवरों का भी पूर्ण सक्रिय सहयोग मिला लेकिन दुर्भाग्य से श्रमण संघ पर आपका वरदहस्त केवल 10 वर्ष तक ही रहा तथा वि.सं. 2019 में कैंसर रोग ने आपको चिरनिद्रा में सुला दिया और श्रमण संघ आपकी छत्रछाया से रहित हो गया।

यह क्षति श्रमण संघ के यशस्वी इतिहास में बहुत बड़ी रहीं और यह आवश्यकता अनुभव की जाने लगी कि दूसरे पट्टधर का चयन जितना जल्दी हो जाएं उतना ही उत्तम हो गया।

इस बात को भी स्वीकारा गया कि नेतृत्व के अभाव में स्खलना होना, प्रमाद का प्रभाव बढ़ना स्वाभाविक है।

❖ जैन कॉन्फ्रेंस के तत्कालीन नेतृत्व का सामयिक प्रयास

श्रद्धेय आचार्य श्री के देहावसान के पश्चात् यह समस्या श्रमण संघीय अधिकारियों के समक्ष पुनः उठ खड़ी हुई कि अब नवीन आचार्य किसे बनाया जाएं? अ.भा. स्था. जैन कॉन्फ्रेंस ने श्रमण संघीय समस्त अधिकारी मुनियों से इस संबंध में विचार–विमर्श किया। अनेक स्थानों पर शिष्टमण्डल भी भेजे गये। फलस्वरूप अनेक सुझाव भी आये। **कॉन्फ्रेंस ने आचार्य पद का निर्णय करने हेतु बम्बई में अपनी जनरल कमेटी की मीटिंग बुलवाई। उस समय कॉन्फ्रेंस के नेताओं ने समस्त वरिष्ठ सन्तों से विचार विनियम के पश्चात् तत्कालीन उपाध्याय श्री आनन्दऋषि जी महाराज का नाम सुझाया।** इस पृष्ठभूमि में पूज्यश्री मरुधर केसरी जी एवं अन्याय मन्त्रियों ने अपनी मीटिंग करके अपना निर्णय भी लिखित रूप में दे दिया – **"श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के आद्य**

आचार्य आगम रत्नाकर पूज्य श्री आत्माराम जी म. के स्वर्गारोहण से रिक्त आचार्यपद की पूर्ति के लिए श्रमण संघीय विधान की धारा न. 3 के अनुसार मंत्रीमंडल दीर्घ विचार– विमर्श के पश्चात् निम्न निर्णय करता है कि – "संघ के आद्य प्रधानमंत्री, शान्त स्वभावी, महान् अनुभवी श्रद्धेय पण्डित प्रवर उपाध्याय श्री आनन्दऋषि जी महाराज साहब के व्यक्तित्व पर संघ की पूर्ण श्रद्धा है। आपकी संघ-संचालन पद्धति से मंत्रीमंडल को विश्वास है कि श्रमण संघ आपके नेतत्व में भली-भांति फूले-फलेगा।"

❖ सर्व सम्मति से बने आचार्य श्री आनंदऋषि जी म.

इस प्रकार मन्त्रीगण एवं उपाध्याय मंडल के प्रयत्नों से **आचार्य आनन्दऋषि म. का नाम संघ के द्वितीय पाट पर आचार्य पद लिए घोषित हुआ।** इस शिखर सम्मेलन की तिथि निश्चित की गई – वि.सं. 2020 फाल्गुन शुक्ला तृतीया। जो सर्वप्रकार से फलदायी रहा। राष्ट्रसंत आचार्य श्री आनंदऋषि जी म.सा. की संगठनात्मक सफलता के सन्दर्भ में उपाध्याय श्री प्रवीणऋषि जी ने जैसा लिखा है कि – "पूज्य गुरुदेव संघ और संगठन के हिमायती थे। गुरुदेव सबसे पहले महाराष्ट्र के संतों को एक धारा में लाये और उन्हें संगठित किया। संगठन करने के बावजूद उन्होंने पद की कोई कामना नहीं की। गुरुदेव ने जो भी कार्य किये, विनय और समर्पण के साथ किये, उन्होंने बड़प्पन नहीं कभी जताया।"

गुरुदेव फरमाते थे कि **"आचार्य कोई भी बने, संघ एक रहना चाहिये, समाज अखण्ड रहना चाहिये। समाज संगठित रहेगा तो सबका गौरव बढ़ेगा। उन्होंने संघ और समाज में प्रेम के महकते उद्यान लगाये।"**

गुरुदेव ने संघ को गहराई से संभाला। बहुत आचार्य हुए स्थानकवासी समाज में, बहुत संत हुए जिन्होंने कल्याणकारी कार्य किये लेकिन व्यवस्था निर्माण करने वाले आचार्य केवल एक

ही हुए। चाहे वो संगठन की बात हो, चाहे वो तिलोक रत्न पुस्तकालय की बात हो, चाहे साधु–साध्वी के शिक्षण की व्यवस्था हो। उन्होंने ये प्रयास किया कि कार्य निरन्तर चलते रहें।

गुरूदेव को संघ का संगठन करने में बहुत असफलताएं भी मिलीं। जो विरोध हुआ वह अकल्पनीय था। लोगों ने उन्हें बहुत सुनाया लेकिन उन्होंने संगठन के कार्य को छोड़ा नहीं। गुरुदेव ने संघ को तराशा। **उन्होंने हमेशा स्वयं के पद और कद से संघ को बड़ा माना। गुरुदेव के लिए संघ और संघीय एकता का महत्त्व था। आपके लिए संघ और समाज बड़ा था, व्यक्ति नहीं।**

एक ही सपना था गुरूदेव का – "एकता बनाये रखना, जोड़े रखना। एक-एक मोती को पिरोने के लिए उन्होंने कड़ी मेहनत की।" अनेकों अवरोधों के बाद भी आपने संघ-संचालन में दूरदर्शिता प्रकट की।

आपने सदैव कहा कि **चतुर्विध संघ परमात्मा का बनाया हुआ तीर्थ है और जो परमात्मा के बनाये तीर्थ को तोड़ता है वह परमात्मा का भक्त नहीं हो सकता।** दिवाकर चौथमल जी म. सा., पू. प्यारचंद जी म.सा., पू. अमरमुनि जी म.सा., पू. गणेशीलाल जी म.सा., पू. मधुकर मुनि जी म.सा., मरुधर केसरी जी, सभी संत इसी एक ही लक्ष्य को लेकर चले थे कि **श्रमण संघ को जोड़ना है।**

इसके विपरीत कई बड़ी हस्तियां अपनी सत्ता–महत्ता की अनुभूति से मुक्त नहीं हो पा रही थी। वे असहमति टोका टोकी या व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग विवाद पैदा करने में रस लेती रही तो कालांतर में श्रमण संघ से पृथक होकर पुनः अपने–अपने को पुष्ट करने में लग गई। ये सभी महान आत्माएं व्यक्तित्व और कृतित्व में कहीं कम नहीं थे।

●●●

अजमेर साधु सम्मेलन (द्वितीय) (सन् 1964)

❖ शिखर सम्मेलन के लिये अजमेर पदार्पण

अजमेर संघ ने शिखर सम्मेलन का बीड़ा तो उठा लिया, लेकिन अजमेर संघ उस समय तीन पार्टियों में विभाजित था – **एक लाखन-कोटड़ी पंडाल का श्रावकसंघ, दूसरा मदारगेट का संघ, और तीसरा कल्याणमलजी वैद का ग्रुप** – जो मकान को लेकर मतभेदग्रस्त था। जब तक ये तीनों गुट एकजुट व एकमत होकर एकत्रित एवं संगठित नहीं हो जाते हैं, तब तक संघ की शक्ति बिखरी रहेगी। बिखरी हुई शक्ति से शिखर सम्मेलन जैसा भगीरथ कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न नहीं हो सकता।

अतः पू. श्री मरूधर केसरी जी म. ने शीर्ष संतों से परामर्श कर आखिर अजमेर संघ को कहा – **"या तो आप अपना संघ, जो तीन गुटों में विभक्त हो रहा है, एकजुट कर लें! अन्यथा हम सन्त लोग यहीं लोढा-धर्मशाला में सम्मेलन करके चल पड़ेंगे। इसमें संघ की भी शोभा नहीं रहेगी और दूसरी सम्प्रदाय के लोगों को भी हँसी उड़ाने का मौका मिलेगा।" आपकी जोशीली सिंह गर्जना सुनकर अजमेर संघ चौकन्ना हो गया। संघ ने तीनों गुटों की एक सम्मिलित मीटिंग बुलाई और उसमें बहुमत से अपना एक केन्द्रीय संगठन बना लिया।**

स्मरण रहे आचार्यपद की पूर्वोक्त घोषणा के बाद यह आवश्यक था कि "श्रमण संघ के नवनिर्वाचित आचार्य श्री आनंदऋषि जी म. को श्रमण संघीय पदाधिकारी मिलकर आचार्यपद की चादर प्रदान करें, उन्हें उस पद पर प्रतिष्ठित करावें। इसके लिए शीर्षस्थ मुनिवरों का एक सम्मेलन कहीं न कहीं आयोजित किया जाना चाहिये। दूसरी बात यह थी कि इधर श्रमण संघ में भी कुछ विघटनकारी तत्त्व पैदा हो रहे थे,

जो किसी न किसी बहाने से श्रमण संघ को छोड़कर अपनी पुरानी सम्प्रदाय की दुकान को जमाना चाहते थे, और अपने संघाड़े के आचार्य पद पर पुनः प्रतिष्ठित होना चाहते थे। आचार्य के अभाव में इस गत्यवरोध को मिटाना बहुत ही कठिन प्रतीत हो रहा था। इन सब दृष्टियों से एक शिखर सम्मलेन का आयोजन आवश्यक था। **स्था. जैन कॉन्फ्रेंस ने शिखर सम्मेलन के लिए अजमेर श्री संघ को मनाया।** प्रवर्तक मुनि श्री पन्नालाल जी म. एवं श्री मरुधर केसरी जी की प्रेरणा से अजमेर के शक्तिशाली, भक्तिमान एवं साहसी श्रावक संघ ने इस सम्मेलन को अजमेर में करने का बीड़ा उठाया। संघ ने कॉन्फ्रेंस को अपनी स्वीकृति दे दी। तदनुसार एक ओर से कॉन्फ्रेंस के अधिकारी कार्यकर्ताओं के द्वारा अजमेर में होने वाले इस शिखर सम्मेलन में सभी प्रमुख साधु–साध्वियों को अजमेर पधारने का आग्रह चल रहा था दूसरी ओर से अजमेर श्री संघ का भी आग्रह था कि सभी श्रमणसंघीय पदाधिकारी मुनिवर शिखर सम्मेलन में पधारें।"

सभी सन्तों के नगर प्रवेश की तिथि फाल्गुन वदी ३ निश्चित कर ली उससे पूर्व अजमेर में प्रमुख सन्तसतीगण ठाणा 100 पधार गये थे। श्री कस्तूरचन्दजी महाराज ठा. 27, पं. शुक्लचन्दजी महाराज ठा. 5, कवि श्री अमरचन्दजी महाराज ठा. 3, श्री अम्बालालजी महाराज ठा. 5, श्री कन्हैयालालजी महाराज ठा. 3, श्री ब्रजलालजी महाराज ठा. 3, श्री मोहनमुनि जी ठा. 2, श्री सौभाग्यमलजी महाराज ठा. 5, पूज्य श्री मरूधर केसरी जी म. ठा. 5, श्री आनंदऋषि जी महाराज ठा. 7, श्री प्रेमचन्दजी महाराज ठा. 5, श्री फूलचन्दजी महाराज श्रमण ठा. 7, भानु ऋषिजी ठा. 2, आदि सन्त लोढ़ा धर्मशाला में पधार गये थे। केवल हस्तीमल जी स्वामी पधारने में विलम्ब कर रहे थे। **स्वामी जी पन्नालालजी महाराज भी उस समय मदारगेट में ही विराज रहे थे। श्री**

पन्नालालजी महाराज और श्री हस्तीमलजी महाराज का अन्दरूनी विचार एक था। दोनों का सम्मेलन के प्रति एक सा उपेक्षा भाव था। फाल्गुन बदी 2 को पूज्य श्री मरूधर केसरी जी म. एवं श्री मधुकर मुनि जी पन्नालालजी म. को मनाने के लिए मसूदा हाउस पधारे। उनसे जिक्र किया कि कल (फाल्गुन वदी 3 को) सभी सन्तों का शहर में प्रवेश है। आप भी उस अवसर पर पधारिए।" इस पर स्वामी श्री पन्नालालजी महाराज ने रूखा–सा जवाब दिया – "मैं तो सम्मेलन देखने आया हूँ। इसमें जो अच्छी बात बनेगी। उसमें हम शरीक हैं, अन्य कार्यवाही में नहीं।" इस पर पू. श्री मरूधर केसरी जी म. ने जब कठोर शब्दों में कहा – **"स्वामीनाथ! बारह महीने पहले तो आप अजमेर में सम्मेलन कराने हेतु विजयनगर डोली में पधारे थे, और मेरे निश्राय के सन्त तथा दिवाकरीय सन्त मण्डल आपको कन्धे तोड़कर अजमेर लाए थे। वह दृश्य कितना रमणीय था! स्वामी श्री हस्तीमल महाराज भी उस समय यहीं थे।**

महावीर जयन्ती पर सबका सम्मिलित व्याख्यान पण्डाल में हुआ था। उस समय आपने सम्मेलन के लिये विचार प्रदर्शित किये थे। उसी पर से सभी सन्तों से विचार–विमर्श करके **हमने अजमेर में शिखर सम्मेलन करने का निश्चय किया है।** तदनुसार सारे सन्त अजमेर शिखर सम्मेलन में भाग लेने हेतु पधार भी गये हैं। **अब ऐन वक्त पर आपश्री और हस्तीमलजी स्वामी ऐसा उदासीनता का वातावरण बना रहे हैं, जो आपके एवं संघहित के लिए कदापि उचित नहीं है। अजमेर क्षेत्र के अधिष्ठाता आप हैं। पण्डाल और मसूदा हाउस प्रायः आपके श्रावकों के अधीनस्थ ही हैं। तब फिर इसके लिए चौमासे में विषम वातावरण बनाना एवं सम्मेलन को अस्तव्यस्त करने का प्रयत्न करना क्या उचित लगता है?** आप सम्मेलन के अगुवा होते हुए ही ऐसा कर रहे हैं,

यह आप जैसे प्रमुख श्रमण संघीय पदाधिकारियों के लिए शोभास्पद नहीं है। ऐसा ही रुख रहा तो हम लोग लोढ़ा धर्मशाला से वापिस लौट जाएंगें और यह बदनामी आप ही पर आएगी। मैं उसे देखना–सुनना नहीं चाहता।"

यह सुनना था कि सरल स्वभावी और संघ हितैषी स्वामीजी श्री पन्नालालजी म. गद्‌गद् हो गए और सहसा बोल उठे – "अच्छा, ऐसा है तो मैं चलने के लिए तैयार हूँ। पण्डाल के बाहर की कोठरी में ठहरूँगा।" स्वामी जी के शिष्य कुन्दनमुनि जी ने जरा आवेश में आकर कह दिया– "मैं तो पण्डाल में पैर ही नहीं रखूँगा।" इस पर पूज्य श्री मरूधर केसरी जी म. ने कहा – "गणीजी ! आपको जहां शांति हो, वहाँ ठहरें। हमें तो स्वामीजी को ले जाना है।" **उसी समय स्वामीजी को डोली में बिठाकर मुनि रूपचन्दजी 'रजत' आदि 4 सन्त ले चले और पण्डाल के नीचे के कमरे में उन्हें विराजमान कर दिया।**

उधर स्वामी श्री हस्तीमलजी महाराज भी किशनगढ़ की ओर से पधार कर कचहरी रोड पर स्थित अजित भवन में ठहर गये। फाल्गुन वदी ३ को प्रातः ठीक आठ बजे सारे सन्त लोढा धर्मशाला से बाहर शहर में प्रवेश हेतु तैयार हो गए। श्री हस्तीमल स्वामी के पधारने में घण्टे भर की देर हो गई। अतः सभी सन्तों का ठीक ६ बजे प्रवेश हुआ। जनता अतिथि संतों से अपरिचित थी। आगे–आगे स्वयं सेवक दल चल रहा था, उसके पीछे सारा मुनि मण्डल, फिर महासती मण्डल और उनके पीछे श्रावक–श्राविकाओं का दल था। बड़ा मनभावन दृश्य बन पड़ा था।

अजमेर की जनता को सर्वप्रथम बृहत्साधु-सम्मेलन सन् 1933 के बाद इतने मुनिवरों के दर्शन और सेवा के लाभ का यह दूसरा अवसर पाया था। सारी शोभायात्रा पण्डाल में प्रवेश करते ही सभा के रूप में परिवर्तित हो गई। सन्त-सतियों एवं कुछ श्रावकों ने प्रासंगिक वक्तव्य देकर सभा विसर्जित की।

अजमेर साधु सम्मेलन का शुभारम्भ

शिखर–सम्मेलन का आयोजन पण्डाल के ऊपरी हॉल में होने वाला था। जिस शिखर सम्मेलन की प्रतीक्षा में सन्त सतीगण कई दिनों से रत थे, **उसका विक्रम सं. 2020 फाल्गुन वदी 3 को आहार पानी करने के बाद ठीक डेढ़ बजे लगभग शुभारम्भ हुआ। प्रायः सभी पदाधिकारी सन्त शिखर सम्मेलन में उपस्थित थे।**

सर्वप्रथम सर्वश्री आचार्य श्री आनन्दऋषि जी महाराज, उपाध्याय श्री कस्तूरचन्द जी महाराज, मन्त्री श्री पन्नालाल जी महाराज, मन्त्री श्री शुक्लचन्द जी महाराज, श्री मरुधर केसरी जी महाराज, मन्त्री श्री अम्बालाल जी महाराज, पं. श्री मधुकर जी महाराज, उपाध्याय श्री प्यारचन्द जी महाराज, मन्त्री श्री पुष्कर मुनि महाराज की प्रोक्सी से मुनि श्री रूपचंद जी महाराज 'रजत', उपाध्याय श्री हस्तीमल जी म., मोहनलाल जी म., उपाध्याय कवि श्री अमरचन्द जी म., श्री सौभाग्यमलजी म., पंजाब मन्त्री श्री फूलचन्द जी म. 'श्रमण', मन्त्री श्री प्रेमचन्दजी म. स्वामी जी श्री जीतमल जी म. व लालचन्द म. की प्रोक्सी से श्री सुकन मुनिजी म. आदि 17 सन्तों द्वारा शिखर सम्मेलन की कार्यवाही प्रारम्भ की गई। सभी पदाधिकारी प्रमुख मुनिवरों ने अपने-अपने कार्य की पूर्वकालीन रिपोर्ट प्रस्तुत की। तत्पश्चात् मन्त्री श्री पन्नालालजी द्वारा शिखर सम्मेलन में विचारणीय विषयों की जो एक तालिका बनाई गई थी, वह प्रस्तुत की। उनमें से कई मुद्दों पर काफी बहस छिड़ी और तीन दिन की 6 बैठकों में सक्रिय कार्य अतीव मंथरगति से हुआ।

चौथे दिन मध्यान्ह में कुछ उत्तेजना फैल गई, जिससे सभा का कार्य स्थगित करके सभा विसर्जित की गई। रात्रिकालीन बैठक में कई तरह के संकल्प विकल्प उठे। पाँचवें

दिन प्रातःकालीन बैठक में स्वामी श्री पन्नालाल जी म. और हस्तीमल जी म. नहीं पधारे, इस कारण सभा का कार्य स्थगित करना पड़ा। आखिर साढ़े ग्यारह बजे बाद नवनिर्वाचित आचार्य श्री के आदेश से दोनों महापुरुष पधारे।

पहले दिन की उग्रता अब शान्ति में परिणित हो गई थी। उपाध्याय श्री हस्तीमल म. तथा श्री मधुकरजी म. के बीच जो तीक्ष्ण विवाद चल पड़ा था, उसका समाधान किया गया। इसी अवसर पर एक नवीन, किन्तु महत्त्वपूर्ण घोषणा आचार्य श्री जी की ओर से की गई। **अब तक श्रमण संघ की सुव्यवस्था संभालने के लिए भू. पू. आचार्य श्री की ओर से जो मन्त्रीमण्डल बना हुआ था। जिसमें विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न मन्त्री,** उस–उस प्रदेश में विचरण करने वाले साधु–साध्वियों की दीक्षा, चातुर्मास संकल्प, शेषकल्प, अध्ययन तथा प्रायश्चित्त आदि व्यवस्थाएँ संभालते थे।

किन्तु मन्त्रीपद में कुछ राजनैतिक गन्ध आने लग गई थी तथा पद शास्त्रीय पदों से बहुत दूर जा पड़ता दिखाई दे रहा था, अतः शास्त्रीय पदों के निकटवर्ती एवं राजनैतिक दलबन्दी या गुटबाजी से ऊपर उठकर संघ सेवा की भावना से अनुप्राणित प्रवर्तक पद समस्त भू.पू. मन्त्रियों को प्रदान किये गये। अधिकार और कर्तव्य वे ही रखे गये, जो मन्त्रीपद के थे। **इस दृष्टि से आचार्य सम्राट् श्री आनन्दऋषि जी म. साहब द्वारा प्रदत्त नये प्रवर्तक पद विभूषित सन्त इस प्रकार थे।**

1. प्र. श्री पन्नालाल जी महाराज, 2. प्र. श्री अम्बालाल जी महाराज, 3. प्र. श्री मगन मुनि जी महाराज, 4. प्र. श्री सूर्य मुनि जी महाराज, 5. प्र. श्री पृथ्वीचन्द जी महाराज, 6. प्र. श्री विनयऋषि जी महाराज, 7. प्र. श्री. शुक्लचंद जी महाराज, 8. प्र. श्री हीरालाल जी महाराज, 9. प्र. श्री लक्ष्मीचन्द जी महाराज।

इसके साथ ही एक–एक प्रवर्तक के सहयोगी उप–प्रवर्तक दो से लेकर छह तक बनाए गए। इस दृष्टि से पू.

श्री मरूधर केसरी जी की संघीय सेवाओं का संगठन के प्रति सतत जागरूकता को देखकर नव्य आचार्य श्री ने आपको धन्यवाद दिया। कुछ मुनियों को नये प्रवर्तक एवं उपप्रवर्तक बनाये गए। इसके पश्चात् सभी प्रमुख मुनिवरों ने सर्वसत्ताधिकार आचार्य श्री जी को सौंपा, किन्तु साथ में **'परामर्शदात्री समिति'** का गठन किया गया, जिससे परामर्श लेकर आचार्य श्री अपना आदेश जारी कर सकें। परामर्शदात्री समिति के सदस्य इस प्रकार चुने गए–

1. प्रवर्तक श्री मरुधर केसरी जी महाराज, 2. श्री मिश्रीमल जी महाराज 'मधुकर', 3. प्रवर्तक श्री अम्बालाल जी महाराज, 4. उपाध्याय कविरत्न श्री अमरचन्द जी महाराज, 5. प्रवर्तक श्री फूलचन्दजी महाराज 'श्रमण', 6. श्री कस्तूरचन्द जी महाराज, 7. श्री प्रेमचन्द जी महाराज, 8. प्रवर्तक श्री पन्नालालजी आदि। सभी ने सामयिक निर्णयों को लेकर वस्तुपरक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किये जिसका समाज ने व्यापक समर्थन किया।

अजमेर ही नहीं देश भर की जनता का तकाजा जोरों परं था कि आचार्य श्री जी को चादर ओढ़ने का दस्तूर किस दिन होगा? कुछ सन्तों का विचार यह था कि चादर ओढ़ने की यह प्रथा ही समाप्त कर दी जाय। किन्तु उसी समय पूज्य श्री मरुधर केसरी जी म. ने खड़े होकर विनयपूर्वक कहा – "मुनिराजों! आप जिन कार्यों के लिए शिखर सम्मेलन में पधारे हैं, उनमें सबसे प्रमुख कार्य तो नव्य आचार्य श्री को चादर ओढ़ने का ही है। फिर उस कार्य में विलम्ब क्यों किया जा रहा है? अगर नहीं ओढ़ाना चाहते हैं तो उसका कारण क्या है? लोग जिस चीज के लिए उत्सुक हैं और इतना खर्च करके उत्सुकता से बाहर से भी हजारों जन आये हैं, उस कार्य में आप लोग दीर्घसूत्रता क्यों दे रहे हैं? झटपट फैसला क्यों नहीं कर लेते? आचार्य श्री को चादर प्रदान की तिथि निश्चित कीजिए।"

इस पर स्वामी श्री पन्नालालजी महाराज ने कहा – "अब तो होलाष्टक लग चुका है, इन तिथियों में चादर ओढ़ाने की रस्म कैसे अदा की जाए?" तब पूज्य श्री मरुधर केसरी जी ने कहा– "जैन धर्मावलम्बी होलाष्टक को नहीं मानते। जैन ज्योतिष में कोई निषेध नहीं है, इन दिनों में शुभकार्य करने का। यह तो लौकिक मत है।" उत्तर में स्वामी श्री पन्नालालजी महाराज ने अनमनें भाव से फरमाया – "अगर आप सबकी ऐसी इच्छा हो, तो मेरी ओर से कोई मनाही नहीं है।" आप सबकी जब भी मर्जी हो, तब आचार्य श्री को चादर ओढ़ा सकते हैं।

❖ आचार्य पद पर चर्चा चली और सफल हुई

यह परिस्थिति देखकर पूज्य मरुधर केसरी जी म. के दिमाग में एक बात सहज स्फुरित हुई कि युवाचार्य पद का निर्वाचन भी साथ ही क्यों न कर लिया जाए? आपश्री ने सबके समक्ष जब यह बात रखी तो सभी सन्तों ने कहा – "आपका सुझाव बिलकुल ठीक है। यह भी साथ ही साथ हो जाना चाहिए।"

मरुधरकेसरी जी महाराज ने पूछा – "अच्छा बताइए, आपकी दृष्टि में युवाचार्य पद के लिए कौन सन्त उपयुक्त रहेगा? किसको बनाया जाए?" इस पर सारे सन्त मौन हो गए। तब स्वामी श्री पन्नालालजी ने मरुधर केसरी जी को अपने पास आने का संकेत किया। पास पहुँचने पर कहा – "अगर आप सब चाहें तो श्री हस्तीमल को युवाचार्य बना सकते हैं।"

तब श्री पूज्य मरुधर केसरी जी म. ने सभी सन्तों से एकान्त में पूछकर इस विषय में उनकी राय जानी। इससे ज्ञात हुआ कि इस बात के समर्थन में अल्प सदस्य हैं, विरोध में अधिक हैं। तथापि सबको समझा–बुझाकर मतैक्य बनाया। लेकिन 'युवाचार्य' पद ग्रहण करने के विषय में जब श्री हस्तीमलजी म. से राय मांगी गई तो उन्होंने उत्तर दिया – **"मैं इस विषय में सोचूँगा।" पूज्य मरुधर केसरी जी म. ने कहा – "अब सोचने का अधिक समय नहीं है, अपितु झटपट स्वीकार करने का**

समय है। आपको संघ एवं संघ के अनुशास्तागण यह पद खुशी से प्रदान करना चाहते हैं तो फिर आपको इसमें हिचकिचाहट क्यों हो रही है?" इतना कहने के बावजूद भी उन्होंने यही उत्तर दिया कि **"मैं इस विषय में सोचूँगा।"** उनके संत पं. रत्न श्री लक्ष्मीचन्द जी ने भी पूज्य मरुधर केसरी जी म. से सिफारिश की कि किसी तरह से आप उन्हें युवाचार्य पद के लिए मना लें।

इस पर आपश्री ने उन्हें एकान्त में ले जाकर बहुत समझाया, किन्तु वे अपने विचारों में ही उलझे रहे, स्पष्टोक्ति नहीं दी। फिर मंत्रणा परिषद् (हाउस) में भी पूज्य गुरुदेव ने उनसे कहा – "इस समय आप मान लेते हैं तो ठीक है, फिर हमारे हाथ में बाजी नहीं रहेगी।" इस पर भी उन्होंने स्पष्ट स्वीकृति नहीं दी। हाउस से बाहर निकलते ही सभी मुनिवर अपने–अपने स्थान पर पहुँच गये। ज्यों ही यह विचार उड़ता–उड़ता युवक मुनियों के पास पहुचा, वे इसके विरोध में उच्च स्वर में बोलने लगे। वे सभी मिलकर कवि श्री अमरचन्द जी महाराज के पास पहुँचे। उनसे कहा कि "मरुधर केसरीजी महाराज यह क्या नया उत्पात खड़ा कर रहे हैं?"

तब कवि श्री जी ने कहा – "आप जरा शान्ति रखिए। बौखलाइए मत। श्री मरुधर केसरी जी आप लोगों के समर्थन के बगैर सहसा कदम नहीं उठाएंगे। आप लोग इतने दिनों में मरुधर केसरी जी को नहीं पहचान सके, मैंने उन्हें अच्छी तरह से परखा है। वे वही करेंगे, जिसमें आपका एवं संघ–समाज का हित होगा।"

इसके पश्चात् मध्याह में चतुर्विध संघ का जनरल अधिवेशन हुआ। उसमें जो पिछली कार्यवाही थी, वह सुना दी गई। साथ ही यह भी घोषणा की गई कि **"फाल्गुन शुक्ला 11 वि.सं. 2020, को प्रातः साढ़े नौ बजे आचार्यपद समारोह मनाया जाए। इसी अवसर पर आचार्यदेव को वरिष्ठ सन्तों द्वारा चादर ओढ़ाने की रस्म अदा की जाएगी।** ●●●

एक चैतन्य व्यक्तित्व आचार्य श्री आनंदऋषि जी म. का आचार्य पद

❖ चादर समर्पण समारोह (गांधी मैदान, अजमेर)

23 फरवरी 1964 को अजमेर के गांधी मैदान में जब आपको श्रमण संघ के अधिकारी मुनियों ने मंगलमय क्षणों में स्तोत्र पाठ एवं जय घोषों के साथ आचार्य पद की प्रतीक चादर ओढाई उस समय का दृश्य सचमुच दर्शनीय था। पूरा वातावरण अपूर्व उल्लास में भीग गया था।

वयोवृद्ध संत श्री पन्नालाल जी म., ज्योतिषज्ञ श्री कस्तूर चन्द्र जी म., उपाध्याय कवि श्री अमर मुनि जी म., श्रद्धेय श्री पुष्कर मुनि जी म., प्रवर्तक श्री हीरालाल जी म., प्रवर्तक श्री शुक्लचन्द्र जी म., पं. प्रवर श्री श्रमण जी म., पूज्य मधुकर जी म., मालव केसरी श्री सौभाग्यमल जी म., मेवाड केसरी श्री मोहनलाल जी म., कवि श्री केवल मुनि जी म., श्री अशोक मुनि जी म. आदि वरिष्ठ संत गण आपके दायें बायें विराजमान थे। एवं आप मध्य में समुच्च आसन पर सुशोभित हो याम रहे थे। सर्वप्रथम सभी सन्तों ने चादर का स्पर्श किया फिर वह चादर साध्वी मंडल एवं समुपस्थित हजारों श्रावक श्राविकाओं तक पहुंच कर पुनः सन्तों के पास लाई गई। चादर समर्पण के पावन अवसर पर चतुर्विध संघ ने सामूहिक रूप से संकल्प अभिव्यक्त किया कि हम सभी आपके आदेश का सर्वात्मना समर्पित होकर परिपालन करेंगे एवं श्रमण संघ की महिमा को अक्षुण्ण रखने का प्रयत्न करेंगे। समारोह संचालनकर्ता श्रमण सूर्य श्री मिश्रीमल जी म. मरूधर केसरी सजग संचालन कर रहे थे।

आचार्य पद दरअसल श्रद्धेय वन्दनीय गुरूदेव श्री की अपेक्षाओं का कीर्तिकलश नहीं अपितु उनके व्यक्तित्व से उत्पन्न कलश है। यह शत प्रतिशत सच है कि उन्होनें पदों के

लिए अपने सदभावना भरे जीवन में कभी भी दाग नहीं लगवायें। व्यक्ति–व्यक्ति के श्रद्धा बिन्दुओं से भरा हुआ यह श्रद्धा कलश यहाँ छलक रहा था। **पूज्य आचार्य श्री के जीवन को निकटता से देखनें परखने वाले जन जानते है कि वे निष्ठा पूर्वक जिनशासन की सेवा के लिए निष्काम भाव से अर्पित रहे। ऐसी निष्ठा विरल सत्पुरूषों में होती है।**

उस समय आश्चर्य खेद होता है जब बड़े बड़े विद्वान सन्त पुरूष भी पदलिप्सा से ग्रस्त हो जाते है। श्रमण संघ का इतिहास जाननें वाले इस तथ्य से अपरिचित नहीं है कि श्रमण संघ का निर्माण सादड़ी सम्मेलन में सभी सन्तों ने भूतपूर्व परंपरा एवं उससे जुड़े पदों का विलीनीकरण करके किया था। **एक छोटे से सम्प्रदाय में भी समस्याएं खडी हो जाया करती है तो फिर श्रमण संघ तो एक विशाल संघ है। इसमें समस्याएं आए ही नहीं ऐसा नहीं कहा जा सकता पर समस्याओं का समाधान पलायन से नहीं हुआ करता। उदारमना हो कर ही सद्भावना का सम्भावना का शिलान्यास हो पाता है।**

कई सत्पुरूष इधर उधर की समस्याओं का बहाना लेकर मन में सम्प्रदाय एवं पदों का राग पालकर संघ से पृथक हो गए पर आचार्य श्री ने कभी भी संघ के प्रति जीवन की सांझ तक अपनें मन में अन्यथा भाव नहीं आने दिया। प्रस्तुत अंकन मैने किसी पर आरोप प्रत्यारोप की दृष्टि से नहीं किया है। मेरे भावों को स्वस्थ दृष्टिकोण लेकर यदि समझने का एक क्षण के लिए भी प्रयास किया गया तो वे सत्पुरूष भी मेरी भावना से सहमत हुए बिना नहीं रहेगें, कि **जो हस्तियाँ श्रमण संघ से पृथक होकर अलग व्यवस्था में जी रहे है। उनकी उपलब्धि क्या है?**

उल्लेखनीय है कि जिस समय आपको आचार्य पद की प्रतीक चादर समर्पित की गई उस समय उस विशाल समारोह में राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल जी सुखाडिया भी उपस्थित थे। **मुख्यमंत्री श्रीयुत् सुखाडिया जी ने**

उस समारोह में आपको संयम साधना के जीवन्त प्रतीक युगपुरूष कहकर वन्दन किया। अ.भा.श्वे. स्थानक जैन कान्फ्रेंस के पदाधिकारियों ने भी पूज्य आचार्य श्री के चरणों में अपनी श्रद्धा उडेलते हुए हर परिस्थिति में श्रमण संघ की अविचलता के लिए आपके निर्देशानुसार गतिशील रहने का विश्वास सार्वजनिक रूप से उद्घोषित किया।

अजमेर सम्मेलन सोत्साह सम्पन्न हुआ। सभी संत सतियां अपने–अपने गंतव्य की ओर पूज्य आचार्य श्री का मंगल पाठ श्रवण करके विहार करने लगे। पूज्य आचार्य श्री ने भी अपनी विहार दिशा निर्धारित की। परम पूज्य वंदनीय आचार्य श्री की भावना थी कि एक बार उस भूमि का उस प्रान्त प्रदेश का स्पर्शन किया जाए जिसे श्रमण संघ के प्रथम आचार्य पूज्य श्रेष्ठ श्री आत्माराम जी महाराज ने चिरकाल तक पावन किया था।

इस प्रकार श्रमणसंघ के वरिष्ठ मुनिवरों के करकमलों से चादर की रस्म सानन्द सम्पन्न हुई। इस अवसर पर नव्य आचार्य श्री ने प्रासंगिक वक्तव्य देकर आचार्य पद के दायित्व को निभाने की शपथ ली और संघ को आश्वासन दिया कि "वे श्रमण संघ की उन्नति के लिए सदा प्रयत्नशील रहेंगे, बशर्ते कि उन्हें पदाधिकारी मुनिवरों एवं विशिष्ट साधु–साध्वियों का सक्रिय सहयोग मिले।"

सम्मेलन में बाहर की ओर स्थानीय जनता कुल मिलाकर 50 हजार के करीब थी। मुख्य चौके सेंठ अगरचन्द मानमल चौरड़िया (मद्रास) श्री केसरीमलजी बोहरा, आसवी, श्री मदनलाल जी संकलेचा बलूंदा (जालना निवासी) की ओर से एकादशी का समग्र भोजन व्यय गुप्तदानी श्री केसरीमल जी बोहरा आसवी (महाराष्ट्र) की ओर किया गया था। **इस प्रकार फाल्गुन सुदी** 12 **को शिखर सम्मेलन के सभी कार्य सम्पन्न करके सब सन्तों ने अपनी अपनी मनोनीत दिशा में विहार किया। पूज्य आचार्य श्री जी का भी विहार पुष्कर की ओर हुआ।**

❖ पंजाब पदार्पण की प्रार्थना

संख्यातीत श्रद्धालुओं के भगवान पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री के चरणों में राजधानी दिल्ली के साथ पंजाब वासियों का प्रबल आग्रह था कि आप उत्तर भारतीय क्षेत्रों का विचरण करें। पूरा उत्तर भारत श्रमण संघ के प्रति अखण्ड रूप से समर्पित है। वहां के श्रद्धालु चाहते है कि हमारे श्रद्धा पुरूषोत्तम पूज्य आचार्य श्री हमें आकर संभालें। यह ठीक है कि श्रमण संघ के प्रथम आचार्य श्रद्धेय श्री आत्माराम जी महाराज थे एवं उन्होनें सम्पूर्ण पंजाब प्रान्त को एक सूत्र में बांधे रखा पर लम्बे समय तक शारीरिक अस्वस्थता के कारण वे लुधियाना में विराजमान रहे। वर्षों तक पंजाब में किसी आचार्य का विचरण नहीं हो सका। पंजाब के चतुर्विध संघ की सोच है कि आपका पंजाब विचरण न केवल श्रमण संघ के लिए अपितु समूची मानवता के लिए वरदान साबित होगा

उपाध्याय श्री अमर मुनि जी एवं प्रवर्तक श्री शुक्लचन्द्र जी म. आदि उस समय वहीं आपके चरणों में विराजमान थे। उन्होनें भी इस प्रार्थना का समर्थन करते हुए कहा आचार्य श्री जी को कि पंजाब पधारना चाहिए। वहां का जन जन आपके आगमन की प्रतीक्षा कर रहा है। आपके पंजाब पदार्पण से कई उपकार सम्पन्न होगें।

उत्तर भारत के प्रांतों में असंख्य श्रद्धालु और अनेक मूर्धन्य संत रत्न धर्मध्यान रत हैं। ऐसे क्षेत्र में आपका पधारना धर्म प्रभावना की दृष्टि से स्वर्ण में सुगंध की तरह रहेगा।

कृपालु आचार्य देव ने इस प्रार्थना को स्वीकार कर उत्तर भारत में पधारने का आदेश फरमा दिया।

●●●

संस्मरणों के आलोक में

महापुरुषों के अनुकरणीय आदर्श

भाव यात्रा नित चलती है, यदि हृदय हो निष्ठावान।
कार्य सिद्धि का लक्ष्य लिए हो, गुरु–भक्ति हो गुरु का ध्यान।।
तब प्रत्यक्ष सत्य हो जाता, जो मनवांछित सोचा जाए,
इसे मानते और जानते साधु–संत सभी विद्वान।।

इतिहास नगरी बीकानेर-भीनासर

भीनासर साधु सम्मेलन, विकट यात्रा सरल कैसे बनी!

भीनासर साधु सम्मेलन पहले सन् 1955 में घोषित किया था। लेकिन उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी म. का आग्रह था कि एक सम्मेलन प्रथमाचार्य श्री आत्माराम जी म. के सान्निध्य में हो, लुधियाना वाले तैयार भी हो गए थे।

मगर आचार्य श्रीजी अपने खास संत व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी म. को लुधियाना बुलाकर समझाया कि — **"देखो मुनि जी उपाचार्य जी अनुभवी हैं, वे दो-दो सम्मेलन करा चुके हैं, और आपने भी शांतिरक्षक बनकर उत्तम कार्य किया है। मैं पंजाब के संतों को श्री ज्ञान मुनि जी सहित आपके साथ भेजूंगा। आप परामर्श कर लें।"**

इस चर्चा के बाद उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी के पास प्रस्ताव भेजा और भीनासर साधु सम्मेलन तय हुआ। पंजाब की सीमा पार करके जब संत थली प्रदेश में पहुंचे तो आहार–पानी का संकट बढ़ने लगा। अनजान क्षेत्र में बिहार चल रहा था। दूर–दूर तक आश्रम नहीं। **तेरापंथी भाई** भी असहयोगी ही बने रहे। तब एक वैष्णव भाई सुशील कुमार ने साथ चलकर स्वयं भी सहयोग किया। एक जगह एक बालक सहज भाव से भुने हुए चने लेकर आया तो हठ करने लगा कि आप ये ले लो। मना करने पर बाल सुलभ हठ करने लगा तो मानना ही पड़ा। कई जगह छाछ, चने, मक्का का सेवन कर क्षुधा शान्त की और बीकानेर होते हुए भीनासर पहुंचे। **वहां संतों ने आचार्य महाराज की इच्छानुसार सम्मेलन की रूपरेखा उपाचार्य श्री के समक्ष रख दी।** ऐसे भीनासर सम्मेलन सोजत से ज्यादा बेहतर तरीके से सम्पन्न हुआ। लेकिन कतिपय विवादास्पद शर्तों के कारण विवाद भी बढ़ा और वाचस्पति जी म. और अन्य महत्वपूर्ण संत श्रमण संघ से अलग हो गए। कारण क्या रहा, ये आज तक अज्ञात है। ●●●

अजमेर सम्मेलन द्वितीय के पूर्व गुरु निष्ठा और शिष्य की भक्ति

राष्ट्रसंत आचार्य श्री आनंदऋषि जी म.सा. को द्वितीय पट्टधर घोषित किए जाने के बाद आचार्य पद चादर का समारोह होना बाकी था। इधर अजमेर साधु–सम्मेलन द्वितीय की घोषणा तो होने लगी थी, मगर आचार्य पद चादर के कार्यक्रम की चर्चा नहीं के बराबर थी। राजस्थान के दो संत यह वातावरण बनाने लगे थे कि — **जब आचार्य घोषित हो ही गए हैं तो चादर की रस्म हो ना हो क्या फर्क पड़ता है।**

वहीं इसके विपरीत राय रखने वाले भी बड़े–बड़े संत थे। पं. रत्न श्री शुक्लचंद्र जी म., श्रमण श्री फूलचंद्र जी म., कवि श्री अमरचंद्र जी म., भण्डारी श्री पद्मचंद्र जी म., उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी म., उपाध्याय श्री कन्हैयालाल जी म. 'कमल', प्रवर्तक श्री अम्बालाल जी म. आदि की राय सम्मेलन के मुख्य कर्त्ताधर्त्ता श्री मिश्रीमल जी म. **'मरुधर केसरी'** सबकी सहमति ले चुके थे।

अतः चादर समारोह में बड़ी संख्या में पूज्य साधु– साध्वी जी अपना अगला विहार तय कर चुके लेकिन तब तक भी आचार्य श्री अहमदनगर में ही थे। वे मौन साधनारत रहकर अपने गुरुदेव **श्री रत्नऋषि जी म.सा.** से विहार करने की आज्ञा और आशीर्वाद पाने में मग्न थे।

एक दिन आपके प्रश्न का उत्तर उन्हें मिल ही गया, जबकि पू. श्री रत्नऋषि जी म. सदेह नहीं थे। उनका देवलोकगमन हो चुका था, लेकिन भाव यात्रा से भावदर्शन पाने वाले निष्ठावान शिष्य श्री आनन्दऋषि जी म. नित्य संदेश पा लिया करते थे।

एक दिन ये आशीर्वाद आपको मिल भी गया कि **"जा आनंद जा'! खुशी-खुशी जा और अपार यश पा!!"** ये ध्वन्यात्मक संदेश पाते ही आचार्य श्री शिष्य मंडली के साथ अजमेर की ओर चल पड़े। यथासमय अजमेर पहुंचे और सर्वप्रकार से यशस्वी भी बने। आपका सुदीर्घ कार्यकाल श्रमण संघ में स्वर्ण युग समान रहा।

प्रगाढ मैत्री के संदेश वाहक आचार्य श्री आनंदऋषि जी

ये बात हम एक संस्मरण से समझे कि **भगवान महावीर का 2500वाँ निर्वाण कल्याणक महोत्सव मनाया जा रहा था। राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जा रहा था और सारा जैन समाज मना रहा था। लेकिन जैन समाज के साथ विडम्बना है कि "यह एकमत नहीं हो पाता है।" वैसे यह अनेकान्त, अहिंसा और संयम की बात करता है। क्षमा की बात करता है लेकिन अपने भाई को माफ नहीं कर सकता है।** जिस समय राष्ट्रीय स्तर पर यह आयोजन चल रहा था, उस समय जैन समाज और साधुओं का एक वर्ग जमकर विरोध कर रहा था कि **निर्वाण महोत्सव का कार्यक्रम राजकीय स्तर पर नहीं होना चाहिये।** आचार्य श्री उस समय मुम्बई में विराजमान थे। विरोध करने वाले भी मुम्बई में थे। गुरुदेव कभी विरोध नहीं करते थे, गुरुदेव की जीवनशैली केवल एक थी, समर्थन देना। अच्छी बात है तो उसका समर्थन करना और गलत बात है तो उसकी उपेक्षा करना। गलत बात का विरोध करने पर उसमें शक्ति का अपव्यय होता है, ऐसी मान्यता वाले, वास्तव में वे खरे संत थे। उनका विश्वास था—

सत्त्वेषु मैत्री गुणिषु प्रमोदं, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम्।
माध्यस्थ भावं विपरीत-वृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देव।।

यह श्लोक गुरुदेव के जीवन में रच–बस गया था। **सत्त्वेषु मैत्री,** जिनमें सात्विकता है, उनके साथ मैत्री है। **गुणिषु प्रमोदं,** अपने से जो श्रेष्ठ हैं उनके साथ मैत्री। श्रेष्ठता मेरे आंगन की है या पड़ोस के आंगन की, उससे उनको कोई

लेना–देना नहीं था। जहाँ कहीं अच्छाई नजर आई, उसका उन्होंने अभिनन्दन किया, उसे प्रोत्साहित किया।

क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम् – दुःखी और पीड़ितों के लिए तो गुरुदेव भगवान बन जाते थे। **माध्यस्थ भावं विपरीत-वृत्तौ** – कोई विरोध में है, कोई गलत काम कर रहा है या किसी से उनकी विचार–भिन्नता है तो गुरुदेव तटस्थ हो जाते थे। उसके विरोध में कुछ नहीं बोलते थे।

मुम्बई में वो आचार्य भी विराजमान थे, जो विरोध का नेतृत्व कर रहे थे। गुरुदेव ने श्रावकों से बात की। आचार्यश्री के पास समाचार पहुँचाये कि **"मैं आपसे मिलना चाहता हूँ।"** विशाल श्रमणसंघ का आचार्य एक सम्प्रदाय के आचार्य को समाचार दे रहा है कि "मैं आपसे मिलना चाहता हूँ।" मिलने के लिये गये आचार्य श्री ने बिल्कुल जमीन पर बैठकर बात की। उनसे प्रेमपूर्वक कहा कि **"भगवान महावीर का नाम व सन्देश दुनिया तक पहुँचता है। आप इसका समर्थन नहीं कर सकते तो कोई बात नहीं, लेकिन विरोध करके जैन समाज की एकता को भंग मत कीजिये!** गुरुदेव ने प्रेम से समझाने की कोशिश की। उनके विचार भी सुने कि उनके विरोध करने के पीछे क्या कारण हैं? ये भी जाना और उन्हें मना लिया। वे ही आचार्य 1977 में अहमदनगर पधारे। गुरुदेव का और आचार्य श्री का मिलन समागम हुआ। लोगों ने खुशी में जयकारा लगाया।

ऐसा विराट् दृष्टिकोण था गुरुदेव श्री आनंदऋषि जी म. का। जिन निमित्तों से संघ-समाज में प्रेम और एकता का संदेश जाता हो, जिन कारणों से अनर्थ नहीं होता हो और जीवन पवित्र बनता हो, वैसा करने के लिए उन्होंने कभी स्वयं को नहीं रोका।

ऐसे सरल स्वभावी संत होने के कारण ही आप श्री ने अपने कार्य काल में श्रमण संघ को सदैव नई ऊंचाई दी और संघ के समक्ष उपस्थित बाधा को पर्वत से राई बना दिया।

उत्तर भारत के प्रमुख संत और अजमेर द्वितीय साधु-सम्मेलन

आचार्य पद चादर समारोह में उत्तर भारत के संत साध्वी मंडल का एक व्यापक समूह दिल्ली से तत्कालीन **उत्तर भारतीय प्रवर्तक राष्ट्रसंत भंडारी पद्मचंद जी म. के नेतृत्व में आगरा होते हुए जयपुर के रास्ते दूदू, किशनगढ़ तक पहुंचा ही था कि अजमेर से प्रवर्तक श्री मिश्रीमल जी म.सा. मरुधर केसरी, गुरुदेव श्री आनंदऋषि जी म.सा. के सुशिष्य श्री कुंदनऋषि जी म. आदि ठाणे-10 स्वागतार्थ पधारे।**

उत्तर भारत से पधारे संत मंडल में उपाध्याय श्री अमर मुनि जी म., प्रवर्तक श्री भंडारी जी म., श्रुताचार्य श्री अमर मुनि जी म. एवं मम गुरुदेव श्री प्रेमसुख जी म. आदि से मंगल भेंट हुई।

सभी वहां से सानंद अजमेर की ओर प्रस्थित हुए, जहां श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य पू. श्री आनंदऋषि जी म. सा. का आचार्य पद चादर समारोह आयोजित हो रहा था। विशाल जनमैदिनी की उपस्थिति बड़ी संख्या में श्रद्धेय साधु–साध्वी जी, जिनमें प्रवर्तक श्री अम्बालाल जी म., तत्वज्ञ श्री मिश्रीमल जी म. 'मधुकर', उपाध्याय श्री कमल मुनि जी म. आदि मंचस्थ थे।

उत्तर भारतीय संतों ने अपने उद्बोधन में आचार्य पद एवं श्रमण संघ के प्रति गहरी निष्ठा अभिव्यक्त की एवं आचार्य श्री को उत्तर भारत पधारने की प्रार्थना की।

आनन्दौत्सव में आनंद की लहरें प्रत्यक्ष उठने लगी जो सभी ने अनुभव की। बाद में जयपुर में संयुक्त चातुर्मास करके संत वापस पधारे।

●●●

अभिनन्दन ग्रंथ की प्रस्तावना और विद्वान उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी म. की सहजता

सन् 1973–74 का प्रसंग है – **प्रवर्तक श्री पन्नालाल जी म. का अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित करना है,** ऐसा निश्चय हुआ। उस समय ग्रंथ के प्रधान सम्पादक पं. रत्न श्रीमान शोभाचंद्र जी 'भरिल्ल' ने प्रकाशन समिति को सुझाव दिया कि महाप्राज्ञ प्रवर्तक श्री पन्नालाल जी म. पर प्रकाशित ग्रंथ की प्रस्तावना लिखने हेतु उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी म. से निवेदन किया जाए। इसका समर्थन श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा एवं श्रीचंद जी सुराना ने भी किया।

इस तरह उपाध्याय श्री की प्रस्तावना पर कलम चली। **उपाध्याय श्री पुष्कर जी म. अपने समय के ऐसे संत थे जो समन्वय संगठन को तो प्राथमिकता देते थे,** अन्य व्यक्तित्व और कृतित्व में वो दुर्लभ गुण ढूंढ़ लेते थे, जिसको कहना कभी साधारण नहीं होता।

आपने अपनी प्रस्तावना में साधु जीवन के सप्त विशेषण से प्रवर्तक श्री पन्नालाल जी पर वो स्नेह बरसाया कि सब गद्‌गद् हो गए। आपने पन्नालाल जी म. को **"अनायास गुणानुरागी"** कहते हुए मुनि श्री कुन्दनमल जी के पुरुषार्थ की भी भूरि भूरि प्रशंसा की। जब मैंने इस घटनाक्रम और विचारों को जाना–पढ़ा तो एक विचार मन में जागा कि – **लेखन भी ऐसी पवित्र विधा है। जो पावन देशणा के समान एक नहीं असंख्य आत्माओं को प्रेरणा से भर देती है।**

हम लुधियाना के **'आतम नगर'** ने श्रावकरत्न श्री हीरालाल जी के **आत्म स्कूल परिसर में थे।** तब चर्चा चलते–चलते गुरुदेव व उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी पर चल पड़ी। हीरालाल जी बोले कि – **उपाध्याय भगवन् स्वाध्याय संवर्धक संघ-हितैषी गुणानुरागी थे।**

मुझे भी यह सुनकर प्रमोदभाव जागा तो मैंने पुष्कर मुनि जी की प्रस्तावना का स्मरण कराया तो परस्पर गुणानुराग का अनुशरण करने की प्रेरणा आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म. द्वारा प्रदान की गई। अद्‌भुत है ये सहजता!

●●●

ऐसा विनय! ऐसी कृपा!!

यथा नाम तथा गुण उत्तर भारत में अपने–अपने समय के **दिग्विजयी महात्मा सरलात्मा और साधना के प्रत्यक्ष स्वरूप पू. श्री भागमल जी म.सा. सदर बाजार, दिल्ली में वयौवृद्ध अवस्था में विराजित थे।**

आपके सान्निध्य में शुभ दर्शन का सौभाग्य हर कोई पाना चाहता था। उसी समय का प्रसंग है आनंदकंद आचार्य श्री आनंदऋषि जी म.सा. उत्तर भारत के भ्रमण पर मुनि मंडल के साथ पधारे हुए थे, अतः आपश्री भी सदर बाजार पधारे और पू. गुरुदेव श्री भागमल जी म.सा. से मंगलमय भेंट हेतु उपस्थित हुए।

स्थानक भवन की ऊंचाई और खड़ी सीढ़ियां चढ़कर आप अवसरानुकूल विनय प्रकट करने हेतु चरणों में झुके ही थे कि पूज्य श्री भागमल जी म.सा. ने उन्हें बाहों में भर लिया। **कृतज्ञता और विनय का यह संगम अद्भुत था। आचार्य श्री आनंदऋषिवर फरमा रहे थे 'आप मेरे बड़े हैं! ज्ञानवृद्ध वयौवृद्ध हैं, तो मेरा कर्त्तव्य है आपके चरण छूना!'**

उधर पूज्य श्री भागमल जी म.सा. फरमा रहे थे – 'आप मेरे आचार्य हैं! आपका विनय करना मेरा भी तो फर्ज है।'

ऐसा विनय! ऐसी कृपा, परस्परता, सौम्य शिष्टाचार ही श्रमण संघ को स्वर्णिम बनाते हैं। ये परस्परता ही श्रमण संघ के आंतरिक लोकतंत्र का प्रतीक है।

आचार्य भगवन को अपने निकट बैठाकर पूज्य श्री भगामल जी म.सा. ने अपने अनुभव का खजाना खोल दिया। वहीं आचार्य श्री का गुरु–गंभीर व्यक्तित्व यह आभासित कर

रहा था कि **वे बड़ों की बात को हल्के में नहीं लेते बल्कि सार-सार स्वीकार कर संघ हित में ग्रहण करते हैं।**

❖ मेरा अनुभव मेरा सौभाग्य

मैं जैसा कि सर्वज्ञात है डिप्टीगंज, पहाड़ी धीरज, सदर बाजार का ही जन्मजात रहा हूँ, मगर जब पूज्य श्री भागमल जी म.सा. की महाप्रयाण यात्रा भारी जनमैदिनी के साथ मार्ग से गुजर रही थी, मैं किशोरवय का लड़का दर्शन कर रहा था, अनुभव कर रहा था कि – **"संसार, त्याग तप चरित्र को कैसा सम्मान देता है! कि जो चला गया उसके पीछे भी प्रेमाश्रु लेकर भाग रहा है।"**

मेरी यही अनुभूति मेरे मैं वैराग्यभाव का उदय कर गई और मैं गौतम गणधर की परम्परा का अनुसरण करते हुए महावीर के पथ पर आरूढ़ हो गया।

'रविदत्त से मुनि रवीन्द्र' तक की ये यात्रा और इसका का उत्स पूज्य प्रवर आराध्य गुरुदेव श्री भागमल जी म.सा. ही है।

बाद में अनेकानेक भव्यात्माओं का दर्शन–मार्गदर्शन पाया, श्रमण संघ और स्थानकवासी जैन समाज को भी निकट से जाना, संत–सान्निध्य के स्वर्ण कणों का स्पर्श पाकर अनुभव किया। कभी मंत्री, कभी अन्य पद और अब उपाध्याय के रूप में जो बन पड़ रहा है वो पूरी निष्ठा से कर रहा हूँ।

जब मैं दीक्षित हुआ तो मेरे समक्ष मेरे आदर्श मेरे गुरुदेव श्री प्रेमसुख जी म.सा. थे। बनारस में जन्में और जैन धर्म परम्पर में निमज्ज हुए पूज्य गुरुदेव महान सेवाभावी थे। उनकी करुणा, उनका निश्च्छल प्रेम उन्हें असाधारण बनाता है। वं कुटेव और व्यसन के सख्त खिलाफ थे, मगर सेवा धर्म उन्हें बड़ा प्रिय था। उनका स्पर्श मात्र भी चमत्कार से भरा था और मैंने मेरे गुरुदेव पूज्यपाद श्री प्रेमसुख जी म.सा. से पाया, वो उन्हें ही समर्पित कर रहा हूँ।

●●●

पूज्य गुरुदेव श्री प्रेमसुख जी म.सा. ने बताया था कि 'कैसा था मेरठ में प्रवर्तक चादर समारोह'!

ये प्रसंग 18 जनवरी 1983 वसंत पंचमी का है। पावन दिवस था पावन समागम था। जैन कॉन्फ्रेंस और पंजाब जैन महासभा ने प्रथम उत्तर भारतीय प्रवर्तक पद चादर समारोह का आयोजन मेरठ, जैन नगर में किया जा रहा था। उस समय उत्तर भारत के लगभग 150 से ज्यादा पूज्य साधु-साध्वी जी म., पूज्य प्रवर्तक श्री शान्ति स्वरूप जी म.सा. के मंगल सान्निध्य में एकत्र थे। अत्यंत मैत्रीभाव से भरा ये आयोजन सबको प्रिय लग रहा था। डॉ. शिव मुनि जी म., भंडारी श्री पद्मचंद जी म., श्री सुमन मुनि जी म., श्री मनोहर मुनि जी म., श्री अमर मुनि जी म., गुरुदेव श्री प्रेमसुख जी म. एवं निहाल परिवार के सभी साधु– साध्वी जी श्री कैलाशवती जी, श्री कौशल्या जी, श्री प्रेमवती जी, श्री पवन कुमारी जी, श्री आज्ञावती जी, श्री मोहनमाला जी आदि भी अपनी शिष्या, प्रशिष्या सहित उपस्थित थे।

चादर समारोह के पूर्व दो दिन तक चली संत संगोष्ठी में संघ-संगठन के सुधार और संवर्धन पर व्यापक विचार विमर्श चला। सबको लग रहा था कि प्रवर्तक श्री सबको एक सूत्र में बांधकर समन्वय और संवाद से श्रमण संघ का संचालन करना चाहते हैं। सर्वप्रथम आचार्य श्री आनंदऋषि जी म.सा. द्वारा प्रवर्तक पद पर पूज्य श्री शांतिस्वरूप जी म.सा. जैसी गुरु गंभीर विभूति का चयन

निर्विवाद एवं श्रेष्ठ है और हम सब इसकी अनुमोदना करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित कर रहे है। आपश्री के प्रति हम सब एकनिष्ठ रहेंगे। अनुशासित और समर्पित रहेंगे, ऐसा प्रस्ताव पास किया गया।

इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव बताया करते थे कि देशभर से हजारों की संख्या में श्रावक एवं समाज के अग्रगण्य पधारे थे। **हालांकि पूज्य प्रवर्तक श्री का कार्यकाल कुछ ही समय रहा, मगर जितना भी रहा, संघहित में ऐतिहासिक रहा।**

पूज्य प्रवर्तक श्री शांतिस्वरूप जी म.सा. श्रमण संघ संचालन में एक बात हमेशा कहा करते थे कि **"मैं शास्ता नहीं सहयोगी रहूंगा"।** यह वाक्य अत्यंत ही छोटा है, मगर इसमें अपार–गरिमा भरी हुई है। समन्वय का सूत्र समाहित है। जो हम सबको भी स्मरण में रखना चाहिये। ●●●

अवहेलना किसी की ना हो!

बंधुओ! मैं बार–बार आचारांग की प्रेरणाओं को दोहराकर स्व–पर कल्याणरत रहने की चेष्टा करता हूँ। आचारांग की प्रेरणा है कि –

"नो अत्ताणं आसाएज्जा नो परं आसाएज्जा।"

अर्थात् **ना मुझे अपनी, ना दूसरों की अवहेलना करनी चाहिये। ये आत्मा को ठेस पहुंचाने वाला सबसे बड़ा घृणित व्यवहार है। इससे बचना ही चाहिये। सबको सुखकारी वचन बोलकर सम्मान देना चाहिये।**

●●●

श्रमण संघ का प्रबल दिशादर्शक पूना श्रमण सम्मेलन (1987)

❖ **भविष्य के दृष्टिगत उपाचार्य एवं युवाचार्य का चयन**

❖ **समाचारी का पुर्नगठन पुनर्रावलोकन**

महाराष्ट्र की पूना नगरी में अ.भा.श्वे.स्था. श्रमण संघ का अधिवेशन दिनांक **30 अप्रैल से 13 मई 1987** तक चला। जिसमें 12 एवं 13 मई को खुला अधिवेशन था। **लगभग तीन सौ साधु-साध्वियों ने श्रमण-संघ के आचार्य श्री आनन्दऋषि जी म. के सान्निध्य में कई दिनों तक लगातार चिंतन-मनन कर श्रमण संघ को सुदृढ़ करने के लिए निर्णय लिए। साधुओं की समाचारी, श्रमण संघ के संगठन एवं समाज को नई दिशा प्रेरणा देने वाले अनेक निर्णय सर्व सम्मति से हुए सबसे बड़ी उपलब्धि इस सम्मेलन की थी – उपाचार्य एवं युवाचार्य पद की आचार्यश्री द्वारा घोषणा एवं सम्पूर्ण संघ द्वारा सहर्ष स्वीकृति।**

सादड़ी सम्मेलन के लगभग 35 वर्षों बाद श्रमण संघ का यह विशाल अधिवेशन पूना में हुआ। 30 अप्रैल को लगभग चालीस हजार नर–नारियों, साधु–साध्वियों का भव्य जुलूस निकला एवं स्वागत समारोह हुआ। देश भर से लम्बी–लम्बी पदयात्रा करते हुए पूज्य साधु–साध्वी वृन्द पूना पधारे। **पूना के मुकुन्द नगर में सन्त-सतियों के विराजने से लेकर कार्यक्रम पंडाल भोजनशाला आदि की सारी व्यवस्थाएं की गई।** स्वागत समिति के अध्यक्ष श्री बंकट लाल कोठारी एवं उनके साथियों ने अत्यन्त परिश्रम एवं सूझ–बूझ से इस अधिवेशन को सर्वांगीण सफल बनाया। खुले अधिवेशन में **लगभग एक लाख**

लोगों की विशाल उपस्थिति थी। महाराष्ट्र के राज्यपाल एवं पूज्य शंकराचार्य, श्री स्वरूपानंद जी भी खुले अधिवेशन में सम्मिलित हुए।

इतनी विशाल उपस्थिति का भव्य पंडाल, भोजन की निःशुल्क व्यवस्था एवं अन्य छोटी बड़ी व्यवस्थाओं के अतिरिक्त आवास–व्यवस्था भी बहुत सुन्दर थी। इतनी विशाल उपस्थिति में श्रावक–श्राविका वर्ग जिस उत्साह और आशा से एकत्र हुआ था उनकी वह आशा फलीभूत हुई। **आम श्रद्धालुओं को साधु-समाचारी में उतनी दिलचस्पी नहीं थी जितनी युवाचार्य एवं उपाचार्य पद की घोषणा सुनने का आकर्षण था।**

दिनांक 12 मई को खुले अधिवेशन में पूज्य आचार्य श्री आनन्दऋषि जी ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में उपाचार्य का पद सुप्रसिद्ध विद्वान सन्त श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री को एवं युवाचार्य पद के लिए युवा विद्वान् सन्त डॉ. श्री शिव मुनि को प्रदान किया गया। उपाध्याय एवं महामंत्री, मंत्री आदि भी नियुक्त किए गए। दूसरे दिन 13 मई को खुले अधिवेशन में आचार्य श्री ने दोनों को चादर ओढ़ाई एवं दायित्त्व सौंपा। इसके साथ ही डॉ. विशाल मुनि जी को उपाध्याय, श्री सौभाग्य मुनि 'कुमुद' को महामंत्री एवं श्री सुमन मुनि जी तथा श्री प्रवीणऋषि जी को मन्त्री पद पर नियुक्त किया गया।

आचार्य श्री की घोषणा को पूरे संघ ने सहर्ष स्वीकार किया एवं जय–जयकार से वातावरण गूंज उठा। श्रमण संघ की एकताए अनुशासन और संगठन का वह अद्भुत दृश्य था। देश भर का जैन समाज बड़ी उत्सुकता से साधु–सम्मेलन के निर्णयों और गतिविधियों को देख रहा था। स्थानकवासी जैन समाज को इस सम्मेलन से एकता और संगठन की दिशा मिली। इस अधिवेशन में लिए गये निर्णयों में से कुछ तो ऐसे हैं जो पूरे जैन समाज को स्पर्श करते हैं अतः निर्णयों पर पूरे जैन समाज को चिंतन करना चाहिए। पूना के तीनों स्थानकवासी

श्रीसंघों ने सम्मिलित रूप से स्वागत–समिति गठित कर जिस बड़े पैमाने पर एकता के साथ–साथ तन–मन–धन से अधिवेशन को सफल बनाया उसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। **अ.भा.स्था. जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली के पदाधिकारी गण महीनों से इस कार्य में उन्हें सतत मार्गदर्शन और सहयोग दे रहे थे सारे कार्यक्रमों को व्यवस्थित कर रहे थे। सबका सम्मिलित प्रयास, पूज्य आचार्य श्री की कृपा एवं त्यागी विद्वान् साधु-साध्वी का परिश्रम सफल हुआ।**

❖ सम्मेलन में सर्वानुमति से पारित प्रस्ताव एवं व्यवस्थाओं हेतु बनी नवीन समाचारी

13 मई 1987 से अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन श्रमण–संघ का सम्मेलन प्रारम्भ हुआए जिसमें भारत भर से आचार्य सम्राट् 1008 पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म. की आज्ञा में विचरण करने वाले 300 साधु–साध्वी जी पधारे। जिसमें कई उपाध्याय प्रवर्तक, सलाहकार आदि पदाधिकारी मुनिराज भी सम्मिलित थे 10 दिनों तक आचार्य देव के पावन सान्निध्य में साधु–समाचारी व समाज के चहुँमुखी विकास के लिये अनेक प्रकार के नियम–उपनियम बनाये गये। ता. 12 मई को खुला अधिवेशन रखा गया, जिसमें देश भर से श्रमण संघ के अनुयायी श्रावक–श्राविकागण करीब एक लाख की संख्या में स्पेशल ट्रेनें, बसें आदि साधनों द्वारा एकत्रित हुए। श्वे. स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के नेतृत्त्व में यह अधिवेशन सानन्द सम्पन्न हुआ, समाज व देश के हजारों नेता व कार्यकर्ता भारी संख्या में पधारे।

इस पावन अवसर पर सर्वानुमति से चुने गए उपाचार्य युवाचार्य की घोषणा करते हुए आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनन्दऋषि जी महाराज ने श्रद्धेय शास्त्री श्री देवेन्द्रमुनि को भावी आचार्य के रूप में उपाचार्य पद प्रदान किया तथा श्रद्धेय डॉ. शिव मुनि जी महाराज को युवाचार्य पद प्रदान किया।

❖ उपाचार्य एवं युवाचार्य का चादर समारोह सम्पन्न हुआ

इस मंगल घोषणा को श्रवण कर आकाश जयघोषों से गुंजित हो उठा। लाखों आंखें हर्ष से परिपूर्ण हो उठीं, दि. 13 को पुनः आचार्य देव ने चादर अर्पित करते हुए अपना आशीर्वाद प्रदान किया। इस सम्मेलन में प्रवर्तक श्री रूपचन्दजी महाराज, सलाहकार श्री सुमन मुनि जी म., सचिव श्री सौभाग्यमुनि जी म. जिन्हें अब श्रमण संघीय महामंत्री बनाया गया आदि पदाधिकारी मुनिराजों का विशेष श्रम रहा, उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी महाराज, उपाध्याय श्री केवलमुनि जी महाराज, उपाध्याय श्री विशाल मुनि जी महाराज, प्रवर्तक श्री रमेश मुनि जी, प्रवर्तक श्री कल्याणऋषि जी महाराज, प्रवर्तक श्री उमेश मुनि जी, श्री विजयमुनि जी आदि का मंगल आशीर्वाद बना रहा।

❖ सम्मेलन में पारित ऐतिहासिक प्रस्ताव

प्रस्ताव 1 : राष्ट्रीय एकता-अखण्डता का समर्थन

जीवन विकास की सभी ऊर्ध्वतामूलक प्रवृत्तियाँ धर्म द्वारा संचालित हैं। धर्म तभी फलित और पुष्पित हो सकता है जब राष्ट्रीय स्तर पर सौहार्द–शांति की भावना का प्रसार हो। यह जैन श्रमण सम्मेलन राष्ट्रीय एकता और अखण्डता का पुरजोर समर्थन करता है, क्योंकि राष्ट्रीय एकता में विश्व शांति के तत्त्व निहित हैं। श्रमण संघ विश्व में व्याप्त अशांति और आतंक की समस्या का समाधान अहिंसाए अपरिग्रह और अनेकांत में देखता है। **(सर्वानुमति से पारित)**

प्रस्ताव 2 : पंजाब-समस्या का अहिंसात्मक ढंग से समाधान

भारत के ही एक अंग पंजाब राज्य में हिंसात्मक उपद्रव चल रहे हैं, यह मुनि सम्मेलन इन उपद्रवों से चिंतित है। मुनि सम्मेलन का मानना है कि उस प्रदेश में जो भी समस्या न हो, सम्बन्धित पक्ष परस्पर बातचीत द्वारा अहिंसात्मक ढंग से उस समस्या का समाधान खोजने का भगीरथ प्रयत्न करें।

प्रस्ताव 3 : सामाजिक कुरूतियों के विरूद्ध अभियान

समाज में दहेज, तिलक एवं प्रदर्शन बहुत तेजी से बढ़ता जा रहा है, यह मुनि सम्मेलन समाज में बढ़ती इन कुप्रथाओं को घोर निन्दनीय समझता है और अनुयायियों से आग्रह करता है कि बुराईयों–कुरूतियों का दृढ़तापूर्वक निषेध कर समाज को विकृतियों से बचाने में योगदान दें। यह सम्मेलन संत–सती वर्ग से भी आग्रह करता है कि यथाशक्य अपने प्रवचनों एवं विशेष प्रयासों के द्वारा भी इन कुरूतियों के निराकरण का प्रयत्न करें।

प्रस्ताव 4 : मांसाहार और मद्यपान का निषेध

मुनि सम्मेलन ने मांसाहार निषेध एवं मद्य–निषेध को अपने घोषित कार्यक्रम के अन्तर्गत स्वीकार किया है, अतः सभी श्रमण संघीय संत–सतीजी जहां भी सम्भव हों और जितना सम्भव हो, इन बुराइयों को मिटाने का पुरजोर प्रयत्न करें।

प्रस्ताव 5 : मांसाहार-अण्डाहार का विरोध

रेडियो, टी.वी., चित्रों और गद्य लेख आदि के सरकारी उपक्रम के माध्यम से अण्डों का और मांसाहार का प्रचार किया जाता है, यह हमारी अहिंसात्मक संस्कृति के नितांत विरूद्ध है। अतः यह मुनि सम्मेलन भारत सरकार एवं राज्य सरकार से आग्रह करता है कि यह दुष्प्रचार शीघ्रातिशीघ्र समाप्त करें।

प्रस्ताव 6 : दुष्प्रवृत्तियों पर अंकुश

यह मुनि सम्मेलन भारत सरकार से और राज्य सरकार से आग्रह करता है कि देश में सात्विक वातावरण की अभिवृद्धि करने एवं नागरिकों के चरित्र को ऊँचा उठाने के लिए इन दुष्प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाएं।

प्रस्ताव 7 : कत्लखाने बन्द हों

देश में सरकारी उपक्रम के रूप में एवं व्यक्ति उपक्रम के रूप में न केवल पुराने कत्लखानों को प्रस्तुत किया जा रहा हैए अपितु नये–नये कत्लखाने खोले जा रहे हैं। यह मुनि सम्मेलन

सरकार की इस प्रवृत्ति को अनुचित मानता है और भारत सरकार से यह आग्रह करता है कि कत्लखानों की बढ़त को रोकें अपितु खुले हुए कत्लखाने भी एक दिन समाप्त हो जायें, ऐसी नीति निर्धारित करें, जिससे राष्ट्र में **करूणा** और सेवापूर्ण **सात्विक वातावरण** का निर्माण हो।

प्रस्ताव 8 : क्षेत्रवार प्रवर्तक पद प्रतिष्ठा

मुनि सम्मेलन ने गण-व्यवस्था के स्थान पर क्षेत्रीय-व्यवस्था को स्वीकार किया। क्षेत्र विभाजन निम्नानुसार प्रवर्तकों का क्षेत्रीय विभाजन तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र, बिहार, बंगाल, उड़ीसा, केरल, नेपाल, गोआ आदि प्रांत व्यवस्था-केन्द्राधीन (आचार्य जी से आज्ञा)।

महाराष्ट्र : श्री कल्याणऋषि जी म.। उत्तरी भारत, भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म.। (पंजाब. हिमाचल, जम्मू कश्मीर, हरियाणा, दिल्ली, यू.पी.), जि. उदयपुर, भीलवाड़ा, डूंगरपुर, गुजरात-श्री अम्बालालजी म.। जि. सवाई माधोपुर, कोटा, बूंदी, झालावाड़, चित्तौड़ - श्री मोहनमुनिजी म.। बांसवाड़ा, मध्य-प्रदेश - श्री रमेश मुनि जी म.। पंचमहाल एवं डूंगर प्रदेश (गुजरात) - श्री उमेश मुनि जी म. 'अणु' मारवाड़, जयपुर, किशनगढ़, अजमेर, अलवर, ब्यावर, सिरोही, जालोर एवं बीकानेर आदि (उत्तरी राजस्थान) - श्री रूपचन्द जी म. 'रजत'।

प्रस्ताव 9 : संवत्सरिक एकता का सुझाव

श्रमण संघ में संवत्सरिक ऐक्य का निर्माण हो, इस दृष्टि से अनेक प्रयत्न हुए किन्तु यथोचित सर्वकालिक समाधान नहीं हो सका। **यह सम्मेलन संवत्सरी के संबंध में पक्ष-मान्यताओं के दोनों किनारों को छोड़कर मध्यम मार्ग को स्वीकार करता है।** इस निर्णय के अनुसार जब दो श्रावण होंगे, तब भाद्रपद में संवत्सरी पर्व को मनाया जायेगा, वैसे ही जब दो भाद्रपद होंगे, उस समय प्रथम भाद्रपद में संवत्सरी पर्व मनाया जायेगा।

प्रस्ताव 10 : साधु-साध्वी का वाहन-विहार निषेध

जो साधु–साध्वी जी वाहन विहार (कार) आदि से करते हैं, ऐसे तथाकथित साधु.साध्वी के साथ श्रमण संघीय कोई संत. सतीजी प्रत्यक्ष या परोक्ष कोई संबंध नहीं रखेंगे। यदि किसी भी तरह का संबंध सिद्ध होगा तो वे साधु–साध्वी जी प्रायश्चित के भागीदार समझे जाएगे। साथ ही श्रमण–संघानुयायी उपासकों को यह सम्मेलन संदेश देता है कि उन तथाकथित वाहन–विहारी साधु–साध्वी को कतई प्रोत्साहन न दें।

प्रस्ताव 11 : पंचमी समिति में विवेक और निर्दोष स्थिति का अनुकरण

पंचमी समिति के विषय में साधु–साध्वी जी स्व–विवेक से अधिकाधिक निर्दोष स्थिति का अनुकरण करें। अशोभन या अवज्ञा रूप भी न हो, इस विषय में परस्पर निंदा–विकथा भी न करें।

प्रस्ताव 12 : स्थानकों में श्रमण-श्रमणी के चित्र नहीं लगाने के विषय में

श्री वर्धमान स्था. जैन श्रावक संघ के स्थानकों में किसी श्रमण व श्रमणी का फोटो नहीं लगाया जाए। सामाजिक संस्थाओं पर यह नियम लागू नहीं होगा।

प्रस्ताव 13 : चादर समारोह के विषय में

आचार्य, युवाचार्य के चादर समारोह आयोजित किए जा सकते हैं। अन्य उपाध्याय, प्रवर्तक आदि किसी भी अधिकारी मुनि के इस प्रकार के आयोजन भविष्य में आयोजित नहीं होंगे।

प्रस्ताव 14 : संस्था के नामकरण के विषय में

भविष्य में जो भी संस्थाएं श्रमण संघीय संत–संतीजी म. की प्रेरणा से स्थापित होंगी। वे **"श्रमण भगवान महावीर" के नाम से होगी। किसी भी संस्था या संस्था की वस्तु पर श्रमण संघीय संत-सतियों का नाम अंकित नहीं होगा।**

प्रस्ताव 15 : महासतियों के विहार में सुरक्षा के विषय में

यह श्रमण सम्मेलन श्रावक संघों को संकेत करता है कि महासतियों के विहार में समुचित सुरक्षा की व्यबस्था रहे। सुरक्षा एवं पहुँचाने का कार्य श्रावक संघों का है। यदि श्रावक संघ इस दायित्त्व का निर्वाह न करें तो उस क्षेत्र में विचरने के लिए श्रमण संघ के संत–सतियों को सोचना पड़ेगा। वाहनों से दुर्घटना से बचाव के मार्ग खोजे जाएं।

प्रस्ताव 16 : चातुर्मास, क्षमापना आदि की पत्रिका प्रकाशन के विषय में

चातुर्मास में सूचनार्थ छपने वाली पत्रिकाएं, अन्तर्देशीय पत्र, पोस्टर आदि बन्द कर दिये गए हैं। इसी तरह क्षमापना पत्रिकाएं अन्तर्देशीय पत्र, पोस्टर भी बन्द कर दिए गए हैं। क्षमापना एवं चातुर्मास समाचार हेतु मात्र पोस्टकार्ड उपयोग में लिए जा सकेंगे।

प्रस्ताव 17 : तपोत्सव त्याग-तप द्वारा हो

तपोत्सव मनाने हेतु पत्रिका अन्तर्देशीय पत्र, पोस्टर छपवाने पर रोक लगा दी गई है, तपोत्सव त्याग–तप की अभिवृद्धि रूप मनाया जा सकेगा।

प्रस्ताव 18 : स्था. जैन श्राविका-मंडल की स्थापना

यह मुनि सम्मेलन समस्त आस्थावान् श्राविकाओं को संदेश देता है कि प्रत्येक क्षेत्र में श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ की तरह श्री वर्धमान स्थानकवासी श्राविका मंडल की स्थापना कर जिनशासन की सेवा में अपना अमूल्य योगदान दें। महासती मण्डल से भी सम्मेलन का आग्रह है कि इस दिशा में श्राविकाओं को दिशा–निर्देश दें।

प्रस्ताव 19 : सन्त-सती के स्वर्गवास पर बोली का निषेध

संत सतीजी के स्वर्गवास के बाद दाह–क्रिया और उनसे सम्बन्धित किसी भी रस्म के लिए कोई बोली नहीं बोली जायेगी।

प्रस्ताव 20 : बाह्य उपाधियों का परित्याग

शास्त्रीय अधिकारिक उपाधियों के अलावा सभी प्रकार की उपाधियों को यहां विराजित मुनिराज एवं महासतियों ने पूज्य आचार्य सम्राट् के चरणों में विसर्जित कर दिया है। जो मुनिराज महासतियां जी यहां उपस्थित नहीं हैं, वे भी उनका विसर्जन कर दें, ऐसा मुनि सम्मेलन का आग्रह है। जो संत सती अपने पदों का विसर्जन न करें, उनके पद निरस्त समझे जाएं। **शैक्षणिक उपाधियां निरस्त नहीं की गई है।**

प्रस्ताव 21 : जयन्ती, स्मृति दिवस आदि का परित्याग या गुणानुवाद सभा मात्र

श्रमण संघीय संत सतीजी के सान्निध्य में मनाई जाने वाली जयन्तियां स्मृति दिवस आदि के आडम्बरीय आयोजन समाप्त किए जाते हैं। उस अवसर पर त्याग, तप साधना के आयोजन हो सकेंगे, किसी भी तरह की पत्रिका, पोस्टर, फोटो आदि गृहस्थ न छपाएं। त्याग–तप की सूचना पोस्टकार्ड द्वारा दी जा सकती है।

प्रस्ताव 22 : अभिनन्दन पत्र का परित्याग

श्रमण संघीय सन्त–सतीजी स्था. जैन समाज या स्था. जैन संस्थाओं द्वारा दिए गए अभिनन्दन–पत्र ग्रहण नहीं करेंगे।

प्रस्ताव 23 : अनर्गल आक्षेपों का परिहार

श्रमण संघ और श्रमण संघीय मुनिराज व महासतियों पर उनकी रीति–नीतियों पर कई बार विरोधी तत्त्वों द्वारा अनर्गल आक्षेप किए जाते हैं। यह सम्मेलन जैन कॉन्फ्रेंस को सूचित करता है कि कॉन्फ्रेंस एक ऐसी आक्षेप निवारक समिति का गठन करे जो ठीक समय पर आक्षेपों का उचित समाधान कर सके।

प्रस्ताव 24 : अहिंसा क्षेत्र के विस्तार के लिए साधुवाद

बलि–बन्दी एवं अहिंसा के क्षेत्र में प्रवर्तक श्री रूपचन्द जी म. 'रजत' एवं महासती श्री जसकंवरजी म. तथा अनेक

सन्त साध्वी वृन्द ने श्रेष्ठ कार्य किए हैं। यह सम्मेलन उनके लिए साधुवाद–धन्यवाद प्रस्ताव पारित करता है।

प्रस्ताव 25 : दीक्षार्थी की योग्यता के विषय में व्यापक चिन्तन

दीक्षा प्रदान करने में मुमुक्षु (दीक्षार्थी) की योग्यता को प्रधानता दी गई है। अन्तिम निर्णायक के रूप में पूज्य आचार्य श्रीजी होंगे। मुमुक्षु पाठ्यक्रम के अनुसार अध्ययन होने पर ही दीक्षा–योग्यता मानी जाएगी।

प्रस्ताव 26 : जैन विश्वविद्यालय की स्थापना

यह सम्मेलन भगवान् महावीर के अहिंसा, अनेकांत आदि सिद्धांतों तथा जैन विद्या के विश्वव्यापी प्रसार–प्रचार हेतु एक जैन विश्वविद्यालय की आवश्यकता अनुभव करता है और तत्सम्बन्धित शैक्षणिक दृष्टिकोण प्राप्ति हेतु मूर्धन्य मनीषियों एवं प्रवर्तक मुनि श्री रूपचन्दजी म. 'रजत' से कॉन्फ्रेंस या तत्संबंधित समिति दिशा–निर्देश प्राप्त करें ।

प्रस्ताव 27 : जिनशासन गौरव प्रवृत्तियों का समर्थन

कतिपय पत्र–पत्रिकाओं ने जैन समाज की प्रवृत्तियों, साधुचर्याओं, भगवती दीक्षा–पद्धति आदि पर घृणात्मक आक्षेप किए हैं और किए जा रहे हैं। ऐसे निंदनीय बेबुनियाद आक्षेपों, निंदा लेखों को यह श्रमण सम्मेलन अस्वीकार करता है और पवित्र जिन शासन की गौरवमय प्रवृत्तियों का दृढ़ता के साथ समर्थन करता है।

प्रस्ताव 28 : पाठ्य-पुस्तकों में से घृणात्मक लेखों को हटाने के विषय में

जैन धर्म को 'नास्तिक दर्शन' के रूप में निरूपित किया है। आज **नास्तिक** शब्द **दार्शनिक घृणा** का रूप ले चुका है, अतः यह सम्मेलन शिक्षा विभाग से आग्रह करता है कि पाठ्य–पुस्तकों से ऐसे उल्लेख हटा दिए जायें।

प्रस्ताव 29 : धर्म-स्थानकों का उपयोग धार्मिक क्रियाओं के लिए ही हो

यह सम्मेलन श्रावक संघों को यह संसूचना देता है कि जो धर्म–ध्यानार्थ स्थानक आदि भवन है। उनका धर्म ध्यान के रूप में ही उपयोग लिया जाय।

प्रस्ताव 30 : नवकार-मन्त्र के जाप की प्रेरणा

जैनत्व के संस्कारों के स्थायित्व के लिए प्रत्येक साधु साध्वीजी प्रत्येक स्थानकवासी जैन को प्रतिदिन स्थानक में जाकर कम से कम पाँच नवकार मन्त्र का ध्यान करने की प्रेरणा अवश्य देवें।

प्रस्ताव 31 : 'नमो जिणाणं, जियभयाणं' संघ का प्रतीक वाक्य

यह सम्मेलन सर्व सहमति से **'नमो जिणाणं जियभयाणं'** को अपने प्रेरक प्रतीक वाक्य के रूप में स्वीकार करता है।

प्रस्ताव 32 : वीरवाल प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन

पण्डित श्री समीर मुनि जी द्वारा प्रवर्तित वीरवाल प्रवृत्ति को श्रमण संघ मान्यता प्रदान करता है। सभी सन्त साध्वीजी से सम्मेलन आग्रह करता है कि इस प्रवृत्ति को अपनी मर्यादा के अनुसार बल दें।

प्रस्ताव 33 : 'जैन' शब्द का प्रयोग आवश्यक

जैन समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने नाम के साथ 'जैन' शब्द अवश्य लगाएं। यदि गोत्र लगाए तो भी जैन अवश्य लिखे।

प्रस्ताव 34 : ध्यान-साधना प्रचलन के विषय में समिति की नियुक्ति

समाज में जिन शासन सम्मत ध्यान प्रणाली को समुचित विकसित करने हेतु निम्न मुनिराजों की एक समिति निर्धारित की जाती है। (1) युवाचार्य श्री शिव मुनि जी म.,

(2) श्री सुरेश मुनि जी (मालवी), (३) श्री प्रवीणऋषि जी, आदि। साध्वी – (1) डॉ. श्री प्रियदर्शना जी, (2) श्री उमरावकुंवर जी 'अर्चना', (3) डॉ. मंजुश्री जी, (4) श्री प्रभाकुंवर जी। ये मुनि एवं साध्वीजी जिन शासन-सम्मत ध्यान-प्रणाली को सुनिश्चित कर आचार्य श्री की सम्मति से समाज में प्रचारित-प्रसारित करें।

प्रस्ताव 35 : आगम-पाठों की शुद्धि के लिए अन्वेषण-समिति

आगम के विवादास्पद पाठों के सम्यक् अर्थ ढूंढने हेतु निम्न मुनिराजों की अन्वेषण–समिति नियुक्त की जाती है – (1) उपाचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म., (2) युवाचार्य डॉ. शिव मुनि जी म., (3) प्रवर्तक श्री उमेश मुनि जी म., 'अणु', (4) श्री प्रवीणऋषि जी म. आदि।

साध्वीजी की भी इसी हेतु एक अन्वेषण–समिति नियुक्त की जाती है – (1) साध्वी डॉ. श्री मुक्तिप्रभा जी, (2) साध्वी श्री मंजुश्री जी, (3) साध्वी डॉ. श्री प्रियदर्शना जी, (4) साध्वी श्री प्रभाकुंवर जी (खादी वाले), (5) साध्वी डॉ. श्री धर्मशीला जी, (6) साध्वी श्री सन्मति जी, (7) साध्वी श्री शांतिसुधा जी म.।

प्रस्ताव 36 : चातुर्मास सूची में एकरूपता

यह श्रमण सम्मेलन सर्वानुभूति से चातुर्मास सूची के लिए निम्न प्रस्ताव क्रम रूप से पारित करता है। **एकरूपता की दृष्टि से - चातुर्मास सूची में सर्व प्रथम आचार्यश्रीजी का चातुर्मास, तदनन्तर प्रदेशों के क्रमशः नाम आए वहां लिखा जाए** अमुक प्रदेश में चातुर्मास। (उस प्रदेश के पदाधिकारी का नाम पहले आएगा तदनन्तर अन्य चातुर्मास) सर्वप्रथम सभी पदाधिकारियों के क्रमशः चातुर्मास स्थल एवं नाम दिए जायें।

प्रस्ताव 37 : त्रिकाल संवर-साधना

प्रत्येक जैन के द्वारा करणीय एक संक्षिप्त किंतु अति उपयोगी **"त्रिकाल संवर-साधना"** को यह सम्मेलन जैन समाज

के सामने प्रस्तुत करता है। यह स्वल्प समय में साध्य किंतु अत्यन्त उपयोगी धर्मक्रिया है, यह प्रत्येक जैन के लिए अवश्य करणीय है। यथासम्भव त्रिकाल संवर में से एक संवर–क्रिया धर्म स्थानक में साधी जाए।

संवर-क्रिया का प्रारूप, समय–प्रातः, मध्याह, सायं। त्याज्य–सचित्त स्पर्श। साधन–मुख पर मुख-वस्त्रिका या उत्तरासन। स्थान–निर्वद्य स्थल। दिशा–पूर्व या उत्तर दिशि सन्मुख।

❖ विधि (प्रक्रिया)

1. **तीन बार तिक्खुतों के पाठ से गुरु वन्दन।**

2. **सुखासन में आसीन होकर एक णमुक्कार मन्त्र का उच्चारण।**

3. **सवर साधना पाठ बोलकर संवर प्रतिज्ञा ली जाए।**

❖ संवर प्रतिज्ञा पाठ

'करेमि भंते संवरं पंचासवाजुत्तं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि' णमुक्कार पज्जंतं एगविहं एगविहेण ण करेमि कायसा तस्स भंते पडिक्कामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।'

4. **चार लोगस्स का ध्यान।**

5. **'नमो अरिहंताणं' बोलकर ध्यान पूर्ति करना।**

6. **एक लोगस्स प्रकट बोलना।**

7. **एक णमुक्कारं मंत्र प्रकट बोलकर। क्रिया सम्पन्न।**

प्रस्ताव 38 : केसैटों का प्रयोग न हो

श्रमण संघीय मुनिराज एवं महासती जी के सान्निध्य में जो भी आयोजन होंगे, उनका वी.डी.ओ. कैसेट नहीं लिया जा सकेगा। सरकारी समाचार एजेंसियां समाचार–संकलन की दृष्टि से लें तो उसकी बात अलग।

प्रस्ताव 39 : 'निर्ग्रन्थ प्रवचन परिशिष्ट युक्त'– एक प्रामाणिक प्रतिनिधि-ग्रन्थ, तत्त्वार्थ सूत्र समन्वय-सूत्र आधार भूत मुख्य ग्रन्थ।

जैन धर्म दर्शन के परिचयार्थ एक प्रामाणिक प्रतिनिधि ग्रन्थ के रूप में 'निर्ग्रन्थ प्रवचन' परिशिष्ट युक्त स्वीकार किया जाता है। निर्ग्रन्थ प्रवचन के साथ परिशिष्ट नियोजित करने का कार्य 'उपाध्याय मंडल' करेगा। परिशिष्ट नियोजन हेतु जैनागम तत्त्वार्थ समन्वय सूत्र मुख्य आधारभूत ग्रन्थ रहेगा।

प्रस्ताव 40 : त्रिलोक रत्न स्था. जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड

स्था. जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड का परीक्षाक्रम–विद्यार्थी और दीक्षार्थी विरक्त आत्माओं के लिए मान्यता प्राप्त यह श्रमण सम्मेलन विद्यार्थी, सन्त–सतीजी एवं विरक्त आत्माओं के अध्ययन–क्रम हेतु ति.र.स्था. जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड अहमदनगर को परीक्षा बोर्ड के रूप में मान्यता प्रदान करता है।

सभी ज्ञानार्थी संत–सतीजी एवं मुमुक्षुओं से सम्मेलन का आग्रह एवं निर्देशन है कि वे उक्त बोर्ड से परीक्षाएं देकर अपने अध्ययन की श्रीवृद्धि करें। सम्मेलन बोर्ड अधिकारियों से भी यह संकेत करता है कि बोर्ड के पाठ्यक्रम को सुव्यवस्थित करने का यत्न करें साथ ही अन्यान्य औचित्य का भी विधिवत निर्माण करें।

प्रस्ताव 41 : पर्वादिक का निर्णय के लिए 'निर्णय सागर पंचाग' को मान्यता

श्रमण संघ अपने पर्वादिक का निर्णय करने तिथि और समय का निर्धारण करने हेतु नीमच से प्रकाशित होने वाले निर्णय सागर पंचांग को मान्य किया है। साथ प्रवर्तक श्री रूपचंद जी म. के संयोजकत्व में 'पक्खी' तिथि निर्णायक समिति का सम्मेलन ने पुनर्गठन कर लिया है। समिति के अन्य सदस्य निम्नानुसार है : उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी म.सा., प्रवर्तक श्री अम्बालाल जी म.सा., प्रवर्तक श्री रमेश मुनि जी म. सा., श्रद्धेय श्री रूपेन्द्र मुनि जी म.सा., उपप्रवर्तक श्री चंदन मुनि जी म.सा., सलाहकार श्री कुन्दनऋषि जी म.सा. आदि होंगे।

प्रस्ताव 42 : दैनिक प्रार्थना

श्रमण संघ सम्मेलन ने दैनिक प्रार्थना के लिए एक व्यवस्थित क्रम निश्चित किया है। चतुर्विध संघ निम्नोक्त क्रम से प्रार्थना–लाभ उठाएं।

1. णमुक्कार महामंत्र, 2. जो भगवती त्रिशला.., 3. तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्ति..., 4. शिवमस्तु..., 5. श्री आदि जिनन्दं, 6. अरिहंत जप तप, 7. ओम गुरु, ओम गुरु, 8. श्रद्धा सुमनांजली, 9. गुरुदेव तुम्हें नमस्कार, 10. मंगल पाठ।

श्रमणसंघीय मान्यता प्राप्त प्रतिनिधि प्रार्थना

महावीर-वंदना

(तर्ज : यदि भला किसी का.। उठ भोर भई टुक जाग...)

श्रद्धा सुमनांजली अर्पित हो, महावीर प्रभु के चरणों में।
तन मन जीवन आनन्दित हो, महावीर प्रभु के चरणों में।।
हो वीतराग का भाव स्पर्श, परिवर्तित हो जीवन सारा।
कथनी करनी का साम्य योग, रच पाए जीवन की धारा।
मोह मेरु दण्ड अब खण्डित हो, महावीर प्रभु के चरणों में।।
जीवन की वीणा पर करूणा की, मधुर झंकार चले।
मानव मानव में भेद नहीं, पग पग समता के कुसुम खिले।
जीवन सारा सत्यान्वित हो, महावीर प्रभु के चरणों में।।
अपने पर अपना अनुशासन, यह संयम की सच्ची भाषा।
यह राष्ट्र विश्व मंगलमय हो, सेवा की सुन्दर परिभाषा।
संयम सेवा परिवर्तित हो, महावीर प्रभु के चरणों में।।
जिनशासन यह मंगलमय है, यह श्रमण संघ मंगलमय है।
मंगलमय आगम सूत्र अर्थ, जिन पथ साधन मंगलमय है।
अमंगल सब कुछ वर्जित हो, महावीर प्रभु के चरणों में।।
आचार्य प्रवर उपाचार्य प्रवर, उवज्झाय प्रवर्तक अनुशास्ता।
शासन शास्ता के प्रति रहे, दृढ़ प्रीतिपूर्ण सच्ची आस्था।
'मुनि कुमुद' संघ संवर्धित हो, महावीर प्रभु के चरणों में।।

रचयिता श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद'

संसूचन – जहां **'उपाचार्य प्रवर'** है वहां दुबारा बोलते समय **'युवाचार्य प्रवर'** भी बोला जाए। इस तरह दोनों महापुरुषों के प्रति श्रद्धार्पण हो जाएगा।

❖ धर्म-जागरिका

जिन–आगमों में सद्गृहस्थों के योग्य करणीय विधियों में धर्म–जागरिकाए कुटुम्ब–जागरिका जैसी उदात्त विधियों के उल्लेख आये हैं। तत्कालीन सद्गृहस्थ उन विधियों का अनुसरण नियमित रूप से किया करते थे फलतः उनका गृहस्थ जीवन धर्म एवं नैतिकता के अनुरूप प्रचलित रहता था।

यह श्रमण सम्मेलन यह अनुभव करता है कि ये विधियाँ समाज में पुनः स्थापित हों। इस हेतु धर्म–जागरिका एवं कुटुम्ब जागरिका का एक संक्षिप्त प्रारूप यह सम्मेलन स्वीकार करता है और समाज को प्रेरित करता है कि वह इन विधियों का अनुगमन करें। साथ ही श्रमण संघीय संत–सतीजी म. इन विधियों को प्रसारित करने में अपना योगदान दें। जिससे यह कार्यक्रम श्रमण संघ के रचनात्मक अभियान के रूप में सिद्ध हो सके।

❖ कुटुम्ब-जागरिका

मनुष्य से हमारी जो अपेक्षाएं है, उन सब अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए हमें प्रयास, प्रयोग और मेहनत मनुष्य पर न करके मनुष्य जहां से जीवन शक्ति प्राप्त करता है वहां करनी चाहिए। समाज, राज्य धर्म, संघ आदि से पहले संबंध परिवार से आता है। उनके जीवन का 75 (प्रतिशत) निर्माण परिवार से होता है। परिवार से जाने–अनजाने वह संस्कारों का खाद्य प्राप्त करता है, जिसके आधार पर उसका जीवन शक्तिशाली बनता है। परिवार में यदि आत्मीयता एवं शांति हो तो व्यक्ति के जीवन में भी शांति सहज सम्भव है। आत्मीयता सहज ही बिना आयास हो सकती है। परिवार में उसका अभाव उसके जीवन का बर्बाद करके रख देता है। **अतः आज की मूलभूत आवश्यकता है, कुटुम्ब-संस्था**

को जीवंत रखने की। जिस उद्देश्य को लेकर भ. ऋषभ देव ने कुटुम्ब संस्था का प्रवर्तन किया, उस उद्देश्य की पूर्ति उससे हो ऐसे प्रयास के हित ही भ. ऋषभदेव ने कुटुम्ब संस्था का निर्माण किया था। व्यक्ति सुशील, संस्कारी एवं निर्माण बनने का सामर्थ्य प्राप्त करने के लिए **'परस्परोपग्रहो जीवानाम्'** को जीवन में उसका साक्षात्कार कराया है। फिर भी उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति कुटुम्ब संस्था से नहीं हो रही है। फलस्वरूप दहेज, आडम्बर तथा भ्रष्टाचार जैसी मानव को दानव बनाने वाली शक्तियाँ जीवन कीं पवित्रता को निगल कर समाप्त कर रही है। कुटुम्ब संस्था के पुनर्जीवन से पवित्र जीवन जीने की व्यवस्था स्थापित की जा सकती है। इस हेतु 'कुटुम्ब–संस्था' को संस्कारित करने हेतु 'कुटुम्ब–जागरिया' कार्यक्रम प्रस्तुत है।

❖ सदस्यों के लिए नियम

(1) कुटुम्ब परिवार के सभी सदस्य प्रतिदिन मिल कर कुटुम्ब–जागरिया का गान करें।

(2) कुटुम्ब जागरिया का गान करने के पूर्व छोटे सदस्य बड़ों को प्रणाम करें।

(3) सप्ताह में एक दिन परिवार सम्बन्धी विषयों की चर्चा के लिए गोष्ठी का आयोजन करें।

(4) हर मास कार्यालय से प्रसारित कुटुम्ब जागरिया पत्र्क का सामूहिक वाचन करें।

(5) पारिवारिक सदस्यों का विश्वास सम्पादन कर परिवार में ज्यादा समय तक अबोला न रखें।

प्रस्ताव 44 : जन-कल्याण योजना

लोक–जीवन में व्याप्त विकृतियों का विष न केवल सामान्य जनजीवन को दूषित करता है अपितु सामाजिक राष्ट्रीय सुव्यवस्थाओं को भी भ्रष्ट और छिन्न–छिन्न करके रख देता है।

चरित्र मूल्यों का गिरना किसी भी राष्ट्र के लिए सबसे बड़ा पतन है और दुःख का विषय है कि भारत में यह पतन निरन्तर घटित होता चला जा रहा है। यह मुनि–सम्मेलन राष्ट्र में गिरते चारित्रिक मूल्यों की सुरक्षा के लिए गहरा चिंतित है। विस्तुत चिंतन–मनन के बाद यह मुनि–सम्मेलन राष्ट्र के समक्ष जन–कल्याण योजना को चारित्रिक मूल्यों की पुनः स्थापना के आधार–तत्त्व के रूप में प्रस्तुत करता है। सम्प्रदाय, वर्ग, क्षेत्र आदि सभी परिधियों से परे 'मानवता' को परिभाषित करने वाली यह योजना मानव–मात्र के लिए चिंतनीय एवं अनुकरणीय है। ऐसा मुनि–सम्मेलन का अभिमत है। यह मुनि–सम्मेलन श्रमण संघीय समस्त सन्त–सती समुदाय से आग्रह करता है कि वे राष्ट्र और विश्व में नैतिक मूल्यों की पुनः स्थापना के लक्ष्य को अपने सामने रखकर उस दिशा में निरन्तर प्रयत्न करें। यह जन–कल्याण योजना वह आधारभूत तत्त्व है जो विश्व जन–मंगल का लक्ष्य लेकर चलने वाले परमोपकारी सज्जनों को अपनी ध्येय प्राप्ति में सहयोग स्वरूप सिद्ध हो सकेगा। प्रस्तुत योजना में आठ स्वर्ण–सूत्र तथा 31 नियम हैं।

स्वर्ण सूत्र

1. करूणा-सूत्र

(1) किसी निरपराध–पशु–पक्षी या मानव को पीड़ा नहीं पहुँचाना।

(2) मानवों व पशुओं पर सीमा से अधिक वजन नहीं लादना।

(3) किसी के भोजन में व्यवधान नहीं डालना।

अपवाद–स्वास्थ्य की दृष्टि से किसी के अपव्यय भोजन को रोकना बाधित नहीं।

(4) शिकार, आखेट नहीं खेलना ।

(5) जो पशु–पक्षी या मानव किसी तरह अपराधी भी हों तो उन्हें अपराध से अधिक नहीं दण्ड नहीं देना। अंग–भग या चर्म–भंग हो ऐसा प्रहार नहीं करना।

(6) पीड़ित प्राणी की सेवा करने में यथासंभव औषध, भोजन, पानी आदि उपलब्ध करने में अपने जीवन की कृतार्थता समझना। कम से कम एक माह में एक दिन पीड़ितों की सेवा में अर्पण करना या किसी हास्पिटल में जाकर अपने खर्च से सेवा देना।

2. सत्य सूत्र

(1) किसी को नुकसान न पहुँचे ऐसे झूठ से अपने को बचाना।

(2) किसी पर झूठा कलंक लगाने से बचना।

(3) किसी की गुप्त और रहस्यमयी बात को प्रकट नहीं करना।

(4) झूठी साक्षी नहीं देना, झूठे लेख नहीं लिखना, नकली 'बहियां' नहीं बनाना।

3. अस्तेय-सूत्र

(1) किसी भी तरह की चोरी नहीं करना।

(2) जान–बूझकर चोरी का माल नहीं लेना और चोरों की कोई मदद नहीं करना।

नोट–सरकारी टेक्स चुराना भी चोरी है।

(3) खोटे नाप–तोल नहीं रखना।

(4) वस्तु में तुच्छ वस्तु की मिलावट नहीं करना।

4. ब्रह्मचर्य-सूत्र

(1) अपनी विवाहिता स्त्री से भिन्न अन्य स्त्रियों के प्रति माता और बहन जैसी उदात्त भावना का सर्जन करना।

5. अपरिग्रह-सूत्र

(1) अनैतिक व्यवसाय कर धन–संग्रह नहीं करना।

(2) अपनी आय के शुद्ध लाभांश में से कुछ राशि राष्ट्रसेवा या पीड़ित मानव की सेवा में व्यय करना।

6. सत्वशुद्धि सूत्र

(1) मद्य–मांस का सेवन नहीं करना।

(2) भांग, गांजा, चरस, तमाल (तम्बाकू) का सेवन नहीं करना।

(3) जुआ, सट्टा नहीं खेलना।

7. राष्ट्रहित सूत्र

(1) रिश्वत लेना व देना इन दोनों पापों से बचना।

(1) चुनावों में अनैतिक हथकण्डे नहीं अपनाना।

(3) विभिन्न धर्म और सम्प्रदायों तथा राजनैतिक विचारधाराओं की विभिन्न पार्टियों के प्रति सहिष्णु रहना। सह–अस्तित्व के सिद्धांत को व्यवहार में लाना तथा साम्प्रदायिकता को बढ़ावा नहीं देना। अन्य राष्ट्र के प्रति सहिष्णु रहना।

(4) किसी भी तरह की तोड़–फोड़, आगजनी लूटपाट में भाग नहीं लेना।

(5) अपनी मांग मनवाने के लिए हिंसा के मार्ग पर नहीं चलना।

(6) शिक्षा, स्वास्थ्य, रक्षा, न्यायादि राष्ट्रीय अनुशासन के अन्तर्गत जीना।

(7) स्व–विवाह या अपनी सन्तान के विवाह के प्रसंग पर तिलक, दहेज जैसी कुप्रथाओं को समाप्त करना। विवाहोपरात कन्या को उसके माता–पिता तथा स्वजनों द्वारा दिए गए उपहारों का किसी भी प्रकार का प्रदर्शन नहीं करना।

(8) प्रत्येक समस्या के समाधान के लिए मारपीट, हिंसा और युद्ध के स्थान पर बातचीत का मार्ग स्वीकार करना।

(9) अस्पृश्यता और जातिवाद के स्थान पर मानव की गरिमा को महत्त्व देना।

8 आत्महित-सूत्र

(1) प्रतिदिन कम से कम 10 मिनट किसी सत्साहित्य का 'स्वाध्याय' करना अथवा कोई प्रार्थना, भजन, स्तवन करना।

(2) प्रतिदिन कम से कम 10 मिनट एकांत में ध्यान करना और अपने हृदय को उत्तम विचारों से परिपूर्ण बना देना तथा सम्पूर्ण विश्व के लिए मंगलकामना करना।

आठ सूत्र तथा 31 नियमों से परिपूर्ण यह जन-कल्याण-योजना' विश्व के मानव-मात्र को समर्पित है। विश्व के प्रत्येक प्रबुद्ध नागरिक को प्रस्तुत योजना का सुसेवी बनकर इसका घर-घर में प्रचार करना चाहिए। प्रस्तुत योजना का आराधक (स्वीकार करने वाला) 'गुणसेवी' कहलायेगा। प्रत्येक गुणसेवी के लिए सभी नियमों का पालन अनिवार्य होगा। किंतु कोई व्यक्ति इनमें से कुछ नियमों को छोड़कर कुछ नियमों को स्वीकार करे तो वह कर सकेगा, किंतु वह गुणसेवी नहीं कहला कर 'गुणरागी' कहलायेगा। ●●●

आत्मद्रष्टा ही जाग्रत है!

जैन धर्माचार का महासागर **आचारांग सूत्र** अपनी एक गाथा में ये सूत्र देता है कि —

सुत्ता अमुणी, मुणिणो सया जागरंति।

अर्थात् **आत्मदर्शन से शून्य अकर्मठ अज्ञानी सदा ही सोये रहते हैं। वहीं आत्मदृष्टा पुरुषार्थी सदा जाग्रत रहकर आत्म कल्याणरत रहते हैं। आत्म जागरण ही हर साधक का प्रबल पुरुषार्थ है। यथार्थ श्रमणत्व है।** ●●●

मालवा की धरती पर जगमगाया चतुर्विध संघ सम्मेलन

श्रमण संघीय वृहद् साधु-सम्मेलन 2015 इन्दौर (मध्य प्रदेश)

भावी नैतृत्व निर्माण, युवाचार्य पद प्रतिष्ठा

पूना साधु सम्मेलन 1987 के पश्चात श्रमण संघ के दो–दो परम पूज्य आचार्य भगवंतों का श्रीसंघ से वियोग हो गया। **पहले राष्ट्रसंत द्वितीय श्रमण संघीय पट्टधर परम पूज्य आचार्य श्री आनंदऋषि जी म.सा. का देवलोकगम सन 1992 में अहमदनगर में हुआ तो, तृतीय पट्टधर श्रमणाचार्य साहित्य मनीषी श्री देवेन्द्र मुनि जी म.सा. का देवलोकगमन 26 अप्रैल सन् 1999 घाटकोपर मुम्बई में हो गया। ये सात वर्ष श्रमण संघ के विस्तार, व्यापक भ्रमण और ऐतिहासिक चातुर्मासों के साथ एक सुखद स्मृति बन रह गए। तब तत्कालीन युवाचार्य ध्यानयोगी डॉ. शिव मुनि जी म.सा. विचरण के बजाय ध्यान योग के गहन प्रयोग में अद्भुत प्रयोग और एकांतर तप में लीन रहे। नासिक श्रीसंघ ने आपश्री की निरंतर सेवा का लाभ लिया।**

इसके बाद 9 जून 1999 को चतुर्थ पट्टधर आचार्य श्री डॉ शिव मुनि जी म.सा. के आचार्य पद की घोषणा अहमदनगर में समारोह पूर्वक सम्पन हुई और 7 मई 2001 को दिल्ली के ऋषभ विहार क्षेत्र में आचार्य पद, प्रतिष्ठा चादर समारोह सानंद सम्मपन्न हुआ।

इस अंतराल में अनेक बार आगामी साधु सम्मेलन की चर्चा चली मगर व्यापक–विमर्श के अभाव में साधु सम्मेलन आगे की तिथि के इन्तजार में प्रतिक्षारत रहा। अंततः **दिल्ली में 30 अगस्त 2014 को प्रशांत विहार में चातुर्मास हेतु विराजित**

युगप्रधान आचार्य श्री शिवमुनि जी म.सा. ने अपनी एक विज्ञप्ति द्वारा वृहद् साधु सम्मेलन 2015 इन्दौर की मंगलमयी घोषणा करके कुछ कर दिखाने का साहस जगा दिया था। वर्षों से प्रतिक्षित साधु सम्मेलन के आयोजन हेतु स्थानकवासी जैन समाज का बच्चा–बच्चा जैन कॉन्फ्रेंस से जुड़कर इस आयोजन को सफल बनाने हेतु जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नेमनाथ जी जैन के नैतृत्व में ऐसा जुड़ा कि एक नया इतिहास अठखेलियाँ करने लगा।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा लगभग 109 वर्षों के मध्य में एक और ऐतिहासिक अवसर को प्राप्त किया और **'आत्मदृष्टि सन्त समागम श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रमण संघीय वृहद् साधु-साध्वी सम्मेलन'** का आयोजन श्रमण संघीय आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. श्री शिव मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में इन्दौर (मध्य प्रदेश) में लगभग 500 साधु–साध्वी जी म. की उपस्थिति में सफलता पूर्वक आयोजित हुआ।

धर्मनगरी इन्दौर में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नेमनाथ जी जैन की अध्यक्षता में आयोजित हुए इस महाकुंभ में एक लाख से ज्यादा श्रद्धालुओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर एक स्वर्णिम इतिहास के साक्षी के रूप में इस अवसर का आनन्द लिया। जैन धर्म अपनी अहिंसात्मक छवि को विश्व पटल पर स्थापित करने में एक बार फिर से सफल हुआ।

इस भूमिका के साथ **30 अगस्त 2014 से लेकर 29 मार्च 2015** तक चले उत्साहवर्धक उत्सव का क्षण–क्षण चला घटनाक्रम शब्दों में बांधने का प्रयास यहां है। क्योंकि **जिस दृष्टि ने नई सृष्टि की रचना की उसके मायने व्यापक हैं। जिस संकल्प को साधने हेतु चतुर्विध संघ ने जोर लगाया उसका सुफल समाज ने देखा और अनुभव किया।** उत्तर भारत से आचार्य श्रीजी के साथ अनेक उपाध्याय, प्रवर्तक, उप

प्रवर्तक, सलाहकार आदि के साथ श्रमणी मंडल भी बड़ी संख्या में इन्दौर गया।

राजस्थान, महाराष्ट्र, सुदूर दक्षिण–पश्चिम से भी भारी संख्या में पूज्य साधु–साध्वी जी म. का पदार्पण इन्दौर नगरी में हुआ। इस पवित्र पावन आप्त गंगा को आमंत्रण देने हेतु जैन कॉन्फ्रेंस के प्रमुख पदाधिकारी, युवा एवं महिला शाखा ने स्थान–स्थान पर जाकर पूज्य संत साध्वी जी म. से इन्दौर पधारने का निवेदन किया। यह असाधारण परिश्रम रंग लाया। श्रद्धा भरे आव्हान से आस्था युक्त आमंत्रण से हमारे त्यागात्मा भी बहुत प्रभावित हुए।

सभी विज्ञ पुरुषों ने इस आयोजन में पधारकर श्रमण संघ का यशवर्धन करने हेतु अपनी संगठन शक्ति को प्रकट करने हेतु अच्छा प्रयास किया। धनिकों ने धन दिया, कार्यकर्ताओं ने तन–मन दिया। संतों–महात्माओं ने महामान्य साध्वियों ने प्रेरक ज्ञान दिया तो श्रमण संघ में नई ऊर्जा का संचार हो गया। संघीय गौरव का आदर्श उदाहरण सबके समक्ष भव्यता से आदर्श उदाहरण उपस्थित हो गया । इसे काव्य की भाषा में अभिव्यक्त करें तो हम सगर्व कह सकते हैं कि–

'ये उपलब्धि उत्थान की, स्वाभिमान सम्मान की,
श्वेद रक्त प्रतिभा प्रज्ञा के नित प्रणम्य अवदान की।
त्याग-तपस्या पौरुष साहस, पुण्य साधना का संयोग
तब ये आई सुखद घड़ी, वेला रच गई उत्थान की।।

❖ पूज्य संत साध्वी जी म. का आगमन

राजस्थान की सीमा से नीमच में परम पूज्य आचार्य श्री शिव मुनि जी म. एवं महामंत्री श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' का संयुक्त प्रवेश हुआ। 10–11 फरवरी 2015 को दो दिवसीय प्रवास के पश्चात् प्रातः जामुनिया, शाम जीरन फाटा, रात्रि मल्हारगढ़, 13 पीपलिया मंडी, 14–15 मन्दसौर, 16

दलौदा, 17 कचनारा, शाम ढोढर, 18–19 जावरा, 20 बड़ावदा, 21 घिनोदा, 22–23 खाचरौद, 24 नागदा, 25 उन्हैल, 26 फरवरी–रूई, 27 सोडन, 28 नमक मंडी उज्जैन, 2 मार्च पंथ पिपलाई, 3 सांवेर, 4 धरमपुरी, शाम को श्री प्रकाश भटेवरा के फार्म हाऊस पर होते हुए संत मंडल 5–6 मार्च को प्रेस्टिज परिवार को मध्य दर्शन लाभ देने हेतु उपस्थित हुए। स्थान–स्थान पर उपस्थित श्रावक–श्राविकाओं ने परम श्रद्धेय संत–साध्वी मंडल के दर्शन प्रवचन का लाभ लिया। इन्दौर से 300 महिलाओं सहित सैंकड़ों श्रावकों ने नीमच जाकर सर्वप्रथम भावभीना स्वागत किया। **जावरा में पू. प्रवर्तक श्री सुमन मुनि जी म. एवं पूज्य महामंत्री श्री सौभाग्य मुनि जी म. कुमुद ने गणाधीश पू. श्री उमेश मुनि जी म.सा. के शिष्य प्रशिष्यों को भी सम्मेलन में पधार कर श्रमण संघ की शक्ति को बढ़ाने का निवेदन किया।** लेकिन हठपूर्वक खड़ी की गई शर्तों ने प्रयास विफल कर दिया।

दूसरी ओर पूज्य उपाध्याय डॉ. श्री विशाल मुनि जी म., राजर्षि तपस्वी रत्न श्री सुमति प्रकाश जी म. आदि ठाणा ने दिल्ली से आगरा होते हुए मध्य प्रदेश में प्रवेश किया। मैंने स्वयं (उपाध्याय श्री रवीन्द्र मुनि) ने भी संत–साध्वी मंडल के साथ गुड़गांव से सवाई माधोपुर, कोटा, सोजत, आगर, मालवा, उज्जैन, देवास होते हुए इन्दौर के विभिन्न उपनगरों में स्पर्शना प्रेरणा हेतु विचरण किया। प्रज्ञा प्रदीप उपाध्याय श्री प्रवीणऋषि जी आदि ठाणा 24 फरवरी को **इन्दौर पब्लिक स्कूल पधारे। 26 फरवरी को जैन भवन जंगमपुरा से एक शोभायात्रा सहित महावीर भवन इमली बाजार पधारे।**

इस अवसर पर प्रज्ञा प्रदीप उपाध्याय श्री प्रवीण ऋषि जी म. ने कहा कि **"श्रमण संस्कृति के महापुरुषों ने अपने त्याग व समर्पण से श्रमण संघ का निर्माण किया है। उन्हीं की विरासत को लेकर देश के विभिन्न प्रांतों से संत व साध्वीगण वृहद साधु**

सम्मेलन के लिए पधारे हैं। हम सभी का दायित्व है कि एकजुटता के साथ श्रमण संघ के उज्जवल भविष्य का निर्माण करें।" महावीर भवन इमली बाजार की धर्मसभा में यह अभिनन्दन समारोह आयोजित था। इस अवसर पर प्रवर्तक श्री रमेश मुनि जी म. ने पधारे हुए सभी संत व साध्वीगणों का अभिनंदन किया। इस सभा में मैंने (उपाध्याय श्री रवीन्द्र मुनि की म), उप प्रवर्तक डॉ. राजेन्द्र मुनि जी म., डॉ. सम्यक् मुनि जी म. व श्री शालीभद्र मुनि जी म. ने भी सम्बोधित किया। महासती श्री रमेश कुमारी जी, नियमदर्शना जी, सौम्यज्योति जी व विजेता जी ने अभिनंदन गीत प्रस्तुत किये। **जैन दर्शन के विद्वान डॉ. सागरमल जी जैन का सम्मान किया गया।** जैन श्रावक संघ ट्रस्ट के महामंत्री श्री गजराज सिंह झामड़ ने संत व साध्वीगणों का अभिनंदन किया। कार्यक्रम का संचालन श्री हस्तीमल झेलावत ने किया।

इसके पूर्व उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी म., डॉ. राजेन्द्र मुनि जी म. श्री दिनेश मुनि जी म., श्री नरेश मुनि जी म., श्री विनय मुनि जी 'वागीश', श्री गौतम मुनि जी म. व श्री पराग मुनि जी म. के सम्मान में जैन स्थानक राजमोहल्ला से मंगल प्रवेश जुलूस निकला। जो मालगंज, इतवारिया, सांटा बाजार, आड़ा बाजार से राजवाड़ा होकर महावीर भवन पहुंचा। जुलूस के आगे विभिन्न महिला मंडल की बहनें पुरुष व महिलाएं जय जयकार करते हुए चल रहे थे।

❖ आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी गुणगान सभा का आयोजन

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ ट्रस्ट महावीर भवन के तत्वावधान में **1 मार्च 2015 रविवार को सुबह 9 बजे आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.सा. का 75वां दीक्षा हीरक जयंती दिवस मनाया गया एवं गुणानुवाद सभा का महावीर भवन इमली बाजार में आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में इन्दौर में विराजित सभी संत-साध्वीगण सादर उपस्थित हुए।**

इन्दौर पब्लिक स्कूल सांवेर में आयोजित हुई धर्म सभा

❖ संयम के प्रति निष्ठा से श्रमण संघ को सुदृढ़ बनायें

आचार्य श्रीजी का आव्हान

आपने फरमाया कि – "प्रभु महावीर के शासन के प्रति श्रद्धा समर्पण का भाव लेकर हजारों मीलों की पदयात्रा करके साधु–साध्वी सम्मेलन हेतु आ रहे हैं। जिस उद्देश्य से संयम लिया है, उसका निष्ठापूर्वक पालन करके श्रमण संघ को सुदृढ़ बनायें।" ये विचार श्रमण संघीय आचार्य सम्राट श्री शिव मुनि जी म.सा. ने इन्दौर पब्लिक स्कूल सांवेर केम्प में आयोजित धर्मसभा में व्यक्त किये।

आपश्री ने फरमाया कि **"साधु-साध्वी सम्मेलन हमारे लिए आत्मदृष्टि व आत्म चिंतन का अवसर है।** इसको अपनी शक्ति लगाकर सफल बनाना है। श्रमण संघ के महामंत्री श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' ने कहा कि **"हममें ज्ञान की प्रतिभा विद्यमान है, फिर भी छोटा सा आवेश हमें बुराई, भ्रष्टाचार और बेईमानी की ओर धकेल देता है।" जबकि भगवान महावीर ने कहा कि "संयम व तप हमें श्रेष्ठता की ओर ले जाते हैं। जीवन में संयम, शांति व श्रम को आत्मसात करने से जीवन मंगलमय बनेगा।" मैं ऐसी सद्भावना व्यक्त करता हूँ।"**

धर्मसभा में पंडित रत्न श्री उपेन्द्र मुनि जी म., श्री कमल मुनि जी म. 'कमलेश', प्रवर्तक श्री प्रकाश मुनि जी म. 'निर्भय' ने भी विचार रखें। श्री धैर्यमुनि जी म. व साध्वी उन्नति जी ने भक्तिगीत प्रस्तुत किये। बीसा पोरवाल महिला मंडल ने स्वागत गान प्रस्तुत किया। इन्दौर में कार्यक्रम संयोजक श्री अचल चौधरी ने सभी का अभिनन्दन किया। **पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म. ने कार्यक्रम का संचालन किया।**

❖ 500 साधु-साध्वियों एवं हजारों श्रद्धालुओं का विशाल चल समारोह

श्रमण संघीय वृहद साधु–साध्वी सम्मेलन में भाग लेने हेतु श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट पूज्य श्री डॉ. शिव मुनि जी म.सा. के साथ ही निश्रायी सहयोगी 500 साधु–साध्वीगणों के साथ धर्मनगरी इन्दौर में पधार चुके थे। वे उज्जैन की ओर से राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 10 मार्ग से 8 मार्च रविवार सुबह 8 बजे बापट चौराहा सुकलिया पधारे। **जहां पर शहर की प्रथम नागरिक महापौर श्रीमती मालिनी जी गौड़, नगरीय प्रशासन मंत्री श्री कैलाश जी विजयवर्गीय, सांस्कृतिक व पर्यटन मंत्री श्री सुरेन्द्र जी पटवा, शिक्षामंत्री श्री पारसजी जैन आदि गणमान्य नागरिकगण व अनेक संस्थाओं के पदाधिकारीगण व बड़ी संख्या में उपस्थित रहकर श्रद्धापूर्वक अगवानी कर रहे थे।**

ज्ञातव्य है कि जम्मू–कश्मीर से चैन्नई तक से साधु–साध्वी पैदल विहार कर इन्दौर में पधारे थे। परम पूज्य आचार्य श्री शिव मुनि जी म. व संतों व साध्वीगणों के सम्मान में बापट चौराहा से मंगल जुलूस प्रारंभ हुआ, जो मेघदूत गार्डन के सामने से स्कीम नं. 54 के कस्तूरी सभागृह, अपोलो हॉस्पीटल से प्रेस्टीज परिसर पहुंचकर विशाल धर्मसभा में परिवर्तित हो गया।

भव्य रहा नगर प्रवेश एवं नागरिक अभिनंदन समारोह

❖ मध्य प्रदेश सरकार ने आचार्य श्री को प्रदान किया 'राजकीय अतिथि सम्मान'

श्रमण संघीय वृहद साधु-साध्वी सम्मेलन 2015 के ऐतिहासिक अवसर पर श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युगप्रधान आचार्य पू. डॉ. शिव मुनि जी म.सा. एवं सभी श्रद्धेय साधु साध्वी भगवंतों का माता अहिल्या की पावन धर्मभूमि में

पुण्य पदार्पण होने पर 8 मार्च 2015 को प्रातः 8 बजे नागरिक अभिनंदन आयोजित किया गया।

राजकीय सम्मान एवं नागरिक अभिनंदन

इस अवसर पर पुरुष वर्ग सफेद वस्त्र पहने था तो महिलाएं केसरिया साड़ी पहले भारी संख्या में उपस्थित थी। नगर के महिला मंडलों की बहनों ने अपने अपने मंडल की निर्धारित रंग–बिरंगी साड़ियों में समारोह की शोभा बढ़ा रही थी। इस प्रवेश आयोजन व नागरिक अभिनंदन में नगर प्रतिनिधि, राजनेता, समाज सेवी एवं जैन कॉन्फ्रेंस के तत्कालीन राष्ट्रीय पदाधिकारी एवं स्थानीय संघों के साथ ही हजारों श्रद्धालु उपस्थित थे।

"नागरिक अभिनंदन समारोह" में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नेमनाथ जी जैन ने कहा कि – "आज मेरे आठ दशकीय जीवन का सर्वोत्तम क्षण है। मैं भाव विभोर हूँ कि प्रातः स्मरणीय, आत्मज्ञानी आचार्य सम्राट श्री शिव मुनि जी म. सा. एवं 500 संत–साध्वी जी म. एक साथ प्रेस्टीज परिवार के प्रांगण में पधारे हैं और हमारे शहर इन्दौर को उनका नागरिक अभिनन्दन करने का स्वर्ण अवसर मिला है। मेरे पास इस खुशी को व्यक्त करने लायक शब्द नहीं है।

मेरा सौभाग्य है कि युगप्रधान आचार्य सम्राट श्री शिव मुनि जी म.सा. ध्यान योग विशेषज्ञ, गूढ़ दार्शनिक, विश्वविख्यात आध्यात्मिक विद्वान हैं। जिन्होंने जैन समाज के अहिंसा, अनेकांत और अपरिग्रह के सिद्धांतों को वैश्विक सोच में ढालकर जैन धर्म को विश्वधर्म की संज्ञा दी है। आपके मार्गदर्शन में स्थानकवासी श्रमण संघ ने न केवल अपनी एकता को मजबूत किया हैं, बल्कि मानव सेवा, महिला सशक्तिकरण और युवा जागरण की नई योजनाओं को भी अभिनव दिशा दी है।"

आपने अपनी हार्दिक खुशी व्यक्त करते हुए आगे कहा कि **"इन्दौर का जैन समाज गर्वित है कि ऐतिहासिक वृहद**

साधु-साध्वी सम्मेलन 28 वर्ष बाद हमारी नगरी में सम्पन्न होने जा रहा है। जो न केवल स्थानकवासी जैन आध्यात्मिक परम्परा को आगे बढ़ायेगा बल्कि जैन धर्म और समाज को ऊर्जावान मार्गदर्शन देगा। साधु सम्मेलन 21 से 29 मार्च 2015 तक होगा। प्रथम सप्ताह साधुवृंद का संवाद सत्र सम्पन्न होगा। 27 तारीख को "वृहद युवा सम्मेलन", 28 तारीख को "वृहद महिला सम्मेलन" और अंत में दशहरा मैदान में विशाल समारोह के रूप में चतुर्विध संघ का सम्मेलन साकार होगा। आप सबकी सहभागिता का हम हार्दिक अनुरोध करते हैं। आप सब और इस अपार जन समुदाय का हार्दिक धन्यवाद, जिन्होंने आज इस अभिनन्दन समारोह को यादगार बना दिया है।

आचार्य श्रीजी ने अपने व संत साध्वियों के अभिनंदन को स्वीकार करते हुए कहा कि **"इन्दौर में श्रमण संघीय साधु-साध्वी सम्मेलन हो रहा है। यहां आत्मदृष्टि संत समागम हो रहा है। जिसमें देश के विभिन्न भागों से लगभग 500 साधु-साध्वीगण सामुहिक रूप से आध्यात्मिक चिंतन से संयमी जीवन की समाचारी पर विचार मंथन करेंगे। समाचारी का अर्थ है- "संयमी जीवन की आचार संहिता"।** देश काल परिस्थितियों के अनुसार सम्मेलन में प्राप्त सुझावों और विचारों पर गहन चिंतन मनन होकर संगठन को नई दिशा देने तथा "श्रमण संघ के संवर्धन का मार्ग प्रशस्त होगा।"

आचार्य सम्राट श्री शिव मुनि जी म. ने आगे बताया कि इस सम्मेलन में **"प्रभु महावीर की साधना पद्धति के अनुरूप समाज की युवा पीढ़ी को ध्यान साधना से जोड़कर उनके जीवन से तनाव व अवसाद को दूर कर उन्हें व्यर्थ की चिंताओं से मुक्ति दिलाकर आनंद व शांति का मार्ग प्रशस्त करने की दिशा में आत्म ध्यान शिविर का आयोजन 11 मार्च तक महावीर बाग में आयोजित किया जा रहा है। इस**

सम्मेलन के अंतर्गत श्रमण संघ में समन्वय, एकजुटता और समरस्ता का वातावरण निर्मित करने का प्रयास तथा संतों व समाज के जीवन में नये विचारों का संचार होगा साथ ही संयमी जीवन की आंतरिक व्यवस्थाओं पर चिंतन होगा।"

आचार्य सम्राट श्री शिव मुनि जी म.सा. ने आगे कहा कि **"ध्यान साधना के द्वारा व्यक्ति अपने अंतरंग में उतर कर स्व को जानने का पुरुषार्थ करता है। ध्यान अध्यात्म का परम शिखर है। व्यक्ति बाहर की दुनिया में तो बहुत भटक लिया, परन्तु ध्यान के माध्यम से वह आत्मदर्शन, आत्म संवाद से आत्मशांति की अनुभूति प्रदान करें।**

यह सम्मेलन व्यक्ति, समाज व राष्ट्र के जीवन में प्रेम, मैत्री और शांति का मार्ग प्रशस्त करेगा। प्राणीमात्र के जीवन में सुख, शांति व मंगल भावों की अभिवृद्धि होवे तथा अहिंसा और विश्वशांति का वातावरण निर्मित हो एवं राष्ट्र के जीवन में चारित्रिक उत्थान होवे। इन शुभ भावों का संदेश जन जन तक प्रसारित होगा।"

आचार्य भगवंत ने अपने सम्बोधन के अंत में संचालन समिति के शीर्ष संयोजक एवं जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नेमनाथ जी जैन की सेवाओं का उल्लेख करते हुए उन्हें श्रेष्ठ श्रावक बताया। आपश्री ने कहा कि इन्दौर तक आने का भाव नहीं था, शरीर भी अस्वस्थ था। मगर श्री नेमनाथ जी की पुण्यायी ने यह सब करने को बाध्य कर दिया। मैं इन्हें बहुत-बहुत साधुवाद देता हूँ।"

आचार्य श्री के सम्बोधन के पश्चात् आभार प्रदर्शन श्री अचल चौधरी ने किया। कार्यक्रम का संचालन सम्मेलन के प्रचार संयोजक श्री हस्तीमल ने किया। अभिनन्दन समारोह के पश्चात् दोपहर में साधु–सम्मेलन की तैयारियों का जायजा लेने के लिए एक मीटिंग का आयोजन किया गया।

❖ आयोजन बैठक में आचार्य श्रीजी एवं पदाधिकारी संत

8 मार्च 2015 को दोपहर 2.00 बजे आयोजन समिति की बैठक हुई। इस बैठक में परम पूज्य आचार्य डॉ. शिव मुनि जी म एवं श्रमण संघ के पदाधिकारी संतों का आगमन हुआ। आचार्य श्रीजी एवं पदाधिकारी संतों ने बैठक को सम्बोधित करते हुए साधु सम्मेलन की तैयारियों संबंधी जानकारी प्राप्त की। आचार्य श्रीजी ने तत्पश्चात् मार्गदर्शन प्रदान करते हुए कहा कि **"यह आयोजन आत्म उत्थान से, आत्मदृष्टि से जुड़ा संत समागम है। इसमें भव्यता हो मगर आडम्बर न हो। यह ध्यान रखना आपका बड़ा दायित्व है। आप लोग अनुभवी लोग हैं, सुन्दर ढंग से अनुशासित और समर्पित होकर कार्य सम्पन्न करेंगे।"**

आचार्य भगवन के उद्‌बोधन के पश्चात् श्रमण से विभिन्न पदाधिकारियों ने संक्षिप्त में अपने–अपने विचार प्रस्तुत किए। सर्वप्रथम उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री सुमन मुनि जी म. ने अपने विचार रखते हुए उपस्थित संत–साध्वी मंडल को सम्बोधित किया। आपने नवोदित युवा संतों को अपने गहन अनुभव से परिचित कराते हुए कहा कि **"साधु-सम्मेलन श्रमण संघ के इतिहास और वर्तमान को जोड़ने वाली मजबूत कड़ी है। इस कड़ी को जोड़ने में प्रत्येक संत-साध्वी का बराबर का दायित्व है।"**

आपके प्रेरक उद्‌बोधन के पश्चात् **श्रमण संघीय महामंत्री पूज्य श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' ने व्यवस्था सम्बन्धी व्यापक सूचनाएँ प्रदान की।** आपने अपने उद्‌बोधन में कहा कि वर्तमान युग में यह सम्मेलन श्रमण संघ की भावी दशा–दिशा तय करने वाला ऐसा अवसर है जिसका व्यापक प्रभाव पड़ने वाला है। इस उद्‌बोधन में संगठन संबंधी अनेक महत्वपूर्ण बातों का उल्लेख था। सम्पूर्ण बैठक हर्षोल्लास व जोश के साथ आयोजन को सफल बनाने के संकल्प के साथ पूर्ण हुई।

आयोजन समिति व जैन कॉन्फ्रेंस पदाधिकारियों ने बड़े ही सुन्दर ढ़ंग से सारी व्यवस्थाओं का विवरण पूज्य संतों के समक्ष रखा व मार्गदर्शन भी प्राप्त किया। हर्षोल्लास एवं आशीर्वाद सहित आयोजन पूर्ण हुआ।

❖ आत्म ध्यान शिविर का 11 मार्च से शुभारंभ

'शिवाचार्य ध्यान सेवा समिति' की ओर से कार्यक्रम के पश्चात् आचार्य सम्राट डॉ. शिव मुनि जी म.सा. के सान्निध्य में **'आत्म ध्यान शिविर'** का महावीर बाग, एरोड्रम रोड़ पर आयोजन होने जा रहा है। **पांच दिवसीय ध्यान शिविर दो भागों में होगा हुआ 11 मार्च को सुबह 10 बजे से संध्या 8 बजे तक बेसिक शिविर एक दिन का, तत्पश्चात् 12 से 15 मार्च 2015 तक सुबह 10 बजे से संध्या 5 तक गंभीर शिविर हुआ। शिवाचार्य ध्यान सेवा समिति के तत्वावधान में आयोजित इस आत्म ध्यान शिविर के अंतर्गत ध्यान के माध्यम से व्यक्ति को मानसिक तनाव, अवसाद व चिंताओं से मुक्त होकर आनंद व शांति पाने का प्रशिक्षण दिया गया।**

आचार्य सम्राट डॉ. शिवमुनि जी म. ने महावीर भवन इमली बाजार में आयोजित विशाल धर्मसभा में उक्त विचार प्रकट किये। आपने कहा कि **"आज विश्व को महावीर के ध्यान की जरूरत है। ध्यान के बिना मोक्ष नहीं, जो लोग ध्यान साधना का विरोध करते हैं, वे महावीर का विरोध करते हैं। महावीर का साधक कभी निंदा नहीं करता है। जो निंदा करता है, वह मिथ्यात्वी है। आचार्यश्री ने कहा यह महावीर का शासन है। जिसमें राजनीति नहीं, धर्मनीति चलेगी। धन बल, पद बल को इसमें कोई महत्व नहीं है।"**

श्रमण संघीय महामंत्री श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' ने कहा कि "हम अहिंसावादी लोग हैं। ज्ञान और ध्यान हमारी संस्कृति का मुख्य अंग है। शाकाहार के प्रचार से शुद्ध व

सात्विक जीवन का प्रचार करें। महापुरुषों की वाणी, धर्म ग्रंथों से युवा पीढ़ी में ज्ञान को विकसित करें ताकि चरित्रवान लोगों से समाज व संघ का गौरव बढ़ेगा।" सभा में, मैंने (उपाध्याय रवीन्द्र मुनि) व श्री महेन्द्रऋषि जी म. ने भी विचार रखे।

❖ शोभायात्रा का प्रभावी आयोजन

दिनांक 18 मार्च को संतों व साध्वीवृंदों के सम्मान में महावीर भवन इमली बाजार से प्रातः 8 बजे भव्य मांगलिक शोभायात्रा प्रारंभ हुई जो राजबाड़ा, यशवंत रोड़, जवाहर मार्ग, महेश नगर, चौराहा होते हुए महावीर बाग पहुंची। नरसिंह बाजार, मालगंज जिसमें देशभर से आये संतों व साध्वीवृंदों के साथ बड़ी संख्या में इन्दौर और बाहर से आए श्रद्धालुओं ने मंगल यात्रा में भाग लिया। **मंगल यात्रा के प्रारंभ में नगरीय प्रशासन मंत्री श्री कैलाश जी विजयवर्गीय, महापौर इन्दौर श्रीमती मालिनी जी गौड़, विधायक श्री सुदर्शन गुप्ता जी, भाजपा नगर अध्यक्ष श्री कैलाश जी शर्मा, बोहरा समाज के प्रतिनिधियों ने संतों व साध्वीवंदों की अगवानी की।**

श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के युगप्रधान आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. शिव मुनि जी म. के पावन सान्निध्य में श्रमण संघीय महामंत्री पूज्य श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद', उपाध्याय पूज्य श्री विशाल मुनि जी म., उपाध्याय पूज्य श्री मूलमुनि जी म., उपाध्याय पूज्य श्री रमेश मुनि जी म., उपाध्याय पूज्य श्री जितेन्द्र मुनि जी म., उपाध्याय पूज्य श्री प्रवीण ऋषि जी म., मैं स्वयं (उपाध्याय रवीन्द्र मुनि) प्रवर्तक पूज्य श्री सुमन मुनि जी म. एवं पूज्य श्री महेन्द्र ऋषि जी म., पूज्य श्री कमल मुनि जी म. 'कमलेश', पूज्य श्री शिरीष मुनि जी म., प्रवर्तिनी पूज्य साध्वी श्री चंदना जी म. पूज्या श्री ज्ञानप्रभा जी म. सहित सभी संतों व साध्वीवृंद मंगल यात्रा में पंक्तिबद्ध होकर चल रहे थे। यात्रा मार्ग में सड़क के किनारे हजारों नर-नारियाँ शिवाचार्य भगवंत व संतों के दर्शनार्थ खड़े थे। जय जयकार के स्वरों से गगन गुंजा रहे थे।

❖ सर्व समाज द्वारा आत्मीय अभिनन्दन

अनेक स्थानों पर विश्व हिन्दू परिषद, तेरापंथ समाज, दिगम्बर जैन समाज, पद्मावती पोरवाल जैन संघ एवं बोहरा समाज ने स्वागत मंचों से संतों का अभिनंदन किया। महेश नगर पर वैष्णव क्लाथ मार्किट इंस्टीट्यूट ऑफ कॉमर्स व क्लाथ मार्किट विद्यालय की बालिकाओं ने **"महावीर स्वामी व शिवाचार्य जी की जय-जयकार"** करते हुए स्वागत किया। मंगल यात्रा के पूरे मार्ग में यातायात बाधित न हो इसका पूरा ध्यान रखा गया तथा पानी के पाउच व बोतलों के लिए जगह–जगह पर डस्टबीन रखकर शहर को साफ–सुथरा रखने का प्रयास यात्रा की विशेषता रही। हर्षित चेहरे, उल्लास भरे पग, श्रद्धा को अभिव्यक्त करते चल रहे थे। लग रहा था जैसे शोभा यात्रा नहीं, जन–प्रवाह हिलोरे ले रहा था।

जानकारी नगर युवा संघ, स्थानकवासी जैन युवक संघ, पोरवाल युवक संघ ने मंगल यात्रा में सहयोग किया। यात्रा मार्ग स्वागतद्वारों व जैन ध्वजों से सजाया गया था। मंगल यात्रा महावीर भवन से राजवाड़ा, यशवंत रोड़, जवाहर मार्ग, मालगंज, महेश नगर चौराहा से बड़ा गणपती होकर महावीर बाग पहुंची। जहां पर आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. शिव मुनि जी म. ने हजारों श्रद्धालुओं को साधुवाद देते हुए मंगल पाठ सुनाया।

इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नेमनाथ जी जैन, कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमतिलाल कर्नावट जैन, पूर्व अध्यक्ष श्री केसरीमल बुरड़ जैन, श्री कांतिलाल जैन (पी.एच.जैन), राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सुभाष ओसवाल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री श्री रमेश भण्डारी जैन, कार्यकारी राष्ट्रीय महामंत्री श्री जिनेश्वर जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री नरेश लोढ़ा, श्री नेमीचंद धाकड़, श्री सुनील ढीलीवाल, श्री जयंती कूकड़ा, युवा समाजसेवी श्री महेन्द्र पगारिया, राष्ट्रीय

उपाध्यक्ष साधु–सम्मेलन प्रयोजनार्थ श्री अचल चौधरी जी जैन एवं श्री चंदनमल चोरड़िया जैन, श्री गजराज सिंह झामड़ जैन, श्री प्रकाश भटेवरा जैन, श्री सुभाष विनाक्या जैन, श्री राजेन्द्र महाजन जैन आदि अनेक वरिष्ठ समाज जन–मंगल यात्रा में सम्मिलित हुए। श्रीमती रेणु– डिपिन जैन, श्री मंजू–सुनील ढीलीवाल, श्रीमती सुनीता छजलानी और अन्य सहयोगी बहनों ने उपस्थित रहकर प्रवेश कार्यक्रम को सफल बनाया।

❖ साधु सम्मेलनार्थ संत चर्चा का शुभारंभ

दिनांक 20 मार्च 2015 को पूज्य आचार्य सम्राट के सान्निध्य में साधु सम्मेलन के अन्तर्गत व्यापक चर्चाएं प्रारंभ हुई। महावीर बाग में यह आध्यात्मिक एवं संघीय प्रबंधों से जुड़े संवाद का प्रारंभ एक युगान्तरकारी घटना का अंग बन गया। दूर–दूर से पधारे संत–साध्वी जी म. का एक साथ, एक स्थान पर, एक समूह में बैठना बड़ा ही मनोहारी था। इस संत वार्ता में निश्चित रूप से कोई बाहरी प्रवेश या हस्तक्षेप नहीं था मगर महावीर बाग प्रांगण में श्रद्धा भरे हृदय व नयनों में पवित्र आत्माओं के दर्शन की प्यास लिए श्रद्धालुओं का जमावड़ा अलौकिक दृश्य उपस्थित कर रहा था।

सभी पूज्य साधु साध्वी जी म.सा. प्रातः और सायं भक्तों को उपकृत करते हुए मंगल पाठ अवश्य श्रवण कराते थे। यह क्रम निरंतर **दिनांक 20 से लेकर दिनांक 29 मार्च तक चलता रहा** और श्रद्धालु भक्तजनों का कारवां भी देशभर से इन्दौर नगरी में पहुंचता रहा तथा देखते ही देखते 26 मार्च तक श्रद्धालओं की संख्या में कई गुणा बढोत्तरी हो गयी।

❖ श्रावक सम्मेलन : व्यापक संवाद

इन्दौर साधु–सम्मेलन 2015 के मध्य आयोजित श्रावक सम्मेलन भी हुआ। इस सम्मेलन ने यह तय किया कि **"हम सुनें**

और गुनें, वहीं कुढ़े नहीं जुड़ें। तभी चेतना में निर्मलता को जीवंत कर सकते हैं। कमियों को ढूंढकर उनसे किनारा कर सकते हैं। दूसरों से सीखकर अपने संगठन को प्रेरित कर सकते हैं, प्रेरित रह सकते हैं।

इस भाव भूमिका के **"श्रावक सम्मेलन 2015"** में हुए निर्णयों की परख करें। **इस सम्मेलन का सार्थक पक्ष यह रहा कि सभी श्रावक संघ की उन्नति के सन्दर्भ में योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने के आग्रही दिखाई दिए।** अनेक जनमान्य श्रावकों ने व्यवस्थित प्रतिवेदन–प्रस्तावनाएं प्रस्तुत की कुछ ने मंच से मौखिक आग्रह किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए महामंत्री श्री रमेश भंडारी जैन समाज सेवियों की पहल का स्वागत करते हुए कहा कि – "विगत 28 वर्षों में हम सभी ने पूना सम्मेलन के पश्चात् श्रमण संघ और स्थानकवासी जैन परम्परा में अनेक बदलावों की अपेक्षा रखते हुए विचार किया है। अनेक बन्धुओं ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए जो कहा है, उसमें अनुभव है, सच्चाई है, समयानुसार आवश्यकता है।

श्रावक वर्ग की ओर से आज मेरे पास अनेक सुझाव आए हैं। सभी की भावनाएं प्रशंसनीय हैं, श्रमण संघ के उन्नयन में सभी भागीदार बनना चाहते हैं। मैं आश्वस्त करता कि सभी की मंगल भावनाओं को आदर दिया जाएगा।

जैन कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष एवं सम्मेलन संयोजन श्री नेमनाथ जी जैन ने खड़े होकर कहा कि **मेरे सामने अनेक बन्धुओं ने युवाचार्य का निर्णय पाँच वर्ष के लिए न टालते हुए इसी सम्मेलन में करने का आग्रह किया है। मैं आप सबकी भावनाओं को परम पूज्य अधिकारी संतों एवं युगप्रधान आचार्य पूज्य श्री शिव मुनि जी म. के समक्ष प्रस्तुत कर दूँगा। मुझे आशा है कि हम सभी की भावना को आचार्य भगवन् ध्यान में रखकर उचित निर्णय लेंगे।"**

तत्पश्चात् श्रावक वर्ग ने निर्णय लिया कि परम पूज्य आचार्यश्री के चरणों में अपनी भावनाएं रखकर इस प्रश्न पर इसी सम्मेलन में निर्णय करने की प्रार्थना की जाए।

ज्ञातव्य है कि यह श्रावक सम्मेलन 27 मार्च को **दलाल बाग** परिसर में आयोजित था। सम्मेलन में श्रमण संघीय समाचारी एवं धर्म और समाज के जीवन में आ रही आडंबर युक्त प्रवृत्तियों एवं विसंगतियों को दूर करने की दिशा में निम्न बातों का सम्मेलन में उपस्थित दस हजार से अधिक समाज के भाई बहिनों ने सामूहिक रूप से हाथ उठाकर प्रस्तावों पर स्वीकृति प्रदान की। जो प्रस्ताव श्रावक सम्मेलन में विचारार्थ प्रस्तुत किए गए वे निम्नानुसार हैं –

श्रावक सम्मेलन में दिए गए समाचारी संबंधी सुझाव

1. चातुर्मास हेतु विनंती हेतु बसें ले जाना बंद किया गया। श्रीसंघ के 11 सदस्य संघ द्वारा पारित प्रस्ताव का पत्र स्वीकृति हेतु सम्बन्धित पदाधिकारी संतों को प्रेषित करें।

2. धार्मिक व सामाजिक समारोह की निमंत्रण पत्रिकाएं संक्षिप्त व सादगीपूर्ण हों।

3. भगवान महावीर, आचार्य भगवंत व उपाध्याय भगवंत तक की जन्म जयंती व दीक्षा जयंती मनाई जाए।

4. धर्म सभाओं में अतिथिगणों का स्वागत शाल व माला से न करते हुए भावनात्मक शब्दों से किया जाये। साहित्य भेंट किया जा सकता है।

5. संत व साध्वी मण्डल शहरों के साथ ही छोटे छोटे गांवों में भी चातुर्मास करेंगे तथा 3 से 8 की संख्या में चातुर्मास करेंगे, जिससे अधिक क्षेत्रों का लाभ मिल सके।

6. संतों के नाम पर समाधियाँ या मठ बनाने से मिथ्यात्व को पोषण होता है। अतः इनके स्थान पर वृद्ध व रोग से पीड़ित साधु–साध्वी भगवंतों की सेवा हेतु स्थिरवास धाम बनाये जायें।

7. जैन कॉन्फ्रेंस विद्वानों की समिति बनाकर उपयोगी साहित्य प्रकाशन की स्वीकृति प्रदान करे।

8. दीक्षा देने से पूर्व वैरागी के परिवार की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त की जानी चाहिए। दीक्षा से पूर्व पांच वर्ष तक धर्म का ज्ञान व प्रशिक्षण दिया जाए। पश्चात् आचार्य भगवंत के सामने प्रस्तुत होकर उनसे दीक्षा दिये जाने का स्वीकृति पत्र प्राप्त करना अनिवार्य हो। **दीक्षा समारोह अत्यंत ही सादगीपूर्ण किया जाये। दीक्षा की उम्र का निर्धारण देश, काल की परिस्थिति के अनुसार हो।**

9. तप का सम्बन्ध आत्म साधना व कर्म निर्जरा करना है, तप में आडम्बर से तो कर्म बन्धन ही होता है, अतः तप समारोह सादगीपूर्ण हो।

10. अक्षय तृतीया पर वर्षीतप के सामूहिक पारणे में सभी उपस्थित लोगों को गन्ने का रस पिलाने की प्रवृत्ति चल रही है। इसलिए केवल तपस्वी को ही गन्ने का रस से पारणा करवाया जाये।

11. देश में पैदल विहार करने वाले संतों व साध्वीगणों के मार्ग में विश्राम हेतु स्थानीय श्रावक संघों के सहयोग से **'विहार धाम'** बनाये जायें।

12. समाज के बच्चों के जीवन में धार्मिक ज्ञान व चरित्र निर्माण हेतु देश ने संस्कार केन्द्र स्थापित किये जायें।

13. विवाह समारोह सादगीपूर्ण व दिन के समय हों ताकि जीव हिंसा न हो। भोजन में जमीकंद का निषेध रहेगा तथा 21 प्रकार से अधिक व्यंजन नहीं परोसे जायें।

14. मांसाहारी होटलों में विवाह समारोह व अन्य सामाजिक आयोजन नहीं हों।

15. साधु–साध्वियों के विहार हेतु उनकी समुचित व्यवस्था स्थानीय श्रीसंघों के माध्यम से की जाये।

उपरोक्त समाजहित के निर्णयों को सम्पूर्ण समाज में लागू करने हेतु समयबद्ध कार्यक्रम बनाया जाये।

सभी वक्ताओं ने एक स्वर से साधु सम्मेलन के इन्दौर में सफलता पूर्वक किए जाने के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सम्मेलन संयोजक श्री नेमनाथ जी जैन, महामंत्री श्री रमेश जी भंडारी, इन्दौर नगर श्रीसंघ के समस्त पदाधिकारीगण, स्वागताध्यक्ष श्री आनन्द प्रकाश जी जैन, जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री महेन्द्र जी पगारिया, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती रेणु–डिपिन जैन, डॉ. डेविस जैन, श्री डिपिन जैन, श्री जिनेश्वर जैन एवं विभिन्न मंडलों के अध्यक्षों और कार्यकर्ताओं का आभार मानते हुए यह बार–बार दोहराया कि सम्पूर्ण देश के समाजसेवियों ने जैन कॉन्फ्रेंस के तत्वावधान में साधु सम्मेलन के लिए जिस प्रकार से परिश्रम किया। वहीं समस्त सम्मेलन में भोजन, नाश्ता, चाय–पानी की व्यवस्था मेवाड़ के युवा श्रावक गुरुभक्त श्री नरेश लोढ़ा, श्री नेमीचंद धाकड़, श्री सुनील ढिलीवाल, श्री जयंतीलाल कूकड़ा आदि ने की। उसकी जितनी प्रशंसा की जाए, वो कम है। दिल्ली प्रांत अध्यक्ष विशेष रूप से तत्कालीन युवा नेता गुरुभक्त श्री अतुल जैन के नैतृत्व में एक स्पेशल ट्रेन इन्दौर गई। वहीं पदयात्री श्रमण–श्रमणीवृंद के हेतु आहार–पानी की उत्तम व्यवस्था श्री अतुल जी जैन द्वारा की गई वो प्रशंसनीय रही।

लेकिन यह नहीं भूला जा सकता कि पाँच सौ से अधिक की संख्या में पधारे पूज्य साधु-साध्वी जी म. ने एक आचार्य, एक संघ, एक समाचारी के अन्तर्गत इन्दौर में पधारकर श्रमण संघ के इतिहास को गौरवान्वित किया है। यदि ये महापुरुष, ये महान आत्माएँ इन्दौर में नहीं पधारती तो श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन परम्परा के इतिहास का यह सुनहरा पृष्ठ कभी भी लिखा नहीं जा सकता था। अन्त में सभी उपस्थित महानुभावों का आभार प्रकट करते हुए राष्ट्रीय मंत्री श्री रमेश जी भंडारी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

❖ श्रमण संघीय समाचारी एवं युवाचार्य पद की घोषणा

व्यापक विचार विमर्श के पश्चात् समाचारी संबंधी सामयिक निर्णय एवं युवाचार्य पद भी हेतु उपयुक्त संत का नाम निश्चित करना तय हुआ। लेकिन असहमतियाँ भी अपने स्थान पर बनी रही। अतः श्रमण संघीय महामंत्री पूज्य श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' एवं शांति रक्षक उत्तर भारतीय प्रवर्तक पूज्य श्री सुमन मुनि जी म. 'श्रमण' के मध्य भी व्यापक चर्चा हुई एवं अंततः यह निर्णय लिया गया कि आचार्य श्रीजी को इस सन्दर्भ में घोषणा करने का पूर्णतः अधिकार है अतः हम आचार्य श्रीजी को ही इस संबंध में निर्णय लेने हेतु एवं अपने अधिकारों का उपयोग करने हेतु अनुशंसा करते हैं। तद्नुसार श्रावक सम्मेलन में आचार्य श्री शिव मुनि जी म.सा. की आज्ञा से महामंत्री श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' ने साधु–समाचारी सम्बन्धी निर्णयों की जानकारी निम्नानुसार प्रेषित की।

संत व साध्वीगण धन इकट्ठा करना या कार्यक्रम में सहयोग हेतु प्रोत्साहित करना बंद।

गरम पानी अथवा धोवन पानी का ही उपयोग करना और कैन आदि में बंद पानी निषेध। लम्बे विहार में ही कपड़े की चप्पल का उपयोग हो सकेगा। किसी भी संत के पास चातुर्मास की विनंती हेतु 11 व्यक्ति जायें। कोई भी संघ इससे ज्यादा व्यक्तियों को बसों के माध्यम से नहीं ले जाये।

शहर या गांव में रहते हुए स्थानक में टिफिन का उपयोग पूर्णतः बंद। विहार में गृहस्थी अपने लिए लाए टिफिन से ही आहार बहराए ये छूट रहेगी।

संत सतियों के लिए मोबाईल, लेपटॉप आदि पूर्णतः बंद।

सभी बड़े समारोह में ज्यादा धन खर्च करवाने पर प्रतिबंध।

नोट : इन समाचारियों की विस्तृत जानकारी महामंत्री श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' ने प्रदान की।

(बताया गया कि समाचारी का विस्तृत प्रारूप प्रकाशित होकर सभी श्रावक संघों को भेजा जायेगा।)

❖ युवाचार्य पद पर पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. की घोषणा

इसी समारोह में आचार्य भगवंत पूज्य श्री शिव मुनि जी म.सा. ने राष्ट्रसंत आचार्य भगवंत पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म. के सुशिष्य पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. को श्रमणसंघ के युवाचार्य पद पर आसीन किये जाने की घोषणा की तो बीस हजार से भी अधिक संख्या में उपस्थित श्रद्धालुओं ने हर्ष व उल्लास के साथ जय-जयकार करते हुए घोषणा का स्वागत किया।

इस अवसर पर श्रमण सघ के 450 संतों की मौजूदगी में युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी म. को चादर ओढ़ाई गई। देशभर के 51 हजार अहिंसा दूतों ने देश, सेवा, अहिंसा, गौ सेवा, भ्रष्टाचार मिटाने का संकल्प लिया। सम्मेलन में 20 राज्यों से आए 60 से 80 हजार से अधिक श्रावक–श्राविकाएँ मौजूद थीं। मुख्य अतिथि केन्द्रीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह थे।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, केन्द्रीय स्वास्थ्य राज्यमंत्री श्री यशोनाइक, मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय, राज्यमंत्री श्री सुरेन्द्र पटवा, राज्यसभा सांसद डॉ. सत्यनारायण जटिया, सांसद दिलीप गांधी, मेयर एवं विधायक श्रीमती मालिनी गौड़, ऊषा ठाकुर आदि मौजूद थे। अतिथि स्वागत जैन कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष श्री नेमनाथ जैन, दीपक जैन व जिनेश्वर जैन ने किया।

❖ युवाचार्य पद एवं महाश्रमण पद आदर की चादर समर्पित

इस अवसर पर आचार्य भगवंत सभी संत व साध्वीगणों चतुर्विध संघ की साक्षी से महामंत्र की मंगल ध्वनि की गूंज के

बीच पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा को युवाचार्य पद की आदर की चादर ओढ़ाई गई। श्रमण संघीय महामंत्री पूज्य श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' को आचार्य भगवंत ने आदर की चादर ओढ़ाकर **महाश्रमण पद** से विभूषित किया। सारा वातावरण जयकारों से गूंज उठा।

❖ युवाचार्य पद पर पूज्य श्री महेन्द्र ऋषि जी म. के नाम की घोषणा का व्यापक अनुमोदन

इसके पश्चात् आचार्य श्री जी ने उपस्थित जन समुदाय के मध्य नए युवाचार्य की घोषणा करते हुए पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म. के नाम की घोषणा का ऐलान किया। **आचार्य श्रीजी के द्वारा पूज्य श्री महेन्द्र ऋषि जी म. को श्रमण संघीय युवाचार्य घोषित किए जाते ही सम्पूर्ण दलाल बाग का पंडाल हर्ष-हर्ष, जय-जय एवं शिवाचार्य जी के जयकारों के साथ गूंज उठा। उन्होंने कहा कि महेन्द्रऋषि जी को युवाचार्य पद की घोषणा सभी मुनिराजों की सहमति से की गई है। सम्प्रदायवाद, पंथ व परम्परा की भावना से परे हटते हुए मैंने श्रमण संघ की एकता व सुदृढ़ता के हित, बिना किसी भेदभाव के यह घोषणा की है।** समारोह में महामंत्री पूज्य श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद', ने पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म. के जीवन में अध्ययनशीलता, श्रमणशीलता, आत्मीयता के गुणों पर प्रकाश डाला। सम्पूर्ण वातावरण धर्ममय हर्ष से भरा प्रतीत हो रहा था।

अपने नाम की घोषणा के साथ ही श्री महेन्द्रऋषि जी म. को द्वितीय पट्टधर श्री आनन्दऋषि जी म. का स्मरण हो आया और उन्होंने पूज्य डॉ. श्री शिव मुनि जी म. तथा अन्य संतों को प्रणाम कर पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म. का स्मरण किया।

शांति रक्षक पूज्य श्री सुमन मुनि जी म. को वंदन किया। उन्होंने कहा कि "मैं जिनशासन के लिए कार्य करूंगा, श्वेत चादर को कभी मैली नहीं होने दूंगा तथा श्रमण

संघ को सभी के सहयोग से मजबूती प्रदान की जाएगी।" नवनियुक्त युवाचार्य पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म. ने कहा कि आचार्य भगवंत ने व्यक्तिगत स्वार्थों से उपर उठकर निरंतर 30 वर्षों तक श्रमण संघ का संचालन किया। प्रज्ञा प्रदीप पू. श्री आनंदऋषि जी म.सा., उपाध्याय पूज्य श्री प्रवीणऋषि जी म. ने भी आनंदाचार्य की आनंद गाथा का जीवन के संस्मरण सुनाते हुए उनके महान व्यक्तित्व को उद्घाटित किया।

❖ विशाल समापन समारोह एक यादगार पल

वृहद साधु–साध्वी सम्मेलन के समापन दिवस पर अन्नपूर्णा रोड़ स्थित दशहरा मैदान पर बनाए गए भव्य एवं विशाल पांडाल में हजारों श्रावक–श्राविकाओं की मौजूदगी में श्रमण, संघीय मंत्री पू. श्री शिरीष मुनि जी म.सा. ने लोगस्स के पाठ से कायोत्सर्ग करवाकर सभा 17 को आरंभ किया। आशना केतन जैन द्वारा प्रस्तुत स्वागत गीत **"अभिनंदन हो अभिनंदन हो... पधारे श्रमण संघ सरताज"** के बाद **28 तारीख को दलाल बाग में सम्पन्न राष्ट्रीय युवा सम्मेलन एवं वृहद राष्ट्रीय महिला सम्मेलन में लिए गए निर्णयों की जानकारी श्री महेन्द्र पगारिया एवं जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती रेणु डिपिन जैन ने दी।**

श्रमण संघ के निर्माण में महत्ती भूमिका निभाने वाले मालव केसरी गुरुदेव श्री सौभाग्यमल जी म. के कुल दिवाकर श्रमण संघीय प्रवर्तक पूज्य श्री प्रकाश मुनि जी म. 'निर्भय' ने **जय बोलो त्रिशला नंदन की शासनपति नाथ निरंजन की भजन के साथ ही फरमाया कि सम्मेलन का आयोजन मालवा की धरती का परम सौभाग्य है, आज यह शिखर दिवस है। प्रवर्तक पूज्य श्री रमेश मुनि जी म.सा. ने श्रमण संघ को फूलों का गुलदस्ता बताते हुए कहा कि श्रमण संघ में कई परम्पराएं हैं, श्रमण संघ उन्नति के शिखर पर पहुंच रहा है। श्रमण संघ का संदेश मैत्री भाव है, संगठन है, एकता है।**

लोकमान्य संत, वरिष्ठ प्रवर्तक शेरे–ए–राजस्थान का प्रतिनिधित्व करने वाले एवं श्रमण निर्माताओं में सबसे प्रभावी संत श्रमण सूर्य श्री मरुधर केसरी जी म. के सुशिष्य तत्कालीन उप–प्रवर्तक पंडित रत्न पूज्य श्री सुकनमल जी म.सा. ने मंगल गान **'मंगलम् भगवान वीरो मंगलम् गौतम प्रभु...'** के साथ ही **'संगठन की वीणा बजने दो मोहे मधुर-मधुर धुन सुनने दो'** के भाव व्यक्त किए व **'श्रमण संघ फले-फूले आगे बढ़ता रहे'** यह आशीर्वाद दिया।

श्रमण संघीय संतों के मध्य जिनका शांत स्वभाव व प्रबुद्धता सुख्यात है ऐसे तपस्वी राजर्षि पूज्य श्री सुमतिप्रकाश जी म.सा., सुशिष्य वाचनाचार्य उपाध्याय डॉ. विशाल मुनि जी म.सा., विगत घटनाक्रम अपने पद त्याग एवं अन्य संगठन समन्वयी कार्यों को बेबाकी से प्रस्तुत किया।

श्रद्धालुओं के विशाल समूह को संबोधित करते हुए आचार्य के अनुभवी संबोधन से जनमानस को हर्षोत्साह से भर दिया। आपने फरमाया कि **धर्मभूमि भारत की पहचान इस महान देश की पहचान यहाँ के धर्म अध्यात्म से है, वसुधैव कुटुम्बकम् के उदात्त मैत्री भाव से है, सबको गले लगाकर, सबको साथ मिलाकर चलने से है।**

❖ गौहत्या पर तत्काल प्रतिबंध की मांग

गौवंश हत्या एवं मांस के निर्यात को अविलंब रोकने की पुरजोर मांग केन्द्र सरकार से की। गृहमंत्री राजनाथ सिंह को राजा (प्रधानमंत्री मोदी) का चाणक्य निरुपित करते हुए गौवंश निषेध कानून का शीघ्र लागू किए जाने को चेतावनी पूर्ण लहजे के साथ अनेक बार निर्देशित किया। सम्मेलन समापन के अवसर पर आचार्य श्री ने कहा कि युवाचार्य का मनोनयन काफी विचार–विमर्श के बाद किया गया है। **श्रमण संघ को आज अनुशासन, समर्पण और संघ भक्ति की भेंट देकर आगे बढ़ाने, मजबूत बनाने और सर्वोच्च बनाने की आवश्यकता है।**

❖ विश्व की श्रेष्ठतम संस्कृति का अनमोल रत्न है जैन धर्म :

गृहमंत्री राजनाथ सिंह

केन्द्रीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह जी ने अपने भाषण में कहा कि **भारत की संस्कृति की अनमोल रत्न जैन संस्कृति है। जैन धर्म का पंथ भी अहिंसा है एवं पाठ भी अहिंसा है। सांस्कृतिक दृष्टि से जैन धर्म का महत्व ही नहीं है बल्कि ऐतिहासिक दृष्टि से भी जैन एक महत्वपूर्ण धर्म है।**

अपने विद्वतापूर्ण उद्‌बोधन में माननीय श्री राजनाथ सिंह ने जैन इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों को प्रस्तुत किया। सारा सदन हर्ष– हर्ष जय जय के नारों से गूंज उठा।

मध्य प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि **मेरा परम सौभाग्य है कि मैं यहां आया क्योंकि एक भी सच्चे संत का दर्शन करना कल्याणकारी है, यहाँ तो सैंकड़ों संत-साध्वी जी के दर्शन का अवसर मिल रहा है। मैं यहाँ कुछ देने नहीं, पाने आया हूँ क्योंकि हम लोग राजनीति में हैं, इस राह में फिसलने का खतरा बहुत है। कभी-कभी चिकनी राह पर खुद फिसल जाते हैं तो कभी फिसलने वाले अगल-बगल में चलते हैं।**

हे कृपा निधान संत भगवंत! हम ऊँचे पद बैठने वालों की बुद्धि न बिगड जाए, इसलिए सद्‌बुद्धि देना। आचार्य श्री शिव मुनि जी म.सा. एवं अन्य जैन संतों की मांग पर मुख्यमंत्री ने कहा — "हमारे प्रदेश में गौरक्षा के लिए कानून है, गौहत्या करने वालों को कड़ी सजा मिलती है। जिन वाहनों में हत्या के लिए गौवंश को ले जाया जाता है उन्हें हमारी सरकार जब्त कर लेती है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि हमारे प्रांत गौवंश का हर हाल में रक्षण होगा।" **आपके पश्चात् विश्व हिन्दु परिषद के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक जी सिंघल ने कहा कि पूज्य संतों की मांग जायज है। गौहत्या एवं मांस निर्यात पर रोक लगनी ही चाहिये। गौवंश हमारे देश की संस्कृति का**

गौरव है। हमारा प्रयास रहे कि ये गौरव बना रहे।

इस समापन समारोह में 15 हजार से अधिक **'अहिंसा दूतों'** ने **'भ्रष्टाचार मुक्त भारत'** का संकल्प लिया। सम्मेलन में दिल्ली के उद्योगपति समाजसेवी गौभक्त श्री आर. डी. जैन ने एक करोड़, एक लाख की दानराशि **'जीवदया'** हेतु दान देने की घोषणा की।

सबसे अंत में विशाल जनसमुदाय के समक्ष युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. को युवाचार्य पद की चादर ओढ़ाने की रस्म की गई। महामंत्री पूज्य श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' को महाश्रमण की पदवी से नवाजा गया। **शांतिरक्षक उत्तर भारतीय प्रवर्तक पूज्य श्री सुमन मुनि जी म.सा. ने सम्मेलन में हुई गतिविधियों का अत्यंत भावुक मन से जिक्र किया। पूज्य श्री सौभाग्य मुनि जी म.सा. 'कुमुद' ने सम्मेलन में हुए निर्णयों के बारे में जानकारी देकर सम्मेलन सम्पूर्ति की घोषणा की। युवाचार्य पूज्य श्री महेन्द्र ऋषि जी म.सा. ने युवाचार्य मनोनीत होने के बाद अपना प्रथम प्रवचन दिया। पूज्य आचार्य भगवंत ने मांगलिक प्रदान की।** इस ऐतिहासिक चतुर्विध संघ सम्मेलन के वृहद समारोह का संचालन हस्तीमल झेलावत जैन ने किया।

❖ सुचारु भोजन व्यवस्था की सर्वत्र सराहना

चार युवा समाजसेवी बंधु भी साधु सम्मेलन में अनन्य सहयोगी सिद्ध हुए। जिन्होंने अपनी सेवाओं से हर आगन्तुक दिल जीत लिया। इन्हें आज सारा देश **श्री नरेश लोढ़ा, श्री नेमीचंद धाकड़, श्री सुनील ढीलीवाल एवं श्री जयंती भाई कुकड़ा** के नाम से जानता है।

इनके कुशल प्रबंधन में प्रासुक भोजन, शुद्ध जल, नाश्ते के साथ ही दोनों समय के भोजन का प्रशंसनीय समायोजन सम्पूर्ण साधु सम्मेलन में चलता रहा। इस प्रबंधन में एक विशेष उल्लेखनीय पक्ष यह रहा कि किसी भी प्रकार का थर्मोवेयर–डिस्पोजल (पर्यावरणीय कचरे को बढ़ाने हेतु) रखा ही नहीं

गया। ये इस आयोजन की खास विशेषता रही जो अन्यत्र भी अपनायी जानी चाहिये।

❖ जुटे रहे सेवारत्न श्रावक

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नेमनाथ जी जैन की कुशल अध्यक्षता में आयोजित हो रहे इस सम्मेलन में इतनी संख्या में पधार रहे भक्तजनों की व्यवस्था में स्थानीय संयोजक श्री अचल चौधरी का विशेष योगदान रहा।

सम्पूर्ण व्यवस्था के पीछे राष्ट्रीय महामंत्री श्री रमेश भंडारी जैन का कुशल निर्देशन महत्वपूर्ण था तो अनेक राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने भी इस व्यवस्था में अपना योगदान दिया। श्री महेन्द्र झेलावत जैन एवं श्री वीरेन्द्र बोड़ाना जैन, श्री पारस छाजेड़ जैन (मुंबई), श्री प्रकाश बाफना जैन (औरंगाबाद) आदि अनेक लोगों ने साधु-साध्वियों को समुचित आहार बहराने की जिम्मेदारी लेते हुए अपने-अपने स्तर पर चौके लगाने में योगदान दिया। इस प्रकार यह ऐतिहासिक साधु-सम्मेलन हार्दिक प्रसन्नता के साथ सम्पूर्ति को प्राप्त हुआ। ●●●

धर्म श्रद्धा से राग मुक्त बने!

जैन धर्म का संदेश है — **सद्धा खमं णं विणइअत्तु रागं।**

अर्थात् संसार राग–मोह–क्लेश–कषाय, दुख–पीड़ा, अशुचि–अनास्था का भंडार है। यहां एक के साथ दूसरा लगा हुआ है। यह ऐसा तंतुजाल है जो होता है रेशम–सा नरम कोमल, मगर इससे कठोर कोई बंधन नहीं। ये एक्शन के साथ रिएक्शन के लिए तैयार रहता है।

इस राग–रोग की औषधि है धर्म श्रद्धा। जिस हृदय में धर्म के प्रति पूर्ण समर्पण का भाव है। वहां अशांत से शांत प्रशांत होने का रास्ता सुलभ है। इसी श्रद्धाभाव की अभिवृद्धि हेतु धर्मकथा, साधु सत्संग, ज्ञानवार्ता, संघ समाज के हितकर आयोजन आयोजित किए जाते हैं। ●●●

आहार दान की महत्ता और सुफल

चतुर्विद संघ में "आहार बहराना" एक अन्न पुण्य तो है ही इसकी गहन गंभीर शास्त्रीय महत्ता भी है।

बंछेइ जो भत्तखणंसि साहू, आहार-सण्णं च तणस्स मोहं।
गुणुस्सुओ नासइ भुक्ख-चक्कं, तम्हा बिऊ खिप्पमुवेइ मोक्खं।।

कितने सुन्दर भाव है, इन पंक्तियों में कि — "जो आहार के समय त्यागात्माओं के आगमन और परिपोषण का भाव रखता है। वह गुण पूजक सहजात्मा स्व–पर के देह मोह और बुभुक्षा के चक्र को नष्ट करता है। साथ ही सेवा भाव, विनय धर्म और शुद्धात्मा सेवी होकर मोक्षमार्ग की उपलब्धि भी सहज पा जाता है।"

बंधुओं दान–पुण्य में अन्नाहार, जलाहार, वस्त्रदान जैसे मौलिक बिन्दु है जो प्रत्येक जीवधारी को निर्वाह हेतु आवश्यक है। ऐसे में जो करुणाशील श्रद्धा सम्पन्न आत्मा आहारदान की महत्ता को जानकर साधु संत सज्जन जन की, निराश्रितों की सेवा में तत्पर होता है। वो सुयश, सुकीर्ति और सहज सौभाग्य का लाभार्थी होता है।

आहार दान का शास्त्रीय भाव पक्ष

बंधुओं! विचारणीय है कि उच्च भाव से अनुकम्पा करने वाला अपने संसार भ्रमण के साथ अवरोधक बंधनों को भी अल्प कर डालता है। सम्यक्त्व प्राप्त करता है और पुण्यबल का संचय करता है। दयाभाव का रसिक जीव अपने आपके आचरण से ही आत्म विकास करता है। इसीलिए अध्यात्म जगत में एक बड़ी प्रसिद्ध किंवदंति है कि –

भावे भावना भाइये! भावे दीजे दान।
शुद्ध भाव सहजे रहो, पावो पद निर्वाण।।

बंधुओ! पुनः पुनः यही कहूंगा कि आहार, प्रासुक आहार प्रदाता बनकर पुण्यवान बनो! दयाभाव समृद्ध रहो।

●●●

संस्मरण

हम सद्भाव जगाने वाले

पल वो पल जो याद रह गए, जिनको नहीं भूला पाएं।
जो स्मृति मुस्कान भरी है, आओ उनको पढ़ जाएं।।
हम सद्भाव जगाने वाले, हमें मैत्री प्यारी है।
ऐसे पल जब भी पाएं हम, आगे बढ़कर दोहराएं।

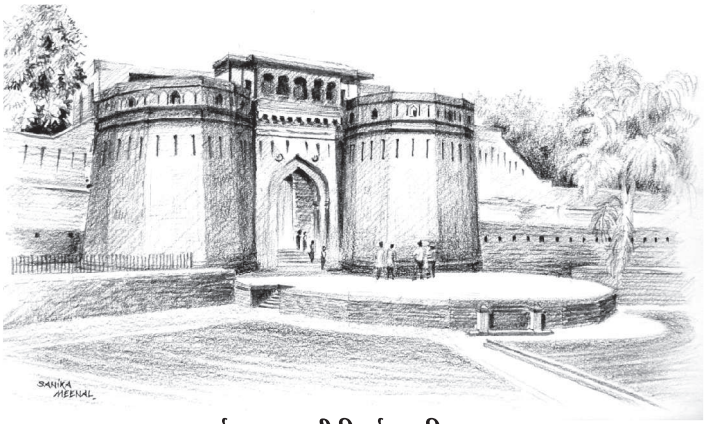

पुर्नजागरण की निर्माण भूमि - पूना

पूना में शांति रक्षक पद के पूर्व का प्रसंग

सुदूर पंजाब से 18 अप्रैल 1987 को प्रज्ञा महर्षि श्री सुमन मुनि जी म. ने नानापेठ पूना में प्रवेश किया था। इससे पूर्व **आपको नासिक पहुंचने पर आचार्य श्री आनंदऋषि जी म. की आज्ञा से सलाहकार पद पर नियुक्त किया जा चुका था।** लेकिन जब महाराष्ट्र मंडल के विद्यालय में आप विराजमान थे, तभी एक और आज्ञा आयी कि–**आपको पूना साधु सम्मेलन में 'शांति रक्षक' बनाया जाता है।**

यह सुनकर श्री सुमन मुनि जी म. स्वयं आचार्य श्री आनंदऋषि जी म. के चरणों में उपस्थित हुए और बोले – **'कृपानाथ! मैं यह दायित्व नहीं निभा पाऊंगा। मैं ठहरा जनम से जाट, मुझे गुस्सा भी जल्दी आता है। इसलिए प्रभो...?'**

आप कुछ आगे बोलते तभी आचार्य श्री ने हाथ उठाकर रोका और कहा– "सुमन मुनि सात्विक क्रोध भी संतुलन बनाता है। और आप तो मुनि जी! पंडितरत्न शुक्लचंद्र जी म. के अनुवर्ती हो, उनका श्रमण संघ के गठन में कितना बड़ा योगदान है! ये कैसे भूल जाते हो? अतः मेरी आज्ञा है कि आप ही 'शांति रक्षक' का पद स्वीकार करें और सम्मेलन संचालन में सहयोग करें।"

यह सुनते ही श्री सुमन मुनि जी बोले – **"भगवन् मैं आपकी आज्ञा से ही तो यहां आया हूँ। आपकी शरण में हूँ।** मेरे मन में एक बोझ था कि जब आप पंजाब पधारे थे तब कई

प्रसंगों पर आपकी अवहेलना का पाप मुझसे हुआ है। मैं आज आपसे बारम्बार माफी मांगता हूँ।"

यह सुनकर आचार्य श्री ने सुमन मुनि जी म. को निकट बुलाया और कहा — **"आप ज्ञानी भी हैं और समर्पित भी, मैं हृदय से क्षमा करता हूँ।"**

तब श्री सुमन मुनि जी म. भावुक होकर भीगे नयनों से आचार्यश्री के चरणों में झुक गये। **परस्परता और समन्वय की यही शक्ति श्रमण संघ का तेजस्वी पक्ष है।**

ये एक प्रसंग है, मैं समझता हूँ ऐसे एक नहीं अनेक प्रसंग हमारे महान श्रमण–श्रमणियों के जीवन में आए होंगे यहां एक ओर प्रसंग रखता हूँ।

7 मई 2000 दिल्ली में युगप्रधान आचार्य भगवन् का आचार्य पद चादर समारोह था। हम सबकी प्रेरणा तो थी ही मगर तब मुनि मायाराम जैन संघ के आचार्य विद्या वाचस्पति श्रद्धेय श्री सुभद्र मुनि जी ने गुड़गांव में ऋषभ विहार के प्रमुख श्रावकों को, जो उनके भी प्रिय भक्त हैं, उन्हें प्रेरणा देकर चादर समारोह को ऐतिहासिक बनाने की ऐसी लगन लगाई जो सर्वत्र प्रशंसा का पात्र बनी।

एक सुन्दर वातावरण बना और संघ समाज में उत्साह बढ़ता चला गया। जैन कॉन्फ्रेंस का तत्कालीन नैतृत्व आगे आया। ऋषभ विहार के संघ ने आयोजन का तत्वावधान संभाला तो कड़ी से कड़ी जुड़ गयी। सम्पूर्ण देश से संत–साध्वी, समाज सेवी गुरुभक्त आए और एक भावभीना सम्मान समारोह सम्पन्न हुआ। समाज रत्न श्री हीरालाल जैन की भी सराहनीय भूमिका रही। ये कार्यक्रम एक प्रेरणा बना, अनुमोदना और उत्सहवर्धन का प्रसंग बना।

●●●

दिव्यात्माओं के दर्शन चादर समारोह में मिले

28 मार्च 1993, उदयपुर के भंडारी दर्शक मंडप में श्रमण संघ के तृतीय पट्टधर आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज का आचार्य पद चादर समारोह आयोजित था।

इस आयोजन में उत्तर भारत से प्रमुख रूप से मैं (रवीन्द्र मुनि) उदयपुर पहुंचा। **वहां पर वर्तमान संघ के ऐसे-ऐसे मूर्धन्य साधु-साध्वी, श्रमण संघ के शीर्ष पदाधिकारियों के साथ ही आचार्य श्री के गुरुभ्राता उपाध्याय प्रवर श्री पुष्कर मुनि जी म.सा. के सभी शिष्यों से प्रगाढ़ मैत्री का अवसर मिला। बहन जी म. श्रद्धेया श्री पुष्पवती जी आदि के दर्शन एवं मंगल मिलन का आनंद प्राप्त हुआ।** उसे शब्दों में बयान करना असंभव है।

गजब की बात यह थी कि मैं सभी से अपरिचित था, मगर मुझे सभी जानते थे। अपार सम्मान, विशुद्ध स्नेह प्राप्त हुआ। मन गद्‌गद् हो गया। आचार्य भगवन् से निवेदन किया कि — **"आप उत्तर भारत पधारें! मैं लगातार सेवा में रहूंगा।"**

इस अल्प वाक्य पर आचार्य श्री ने फरमाया कि **"घर बुलाओगे तो अतिथि सेवा तो करोगे ही, इसमें मेरा ही लाभ है। मैं आपकी सेवा पाने को लालायित रहूंगा।"** मैं ये सुनकर तृप्त हो गया।

और वो दिन भी आया जब आचार्य भगवन् पधारे और मुझे भरपूर लाभ दिया। उत्तर भारत के सुदूर पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश सब जगह मैंने आपका सान्निध्य पाया। आपके साहित्य प्रेम, रसवंती वाणी, प्रवचन पांडित्य ने तो बहुत कुछ सिखाया। आपके व्यक्तित्व से मैंने बहुत कुछ सीखा जाना समझा, धन्य हो गई वो घड़ियाँ।

●●●

दूरियां मिटी तो मंगल मैत्री पर्व बन गई!

संत जीवन भ्रमण विचरण से चलता है, अतः प्रत्येक महान आत्मा धर्म प्रचार हेतु विचरण करते हुए कभी–कभी लम्बे समय तक भेंट नहीं कर पाता तो कतिपय भ्रम उपजने लगते हैं। ऐसे में दूरस्थ बैठी आत्माएं कपोल कल्पित कल्पनाएं कर बैठती है, जो सत्य नहीं होती है।

लेकिन जब पवित्र आत्माएं संयोगवश पुनः मिल जाती हैं तो शंका कुशंका का कुहासा छट जाता है, सत्य से पर्दा हट जाता है।

ये बात तब की है जब आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.सा. इन्दौर चातुर्मास पूर्ण कर औरंगाबाद में स्वीकृत चातुर्मास हेतु विहार करते हुए नासिक नगर पधारे थे। यहीं पर तत्कालीन युवाचार्य डॉ. श्री शिव मुनि जी म., उपाध्याय डॉ. श्री विशाल मुनि जी म., तपस्वीरत्न पू. श्री सुमतिप्रकाश जी म., महामंत्री श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद', सलाहकार श्री दिनेश मुनि जी म. आदि ठाणा का मंगल मिलन हुआ। **श्री आनंद दरबार में लगभग 30 संतों का यह मंगल मिलन एक महत्वपूर्ण संत समागम सिद्ध हुआ।**

परस्पर विचार–विमर्श से संगठनात्मक स्थिति पर व्यापक चर्चा हुई। **विशेष रूप से आचार्य श्री और युवाचार्य श्री के बीच की जो काल्पनिक मनोहर कहानियां हवा में थी, वो काल्पनिक ही सिद्ध हुई।** सबके चेहरे प्रसन्नता से खिले हुए थे तो आत्मा में श्रमण संघ की वर्धमानता के संकल्प विकसित हुआ।

मेरा ऐसा मानना है कि 'यह मिनी सम्मेलन' मंगल मैत्री पर्व बनकर संघ-समाज के लिए हितकर सिद्ध हुआ। इससे एक बात और सिद्ध हुई कि व्यस्तता में भी संवाद का ना होना हितकर नहीं है। संवाद में बड़ी शक्ति है। ●●●

आत्म जयंती आचार्य आनंद के सान्निध्य में शिवत्व का स्नेहाभिषेक

पूना की पावन धरा पर वर्तमानाचार्य पू. डॉ. शिव मुनि जी म.सा. के सान्निध्य में प्रथमाचार्य आगम रत्नाकर पूज्य श्री आत्माराम जी म.सा. की जन्म जयंती का समारोह आयोजित होना तय हुआ। **'साधना सदन'** के श्रीसंघ ने वर्तमान युगप्रधान आचार्य श्री से, जो उस समय वहां युवाचार्य के रूप में वर्षावास हेतु विराजमान थे, उधर ही द्वितीय पट्टधर आचार्य पू. श्री आनंदऋषि जी म.सा. भी **श्री आदिनाथ सोसायटी** में वर्षावास कर रहे थे। **संघ का भाव बना कि आचार्य भगवन् श्री आनंदऋषि जी म.सा., आचार्य श्री आत्माराम जी म.सा. के जन्म जयंती समारोह में कृपा पूर्वक पधार जावें तो आनंद वर्षण होगा, समारोह ऐतिहासिक हो जाएगा।**

इस प्रस्ताव को अपने हृदय में संजोय युवाचार्य डॉ. शिव मुनि जी म.सा. गद्‌गद मन से आदिनाथ सोसायटी में श्रीसंघ के प्रमुखजनों के साथ पधारे। सभी ने एक स्वर से निवेदन किया। परम पूज्य आचार्य श्री ने गद्‌गद मन से मुनिवर शिव सहित सभी को आशीर्वाद और समुचित मार्गदर्शन प्रदान किया। कृतकृत्य मन से मुनिवर ने अनुनय निवेदन किया – **भगवन्! उक्त पावन प्रसंग पर मैं आपश्री को शिष्यों और साध्वी मंडल को भी आमंत्रित करता हूँ।** उक्त प्रसंग पर पधारकर आप समारोह की गरिमा में अभिवृद्धि करें।

आराध्य स्वरूप आचार्य देव ने फरमाया – "शिव मुनि! श्रमण संघ के सरताज महापुरुष की जन्म जयंती के प्रसंग पर मैं स्वयं साधना सदन आऊंगा!"

आचार्य देव के वचन सुनकर युवाचार्य डॉ. श्री शिव मुनि

जी म. भावातिरेक से स्तंभित बन गए थे। **ऐसे करुणा वत्सल क्षणों को लेखनी से लिखा नहीं जा सकता, क्योंकि ये हृदय से उपजा संगीत है। ऐसा हृदयगान जो बरबस ही सबको बांध लेता है।**

पूना के लोग इस बात को पुनः–पुनः दोहराते कि पूना के इतिहास में धर्म प्रभावना की ऐसी लहर पहले कभी नहीं देखी गई। प्रवचनों में ऐसी उपस्थिति पहले कभी नहीं हुई। विशाल उपस्थिति का यह क्रम केवल वर्षावास में ही नहीं रहा, बल्कि वर्षावास के पश्चात् भी चलता रहा। आपके तेजस्वी व्यक्तित्व और वर्चस्वी वक्तृत्व के लोग दीवाने बन गए थे। वर्षावास की अवधि में विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम यथासमय सम्पन्न होते रहे।

आराध्य स्वरूप आचार्य देव के सान्निध्य में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में भी युवाचार्य श्री भी उपस्थित होते रहे। कार्यक्रमों के बिना भी, जब भी अवसर लगा आपश्री आचार्यश्री के दर्शनों के लिए – अपने आराध्य देव की चरणरज लेने के लिए आदिनाथ सोसायटी में उपस्थित होते रहे। पूज्य आचार्य देव के श्री चरणों में आपश्री को वही संबल और कृपा–आशीष प्राप्त होता रहा जो आत्मगुरु के अदृष्ट और ज्ञान गुरु के साक्षात सान्निध्य में प्राप्त होता रहा था। अध्यात्म के अतल तल पर खिला–खिला आशीष और समर्पण का यह क्रम सतत चलता ही रहा।

ये वो सौजन्य भरा संस्कार है जो हमारे आचार्य देव रूपी महान आत्माओं के चरित्र से उदाहरण बनकर प्रेरणा देता है। अनुकरण का बोध जगाता है। ●●●

कदम बढ़ाओ चलो...

बातें छोटी छोटी बातें! गहरा स्नेह जगाती हैं।
कई प्रेरणा, कई सूचना, अपना असर दिखाती है।
मन में आदर प्रेम रहे तो, रहता कभी असंभव क्या?
कदम बढ़ाओ! चलो तभी तो, पास मंजिलें आती हैं।।

हमारे जिनागम एवं विद्वत श्रमण विद्वान

प्राचीन शास्त्र यह बात बड़े ही गर्व से कहते हैं कि 'आगम' संत जीवन का प्राण है। संतों का आधार ही आगम शास्त्र हैं, जिनवाणी है, जिसमें प्राणीमात्र के लिये कल्याण भाव छिपा है। इसी को समय–समय पर असंख्य महान आत्माओं ने अपने प्रज्ञा–पुरुषार्थ से संवारा है, रचा है, व्याख्यायित किया है।

लेकिन यह कोई बच्चों का खेल नहीं। यह महान कार्य अत्यधिक श्रम और प्रतिभा के द्वारा ही सम्भव हो पाता हैं। क्योंकि आगम साहित्य वायवी चर्चाओं से मुक्त ऐसा परामर्श है जो मानव जीवन को सार्थकता प्रदान करने के सूत्र प्रस्तुत करता है।

एक श्रमण जब संसार त्यागकर जिनवाणी से प्रेरित होकर जिनवाणी के हेतु ही अपने आपको समर्पित करता है तो उसका प्रथम कर्तव्य होता है – शास्त्र शोध और उन सूत्रों का पुर्न–पुर्न उल्लेख करना जो आगम रहस्यों में समाहित है। यह कार्य करते हुए श्रमण जीवन स्वयं तो अपने आपको सिद्ध कर ही पाता है। वहीं एक ऐसे प्रतिभावान श्रमण का महत्वपूर्ण कार्य संघ–समाज के लिए भी उपलब्धि बनकर अस्तित्व में आता है।

यह एक ऐसा दिव्य गुण है। जो वही आत्माएं कर सकती हैं, जिनकी आत्मा में आत्म आनन्द समाया हुआ है। जो स्व–पर कल्याण में निरत रहकर जीवन के हर पक्ष को यथार्थ रूप में देखने वाले द्रष्टा हैं। ऐसे श्रमण इस कष्ट साध्य कार्य को करते हुए कहीं भी खिन्न नहीं होते। बल्कि जितनी समसामयिक चुनौतियां प्रतिभावान श्रमणों के समक्ष होती है, वे उसे चुनौती ना मानकर एक ऐसा प्रश्न मानते हैं जिसका उत्तर देना ही उनके जीवन का लक्ष्य है।

●●●

उत्तमोत्तम पुरुष होते हैं : आचार्य

यह संसार भी एक विचित्र स्थल है। कई कवि इसे अलग–अलग उपमा देते है। कोई इसे वाटिका की उपमा देता है तो कोई इसे जंगल की उपमा देता है परन्तु जहाँ वाटिका कृत्रिम होती है वहीं जंगल प्राकृतिक होता है। वाटिका को तो बनाया जाता है अतः उसमें सभी प्रकार के वृक्ष, पौधे, फल, और फूल अच्छे ही होते हैं अर्थात् मनुष्य उसमें अपनी पसंद के वृक्ष और फल, फूल ही लगाता है, लेकिन जंगल तो प्रकृति प्रदत्त ही होता है। उसमें सभी प्रकार के वृक्ष और फल–फूल मिलते हैं अर्थात् जंगल में अच्छे और बुरे दोनों ही प्रकार के वृक्ष और फल–फूल मिलते हैं। अतः संसार को जंगल की उपमा देना ज्यादा ठीक रहता है। **धर्मग्रन्थों में संसार को अरण्य की उपमा ही दी गई है।** जिस प्रकार जंगल में अच्छे और बुरे दोनो ही प्रकार के पेड़–पौधे होते हैं, उसी प्रकार संसार में भी अच्छे और बुरे दोनो ही प्रकार के व्यक्ति मिलते है। **तत्वार्थ सूत्र** की व्याख्याओं में पांच प्रकार के पुरुष बताये गये है–

1. उत्तमोत्तम पुरुष : उत्तमोत्तम पुरुष उसे कहते है जो देवेन्द्रों और नरेन्द्रों के पूज्यनीय होते है। जो स्वयं कृतार्थ हो जाने के बाद भी दूसरों को धर्मोपदेश देकर सन्मार्ग पर लगाते है। **ऐसे उत्तमोत्तम पुरुष तीर्थंकर भगवान या अरिहंत ही हैं।**

2. उत्तम पुरुष : जो मोक्ष के लिये ही सकल क्रियाएँ करते है, वे उत्तम पुरुष कहलाते हैं। उनका स्वाध्याय, ध्यान, उपदेश, व्रत, नियम आदि का पालन एक मात्र मोक्ष के लिये ही होता है।

3. मध्यम पुरुष : जो परलोक के हित के लिये ही प्रवृत होते हैं, वे मध्यम पुरुष कहलाते है।

4. विमध्यम पुरुष : जो इहलोक और परलोक दोनों के हित के लिये प्रवृत होते है, वे विमध्यम पुरुष कहलाते हैं।

5. अधम पुरुष : अधम पुरुष केवल इह लोक के सुख के लिए ही प्रवृत होते है। ऐसे पुरुष अपने स्वार्थ के लिये दूसरों का नुकसान करने में भी नहीं चूकते हैं।

दंसण णाणप्पहाणे, वोरिय चारित्तवरतवायेर।
अप्पं परं च जुंजई, सो आयरिओ मुणी झेओ।

—प्रवचन सारों द्वार-72

अर्थात्, **जो दर्शन एवं ज्ञान से प्रधान/श्रेष्ठ है, वीर्य, चारित्र व तप से युक्त है तथा स्व-पर को सन्मार्ग पर लगाते हैं, वह आचार्य मुनियों द्वारा आराधना करने योग्य है।**

❖ जिनशासन में चार प्रकार के आचार्य

चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, तं जहा :

(1) साले णाममेगे, सालपरियाए। (2) साले णाममेगे, एरंडपरियाए। (3) एरंडे णाममेगे, सालपरियाए। (4) एरंडे णाममेगे, एरंडपरियाए। —ठाणांग सूत्र 542

अर्थात् — चार प्रकार के आचार्य कहे गये हैं-

(1) **शाल और शालपर्याय :** कोई आचार्य शाल के समान उत्तम जाति वाले और उसी के समान धर्म वाले-ज्ञान, आचार और प्रभावशाली होते है। (2) **शाल और एरंडपर्याय :** कोई आचार्य शाल के समान उत्तम जाति वाले, किन्तु ज्ञान, आचार और प्रभाव से रहित होते है। (3) **एरंड और शालपर्याय :** कोई आचार्य जाति से एरण्ड के समान हीन किन्तु ज्ञान, आचार और प्रभावशाली होने से शालपर्याय होते हैं। (4) **एरंड और एरंडपर्याय :** कोई आचार्य एरण्ड के समान हीन जाति वाले और उसी के समान ज्ञान, आचार और प्रभाव से भी हीन होते है।

कहा भी गया है कि—

मेढी आलंबनं खंभं दिट्ठी जाणं सुउत्तमं।
सूरि जं होई तम्हा तं तु परिक्खए।।

—गच्छाचार-8

अर्थात् – आचार्य गच्छ का मेढीभूत, आलम्बन है, स्तम्भ है और निश्छिद्र वाहन है, अतः उसकी परिसेवना करनी चाहिये। श्रद्धा निष्ठा भक्ति की भेट चढ़ाते हुए शासन को जयकारी बनाना चाहिये।

❖ आचार्य क्यों आचार्य है?

यह प्रश्न है, कुप्रश्न नहीं। मुनि क्यों मुनि है, इसका उत्तर जिस प्रकार है। इसी प्रकार आचार्य क्यों आचार्य है?इसका भी कोई बुद्धि संगत उत्तर होगा! यास्क ने आचार्य क्यों आचार्य है इसका सटीक उत्तर दिया है। निरुक्त शब्दकोष में उनका चिन्तन सुस्पष्ट है—

आचार्यः कस्मात्? आचार्य आचारं ग्राह्यति,
आचिनोत्यर्थान् अचिनोति बुद्धिमिति वा।

अर्थात् **आचार्य इसलिये आचार्य कहा जाता है कि वह शिष्य को आचार धर्म का नित्य बोध कराता है और चिन्तन के नूतन द्वार उद्घाटित करता है। बुद्धिमान एवं ज्ञानवृद्ध होता है।**

आचार धर्म में शिष्य को स्थापित कर भी वह विराम में खोकर चुप नहीं हो जाता है। चिन्तन के नये द्वारों का भी उद्घाटन करता है। क्योंकि आचार्य विराम की संधि रेखा नहीं होता! आचार्य मुनि संघ को समर्पित चिन्तक तथा आचार धर्म का हृदय से अनुशास्ता होता है। **आचार्यत्व खूँटी पर टंकी आचार्य पद की चादर / पिछेवड़ी नहीं है, कि वह ओढले / कुछ लोग ओढ़ा दे, और वह - "मैं आचार्य हो गया हूँ" यह सोचकर वह संघ-अभ्युदय! मुनि के आचार-अभ्युदय एवं समाज-अभ्युदय के विषय में सोचना ही बन्द कर दे!**

क्योंकि असोच अवस्था अरिहंत और सिद्ध की होती है। आचार्य तो चिन्तन का सूर्य होता है। जैसे-जैसे समय सरकता है, वैसे-वैसे उसका चिन्तन प्रगाढ़ होता जाता है। जैसे-जैसे वर्तमान के क्षण अतीत में सिमटते जाते हैं, वैसे-वैसे उसका तेज प्रखर होता रहता है। मुनि संघ और अन्य संसारस्थ आस्थावान लोग आचार्य के नित्य नूतन / प्रगाढ़ चिन्तन के प्रकाश में अपना श्रमणाचारी जीवन पथ आलोक से मंडित अनुभव कर आनन्दानुभव करते हैं।

●●●

जिनशासन अनुशरण - अहोभाग्य

"आरंभजं दुक्खमिणं" —आचारांग १/३/१

सभी दुखों का आरंभ हिंसा से है अतः हिंसा से बचो! अभय प्रसारण करो।

"आपओ बहिंया पास" —आचारांग १/३/३

अपने समान ही अन्य को जानकर सबके सुख की कामना करो।

अत्थि सस्थं परेण परम
नत्थि अस्त्थमं परेण परेम।

हिंसक अस्त्र एक नहीं, अनेक हैं। मगर सुखकर अहिंसा, एकमेव है, अलभ्य अनुपम है।

जैन धर्म का मौलिक स्वर संदेश

1. आत्मा अजर-अमर है।
2. आत्मा ही परमात्मा बनती है।
3. कर्म जड़ है और आत्मा चैतन्य है।
4. संसार (जगत) अनादि और अनंत है।
5. आत्मा की अशुद्ध स्थिति संसार और शुद्ध स्थिति मोक्ष है।
6. आत्मा की अशुभ प्रवृत्ति पाप और शुभ प्रवृत्ति पुण्य है।
7. अनेकांतवाद विश्व मैत्री की नींव है।

अविस्मरणीय चित्रावली

जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट श्री आत्माराम जी म. की विभिन्न छवियां

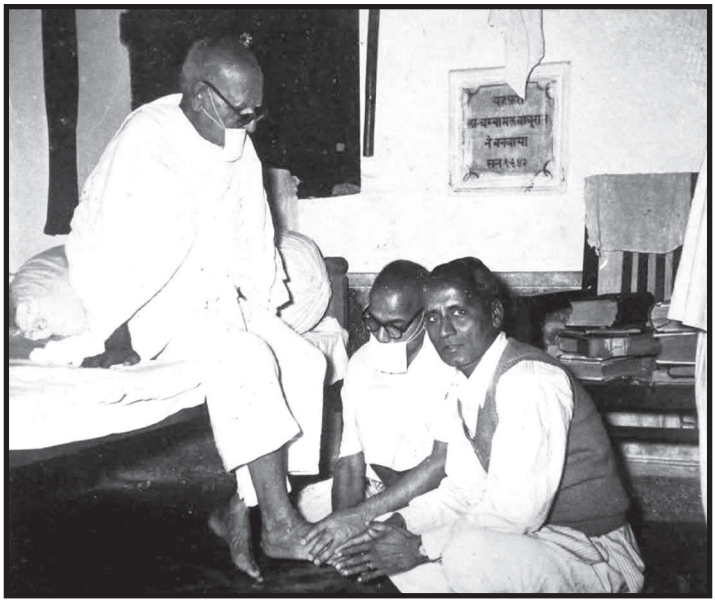

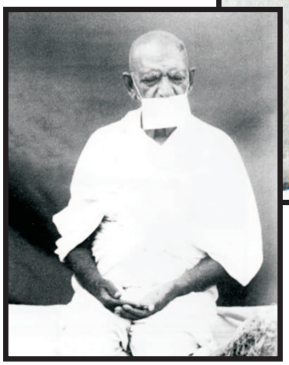

राममयी थी आत्मा,
नाम आत्माराम।
सदा काल करते रहे,
स्वचिंतन सुखधाम॥

बाघ खजानचियां लुधियाना में आयोजित प्रथमाचार्य पद चादर समारोह की झलकियां

द्वितीय साधु सम्मेलन - अजमेर अवसर के पर आयोजित
राष्ट्रसंत आचार्य श्री आनन्दऋषि जी म. के चादर समारोह की छवियां

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर राष्ट्रसंत आचार्य श्री आनंदऋषि जी म.सा. की मोहक छवियां

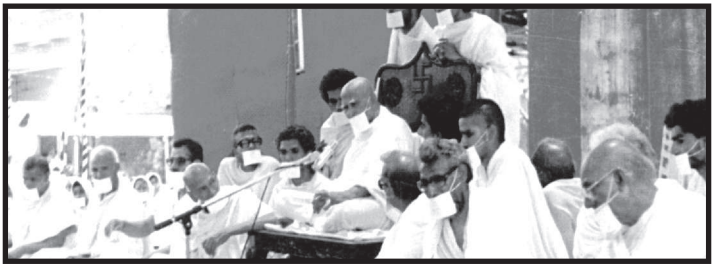
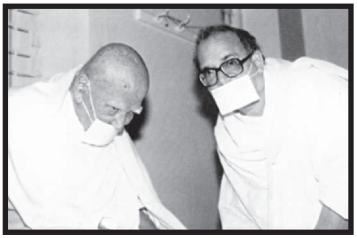
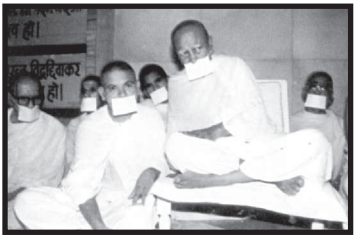
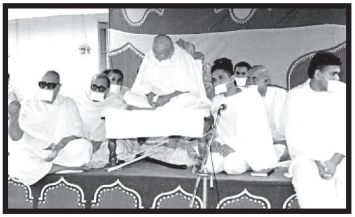

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर साहित्य मनीषी आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.सा. की मोहक छवियां

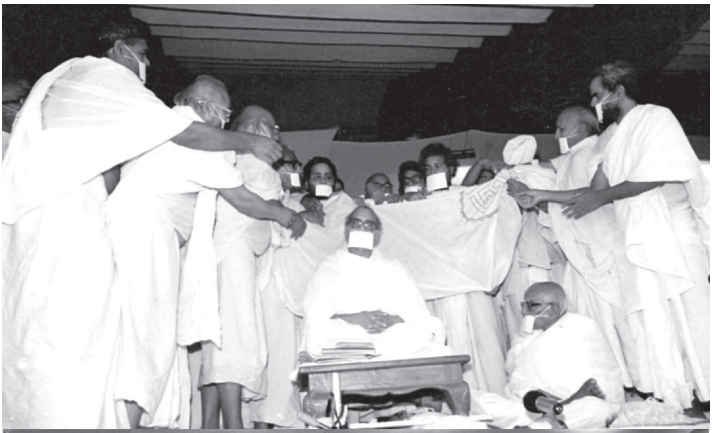

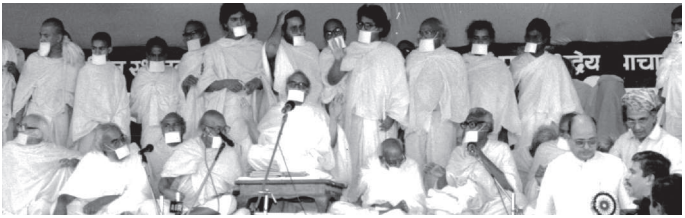

चतुर्थ पट्टधर ध्यानयोगी युगप्रधान आचार्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म. का आचार्य पद चादर समारोह

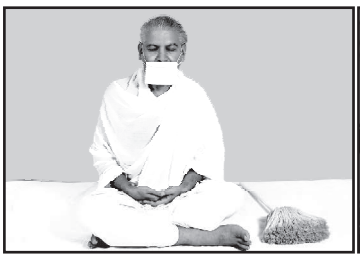

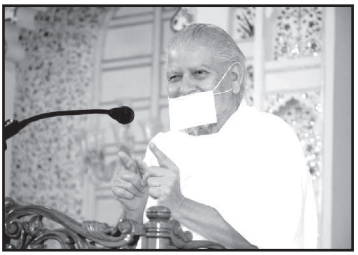

वर्तमान युग का सफलतम श्रमण संघीय साधु सम्मेलन
इन्दौर-2015 - रचनात्मक गतिविधियां

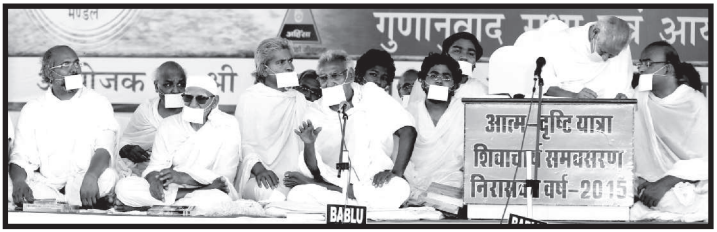

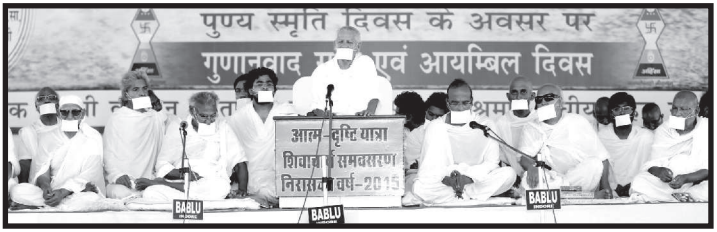

युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. का वयन एवं समापन समारोह

श्रमणसंघ के चार महान-स्तंभ

जैन धर्म दिवाकर आगम रत्नाकर पू. आचार्य सम्राट श्री आत्माराम जी म.

श्रमण संघ की तुलना अगर किसी भव्य गगनचुम्बी भवन से की जाए तो अतीत के तीन और वर्तमान आचार्य श्री के महान व्यक्तित्व की तुलना चार स्तम्भों से की जा सकती है। जिन पर यह भव्य भवन अपनी सम्पूर्ण गौरव–गरिमा के साथ खड़ा है। **यह सत्य है कि किसी भी संगठन को एकजुट रखने के लिए कुछ व्यक्तित्व कारगर भूमिका का निर्वाह करते हैं। उनकी उपस्थिति मात्र से संघ और संगठन में एक अपूर्व एकता सहज ही प्रतिभासित होती है और उनके अभाव में एक अपूरणीय रिक्तता अनुभव होती है। किन्तु इस विषय में श्रमण संघ निःसंदेह एक भाग्यशाली संगठन साबित हुआ है, जो एक के बाद दूसरे प्रभावक आचार्यों को पाकर अपनी विकास यात्रा पर अहर्निश यात्रायित है। इसे संघ के सौभाग्य के रूप में ही देखना होगा जिससे इस आध्यात्मिक संगठन से जुड़े लाखों अनुयायियों को समय-समय पर एक आध्यात्मिक नेतृत्व मिलता रहा है।** प्रस्तुत आलेख उन महान चार आचार्यों के जीवन–वैभव के शब्दांकन का एक लघु प्रयास है।

जैनागम रत्नाकर पूज्य आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी महाराज श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के प्रथम पट्टधर आचार्य थे। स्थानकवासी परम्परा के बाईस सम्प्रदायों के मुनियों ने उन्हें अपना अनुशास्ता माना और स्वीकार किया था। सदियों से विश्रृंखलित स्थानकवासी मुनि–परम्परा पूज्य श्री के नेतृत्व में एक ध्वज के नीचे एकत्रित होकर एक बन गई थी।

आप एक ज्ञानयोगी महापुरुष थे। जैन और जैनेतर दर्शनों के आप गम्भीर अध्येता, पारगामी पण्डित मुनिराज थे। बत्तीस जैनागमों के साथ–साथ वेद, पुराण उपनिषद्, महाभारत, रामायण, गीता, स्मृति, तथा पाश्चात्य दर्शनों में आपका अधिकारिक प्रवेश था। अनेक आगमों पर आपने बृहद् भाष्य लिखकर श्रुतसेवा के साथ–साथ संघ को भी एक नई दिशा दी। आप संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आदि प्राचीन शास्त्रीय भाषाओं के महान मर्मज्ञ थे। **आपने अपनी कुशल लेखनी से लगभग साठ ग्रन्थों का प्रणयन किया।**

● **जन्म :** पंजाब प्रान्त के अन्तर्गत राहों नगर में **वि.सं. 1939, भाद्रपद शुक्ल द्वादशी** को आपका जन्म क्षत्रिय कुल में हुआ। आपके में पिता का नाम श्रीमान मनसाराम और माता का नाम श्रीमती परमेश्वरी देवी था।

● **मात-पिता वियोग और वैराग्य :** संयोग के साथ वियोग का वही सम्बन्ध है जो देह के साथ छाया का होता है। कभी–कभी व्यक्ति संयोग का स्वाद ले भी नहीं पाता कि वियोग की तिक्कता उसे उद्वेलित बना देती है। वियोग विषधर के दंश से बालक आत्माराम भी दंशित बने और अल्पवय में ही उन्हें मातृ–पितृ वियोग का विषपान करना पड़ा। परन्तु यह उस बालक की विलक्षणता ही थी कि वे उस विषपान से विमूढ़ नहीं बने। उस विष को कण्ठ में धार करके वे शिव बन गए और शिवत्व के मार्ग पर यात्रायित हो गए। **उन्हें आचार्य श्री मोतीराम जी महाराज का सत्सान्निध्य प्राप्त हो गया और उन्होंने उन पाद-पद्मों में स्वयं के अस्तित्व को अर्पित कर दिया।**

● **दीक्षा :** संयोग–सुखों की नश्वरता का दर्शन कर आपके हृदय में वैराग्य अंगडाईयां ले रहा था। **वैराग्य का प्रतिफल है दीक्षा।** फलतः आप श्री ने **वि.सं. 1951 आषाढ़ शुक्ल पंचमी के दिन छत बनूड़ गांव में आर्हती दीक्षा में प्रवेश किया। पूज्य श्री शालिग्राम जी महाराज आपके दीक्षा गुरु थे।**

स्वाध्याय समर्पण से दीक्षित होकर आप अध्ययन करने लगे। पुष्प का रसपान करते हुए भंवरा जैसे अग–जग और स्व के बोध से शून्य हो जाता है। वैसे ही आप श्री समष्टि के बोध से शून्य बनकर अध्ययन में लीन हो गए। कुछ ही वर्षों में आप हिन्दी, संस्कृत–प्राकृत आदि भाषा के मर्मज्ञ बनने के पश्चात् आपने बत्तीस आगमों का पारायण किया। न केवल पारायण किया अपितु उन्हें कण्ठस्थ और हृदयस्थ भी किया। जैन दर्शन के साथ–साथ वैदिक दर्शन, बौद्ध दर्शन और पाश्चात्य दर्शनों का भी आपने गम्भीरता से अध्ययन किया। **यौवनवय में पहुंचते- पहुंचते आप जैन समाज के विद्वदमनीषी साधकों की अग्रिम श्रेणी में परिगणित होने लगे। आगम रत्नाकर बन गए।**

● **अध्यापन :** अध्ययन के साथ–साथ अध्यापन भी आपका प्रिय विषय रहा। आप लघु–मुनियों और श्रावक व श्राविकाओं को नियमित अध्ययन कराते थे। आपकी अध्यापन शैली सरल और सहज ग्राह्य थी।

● **सृजन-धर्मिता :** आप एक सृजनधर्मी महापुरुष थे। आपने अनुभव किया कि स्थानकवासी समाज के पास उसके मूल आगम तो हैं पर वे सरल और सर्वग्राहय भाषा में उपलब्ध नहीं हैं। प्राकृत न जानने वाले जिज्ञासु आगमों का मर्म नहीं समझ पाते हैं। आगम ज्ञान को सर्वसुलभ बनाने के लिए **आपने भागीरथ संकल्प के साथ आगमों पर सरल हिन्दी में टीकाएं लिखना प्रारंभ किया। अथक अनवरत श्रम के साथ आप इस महत्कार्य में लग गए और आचारांग, स्थानांग, अन्कृद्दशांग, अनुत्तरोपपातिक, दशाश्रुतस्कंध, बृहत्कल्प, निरयावलिका, प्रश्न-व्याकरण, उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, नन्दी आदि आगमों पर आपने सरल हिन्दी भाषा में बृहद् टीकाएं लिखीं। इसके साथ ही आपने जैनागम न्याय संग्रह, जैनागमों में स्यादवाद, जैनागमों में परमात्मवाद, तत्वार्थ सूत्र जैनागम**

समन्वय, जैन तत्व कलिका आदि मौलिक और उत्कृष्ट ग्रन्थों का लेखन एवं भाष्य प्रस्तुत किए।

उक्त आगमों और ग्रन्थों का समग्र जैन जगत द्वारा स्वागत किया गया। अल्पज्ञों के लिए आगमों का अध्ययन सहज बन गया। जैन जगत पर आपका यह महान उपकार है।

● **उपाध्याय पद :** आपके ज्ञान–गाम्भीर्य और अध्यापन–शौक के दृष्टिगत रखते हुए पंजाब परम्परा के महान आचार्य श्री सोहनलाल जी महाराज ने संवत् 1969 में अमृतसर में आपको उपाध्याय पद से सम्मानिक किया। कालान्तर में **आपको दिल्ली चांदनी चौक में 'जैन धर्म दिवाकर' और अन्यत्र 'साहित्यरत्न' आदि पदों से भी सम्मानित किया गया।**

● **आचार्य पद :** वि.सं. 2003 में पंजाब प्रान्त के चतुर्विध श्रीसंघ आपको अपना आचार्य नियुक्त किया। आपके कुशल नेतृत्व में पंजाब सम्प्रदाय ने चहुंमुखी विकास किया और उन्नति के शिखरों का स्पर्श किया।

● **आचार्य सम्राट पद :** आपश्री जी की महिमा–गरिमा से समग्र भारतवर्षीय चतुर्विध श्रीसंघ मुग्ध था। सूर्य के प्रकाश के समान आपका ज्ञान–प्रकाश सर्वत्र व्याप्त था। उस दौरान **संवत् 2009 में राजस्थान के सादड़ी नगर में समग्र भारत वर्षीय स्थानकवासी सम्प्रदायों के समस्त पदवीधारी मुनियों ने अपने-अपने पदों को तिलांजलि देकर संघैक्य का शंख फूंका। समस्त सम्प्रदायों के अग्रगण्य मुनियों और मेढ़ीभूत श्रावकों ने मिलकर समस्त सम्प्रदायों का विलय कर श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ का निर्माण किया और संघ के आदिम शास्ता के रूप में आप श्री को सर्वसम्मति से चुना गया।** उक्त तथ्य आपकी महिमा और श्रेष्ठता को स्वतः आख्यायित करता है। चतुर्विध संघ के सर्वोच्च पद पर आसीन होकर भी आप एक अति सरल और अति विनम्र मुनि बने रहे।

अहं का भाव आपको स्पर्श तक न कर सका था। **अनुशास्ता होते हुए भी आप स्वयं को संघ का सेवक मानते थे। आपके कुशल मार्गदर्शन में श्रमण संघ ने चहुंमुखी विकास किया।**

● **महाप्रयाण :** दस वर्षों तक आपश्री ने श्रमणसंघ को कुशल नेतृत्व प्रदान किया। आयुष्य के अन्तिम पड़ाव पर आपकी देह को व्याधियों ने घेर लिया। चरम दैहिक व्याधियाँ भी आपके परम शान्त और गम्भीर मानस–सागर को एक क्षण के लिए भी तरंगायित न कर सकीं। दैहिक अस्वास्थ्य का स्वस्थ मानसिकता के साथ आपने सामना किया। **आखिर वि. सं. 2018 माघ वदी नवमी (सन् 1961) को पूर्ण समाधि और संलेखना संथारे के साथ आपने मृण्मय देह का त्याग कर दिया। देह से मिटकर भी आप अपने गुणों के रूप में अमिट हैं और सदा अमिट रहेंगे। आपकी संयमनिष्ठा, कष्ट सहिष्णुता, सरलता, विनम्रता और समाज को आपका अवदान सदैव स्मरण किए जाते रहेंगे। शत शत नमन।** ●●●

तत्वज्ञता-तेजस्विता-सर्वज्ञता

संबोध सत्तरि में एक अलभ्य चिन्तन भरा पद है—

अपरा तीर्थकृत सेवा, तदाज्ञापालनं परम।
आज्ञाराद्धा विराद्धा च, शिवाय च भवाय च।।

आराध्य जिनेश्वर की पर्युपासना करने, पूजा करने की अपेक्षा, प्रभु आज्ञा का पालन करना अपेक्षित है। आज्ञानुसार आचार शुद्ध आराधना करने वालों को तत्वज्ञता के प्रतिफल में तेजस्विता ही नहीं सर्वज्ञता भी प्राप्त होकर मुक्ति मार्ग प्राप्त होता है। इसके विपरीत जो जिनाज्ञा विरुद्ध आचरण करते हैं, प्रमाद में पड़े रहकर देव–गुरु–शास्त्र की अवज्ञा करते हैं वो संसार भ्रमण बढ़ा लेते हैं।

●●●

मानवीय सरलता के साक्षीमान सत्य आचार्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा.

अज्ञान और प्रमाद के वश हुआ प्राणी अचाहे ही जन्म लेता और जन्म मृत्यु के अनन्त प्रवाह में समस्त प्राणी जगत में बह अचाहे ही मृत्यु का ग्रास बन जाता है। ऐसे प्राणियों का जन्म और मरण साधारण घटना की तरह घटित होता है पर कुछ ऐसे पुरुष होते हैं जो जीवन की धारा को अपने जीवनादर्शो से मोड देते हैं। उनका जन्म, जीवन और मृत्यु समय के वृक्ष पर अपने निशान अंकित कर जाते हैं। जिन पर जगत श्रद्धा से अवनत होता रहता है। वे महापुरुष अपने जीवन को ज्ञान के नेत्र खोलकर जीते हैं। सांस–सांस में आचार को प्राणवन्त करते हैं। ऐसे ही महापुरुषों की श्रृंखला में एक नाम है **श्रद्धेय श्री आनन्दऋषि जी महाराज का।** श्रद्धेय श्री का समग्र जीवन अलौकिक गुणों का संगम स्थल था। उन्होंने अपने जीवन का कैसे निर्माण किया यह हम निम्न पंक्तियों में जानेंगे।

अवतरण : श्रद्धेय शान्त–प्रशान्त मुनीश्वर आचार्य सम्राट श्री आनन्दऋषि जी महाराज का जन्म एक शताब्दी पूर्व वि.सं. 1957 श्रावण शुक्ल 1, तदनुसाद **26 जुलाई सन् 1900 के शुभ दिन अहमदनगर के निकटवर्ती ग्राम चिंचोड़ी में हुआ था। आपके जन्म में श्रीमान देवीचन्द जी का पितृत्व और श्रीमती हुलासाबाई का मातृत्व धन्य बन गया।** माता–पिता में जैन धर्म के संस्कार कूट–कूट कर भरे थे। सामायिक, संवर और पौषध पर उनकी दृढ़ आस्था थी। वे सच्चे श्रमणोपासक थे। फलतः जिनत्व के अमृत–संस्कार आपको विरासत में सहज ही उपलब्ध हो गए। जीवन का प्रथम दशक व्यतीत होते–होते आप सामायिक के नव पाठों को न केवल सीख गए बल्कि सविधि सामायिक की आराधना भी करने लगे थे।

● **दीक्षा : तेरह वर्ष की अल्पायु में आपने ऋषि सम्प्रदाय के अग्र मुनिराज श्री रत्नऋषि जी महाराज के चरणों में वि.सं. 1970 मार्गशीर्ष शुक्ल 9 को मिरीगांव में जैन आर्हती दीक्षा ग्रहण की।**

● **स्वाध्याय सेवा समर्पित :** दीक्षा लेते ही आपने स्वयं को गुरु–सेवा और स्वाध्याय में समर्पित कर दिया। आपने हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, गुजराती और मराठी भाषाओं का व्याकरण सम्मत तलस्पर्शी अध्ययन किया। **स्वल्प समय में ही आप स्थानकवासी मुनि परम्परा के विद्वान मुनियों में गिने जाने लगे। आपने ऊर्दु भाषा एवं आंशिक फारसी का भी भाषा ज्ञान हेतु अध्ययन किया। आपके प्रवचनों में शेर शायरी इसी का प्रमाण है।**

आपने बत्तीस आगमों का गहराई से अध्ययन किया और उनमें से अधिकांश को कण्ठस्थ भी किया। जैन दर्शन के साथ–साथ आपने बौद्ध और वैदिक दर्शनों का भी पारायण किया। पाश्चात्य दर्शन भी आपकी अध्ययन रुचि से अस्पर्शित न रहे। **अध्ययन के साथ-साथ आप गुरु-सेवा में भी सदैव निमज्ज रहे। सेवा को आपने अध्ययन से पूर्व स्थान दिया था। आपकी विनम्र सेवा से गुरुदेव अत्यन्त प्रसन्न रहते थे। वहीं कठोर अनुशासन में भी रखते थे।**

● **लोकमंगल के यात्रापथ पर : ज्ञान का सार है आचार। आचार का अर्थ है स्व-पर कल्याण की साधना में अपनी शक्ति और सामर्थ्य का नियोजन।** पूज्यवर्य श्री आनन्द ऋषि जी महाराज ने इस तथ्य को भलीभांति हृदयंगम किया था। शिक्षा पूर्ण करके आप लोक मंगल के यात्रापथ पर गतिमान हुए। प्रवचनों और प्रेरणाओं के माध्यम से आप जनमानस को सन्मार्ग दिखाने लगे। गली–गली, गांव–गांव, नगर–नगर घूमकर आप लोगों को जागृति का पाठ पढ़ाते थे। **आप द्वारा प्रतिबोधित लाखों लोग आज विद्यमान हैं जो शुद्ध संस्कारित जीवन जी रहे हैं।**

● **संगठन के प्रबल प्रेरक :** आपश्री प्रारंभ से ही एकता और संगठन के प्रबल पक्षधर रहे। संघ की एकता के लिये आप बड़े से बड़ा बलिदान देने के लिए सदैव तत्पर रहते थे। **सादड़ी, सोजत, अजमेर, पूना आदि मुनि-सम्मेलनों में आपने संघैक्य के लिए महान श्रम किया था। जीवन के अन्तिम क्षण तक आप की एकता संगठन और साधना का ही यह सुफल है कि संघ में पूर्ण रूप से एकता बनाए रखने में सफलता प्राप्त रही।**

● **ऋषि-सम्प्रदाय के आचार्य : वि.सं. 1999 माघ कृष्ण 6 को पाथर्डी में आप ऋषि सम्प्रदाय के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। आपके कुशल नेतृत्व में ऋषि सम्प्रदाय ने चहुंमुखी विकास किया।**

● **श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य :** स्थानकवासी संघ को एक सूत्र में पिरोने के लिए समय–समय पर प्रयास होते रहे है। वि.सं. 2009 में इन प्रयासों को मंजिल मिली। स्थानकवासी परम्परा के लगभग समस्त सम्प्रदायों के प्रतिनिधि मुनि सादड़ी नगर (राजस्थान) में एक झण्डे के नीचे एकत्रित हुए और समस्त पदवीधारी मुनियों ने अपने–अपने पदों का त्याग करके संघ–एकता की दिशा में महान कार्य किया। उस अवसर पर समग्र स्थानकवासी परम्परा के मुनियों के लिए समान समाचारी का आलेखन हुआ और सभी संतों ने एक आचार्य परम्परा का समर्थन किया। उसी अवसर पर **'श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमणसंघ'** का गठन किया गया और इस संघ के प्रथम आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज बने।

वि.सं. 2018 को पूज्यवर्य आचार्य सम्राट श्री आत्माराम जी महाराज का लुधियाना में स्वर्गवास हो गया। संघ के समक्ष भावी आचार्य के मनोनयन का यक्षप्रश्न था। एतदर्थ समस्त मूर्धन्य मनीषी मुनिराजों और संघ के कर्णधार श्रावकों ने इस पद के लिए सर्वविध योग्य आपको पाया। इस प्रकार आप श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य बने। वि.सं. 2020 में

अजमेर मुनि-सम्मेलन में आपको आचार्य पद की गरिमा की चादर भेंट की गई। (सम्मेलन विवरण के साथ है।)

● **शान्त-दान्त, वात्सल्य मूर्त :** आचार्य जैसे गरिमामय पद पर रहते हुए भी आपकी अखण्ड शान्त–चेतना कभी खण्डित नहीं हुई। जटिल से जटिल परिस्थितियों में भी आप अत्यन्त शान्त–दान्त बने रहते थे और पूर्ण समताभाव से जटिलतम समस्याओं का समाधान करते थे। आपके अन्तर्हृदय में वात्सल्य और स्नेह का अक्षय सागर ठाठें मारता था। संघ के समस्त मुनियों, साध्वियों, श्रावकों और श्राविकाओं को आप अपना वृहद परिवार मानते थे। सभी की बात पूर्ण सहृदयता से सुनते और उसका निदान करते थे। इसी का परिणाम था कि आप समग्र संघ की आंखों के सितारे थे।

● **शिरीष कुसुम सम कोमल :** जहां आप स्वयं के आचार और विचार में पाषाण से भी कठोर थे वहीं अन्य के लिए शिरीष कुसुम से भी कोमल थे। छोटे–से–छोटे संत को भी आप पूर्ण आत्मीयता प्रदान करते थे। सबकी समस्याओं का सम्यक् समाधान करते थे।

● **कुशल अनुशास्ता :** आपने तीन दशकों तक सकल संघ का कुशलता से संचालन किया। आपने कभी भी विग्रह और विद्वेष को प्रश्रय नहीं दिया। आप प्रकृति से अत्यन्त सरल और मृदु थे। आपने इस उक्ति को असत्य साबित कर दिया कि **सरल और मृदु व्यक्ति कुशल अनुशास्ता नहीं हो सकता।** आपके शासन काल में श्रमण संघ ने चहुंमुखी विकास किया। संघ में एकता प्रबल बनी। संघ–संयम के प्रति निष्ठा में निरन्तर वृद्धि हुई।

● **महाप्रयाण : सन् 1992 में अहमदनगर में आपने समाधि पूर्वक संलेखना संथारे सहित भौतिक देह का विसर्जन किया। युगों युगों तक श्रमण संघ में और भारतवर्ष में आपकी कीर्तिगाथाएं गाई जाती रहेंगी। आपके गुण संघ, समाज और देश के लिए प्रकाश-स्तम्भ बने रहेंगे।** ●●●

श्रमण संस्कृति के सारस्वत पुरुष आचार्य सम्राट श्री देवेन्द्र मुनि जी म.सा.

श्रमण संघ के तृतीय पट्टधर परम पूज्य, परम श्रद्धेय आचार्य सम्राट श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज श्रमण संघ रूपी नभ के एक जाज्वल्यमान नक्षत्र थे। लगभग सात दशकीय अपनी जीवन यात्रा में श्रद्धेय आचार्य श्री अपने व्यक्तित्व और कृतित्व के रूप में संघ, समाज और देश के गौरव के प्रतीक बने रहें। उन्होंने अपना समग्र जीवन समाज और राष्ट्र का पथ–दर्शन करते हुए तथा अपने साधु–जीवन की सुवास से जन–जन को सुवासित करते रहे। समाज और देश ने उन्हें पूर्ण श्रद्धा और समर्पण दिया।

● **जन्म :** पूज्य आचार्य सम्राट श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज का जन्म राजस्थान प्रान्त के गौरव की प्रतीक नगरी उदयपुर में वि.सं. 1988, कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी, तदनुसार 8 नवम्बर सन् 1931 शनिवार के दिन हुआ। उक्त तिथि भारतीय जनमानस में धनतेरस के नाम से जानी जाती है और इसे विशिष्ट तिथि माना जाता है। बरड़िया गोत्रीय श्रीमान जीवन सिंह जी और श्रीमती तीज कुंवर जी क्रमशः आपके जनक और जननी थे। धनतेरस के दिन आपका जन्म होने से आपको 'धन्नालाल' नाम दिया गया।

● **पितृ वियोग :** आपके धर्मप्राण पिता **श्रीमान जीवन सिंह जी** का देहान्त उस समय हो गया जब आप मात्र इक्कीस दिन के थे। यह आपकी मातेश्वरी **श्रीमती तीज कुंवर एवं सप्त वर्षीया सहोदरा सुन्दरी कुंवर** के लिए अत्यन्त विकट क्षण थे। उनके लिए मानो समय ठिठक कर ठहर गया। परन्तु जिनत्व की आस्था ने उन्हें धैर्य का सम्बल प्रदान किया।

● **बहन की दीक्षा :** वीर माता श्रीमती तीजकुंवर पूरे साहस और शौर्य से अपने पुत्र और पुत्री का सम्यक्

लालन–पालन करने लगी। गृहकार्यों को संपादित करने के पश्चात् वह अपने पुत्र और पुत्री को लेकर उदयपुर में स्थिरवर में विराजिता **महासती श्री मदनकुंवर जी म. तथा महाश्रमणी श्री सोहनकुंवर जी म.** के चरणों में जाती और अपना अधिकांश समय वहीं व्यतीत करती। इस प्रकार सुन्दरी कुंवर और धन्नालाल के मन और प्राण में जैन संस्कार रच–बस गए जिसके फलस्वरूप **सुन्दरी कुंवर ने 12 फरवरी 1938 में महासती श्री सोहन कुंवर जी के सान्निध्य में जिन दीक्षा धारण कर ली।**

श्रमण धर्म के प्रवेश रूप मुनियों, साध्वियों और माता के धर्मवीरों के आख्यान सुनते–सुनते धन्नालाल के धर्म–संस्कार गहन से गहनतर बनते चले गए। उसी क्रम में श्रद्धेय प्रवर पू. श्री पुष्कर मुनि जी महाराज का सत्सान्निध्य प्राप्त हो गया। उनका हृदय उन चरणों के प्रति आस्था से बंध गया और परिणामस्वरूप मात्र **नौ वर्ष की अवस्था में धन्नालाल ने पूज्यवर्य श्री पुष्कर मुनि जी महाराज के सान्निध्य में वि.सं. 1997, फाल्गुन शुक्ल तृतीया को आर्हती दीक्षा धारण कर ली। उन्हें 'देवेन्द्र मुनि' नाम दिया गया।**

● **शिक्षा/अध्ययन :** गुरु सन्निधि में बैठकर अल्पायुष श्री देवेन्द्र मुनि जी अध्ययन करने लगे। उनकी मेधा अत्यन्त तीव्र थी। जिस भी भाषा को उन्होंने पढ़ना शुरु किया उसी भाषा के वे थोड़े ही समय में पारगामी विद्वान गन गए। यौवन की चौखट पर पांव रखते–रखते आप हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, पाली, गुजराती और मराठी भाषाओं के ज्ञाता बन गए। इन भाषाओं पर आपका पूर्ण अधिकार था। इन्हें आप धाराप्रवाह लिख और बोल सकते थे।

● **कुशल लेखक :** कहा जाए कि आप एक सिद्धहस्त लेखक थे तो अतिश्योक्ति न होगी। धर्म और दर्शन आपके प्रिय विषय रहे जिन पर आपने अनेक बृहद् ग्रन्थ समाज और देश को दिए। ये ग्रन्थ पूर्ण रूप से शोधपरक और विशाल ज्ञान राशि के

अक्षय कोष हैं जो जनसाधारण के साथ–साथ शोध–छात्रों के लिए भी पूर्ण–रूपेण उपयोगी हैं। धर्म और दर्शन के साथ–साथ उपन्यास और कहानी भी आपकी लेखनी का स्पर्श पाकर नवीन अर्थों और नवीन भाषा–शैली में ध्वनित हुए। साथ ही आप एक कुशल निबन्धकार भी थे। **अनेक विशालकाय स्मृति ग्रन्थों का सम्पादन भी आपने अति सहजता और पूरे अधिकार से किया। अनेक आगमों पर आप द्वारा लिखी गई विशाल भूमिकाएं पढ़कर पाठक चकित हो जाते हैं और आपके गहन गम्भीर ज्ञान की शत-शत कण्ठों से प्रशंसा करते हैं। अपने जीवनकाल में आपने शताधिक ग्रन्थों का आलेखन किया। प्रत्येक ग्रन्थ का प्रत्येक पृष्ठ आपकी विद्वत्ता की कहानी कहता है। प्रौढ़ावस्था तक पहुंचते-पहुंचते आप जैन और जैनेतर जगत में 'श्री देवेन्द्र मुनि जी शास्त्री' इस नाम से ख्यात-सुख्यात बन गए।**

● **ज्ञान और आचार का सुमेल :** बिना आचार के ज्ञान पंगु है, इस सत्य–सत्य के आप ज्ञाता थे। इसलिए आप वही कहते और लिखते थे जिसे आप अपने आचार के स्वर देते थे। आपकी संयमनिष्ठा अद्‌भुत थी। संयम को जीना और उसी का प्रचार–प्रसार करना आपके जीवन का मूलमंत्र था।

● **उपाचार्य पद :** आपकी आचारनिष्ठा और ज्ञान गंभीरता पर चतुर्विध श्रीसंघ सम्मोहित था। इसी का यह परिणाम हुआ कि **सन् 1987 में पूना मुनि-महासम्मेलन में चतुर्विध श्रीसंघ की साक्षी से 12 मई को आचार्य भगवन् श्री आनन्दऋषि जी महाराज ने तीन सौ साधु-साध्वियों तथा दो लाख श्रावक-श्राविकाओं के मध्य आपको अपना उत्तराधिकारी (उपाचार्य) घोषित किया और इस बृहद दायित्व की प्रतीक पवित्र चादर भी भेंट की।**

● **आचार्य पद :** आचार्य भगवन् श्री आनन्द ऋषि जी महाराज के स्वर्गवास के पश्चात् श्रमण संघ की मर्यादा के अनुसार आप उपाचार्य से आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। इसके

लिए वरिष्ठ श्रावकों ने उदयपुर नगर में एक महा आयोजन किया। **28 मार्च 1993 के दिन समायोजित इस समारोह में सैंकड़ों साधु-साध्वियों और लाखों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में आपको आचार्य पद की गरिमा, महिमा और सम्मान की चादर प्रदान की गई।**

● **चहुंमुखी विकास :** आपके शासन काल में श्रमणसंघ ने चहुंमुखी विकास किया। आपने स्थान–स्थान पर स्वाध्याय केन्द्रों की स्थापना की और अपनी प्रभावक प्रेरणा से समाज को नई दिशा प्रदान की। अनेक क्षेत्रें में चल रहे विवादों को आपने हल किया। वस्तुतः आपका प्रभाव ही ऐसा था कि सब आपके नत मस्तक हो जाते थे।

● **मंगल यात्राएं : आपने जनमंगल हेतु अपने जीवन काल में लगभग 50,000 कि.मी. की पदयात्राएं कीं। राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, हिमाचल, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश आदि प्रान्त आपकी चरण रज पाकर धन्य हुए।**

● **महाप्रयाण : 26 अप्रैल 1999 को घाटकोपर मुम्बई में प्रातः साढ़े आठ बजे पूर्ण समाधि भाव से संलेखना संथारे सहित आपने इस नश्वर देह का विसर्जन किया। देह से मिटकर भी आप जन-जन के हृदय में अमर बन गए। आप अपने गुणों के रूप में सदा-सदा इस भूतल पर अमर रहेंगे।**

●●●

विवेकी ही मोक्षमार्गी है!

'औधनिर्युक्ति' में एक प्रेरक सुक्त है।

"जे जत्तिया अ हेउ भवस्स"।

ते चेव तत्तिया मुक्ते।

अर्थात् जितने संसार के हेतु हैं, उतने ही मोक्ष के भी हैं। बात सिर्फ विवेक की है। जो विवेकी होगा वो मुक्तिमार्गी हो जाएगा।

तृतीय पट्टधर आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.सा. का ऐतिहासिक चादर समारोह

मेरी आंखों देखी - रवीन्द्र मुनि

श्रमण संघ की यह विशुद्ध गंगा जो आचार्यद्वय द्वारा समाज को पावन करती हुई अविरल गति से बहती चली आ रही थी। इसी क्रम में **दिनांक 28 मार्च, 1993 का उदयपुर चादर महोत्सव इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों से अंकित रहेगा। जहां हर कार्यक्रम आशातीत सानन्द सम्पन्न हुए। अखिल भारतीय स्तर का यह कार्यक्रम अपने आप में एक अद्वितीय कार्यक्रम रहा, जिसे सफल बनाने के लिए एक तरफ स्थानीय श्रावक संघ, युवा व महिला शाखा अपने तन, मन, धन से लगी रही, वहीं दूसरी ओर अखिल भारतीय श्वे. स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारी व उनके हजारों सक्रिय सदस्य जो देश के कोने-कोने में फैले हुए थे, हजारों की संख्या में महीनों पहले ही सक्रिय हो चले थे।**

क्या पंजाब, क्या दिल्ली, क्या हरियाणा, क्या उत्तर प्रदेश, क्या कर्नाटक, आन्ध्र, तमिलनाडू, महाराष्ट्र, गुजरात अर्थात भारत का ऐसा कोई प्रान्त अछूता नहीं रहा, जहां के श्रावक–संघों ने अपना कर्तव्य न निभाया हो। संघ समाज के सभी श्रद्धालुगण लाखों की संख्या में यथा समय उदयपुर पहुंचने हेतु लालायित थे। विशेष रुप से इस अवसर पर आने हेतु स्पैशल ट्रेनों, हजारों बसों तथा वाहनों की व्यवस्था की गई थी। **इस अवसर को और अधिक भव्यता देने के लिए जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से महिला सम्मेलन व युवा सम्मेलनों का आयोजन किया गया था।**

जहां श्रमण संघ के तृतीय पट्टधर आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज का भव्य आचार्य पद चादर समारोह तीन चरणों में मनाने का कार्यक्रम रखा गया था।

दिनांक 27 मार्च को विशाल महिला सम्मेलन तथा युवा सम्मेलन, ये दोनों कार्यक्रम। **दिनांक 27 मार्च के मध्यान्ह में "भंडारी दर्शक मण्डप" के विशाल प्रांगण में रखा गया।** जहां सम्पूर्ण भारत के सभी प्रदेशों से आये हुए **लगभग दो लाख से भी अधिक श्रद्धालु अपने श्रद्धेय आचार्य का अभिनन्दन अभिवादन करने हेतु सम्मिलित हुए थे।**

❖ महिला सम्मेलन

अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन श्रमणसंघ के तृतीय पट्टधर आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी के आचार्य पद चादर समारोह के उपलब्ध में भण्डारी दर्शक मण्डप में आयोजित **"बच्चों में संस्कार निर्माण में महिलाओं की भूमिका"** विषयक महिला सम्मेलन में पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने महिलाओं को आव्हान किया कि **"वे समाज निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने के लिए दृढ़ संकल्प शक्ति** के साथ आगे आये और पुरुषों को अपनी सामर्थ्य का भान कराएं।"

चादर समारोह के लिए विशेष रुप से निर्मित "आत्म-आनन्द नगर" के विशाल पंडाल में देश के विभिन्न प्रान्तों से आई स्थानकवासी जैन श्राविकाओं एवं श्रावकों के समक्ष पूर्व राष्ट्रपति ने कहा कि "भारत ही नहीं विश्वभर में महिलाएं पुरुषों से किसी भी क्षेत्र में पीछे नही हैं। आज जरुरत इस बात की है कि महिलाएं पुरुषों के समक्ष अपनी हैसियत को सिद्ध करके समानता का अधिकार प्राप्त करें।"

आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म. ने इस अवसर पर महिला समाज को उद्‌बोधन देते हुए कहा कि "महिलाएं बच्चों में सुसंस्कार जाग्रत करें, तभी एक सुसभ्य समाज की संरचना

सम्भव है। नारी नारायणी का स्वरुप है। वह अबला नहीं है, सर्वाधिक सामर्थ्यवान है। नारी समाज की रीढ़ है, रीढ़ की हड्डी के आधार पर ही सम्पूर्ण शरीर स्वस्थ व सुदृढ़ रहता है। नारी शक्ति जाग्रत हुई तो सम्पूर्ण राष्ट्र की चेतना जाग उठेगी।" **सम्मेलन में मैंने (रवीन्द्र मुनि) साध्वी चन्दनबाला जी, डॉ. प्रिया जैन, डॉ. इन्द्रा जैन, हेमलता तलेसरा, डॉ. राजकुमारी जैन आदि ने भी विचार व्यक्त किये।**

राजस्थान महिला श्राविका संघ की अध्यक्षा लाडकुंवर जैन व उदयपुर शाखा की सचिव पारसमणि खींचा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। आरम्भ में महिला संघ की राष्ट्रीय अध्यक्षा डॉ. विद्युत जैन ने स्वागत भाषण पढ़ा। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सुषमा सिंघवी ने किया।

महिला सम्मेलन में सर्व सम्मति से 6 प्रस्ताव पारित किये गये जिनमें बालकों में जैन संस्कारों के शिक्षण एवं प्रचार के साथ ही महिलाओं से ऐसे सौन्दर्य प्रसाधन काम में न लेने की अपील की गई, जिनके निर्माण में जीव हिंसा होती हो। भ्रूण–हत्या का भी विरोध किया गया। अन्य प्रस्तावों में घरेलू शिक्षा, प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन रुढ़ियों के उन्मूलन, वृद्ध, विकलांगों की सेवा तथा शादियों में दहेज एवं आडम्बर से बचने से सम्बन्धित मुद्दे शामिल थे।

● **युवा रैली :** उस बीच सुबह तारक **गुरु जैन ग्रन्थालय** से आरम्भ हुई युवा रैली देहली गेट, धानमण्डी मुकर्जी चौक, बड़ा बाजार, हाथीपोल व चेतक सर्कल होते हुए आत्म–आनन्द नगर (भण्डारी दर्शक मण्डप) पहुंच सम्पन्न हुई। रैली में देश के विभिन्न हुई। **रैली में देश के विभिन्न राज्यों से आये हजारों युवा जैन शरीक हुए। रैली में दो पहिया वाहनों पर सवार शुभ वस्त्रधारी व गले में आचार्य-पद चादर महोत्सव की केसरियां गुंजा रहे थे।** सजे धजे एक हाथी पर सवार युवक सिक्के उछालते चल रहे थे। रैली में सजे धजे ग्यारह घोड़े, ऊँट व

बग्गियां भी शामिल थीं। **जैन कॉन्फ्रेंस की युवा शाखा के अध्यक्ष बाबू शेठ बोरा ने रैली का नेतृत्व किया।**

● **युवा सम्मेलन :** दोपहर करीब साढ़े ग्यारह बजे युवा सम्मेलन आरम्भ हुआ। इस अवसर पर आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी ने युवा वर्ग को आव्हान किया कि वह व्यसनों से बचे। उन्होंने कहा कि युवा वर्ग अपनी शक्ति रचनात्मक कार्यों में लगाये, तभी समाज व राष्ट्र का हित हो पायेगा।

युवाओं में स्वाध्याय व धर्मरुचि कैसे बने? इस विषयक सम्मेलन के मुख्य **वक्ता न्यायमूर्ति जसराज जी चौपड़ा ने अपना प्रभावशाली व्याख्यान दिया।** सम्मेलन की अध्यक्षता युवा संघ के **राष्ट्रीय अध्यक्ष बाबू सेठ वोरा ने की, वहीं महाराष्ट्र के विधायक सुरेश दादा जैन ने भी विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर अनेक पत्र पत्रिकाओं का लोकार्पण सम्पन्न हुआ।**

"आत्म-आनन्द नगर" के विशाल पंडाल में शनिवार सुबह से दोपहर तक श्रावक–श्राविकाओं का सैलाब नजर आया। शनिवार को दिल्ली से एक विशेष रेलगाड़ी तथा महाराष्ट्र स्थित औरंगाबाद से एक विशेष रेल गुरुभक्त लेकर उपस्थित हुई। इसके अलावा बसों तथा वाहनों से भी भारी तादाद में श्रावक श्राविकाएं उदयपुर पहुंचे। आत्म आनन्द नगर में बने पृथक पंडाल में आगन्तुकों के लिए भोजनादि की अत्यन्त सुन्दर व्यवस्था की गई थी। **मंच को तीन भागों में विभक्त कर मध्यवर्ती भाग में आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी व उनकी मुनि मण्डली, दूसरे भाग में साध्वियां तथा तीसरे भाग में अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारी एवं सदस्यों के बैठने की व्यवस्था की गई थी।**

● **चादर समर्पण समारोह :** देखते ही देखते 28 मार्च का वह ऐतिहासिक क्षण भी आ पहुंचा। जिसके लिए हजारों

साधु–साध्वीगण एवं लाखों श्रावक अपलक प्रतीक्षा लगाये बैठे थे। **स्थानीय शास्त्री सर्कल स्थित श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय भवन में विराजमान, श्रमणंसघ के प्रवर्तक श्री अम्बालाल जी महाराज, प्रवर्तक श्री रमेश मुनि जी महाराज, प्रवर्तक श्री रुपचन्द जी महाराज 'रजत' एवं मैं (रवीन्द्र मुनि) आदि लगभग ठाणा 70 के साथ परम पूज्य आचार्य सम्राट विशाल प्रांगण में नव निर्मित आत्म आनन्द नगर में पधारने हेतु तत्पर हुए।**

साथ ही परम विदुषी श्री शीलकुंवर जी महाराज, परम विदुषी श्री कुसुमवती जी महाराज, साध्वी श्री पुष्पवती जी महाराज, श्री उमरावकुंवर जी म. 'अर्चना' की सुशिष्या, डॉ. सुप्रभा जी, पंजाब से डॉ. अर्चना जी, श्री सुमन प्रभा जी आदि ठाणा 130 के लगभग ज्यों ही आत्मानन्द सभा स्थल पहुंचे, यथास्थान विराजने पर ऐसा लग रहा था मानो राजगृही के गुणशील उद्यान में भगवान का समवशरण लग रहा हो।

एक तरफ साध्वीगण, बीच में मुनिगण व मंच की दूसरी तरफ समाज के पदाधिकारी व **विशेष रुप से आमन्त्रित मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री, माननीय सुन्दरलाल जी पटवा, मेवाड़ महाराणा महेन्द्र सिंह जी, गुलाबचंद जी कटारिया व अनेक सांसद, विधायक न्यायाधीश के अलावा तत्कालीन कॉन्फ्रेंस अध्यक्ष श्री बंकटलाल जी कोठारी, उपाध्यक्ष, मन्त्रीगण व समस्त सदस्यगणों आदि की उपस्थिति समारोह में विशेष बनी रही।**

सर्वप्रथम मंगलाचरण के रूप में नवकार महामन्त्र का पाठ किया गया, तदन्तर विराजमान संत–सतीवृन्द द्वारा व पूज्य पदाधिकारी मुनिगण व **महामन्त्री श्री सौभाग्य मुनि जी द्वारा चादर प्रदान कर दी गई।** इस अवसर पर मंच पर अनेक राजनेता एवं समाजसेवी उपस्थित थे।

ध्यान के अपूर्व संगम, युगप्रधान आचार्य डॉ. श्री शिव मुनि जी महाराज

जैन श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिवमुनि जी म एक उच्चकोटि के साधक एवं आत्मार्थी संत हैं। आपका जीवन असंख्य गुण–रत्नों का अक्षय कोष है। जो भी व्यक्ति आपके सान्निध्य में पहुंचता है वह आपके गुणों से चमत्कृत बनकर आपका ही बनकर रह जाता है। अनन्त सौरभ लुटाते दिव्य फूल के समान आपके जीवन से अध्यात्म की सुवास पाकर असंख्य–असंख्य लोगों ने अपने जीवन की दशा और दिशा का निर्धारण किया है तथा आत्मकल्याण का पथ प्रशस्त किया है।

गुलाब–सा पुलकित मुखमण्डल जिसके दर्शन कर निराश और हताश व्यक्ति में श्रद्धा और उत्साह संचरित हो उठे, भास्कर या देदीप्यमान ललाट, ध्रुव सम तेजस्वी आंखें, पुष्प से मृदुल करुणा और वात्सल्य से भीगे हुए वचन, मूल अभिजात्य वर्ग का प्रतिनिधित्व करती हुई गौर–देह, इस बाह्य व्यक्तित्व के धनी हैं **पूज्य आचार्य भगवन्।**

कहावत है In life, it is not the length but the excellence that matters. अर्थात् **जीवन की महत्ता उसकी दीर्घसूत्रता से नहीं, परन्तु गहराई में है।** पूज्य आचार्य भगवन का संयम–पर्याय भी विशाल है तो ज्ञान और अनुभव की उनकी दृष्टि भी अत्यन्त गहरी है। **आपके कुशल नेतृत्व में आज श्रमणसंघ चहुंमुखी विकास कर रहा है।**

धरा पर पदार्पण : पूज्य आचार्य भगवन् का जन्म **18 सितम्बर 1942** को मलौट मण्डी (पंजाब) में प्रसिद्ध ओसवाल जैन कुल में हुआ। **श्रीमंत लाला चिरंजीलाल जी का पितृत्व सन्तुष्ट हुआ और माता विद्यादेवी जी की कोख गौरवान्वित हुई।** आपको 'शिव कुमार' नाम दिया गया। 'होनहार बिरवान को

होत चीकने पात' इस उक्ति के अनुसार आप में छिपी स्वर्णिम संभावनाएं बाल्यकाल से ही प्रकट होने लगी थीं। पूर्वजन्म और वर्तमान पैतृक संस्कार की अमृतनिधि के साथ आपने अपनी जीवन–यात्रा प्रारंभ की। कालक्रम से आपने विद्यालय और महाविद्यालय की शिक्षा प्राप्त की। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात आप जीवन के ध्रुव लक्ष्य को तराशने लगे। जीवन और जगत का सूक्ष्मता से अध्ययन करने के लिए आपने भारतवर्ष के अतिरिक्त जेनेवा, 'टोरन्टो, कुवैत, कनाडा, अमेरिका आदि देशों का भ्रमण किया। इस पूरे उपक्रम के पश्चात् आप इस निश्चय पर पहुंचे कि – **जीवन का ध्रुव–ध्येय भोग नहीं योग है, धन नहीं धर्म है। इसी श्रेयस् निश्चय के साथ तीस वर्ष की पूर्ण यौवनावस्था में आपने योग मार्ग पर बढ़ने के अपने संकल्प से अपने परिवार को अवगत करा दिया।**

● **साधना पथ पर :** भगवान महावीर का एक वचन है – 'भोगोपभोग के समस्त साधन सहज उपलब्ध होते हुए भी जो उनका त्याग करता है, वस्तुतः वही सच्चा त्यागी है।' वहीं आपकी ध्यान साधना भगवान् महावीर द्वारा निर्देशित शुक्ल ध्यान सम्पृक्त है।

● **वैभव से वैराग्य तक :** युवक शिवकुमार को ये समस्त साधन प्रचुर मात्र में सहज उपलब्ध थे। पर उन्होंने अनुभव कर लिया था कि भोग मिथ्या है, नश्वर हैं। योग ही सत्य और ध्रुव है। इसी ज्ञान के साथ आपने १७ मई १९७२ को मलौट मण्डी में श्रद्धेय गुरुदेव जैनागम रत्नाकर राष्ट्रसंत श्री ज्ञानमुनि जी महाराज के श्रीचरणों में संयम की दीक्षा ले ली। आपके इस त्याग से प्रभावित होकर आपकी तीन बहनों ने भी आपके साथ ही दीक्षा अंगीकार की।

● **समीचीन अध्ययन :** आपश्री दीक्षा लेने से पूर्व ही अंग्रेजी एवं दर्शनशास्त्र में एम.ए. कर चुके थे। दीक्षा लेने के पश्चात् **भारतीय धर्मों में मुक्ति की अवधारणा : जैन धर्म का विशिष्ट सन्दर्भ इस विषय में पटियाला विश्वविद्यालय से पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की। बाद के कलकत्ता विश्वविद्यालय ने**

आपकी कृति 'ध्यान : एक दिव्य साधना' पर डी. लिट. की मानद उपाधि देकर आपको सम्मानित किया गया। जैन समाज में आप अग्रगण्य ऐसे मुनि/आचार्य हैं जिन्होंने इतनी उच्च शिक्षा प्राप्त की है।

इसके अतिरिक्त आपने जैनागमों और जैन दर्शन का भी तलस्पर्शी अध्ययन किया। साथ–साथ वैदिक, बौद्ध और पाश्चात्य दर्शनों का भी आपने पारायण किया। अल्प दीक्षापर्याय में ही आप एक उच्चकोटि के विद्वान मुनि बन गए थे।

● **प्रवचन प्रवीण :** संस्कृत की एक उचित है – **'वक्ता दश सहस्रेषु'** अर्थात् **दस हजार लोगों के समूह में वक्ता कोई एक ही होता है। वक्तृत्व एक कला है। सफल और सच्चा वक्ता उसे ही माना जा सकता है जो न केवल अपनी बात को प्रभावक शैली में प्रस्तुत करने में कुशल हो अपितु उन सिद्धान्तों का स्वयं भी पालक हो जिनका प्रतिपादन कर रहा है।**

पूज्य आचार्य भगवंत एक उत्कृष्ट और ओजस्वी वक्ता हैं। उनके प्रवचन श्रोताओं के हृदय में वैसे ही उतर जाते हैं। आप पढ़ा हुआ नहीं कहते, अनुभव किया हुआ कहते हैं।

❖ **ध्यान योगी : ध्यान और मुनि! मुनि और ध्यान!**

ये दो शब्द ऐसे हैं जैसे दीपक की लौ और उसका प्रकाश, सूर्य की किरण और उसकी उष्मा। साधुत्व की सार्थकता, साधुत्व का बीज उसकी साधना में है। जो निरन्तर स्वाध्याय और ध्यान में संलग्न रहता है वही वस्तुतः मुनि होता है। स्वाध्याय से ज्ञान के द्वार उद्घाटित होते हैं। उसी ज्ञान को स्वयं की अनुभूतियों पर उतारने का नाम 'ध्यान' है। **ध्यान वास्तव में स्वाध्याय द्वारा अर्जित द्रव्य श्रुत को भावश्रुत में परिणमित करने की आध्यात्मिक प्रक्रिया है। इस साधना को स्वयं के अस्तित्व का अभिन्न अंग बनाया है परमपूज्य आचार्य श्री जी ने।** यही कारण है कि उनके श्रीमुख से प्रकट वचनों के पीछे अनुभूति का बल होता है। जिस कारण उनके सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। **पूज्य आचार्य भगवन का समग्र जीवन ध्यान साधना से इस प्रकार**

स्नात हो गया कि वे ध्यान साधना के एक स्वर्णिम अध्याय बन गए हैं।

● **सरल व्यक्तित्व के स्वामी :** भगवान महावीर ने कहा है – **'सोही उज्जुभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ' अर्थात् सरलता से शुद्ध बने हृदय में ही धर्म ठहर सकता है।** श्रद्धेय आचार्य श्री जी का समग्र जीवन सरलता का जीवन संस्करण है। वक्रता का विद्रूप विषधर आपको स्पर्श तक नहीं कर पाया है। तन–मन और वचन से आप सर्वतोभावेन सहज, सरल और विमल–मूर्त हैं। बालक–सा निश्छल हास्य प्रतिक्षण आपके आनन पर सुरक्षित बना रहता है। सिरमोद पद पर प्रतिष्ठित होकर भी आप सभी प्रकार की जटिलताओं से मुक्त हैं।

● **युवाचार्य पद :** मात्र पन्द्रह वर्ष की दीक्षा पर्याय में ही आपका बहुमुखी विराट व्यक्तित्व समग्रसंघ में लोकप्रिय बन गया। आपके व्यक्तित्व और कृतित्व को देखकर श्रमणसंघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट श्री आनन्द ऋषि जी म. ने पूना मुनि–सम्मेलन में दिनांक **13 मई 1987 के दिन लगभग तीन सौ साधु-साध्वियों तथा लाखों श्रावक-श्राविकाओं के मध्य आपको युवाचार्य नियुक्त किया और उक्त पद की प्रतीक चादर प्रदान की।**

● **आचार्य पद :** 9 जून 2000 को अहमदनगर (महाराष्ट्र) में श्रमणसंघीय विधानानुसार आप श्री श्रमणसंघ के चतुर्थ पट्टधर आचार्य के रूप में अभिषिक्त हुए। लगभग 1400 साधु–साध्वियों तथा लाखों श्रावकों वाले इस विशाल चतुर्विध श्रीसंघ के नेतृत्व का दायित्व आपश्री ने संभाला। इस बृहद् दायित्व को संभालने के पश्चात् आपश्री ने चतुर्विध श्रीसंघ के विकास हेतु समग्र भारत–भ्रमण की विहार यात्रा का कार्यक्रम बनाया। इससे पूर्व भी आपका विहार पंजाब, हिमाचल, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु आदि प्रान्तों में हो चुका है। आचार्य पद पर आसीन होने के पश्चात आपने प्रथम वर्षावास जालना नगर में

किया। उसके पश्चात् महाराष्ट्र के ग्राम–नगरों में विचरण करते हुए आनन्द शताब्दी वर्ष को श्रमणसंघ की एकता, संगठन एवं जन–जागरण के रूप में लेकर यात्रायित बने। इस क्रम में वर्ष 2000 का वर्षावास आपने 'सूरत' नगर (गुजरात) में किया।

● **आचार्य पद चादर महोत्सव : 7 मई 2001 के दिन ऋषभ विहार दिल्ली में साढ़े तीन सौ साधु-साध्वियों और लाखों श्रावक-श्राविकाओं के रूप में चतुर्विध श्रीसंघ ने आपश्री को आचार्य पद की प्रतीक पवित्र चादर प्रदान की।** इसके पश्चात जन मंगल अभियान के क्रम में आपश्री ने क्रमशः वीरनगर–दिल्ली, लुधियाना, मालेरकोटला, चण्डीगढ़ और जालंधर में वर्षावास किए। देशभर में आपश्री का प्रत्येक वर्षावास जनमंगल और शासन प्रभावना की दृष्टि से ऐतिहासिक रहा।

● **समाज सुधार एवं संघ-विकास की योजनाएं :** संत वही है जो अपने जीवन को स्व पर कल्याण में नियोजित कर देता है। पूज्य आचार्य भगवन् संन्यास में प्रवेश के प्रथम क्षण से ही स्व–पर कल्याण–साधना में श्रमशील हैं। समाज–सुधार के क्षेत्र में आपश्री दो दशकों से त्रि–सूत्रीय कार्यक्रम के माध्यम से एक सात्विक अभियान चलाए हुए हैं।

आपश्री के सभी कार्यों को रचनात्मक रूप देने हेतु आपश्री जी के आशीर्वाद से नासिक में **'श्री सरस्वती विद्या केन्द्र'** एवं **कुप्पकला में 'आदीश्वर धाम'** की स्थापना की गई है। इन केन्द्रीय संस्थाओं के दिशा–निर्देशन में देश भर में ध्यान–योग–साधना के प्रशिक्षण शिविर लगाए जाते हैं। उक्त शिविरों के माध्यम से हजारों–हजार व्यक्तियों ने स्वस्थ जीवन जीने की कला सीखी है। अनेक लोगों को असाध्य रोगों से मुक्ति मिली है। मैत्री, प्रेम, क्षमा और सच्चे सुख को जीवन में विकसित करने के ये शिविर अमोघ उपाय सिद्ध हो रहे हैं।

वर्तमान के प्रारंभ से ही ऐसे महान विद्वान और ध्यानयोगी आचार्य को प्राप्त कर जैन संघ गौरवान्वित हुआ है।

●●●

चतुर्थ पट्टधर आचार्य डॉ. श्री शिव मुनि जी म. का आचार्य पद चादर समारोह

(चतुर्विद संघ भक्ति का प्रकटन)

7 मई 2000 – ऋषभ विहार, दिल्ली

श्रमण संघ के इतिहास में चौथी बार आए इस अवसर ने अपनी ऐतिहासिक उपस्थिति से यह सिद्ध कर दिया कि **"साधना-साधुता और सरलता का सम्मान करने से चतुर्विध संघ को कोई रोक नहीं सकता।" क्योंकि मन मानस सदैव सरलता, सहजता और पारदर्शिता का हिमायती होता है तब भावनाशील और कल्पनाशील अनुभवी लोग इस तरह के अभियान में जुड़ जाते हैं। हार्दिक प्रसन्नता की बात है कि जैन कॉन्फ्रेंस के समर्पित हजारों कार्यकर्ता इस गौरवशाली समारोह को सफल बनाने में भी दिन रात इसमें जुट गए।**

इस पहल ने **'ऋषभ विहार की आयोजन समिति'**, सम्पूर्ण देश की जैन कॉन्फ्रेंस और खासकर उत्तर भारत के कार्यकर्ताओं में उत्साह की लहर पैदा कर दी।

एक सामयिक निर्णय श्रमण संघ के पू. प्रवर्तक श्री रुपमुनि म. 'रजत' एवं उप प्रवर्तक श्री सुकनमुनि म. के मुनि मंडल ने भी लिया। इधर उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री पदमचंद जी भंडारी के गिरते स्वास्थ्य के बावजूद एवं अपनी शारीरिक रुग्णता को अनदेखा करते हुए व्याख्यान भूषण उप प्रवर्तक श्री अमरमुनि जी म., उप प्रवर्तक ध्यानयोगी पं. श्री हेमचन्द्र जी म., उप प्रवर्तक पद पर रवीन्द्र मुनि ने भी अपने-अपने प्रयत्नों को तेज कर दिया।

युवा शाखा ने अपने तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संजय जैन एवं राष्ट्रीय महामन्त्री श्री अमितराय जैन साथियों की अगुवाई में भावी कार्यक्रम तय किए तो अनेक सांस्कृतिक एवं सांगितिक कार्यक्रमों के माध्यम से वातावरण को श्रद्धाभक्तियुक्त बना दिया। साथ ही यह भी अनुमान लग जायेगा यह आयोजन क्यों महत्त्वपूर्ण भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। किस तरह आलोचना एवं निंदा की भेद रेखा खीचने वालों को निराशा हाथ लगी।

● **6 मई राष्ट्रीय युवा सम्मेलन एवं संगीत संध्या का आयोजन :** ऑल इंडिया जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा की ओर से आचार्य पद चादर समारोह के स्वर्णिम अवसर पर संकल्प विधि युवा जागृति एवं सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध युवा विषय पर संगोष्ठी सम्पन्न हुई जिसमें जैन समाज के तत्कालीन सांसद द्वय श्री पुष्प जैन एवं श्री दिलीप गांधी विशेष रुप से उपस्थित हुए। **युवा सम्मेलन का संचालन अध्यक्ष संजय जैन की अध्यक्षता में महामन्त्री श्री अमितराय जैन ने कुशलतापूर्वक किया। रात्रि को प्रसिद्ध जैन गीतकार संगीतकार श्री रवीन्द्र जैन के गीतों से युवामन हर्षित हुए। इस अवसर पर प्रसिद्ध नृत्यांगना एवं जैन चिकित्सक डॉ. सुधा कांकरिया ने मनमोहक भरत नाट्यम के माध्यम से अहिंसक जीवन शैली के स्वर्णिम पहलुओं को प्रदर्शित किया।**

❖ 7 मई का स्वर्णिम क्षण

भगवान महावीर मंडप, धर्मनगरी ऋषभविहार का हृदय स्थल बन चुका था। विशाल कलात्मक द्वार से लोगों का प्रवेश जारी था। भ. महावीर दरबार, आचार्य श्री आत्म दरबार, आचार्य श्री आनन्द दरबार, आचार्य श्री देवेन्द्र दरबार एवं आचार्य श्री शिव दरबार के रूप में विभक्त यह विशाल किन्तु अस्थायी सभागार, पंच परमेष्ठि के पांच रंगों से सजी छत ऐसे लगती थी

जैसे आचार्य उपाध्याय और सर्व साधु साध्वी वर्ग सहित चतुर्विध संघ पर अरिहंत और सिद्ध भगवान कृपावर्षण कर रहे हों।

मंडप के मध्य में बने भव्य मंच पर आचार्य श्री शिव मुनि जी एक काष्ठ कुमुदासन पर विराजमान थे। आपके एक ओर लोकमान्य संत पूज्य प्रवर्तक श्री रूप मुनि जी म. 'रजत' श्रमण संघीय मन्त्री प्रखर वक्ता श्री सुमन मुनि जी म., श्री सुमति प्रकाश जी म., श्री सुकन मुनि जी म., उपाध्याय डॉ. विशाल मुनि जी, डॉ. राजेन्द्र मुनि जी सहित युवा एवं वरिष्ठ संत विराजमान थे। तो दूसरी ओर आगम रत्नाकर, व्याख्यान, भूषण श्री अमरमुनि जी म., ध्यान योगी पं. हेमचन्द्र जी म., मैं (रवीन्द्र मुनि), श्री अरुण मुनि जी म., श्री तारक ऋषि जी म., श्री विनय मुनि जी म. 'भीम', श्री विनय मुनि जी 'वागीश' एवं शिवाचार्य के अन्तेवासी श्री शिरीष मुनि जी म. सहित अनेक युवा एवं ख्यातनाम संत विराजमान थे।

इस मंच के बांयी तरफ पूज्या साध्वी वर्ग विशाल संख्या में शोभायमान था। 'दाहिनी ओर बनें मंच पर समारोह के उद्घाटनकर्ता एवं परम प्रतिष्ठित **श्री सुरेश दादा जैन, केन्द्रीय मन्त्री श्री सुन्दरलाल पटवा, श्री सुखदेव सिंह ढींढसा, हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री ओम प्रकाश चौटाला,** मध्य प्रदेश के वाणिज्य मन्त्री **श्री नरेन्द्र कुमार जी नाहटा** एवं **स्वास्थ्य मन्त्री श्री सुभाष जी सौजतिया,** श्री चंद्रा स्वामी जी म. युवा नेता श्री एम.एस. बिट्ट, श्री दीपचंद एस गार्डी, आत्म वल्लभ शिक्षण निधि के अ.भा. मंत्री श्री राजकुमार जी जैन, साहू रमेशचन्द्र जैन, श्री शांति लाल चपलोत सहित मुख्य अतिथि राष्ट्रवादी समाजसेवी एवं उद्योगपति श्री रामकुमार जी जैन (श्रमण शाल) आदि के साथ जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय कार्य कारिणी सदस्य एवं प्रमुख पदाधिकारी, स्वागत समिति, ऋषभ विहार जैन सभा, युवा एवं महिला शाखाओं के पदांधिकारी सहित आचार्य श्री शिवमुनि जी की मातुश्री श्रीमती विद्यादेवी

जी भी विराजमान थे। इस अवसर पर जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला की बहुमूल्य भूमि जिसका अधिग्रहण सरकार कर चुकी थी उसे जैन समाज के विनम्र अनुरोध पर कार्यक्रम में पधारे हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री ओम प्रकाश जी चौटाला ने अधिग्रहण मुक्त करके एक उपहार प्रदान किया।

मंच संचालन एवं आयोजन के सूत्रधार समाजरत्न श्री हीरालाल जैन ने मंच संचालन करते हुए सर्वप्रथम मंगलाचरण के द्वारा कार्यक्रम की शुरूआत की। स्वागत सम्मान के पश्चात जैन ध्वज का ध्वजारोहण योजना विहार दिल्ली निवासी लाला जयभगवान जैन ने किया। आपके साथ जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे.डी. जैन, सहित अनेक प्रमुख कार्यकर्ता भी थे।

ध्वजारोहण के बाद मंच संचालक श्री हीरालाल जैन ने प्रत्येक मण्डप का विधिवत् अनावरण शुभारम्भ करने हेतु सर्वप्रथम पंजाब जैन महासभा के अध्यक्ष एवं जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय मंत्री श्री राजेन्द्र पाल जैन को भ. महावीर दरबार का उद्घाटन करने हेतु आमन्त्रित किया। जालंधर नगर निवासी एवं समाज समर्पित उद्योगपति श्री विमल प्रकाश जैन ने आचार्य श्री आतम दरबार का अनावरण कर आमन्त्रित अतिथिजनों को स्थान लेने हेतु स्वागतम् कहा।

आ. श्री आनन्द दरबार का अनावरण युवा कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष भाई संजय जैन की सहधार्मिणी श्रीमती रूचिका जैन ने किया। आ. श्री देवेन्द्र दरबार के अनावरणकर्त्ता थे, ऋषभ विहार निवासी एवं युवा समाजसेवी श्री अशोक जैन 'जयचन्दा' के पिता श्री सलेकचन्द जैन एवं परिवार। आ. श्री शिव मुनि दरबार के अनावरणकर्ता थे लुधियाना निवासी एवं शारू इण्डस्ट्रीज के मालिक श्री तरशेम कुमार जी जैन। मात्र कुछ मिनटों में अनावरण की यह औपचारिकता निभाते हुए सहयोगी कार्यकत्ताओं ने अपने अपने समर्पण सहयोग के आधार पर उपस्थित समाज का अभिनंदन करने का अनुपम

अवसर प्राप्त किया। मंडप के बाहर खड़े हजारों लोग और मंडप में प्रवेश कर गए।

समारोह की अध्यक्षता जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे.डी. जैन ने की। समारोह के मुख्य अतिथि समाज सेवी उद्योगपति श्री रामकुमार जी जैन (श्रमणशाल) लुधियाना वाले थे। स्वागत अध्यक्ष श्री विनयकुमार जैन सुपुत्र श्री वीरसेन जी जैन ने स्वागत समिति की ओर से सभी आमंत्रितों का एवं परम विशिष्ठ अतिथि महानुभावों का स्वागत किया।

गौतम प्रसादी सौजन्य प्रदाता एवं आयोजन समिति के महामंत्री श्री देवेन्द्र कुमार सुरेन्द्र कुमार जैन, श्री राकेश कुमार एवं श्री गौरव जैन सहित अनेक महत्वपूर्ण अतिथि भी मंच पर थे। **उदारमना दानशीला श्रीमती अरूणा अभयजी औसवाल भी अपने परिवार सहित इस अवसर पर विशेष रूप से पधारी थी।**

❖ अभिनन्दन-वंदन उदगार

चादर महोत्सव का शुभारम्भ करते हुए समारोह उदघाटन कर्त्ता एवं जलगांव निवासी श्री सुरेश दादा जैन कहा कि "आज के संत्रस्त विश्व में मानसिक शांति दुर्लभ होती जा रही है। इन्सान सब प्रकार की सुख सुविधाओं और अकूत वैभव को प्राप्त करके भी जीवन सुख से वंचित है। ऐसे वातावरण में आचार्य श्री जी आत्मिक शांति के उद्‌गम ध्यान साधना का प्रचार प्रसार ही नहीं प्रयोग कर रहे हैं।

आज विश्व को पुनः भ. महावीर द्वारा अपनाई गई इस ध्यान पद्धति का आवश्यकता है। आचार्य जी की इस प्राच्य विद्या ध्यान द्वारा समाज को सुख शान्ति प्रदान करने का प्रयत्न कर रहे हैं। यह खोज सदैव अमूल्य देने के रूप में युग तक स्मरणीय रहेगी। आज मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे आचार्य श्री जी का सान्निध्य लाभ मिल रहा है।" इसके बाद **भ. महावीर जन्म कल्याणक केन्द्रीय समारोह समिति के अध्यक्ष एवं मुम्बई के वयोवृद्ध समाजसेवी श्री दीपचंद जी गार्डी ने आचार्य श्री शिवमुनि जी की चादर समारोह पर वंदना अर्ज की आपके**

सुखसाता पूर्वक संयम जीवन की मंगल कामना करते हुए आपने भगवान महावीर के 2600वें जन्म कल्याणक वर्ष कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी।

● **दीक्षापाठ :** उत्तर भारतीय प्रवर्तक भंडारी श्री पदमचंद्र जी म. के सुशिष्य व्याख्यान भूषण श्री अमर मुनि जी म. मंच ने सम्भाला और आचार्य सम्राट जैनधर्म दिवाकर श्री शिवमुनि जी म. ने दीक्षा पाठ पढ़ाना प्रारम्भ किया। जिन ग्यारह भव्यात्माओं ने इस अवसर पर जैन, दीक्षा ग्रहण की उनके सांसारिक शुभनाम है श्री जीतराम शर्मा (हि.प्र.) श्री वरुण जैन (दिल्ली) श्री ऋषि जैन (टिहरी) श्री रक्षित जैन (शाहजहां पुर) श्री भूषण जैन (अहमदनगर) इन पांचों भाईयों के साथ पांच बहनों ने भी दीक्षा ग्रहण की। कुमारी विजेता जैन (दिल्ली) सुश्री स्वाति जैन (पंजाब) सुश्री श्वेता जैन (हरियाणा) सुश्री चांदनी जैन (दिल्ली) सुश्री वाणी जैन (दिल्ली)।

❖ चादर समारोह : एक अविस्मरणीय क्षण

चतुर्विध चेतना का प्रतीक चादर श्रमण संघ में चतुर्थ पट्टधर को समर्पित करने का वो अविस्मरणीय क्षण था जिसे धरती के कण कण ने चतुर्विध संघ के श्रद्धानत वंदन ने, श्रामण्य के चन्दन ने और संत साध्वी मंडल के अभिनंदन ने श्वेत शुक्ल ध्यान की धवल मूर्ति प्रज्ञा प्रतिभा और प्रतिष्ठा के पर्याय आचार्य श्री शिवमुनि जी को स्नेहाधीन होकर समर्पित किया और प्रत्युत्तर में महान दायित्त्व समझ कर आचार्य श्री ने इसे स्वीकार किया। इस प्रकार यह भावभीना श्रद्धा महोत्सव यादगार बनकर समय के शिलापट्ट पर अंकित हो गया।

●●●

श्रमणों का यथार्थ बल क्या है?

व्यवहार सूत्र इसका उत्तर देता है कि

आगमवलिया समणा निग्गंथा।

श्रमणों का यथार्थ बल आगम ज्ञान है।

विनय विवेक एवं विज्ञता के संगम
परम पूज्य युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा.

वर्तमान में ऋषिकुल गौरव, श्रमण संघ के भावी नैतृत्वकर्त्ता परम पूज्य युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा. आज किसी परिचय के मोहताज नहीं है। आपश्री सन् 2015 में सम्पन्न हुए आत्मदृष्टि संत समागम कहे या श्रमण संघीय वृहद साधु–साध्वी सम्मेलन में युगप्रधान आचार्य चतुर्थ पट्टधर ध्यानयोगी सतत एकांतर तप धारक पूज्य डॉ. शिव मुनि जी म. सा. सहित समस्त चतुर्विद संघ ने श्रमण संघ के उज्ज्वल भविष्य का ऐसा स्वर्णिम पृष्ठ रच दिया है जो विनय विवेक एवं विज्ञता से मंडित है। आपके चयन ने एक बार फिर सिद्ध किया कि श्रमण संघ की संचालन पद्धति लोकतांत्रिक है, संवाद और समन्वय पर आधारित संगठना है।

आपश्री का जन्म सन् 1967 में भटेवरा परिवार के सुश्रावक श्रीमान स्वार्थीलाल जी एंव मातुश्री लीला देवी जैसी शीलवंत धर्म प्रवाहिका के श्रेष्ठ परिवार में महाराष्ट्र की पुण्यशाली धर्मधरा पूना में हुआ।

कल्याण कल्पतरु का पावन सान्निध्य

श्रमण संघीय इतिहास के स्वर्ण पृष्ठ निर्माता राष्ट्रसंत, श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर परम पूज्य आचार्य श्री आनन्दऋषि जी महाराज की पावन सान्निध्य केवल 7 वर्ष की अवस्था में पाने वाले 'श्री मंजु भटेवरा' को सौभाग्य पर अनेकानेक भव्यात्मा गर्वित हैं, क्योंकि कल्याण कल्पतरु का पावन सान्निध्य पाना ही अपने आपमें एक आनन्ददायक सौभाग्य है।

जीवन के 15वें बसंत में 3 फरवरी 1982 को एक अनियारी अछूती मंगल घड़ी में आपश्री को पूना नगरी में ही जैन भागवती दीक्षा में दीक्षित होने का अनमोल अवसर प्राप्त हुआ।

तब से लेकर आज तक आपश्री की सर्वप्रिय संयम यात्रा यथावत जारी है। आपके आचार–व्यवहार, ज्ञान–ध्यान पर पू. गुरुदेव राष्ट्रसंत आचार्य श्री आनंदऋषि जी म.सा. के महनीय व्यक्तित्व एवं कृतित्व की गहरी छाप है। आपश्री अपने परम पुरुषार्थ से अपनी संयम यात्रा का हर पड़ाव सुखद बनाते जा रहे हैं।

विद्वता के नव आयाम छू रहे हैं आपश्री

आप यथार्थ में एक लगनशील प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थी की भांति ही हैं। **आपने अपना आरंभिक जीवन पूज्य आचार्य गुरुदेव श्री आनन्दऋषि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में समर्पित कर लम्बे समय तक आप सेवा, शिक्षा और स्वाध्याय के लक्ष्य को लेकर भ्रमण विचरण से कुछ कालखण्ड तक दूर ही रहे, मगर इस अनमोल समय में आपने युगनिर्माता महापुरुष आचार्य श्री आनन्दऋषि जी म. से वो पा लिया जो आपकी अमूल्य निधि है।**

व्यक्तित्व और कृतित्व की विशेषताएं

आपका स्वभाव साधुता का स्वयंभू परिचय है। आपकी वाणी में अहंकार मुक्त वाग्वैभव का स्वाद भरा अनुभव छलकता है। आप में सुनने का धैर्य है तो अभिव्यक्ति में गंभीरता का पुट भी। आपके प्रवचन प्रेरणा सह अधुनातन जरूरत की आवश्यक पूर्ति करते हैं।

आगम की अलौकिकता को आपश्री धारा प्रवाह प्रेषित कर श्रोता का सौभाग्य बना देते हैं। आपकी प्रवचन शैली सुगम है, आधुनिक बोलचाल जैसी है, मगर दार्शनिक सन्दर्भ से भी परिपक्व है।

संघ संगठन प्रथम लक्ष्य

आप उस ऋषिकुल के अंग हैं जो मर्यादा और गवेषणा का समन्वय करके आगे बढ़ा है। पूज्य श्री लवजीऋषि जी हो या शास्त्रोधारक पू. श्री अमोलकऋषि जी म., आचार्य श्री

तिलोकऋषि जी हो या आचार्य श्री रत्नऋषि जी म.। सम्पूर्ण परम्परा एक ऐसा आध्यात्मिक स्कूल है जो लोकरंजन को भी भवभंजन की विधा में ढाल देता है।

साहित्य सेवी शब्द शिल्पी

आपश्री जितने प्रभावक वक्ता है, उतने ही मर्मज्ञ लेखक, इतिहास पर शोध आपका प्रिय विषय है। ऋषि सम्प्रदाय का इतिहास और अन्य प्रकाशन आपकी प्रतिनिधि रचनाएं है।

यहां ज्ञानाराधन प्रथम है तो लोक कल्याण भी प्राथमिकता में है। यही कारण है कि आपकी परम्परा का सर्वांगीण लक्ष्य है संघ संगठन। यही आपके भी हर प्रयास पुरुषार्थ में झलकता है। श्रमण संघ का सौभाग्य है कि आप जैसा तारणहार भावी भविष्य को संवारने हेतु प्रस्तुत है, सज्ज है।

आपश्री से श्रमण संघ को अपार आशा है। शत शत नमन– वंदन–अभिनंदन। ●●●

श्रुत और मानवीय सभ्यता का अंर्तसंबंध

आप्तवाणी आधारित चिन्तन में एक महत्वपूर्ण प्रेरणा भरी पंक्ति है–

मनुस्साणं च सव्वत्थ सुयस्सेव पहाणया।
तेणेव ताव्वेसट्ठत्तं पवचक्खं खलु दीसइ।।

अर्थात्, मानव के लिए सर्वत्र श्रुत की प्रधानता है और उसकी विशिष्टता प्रत्यक्ष रूप से निश्चित ही स्वाध्याय के माध्यम से ही दिखाई भी देती है। वस्तुतः मनुष्य का अधिकांश व्यवहार शब्द प्रमाण पर ही आधारित है। यदि मनुष्य को वाणी व्यवहार उपलब्ध नहीं होता तो उसकी स्थिति तिर्यंच समान ही रहती।

मानवीय विकास के प्रत्येक क्षेत्र में शब्दों और शब्दों से निर्मित श्रुत की बहुत बड़ी महत्ता है। शब्दगत उपलब्धि से ही मनुष्य विद्वान, ज्ञानी, सभ्य और श्रेष्ठ कहलाता है। समस्त साहित्यकार लेखक, कवि, वक्ता, रंगकर्मी, विवेचक, शोधार्थी शब्दों के पुजारी ही नहीं, सर्वस्व त्यागी भी है। स्व–रमण हेतु स्वाध्याय का ही आश्रय लेते हैं।

हे स्वर, शब्द, ध्वनि अभिव्यक्ति तुझे प्रणाम है। ●●●

श्रमण संघ जयवंत रहे!

- आलोचक निंदक मत-वैभिन्य रखने वालों का भी अनेकांतवादी उदारमना आश्रय स्थल श्रमण संघ।
- क्रिया को कर्त्ताभाव से प्रदर्शन करने का निषेधकर्त्ता श्रमण संघ।
- सर्वाधिक शिक्षित जागरूक चतुर्विद संघ सम्पन्न श्रमण संघ।
- कर्त्तत्व भाव से समर्पित, सेवार्थ गतिविधि चलाने वाला अखिल भारतीय अभियान श्रमण संघ।
- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एवं सर्व समावेशी विचारधारा का प्रतिनिधि श्रमण संघ।
- प्रतिभा, प्रज्ञा, पुरुषार्थ और प्राण प्रण से धर्माराधनारत श्रमण संघ।
- शिक्षा, दीक्षा, भिक्षा की प्रासुक प्रबुद्धता युक्त परम्परा श्रमण संघ।
- श्रावक कर्त्तव्य एवं श्रामण्य शुचिता का समीकरण प्रस्तुत करता श्रमण संघ।

श्रुत सेवी प्रकाशन सहयोगी

स्व. श्रीमती स्नेह-विमल कुमार जैन परिवार
गुरुग्राम - हरियाणा

श्रमण संघ जयवंत रहे!

- मैत्री करुणा अनुकम्पा दया-धर्म का सतत प्रवाही अभियान श्रमण संघ।
- चारित्रिक चेतना संवर्धक आध्यात्मिक संगठन श्रमण संघ।
- विश्व शांति, समाज शांति, परिवार शांति का आग्रही, गुण धर्म पोषक श्रमण संघ।
- शैथिल्यरोधी, सजग, सरल शुद्धाचार का प्रणेता धर्म संघ श्रमण संघ।
- ध्यान, ज्ञान, विज्ञान से प्रेरित साधना का प्रतिनिधि संगठन श्रमण संघ।
- सभी प्राणियों की सर्वोदयी उन्नति, शील शुचिता का आग्रही श्रमण संघ।
- वैश्विक समस्याओं का निदान प्रस्तुत करता आध्यात्मिक धर्म संघ श्रमण संघ।
- समता, साधुता, सज्जनता का सम्यक्त्वी प्रतिनिधि संघ श्रमण संघ।

श्रुत सेवी प्रकाशन सहयोगी

स्व. श्रीमती उर्मिला-मनोहरलाल डोसी की स्मृति में
श्री प्रशांत-मनोहरलाल डोसी,
श्रीमती रीना-प्रशान्त डोसी
राणा प्रताप बाग, दिल्ली

प्रस्तुत कृति एवं कृतिकार

आध्यात्मिक जन जाग्रति का उत्स है संस्कार! संस्कार जब तक स्थापित रहते हैं, संस्कृति जीवंत रहती है। यही आधारभूत संस्कृति जब सामाजिक स्वीकृति पा जाती है तो आदर्श मूल्य ग्राह्य हो जाते हैं। इस स्वीकार्यता में इतिहास जो कभी अमूर्त नहीं होता, बहुत बड़ा सम्बल होता है, एक प्रबल साक्ष्य होता है।

स्मरण रहे! जब हमें अपनी जड़ों की पहचान करनी होती है तब पूर्वकृत इतिहास के दरवाजे पर दस्तक देनी होती है। अपने इतिहास के महासिन्धु में गहरा गोता लगाना पड़ता है। ये डूबना क्यों जरूरी है? इसका समीचीन उत्तर है कि जब हम चलते हैं, आगे बढ़ते हैं, तो जो छूट गया है, वो भी विस्मृत नहीं होता। उसकी छाप हमारे मन-मानस पर होती ही है। इस तरह इतिहास एक उज्ज्वल दर्पण की तरह हमारे सामने होता है, हमारा परिचय देता है, हमारा साक्षात्कार कराता है।

इसी निमित्त यह प्रकाशन अनेक वर्षों बाद पुनः प्रस्तुत है। इसमें पाठकों के गम्भीर सुझावों को स्मरण रखकर कई अछूते पहलू जोड़े गए हैं। इसमें कुछ संस्मरण ऐसे हैं जो घटे तभी इतिहास के स्वर्ण कण बन गये, तो कई स्मृति ऐसी लब्धसिद्ध क्षणों जैसी हैं जो आचारगत प्रेरणा देती हैं। इसी के साथ एक सावधानी रखी गई है कि इतिहास में जो कहीं भी चुभते या अप्रिय प्रसंग रहे हैं, उनसे बचा जाए। सत्य शोधक उपाध्याय प्रवर श्री रवीन्द्र मुनि जी म. ने उन्हें फैलाया जाना पसन्द नहीं किया, क्योंकि गुरुदेव भावी पीढ़ी की भावनागत सरलता को विस्तार देना चाहते हैं।

आपश्री की रचनात्मक सोच यह है कि मानवीय व्यवहार में जो भूलें हो गई हैं वो यदि छाप दी जाए तो कतिपय जन उन्हीं का अनुसरण करते हुए उन्हें दोहराने का दुस्साहस कर सकते हैं। इससे उलट ऐसा भी है कि एक प्रेरक घटना, एक प्रभावी उदाहरण जीवन को नई दिशा दे दे सकता है। इसका सटीक प्रमाण है आपश्री का स्वयं का जीवन। आपके जीवन में एक संयोग घटा और आप सरलात्मा अध्यात्मयोगी, बाल ब्रह्मचारी स्वामी श्री भागमल जी म. की अन्तिम यात्रा में सम्मिलित हुए। यह सम्मिलन आपकी मानस मनीषा को ऐसे पड़ाव पर ले आया जिसे जैन भागवती दीक्षा कहा जाता है। दीक्षा का ही इतर अर्थ है अपनी कामनाओं को मारकर संयमित-संकल्पित हो जाना। सन् 1978 में विजयदशमी के दिन आपने वीतराग पथ के पथिक बनकर अपनी जीवन यात्रा को चमत्कारी बाबा गुरुदेव श्री प्रेमसुख जी म. की निश्राय में प्रारम्भ किया। गुरुदेव श्री प्रेमसुख जी म. ने भी अपनी वात्सल्य वारुणी से आपको नहला दिया। उस दिन से आज तक आप भौतिक कार्यों में प्रेक्षक तो हैं लेकिन उनमें न संलग्न होते हैं, न आसक्त होते हैं। आपके अन्तर्जगत में प्राणीमात्र के प्रति सूक्ष्म संवेदनाओं से परिष्कृत ऐसी रचनात्मकता है, जो सर्वत्र विधायी कार्यों को करके मानवीय उत्कर्ष के लिए यथाशक्ति योगदान करती है। पूर्व प्रकाशनों में आगम मन्थन और तीर्थ गंगा आदि का सृजन करके आपने अपनी वैचारिक पृष्ठभूमि का परिचय दिया है किन्तु प्रस्तुत कृति आपकी ऐसी रचना है जो संघीय गुणवत्ता और गुणधर्मी साधना परम्परा का परिचय देते हुए श्रमण संघ पर व्यापक प्रकाश डालती है। ये कृति नवोदित श्रमण-श्रमणी वृन्द को यह एहसास भी करायेगी कि वे किस तरह के गरिमामय संगठन का अंग हैं और उनके कंधों पर कैसा गुरुत्तर दायित्व है। इस दृष्टि से प्रस्तुत कृति में पर्याप्त ऊर्जा ही नहीं सुधि परामर्श और विमर्श भी है। यह कृति कैसी है, इसका मूल्यांकन सुधि पाठकों पर छोड़ते हुए हम अपना निवेदन सम्पूर्ण करते हैं।

—प्रकाशक

सुत्रागम प्रकाशन समिति

अनेकान्त विहार, बस अड्डे वाली गली, गोपाल नगर, गुरुग्राम (हरियाणा)